भागवत शंकानिवारण मंजरी

जिसमें

प्रथमस्कन्ध से लेकर द्वादशस्कन्ध पर्यन्त शंका-
ओंका निवारण शास्त्रीय रीति से वर्णित है

जिसको

शिवपाद पद्मानुरक्त भगवद्भक्त अयोध्यानिवासी
रामचन्द्रचरणोपासी पण्डितवर शिवसहायजी
ने सर्वसाधारण जनोंके आनन्दार्थ अतीव
परिश्रम से निर्माणकिया वही शिव-
सम्पति उपाध्या ने

छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द

बम्बई बुकसेलर अयोध्याजीको छपवानेको दिया

लखनऊ टैप में

Printed at the Lucknow Printing Press.

फरवरी सन् १८९६ ई०

मूल्य प्रतिपुस्तक १।।)

९०००००० २००००००
पाथोजनवलक्षकास्तु गणिताहृक्षाःपुनर्विंशतिः
४०००००० १००००००
चत्वारोमनुजाविविच्यकथिताः द्वैजाश्चदिग्लक्षकाः ॥
११०००००० ३००००००
भूतेशाःकृमिजन्तवस्तु पशवोलक्षाश्चत्रिंशन्मताः ।
८४००००००
योनीनांगणितास्तुलक्ष निगमाशीतिश्चविद्वज्जनैः॥१॥
नवैवलक्षाणिजलोद्भवानि वृक्षाःपुनर्विंशतिलक्षकाहि
भूतेशलक्षाःकृमियोनयोऽपित्रिंशच्चलक्षाः पशुयोनयोऽपि
विहंगमानांदशलक्षकानि समुद्रलक्षाःनरयोनयोऽपि ।
प्रह्लादस्यपितुर्वधश्शशधरे नेत्रेऽवधिर्भारतम्
तार्तीयेदिवसेसमुद्रमथनं कृष्णोद्भवश्चार्णवे ॥
रुक्मिण्यास्तुशरेविवाहककृतौवागीशशिष्यागमः
सप्ताहस्यसमाप्तिरेव तुमुनौकार्यामुदाकोविदैः १

आदौहिरण्याक्षवधः द्वितीयेभरतावधिः ॥
तृतीयेक्षीरमथनं चतुर्थेकृष्णजन्मतः १
पंचमेरुक्मिणीव्याहः षष्ठेतुचोद्धवागतः ॥
सप्तमेह्निसमाप्तःस्यात् सप्ताहस्यअयंक्रमः २

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्लोक ॥

श्रीमद्रमारमणशेषविरञ्चिमुख्यैर्वाणीरमामुनिसुरे
शचराचराद्यैः सम्यङ्नुतम्भ्रमनिवारणमञ्जरीयं सन्न
म्यशम्भुपदपंकजमाशुमूर्ध्ना १ संरच्यतेमुनिकृत
स्यमयातिप्रीत्या सम्यग्विचार्यखलुभागवतस्यशास्त्रा

शोभायमानविष्णु तथा ब्रह्मा शेष आदिलेके तथा लक्ष्मी मुनि इन्द्रचराचरजीव आदिलेके तीनलोक चौदहभुवन इनसब करिके बहुत प्रकार नमस्कार किया जो शंकर को कमलसरिस चरण तिन चरणोंको अपनी मस्तक करिके मैंने नमस्कार करिके भागवतमें जो शंका है तिसको निवारण करने वास्ते यह मंजरी कहे अमृत की धारा मैं रचताहूं १ कैसा भागवत है व्यास मुनिको बनाया है कैसामैंहूं शिवसहाय मेरा नाम है शंकरको पूजन करताहूं ऐसो जो मैं सो अनेक शास्त्रोंको विचारि कै बड़ीप्रीति

न् । पूर्वोपयुक्तशिवशब्दसह्नायनाम्ना श्रीमद्गिरीशा
लनेयेशपदार्चकेन २ तत्रादौप्रथमस्कंधशंकाम्पृच्छ
न्तिवाचकम् । श्रोतारोविनयेनैवशंकयाविष्टचेतसाः ३
दयायुक्तस्सुशीलाश्च कथाश्रवणकौशलाः । बद्ध
हस्तपुटाःसर्वेनमंस्तत्पादपंकजम् ४ कृतश्रमंशब्द
शास्त्रेसर्वशास्त्रविशारदं । विद्याविनोदवार्तायां प्रोत्फुल्ल
मुखपंकजम् ५ श्रोतार ऊचुः ॥ भगवन्हृदयेऽस्माकं
श्रीमद्भागवतंप्रति । शंकामहीयसीनित्यंवर्ततेभ्रांति
वर्द्धिनी ६ न्यूनेष्वपिमहाराज पुराणेस्तोत्रसंचये ।
कविभिर्येकृताग्रन्था न्यूनान्यूनतराअपि ७ व्यासेनापि
महाबुद्धे विस्तृतानांतुकाकथा । मंगलाचरणाश्श्लो

करिकै भागवत के शंकाकी मंजरी बनाताहूं श्लोक दो को अर्थ मिला है युग्महै २ शंका करिकै युक्त चित्त तथा दयायुक्त तथा शीलवान् तथा अनेक शास्त्रों के श्रवण में चतुर ऐसे जो श्रोता हैं सो हस्त जोड़िकै कथा बांचनेवाले के चरणों को नमस्कार करिकै ३ बहुत बिनती करिकै पहिले प्रथमस्कंधकी शंका वाचकसे पूछतभये दोश्लोकों को अर्थ मिलाहै युग्महै ४ कैसे कथा बाँचनेवाले हैं व्याकरण पढ़ेहैं तथा सब शास्त्र में चतुर हैं शास्त्र में कोई शंका पूछता है तो बहुत खुशी होते हैं ५ श्रोता पूछते हैं हे महाराज श्रीमद्भागवत में हमारे लोगों की हृदय में बड़ी शंका है सोई शंका हमारे सबके मनमें भ्रांति को बढ़ायदिया है जिस कारणसे भागवत सुनते हैं खरीपण बिश्वास कथामें नहीं आता६ हे महाराज कवियोंने छोटेसे भी छोटा ग्रंथ बनाए तथा बड़ाभी बनाए पण छोटेमेंभी बड़ेमेंभी मंगल होने वास्ते बहुत से श्लोक पहिले बनाये हैं ७ तथा

काःकविभिर्बहवःकृताः ८ विघ्नबाधाविनाशाय्चादौ मंगलदाःप्रभो । श्रीमद्भागवतंशास्त्रं सर्वार्थपरिबृंहितम् ९ महापुराणमुनिभिःकथितम्मोक्षदायकम् । तस्यादौमंगलन्नास्ति गणेशगुरुवन्दनम् १० केवलम्ब्रह्मणोध्यानं निस्पृहेनैवसंकृतम् । तथापिश्लोकबहुलैःकृतञ्चेत्तस्यवंदनम् ११ नवर्ततेतदाशंका हृदिनो महतीप्रभो । छिंध्येनांशास्त्रखड्गेनकपोलोद्भूतेनवै १२ वाचक उवाच ॥ यूयन्वैसज्जनाःसर्वे वोधन्याःपितरस्सदा। धृतंजन्मकुलेयेषां भवद्भिर्हरिवल्लभैः १३ शंकेयन्निश्चलाजाता युष्माकंमहतीहृदि । ममानन्दकरीश्रेष्ठा

व्यासजीभी छोटे स्तोत्र में मंगलाचरणश्लोक बनाये हैं और बड़े ग्रंथमें तो बनौवैकिये हैं युग्मश्लोक हैं ८ बिघ्न के दुःखको नाश होनेवास्ते कबियोंने ग्रंथकी आदि में मंगल को देनेवाला श्लोक बनाते हैं पण श्रीमद्भागवत शास्त्र सब अर्थ करिकै युक्त है ९ मुनिलोग भागवत को महापुराण कहते हैं तथा मोक्षको देनेवालाभी कहते हैं पण भागवतकी आदि में गणेशकी तथा कबिके गुरुकी वंदनारूप मंगल नहीं किया है १० केवल बिनाप्रीति सरीके ब्रह्मको ध्यान व्यासने किया जो कदापि ब्रह्मको ध्यानभी वहुतसे श्लोकमें प्रीतिसे करते ११ तौ भी हमारे सबके मनमें बड़ीशंका न होती अब इसबड़ी शंका को शास्त्रकी तरवारिसे काटो अपनी इच्छासे बातबनायकेमति कहो १२ वाचकबोले हे श्रोतालोगो तुमसबबड़े सज्जनहो तुमारे लोगोके पितरोंकोधन्यहै भगवान्केप्यारे तुमसब जिसके कुल में जन्मतेभये १३ हे श्रोताहो तुमारीसबकी हृदयमें यह शंकानिश्चलउत्पत्तिभईहै सोहम को भी आनन्ददेतीहै तिसका कारण

श्रोतारस्तन्निबाधत १४ यदाव्यासोमहाबुद्धिःपुराणान्दशसप्त च । नानेतिहासशास्त्राणि कृत्वाशान्तिन्नप्राप वै १५ तदोपदिष्टोमुनिना नारदेनापिदुःखितः । हरिलीलानुकथनेमग्नोऽभूद्धर्षवारिधौ १६ कामार्दितो यथानारीं निर्द्धनश्चयथाधनम् । तृषार्दितोयथातोयन्तथाभून्मुनिसत्तमः १७ शीघ्रंरचितुकामोसौ विस्मृत्यबहुमंगलम् । केवलंब्रह्मणोध्यानं कृत्वैकेनमहातुरः १८ श्रीमद्भागवतंशास्त्रं शीघ्रंरचितुमुद्यतः । एतदर्थंचश्रोतारो नचक्रेबहुमंगलम् १९ ॥

इति श्रीभागवतशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुधविरचितायांप्रथमस्कंधेप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥

सुनो १४ जबबड़ेबुद्धिमान् व्यासजीने अठारह पुराण अनेक शास्त्रतथाइतिहास बनायके संतोषको नहींप्राप्तिभये १५ तब भगवान्केचरित्र गानकरने वास्ते नारदमुनिने व्यासकोउपदेशकिया तबहर्षरूप समुद्रमें व्यास मग्न होगये १६ जैसाकामीप्राणी स्त्रीको पायकेसुखीहोताहै तैसा नारदकी आज्ञाको पायके व्यासजी सुखीभये १७ भागवतको बनानेवास्ते व्यासने जलदीकिया औरश्लोक मंगलदायक भूलिगये एकश्लोक करिकेअकेले ब्रह्मको ध्यानकियाबड़ाआतुरहोकै१८श्रीमत् भागवतको बनानेवास्ते बहुतजलदीसे प्रारंभकिया इसवास्तेबहुत श्लोकमंगलदायकनहींबनाया ॥ १९ ॥ इति श्रीभागवतशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहाय बुधविरचितायां सुधामयीटीकासहितायांप्रथमस्कंधप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमेप्रथमेऽध्यायेव्यासोवाचेति नास्तिवै । द्वितीयाऽध्यायप्रारम्भे व्यासोवाचकथम्मु ने १ वाचकउवाच । नारदेनोपसन्दिष्टो भगवद्वीर्य वर्णने । हर्षसागरसम्मग्नो बभूवमुनिसत्तमः २ प्रा रम्भंकृतवाञ्च्छीघ्रं श्रीमद्भागवतस्यच । आतुरान्नै वसंचक्रे स्ववाक्यंमुनिसत्तमः ३ संस्मृत्योवाचपश्चाद्द्वितीयादौचकारसः ४ इतिश्रीभा० प्र० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णावतारम्पप्रच्छुरादौसूतम्मु नीश्वराः । तम्परित्यज्यसूतेनकथमुक्तंयथाक्रमम् १

श्रोताबोलतेभये प्रथमस्कंधकी पहिलीअध्यायके प्रारंभमें व्यासनहींबोले दूसरीअध्यायकी प्रारंभमें क्योंव्यासबोले १ बाचकबोले भगवान्को चरित्रबर्णनकरनेवास्ते व्यासकोनारदजीनेआज्ञा दिया तबव्यासमुनि हर्षके समुद्रमें डूबिगये २ व्यासने बड़े हर्षसेभागवतबनानेको प्रारंभकिया पण आतुरपणते पाहिलेआपनी बचननहींलिखी ३ पीछेसे व्यासकोयादि भई कि प्रारंभकरते बखतव्यासउवाच ऐसालिखना चाहतारहा है सोहम भूलिगये ऐसाबिचारिकै दूसरीअध्यायकी आदिमें व्यासउवाचकियाहै ४ इति भा० प्रथ० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभयेकि, प्रथम अध्यायमें श्लोक १२ में श्रीकृष्णके अवतारकीकथा सनकादिकोंने सूतसेपूछथे सूतनेकृष्णके चरित्रकीकथाको त्यागिकै आदिमें भगवान्को सब अवतार क्यों वर्णनकिये बड़ीभ्रमहोतीहै १ ॥

वाचकउवाच ॥ कृष्णावतारचरितं द्विधाभूतंविदृश्यते सत्संगिनाम्मोक्षरूपमज्ञानाम्विषयार्णवम् २ युगेयुगे भवत्तस्य प्रभावोबहुविस्तरः । श्रुत्वादौकृष्णचरितं येऽपक्वहृदयानराः ३ तेपिकर्म्मप्रकुर्वन्ति कृष्णवच्चवि मोहिताः । मोक्षजारसुखम्मत्वा पतिष्यति च रौरवे ४ मूर्खानैवविजानन्ति श्रीकृष्णचरितामृतम् । ज्ञानिनां मोक्षरूपं च तद्धीनानाम्भ्रमावहम् । एतदर्थंचश्रोतारो वर्णितंचयथाक्रमम् ५ इतिश्रीभा० प्र० तृतीया०तृती यवेणी ॥ ३ ॥

बाचक बोले श्रीकृष्ण को चरित्र दोप्रकार को संसार में देखि परता है सत्संग करनेवाले मनुष्य तो कृष्ण के चरित्र को मोक्ष रूप मानेंगे तथा मूर्खलोग बिषयको समुद्र कृष्णके चरित्र को मानैंगे २ तथा युग युगमें श्रीकृष्ण को चरित्र बहुत वि-स्तार करिके होता है यह बिचार कियोंकि सनकादिक तो परमहंस हैं कृष्णके चरित्र को सुनिकै मोक्षरूप मानैंगे पण पेस्तर कृष्णके चरित्र को मूर्खलोग सुनैंगे ३ वो मूर्खलोग श्रीकृष्णका चरित्र मोक्षरूप है तिसको जारको सुखमानिकै कृष्णसरीके परस्त्रियों के संगक्रीड़ा करैंगे रौरवनरक में परेंगे ४ पेस्तर वर्णन कृष्णको अमृतरूप चरित्र करैंगे तो मूर्खलोग कृष्णके चरित्ररूप अमृत को नहीं जानैंगे और जो पहिले सब अवतारको चरित्र वर्णन करैंगे तो उस चरित्र को धीरे धीरे सुनिकै मूर्खभी ज्ञानी होजावैंगे पीछेसे कृष्णके चरित्र को सुनैंगे तो भ्रम नहीं मानैंगे मोक्षरूप मानैंगे इसवास्ते पे-स्तर कृष्ण को चरित्र सूतजीने नहीं बर्णन किया ॥ ५ ॥ इति भा० प्र० तृतीयाऽध्यायेतृतीयेवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः। येषामुपरियोगीन्द्रो करोतिभूरिशः कृपाम्। सगोदोहनमात्रंहि तिष्ठते च तदाश्रमे १ अतिष्ठत्सप्तरात्रं वै कथन्तत्रमहामुनिः। श्रावयामासराजानं श्रीमद्भागवतन्तदा २ वाचकउवाच। एकदागतवान्योगी गोलोकंस्वेच्छया मुनिः। कृष्णेनपूजितस्तत्रगन्तुकामस्तपोधनः ३ प्रार्थितस्तत्रकृष्णेन परीक्षिन्मोक्षहेतवे। पांडवामेप्रियास्स्वामिन्तत्पौत्रोयन्नृपोमुने ४ दुर्गतिंसर्पदंष्ट्रश्चेद्व्राजिष्यतिद्विजेरितात्। तदाहास्यंभवेल्लोके ममभूरिक्षितौसदा ५ अतोयथेच्छाभवतस्तथा तारयतन्नृपम्। एतदर्थमुनिस्तस्थौ सप्तरात्रंनृपान्तके६ इति श्रीभा० प्र चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये शुकजी जिस के ऊपर बड़ी कृपाकरते थे उस के मकानपर टिकतेथे कितनीदेर जितनी देर गायके दूहने में लागती है उतनी देरबड़ी कृपाकरैं तो जराखड़े हो जातेथे १ सो शुकदेवजी गंगा के तटपर सातदिन क्यों टिकतेभये तथा टिकिके परीक्षित् को भागवत सुनाते भये २ बाचकबोले एकदिन अपनी इच्छासे शुकजी गोलोक को गये तब श्रीकृष्णने शुकको पूजन किया पूजन ग्रहण करिके शुकजी चलने लगे ३ तब परीक्षित् की मोक्षहोने वास्ते श्रीकृष्ण जीने शुक की प्रार्थना किया हेमुनिजी पांडव मेरे बड़े प्यारेथे तिन को यह परीक्षित् पोता है ४ ब्राह्मण के बचनते सर्पकरिके काटाहुआ परीक्षित् जब नरकको जावैगा तब तीनलोक में मेरी बड़ी हँसी होवैगी कि कृष्णके मित्रों का पोता नरकको जाता है देखो भाई ५ इसवास्ते जैसी आपकी इच्छा होवै उसी प्रकार से परीक्षित् को नरक से

श्रोतारऊचुः। दुःखितान्नारदोदृष्ट्वा जनान्दुःखसमन्वितः। मूर्च्छितस्तत्क्षणे भूमौपतत्यत्यंतविह्वलः १ करोत्युपायानिबहूनिनारदस्तद्दुःखशान्त्येभगवत्प्रियोमुनिः। दुःखार्दितंसत्यवतीसुतंस्मितान्निरीक्ष्य चकेकथमाश्वयोग्यम् २ वाचकउवाच निवारितस्सत्यवतीसुतोऽनिशन्मावर्णयत्वन्निखिलार्थवाचनं। सुरर्षिणाप्रीतिभरेणमानितोहरेश्चरित्रम्वदसौख्यवारिधिम् ३ नकृतंस्वचन

उद्धार करो मेरेलोक में भेजदेवो हे श्रोताजन ऐसी कृष्ण की बिनती से परीक्षित् के साथ सातदिन शुकदेवजी टिकतेभये ६ ॥ इति भा० प्र०चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवर्णी ॥ ४ ॥

तब श्रोता पूछते भये कि, हे मुनिजी तीनलोक में किसी जीवको दुःखी नारदने देखिकै उसी बखत नारद पृथ्वी में पड़िजातेथे बहुत मूर्च्छा को प्राप्त होतेथे और बहुतविह्वलहोतेथे भगवान्के प्यारेओ नारदसो उस जीवके दुःखको नाशहोने वास्ते अनेक उपाय करतेथेकिजीवसुखी होवैतो आपुभीसुखी होवै ऐसे दयावान् व्यासमुनिकोदुःखीदेखिकै मुस्किआने क्यों अयोग्यक्योंकि है कि अपनास्वभावक्यों छोड़ै २ वाचकबोले नारदने बडी प्रीति करिकै बड़आदरसे व्यासकोमनाकिहेकि हे व्यास संसारकोठगनेवाला ग्रंथ मतिबनावो जिसकेनामको ग्रंथउसकीतोतारीफदूसरेकीनिन्दा फिरदूसरेके नामकोग्रंथ उसकी तारीफ औरजिसकी तारीफकियाथा उसकीनिंदा दूसरेग्रंथमें लिखिदिया ऐसाशास्त्र मतिबनावो सुखकोसमुद्रऐसा जोभगवान्कोचारित्रसो वर्णनकरो ऐसासिखावनबारंबारनारद व्यासकोदेतेभये ३ व्यासजी बडेअभिमानते नारदकीबाक्य को नहींमाने अनेकप्रकार के ग्रंथबनाये उनगृंथोंकरिकै व्यास

न्तस्यतेनमानातिवेगतः । प्रापपश्चान्महादुःखन्तंविलो
कयमुनिस्तदा।कृपांकृत्वास्मितञ्चक्रेतत्त्रासार्थंनमानतः
४ इतिश्रीभा० प्रथमस्कं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनुग्रहीतामुनिभिर्नारदस्यप्रसूर्गुरो।
कथम्मृतासर्पदंष्ट्राशंकेयम्महतीहि नः १ वाचकउवाच
मुनीन्जिगमिषून्ज्ञात्वासुतंज्ञानरतन्तथा । इंद्रियान्प्र
बलान्मत्वाप्रार्थयामाससाहरिम् २ शूद्रयोनौसमुत्पन्ना

कोकुछभीसुखनहींभया गुंथबनाये पीछे बडे दुःखको व्यासप्रा
प्तभये तब व्यासकोदुःखी नारदमुनिने देखिकै व्यासकेऊपर
कृपाकरिकै तथाव्यासको त्रासदेनेवास्ते मुस्किआतेभये अभि
मानतेनिर्दयीहोकेनहींमुस्किआते तबज्ञानदेके व्यासकेदुःखको
हरते भये ऐसीकृपाकरतेभये ॥ ४ ॥ इति० भा० प्र०पंचमेऽध्याये
पंचमवेणी ॥ ५ ॥श्लोक १ ॥

नारदकी माताके ऊपर मुनि लोगों की कृपा बहुतथी
क्योंकि जो कृपा नहीं करते तो मुनियोंके सकाशते नारदको
जन्म उस दासी में क्यों होता ऐसी मुनियों की कृपासे युक्त
नारदकी माता सर्प के काटे से क्यों मृत्युको प्राप्त हुई खोटी
मृत्यु नारदकी माताकी सुनिकै हमारे लोगों को बड़ी शंका
आती भई १ वाचकबोले नारदकी माताने मुनियों को तीर्थ
करने वास्ते जाता जानिकै तथा अपना पुत्र जो नारद तिस
को ज्ञानमें रमित जानि कै तथा इंद्रियों को बड़ी बलवान
जानिकै भगवान् की प्रार्थना करती भई बिचार किया कि
मेरे को मुनिजन त्यागिकै जाते हैं और पुत्र मेरा ज्ञानमें मस्त
है अब मेरी रक्षा कौन करेगा इंद्रियतो अपनी अपनी तरफ
को मेरे जीवको दुःख देवैंगी २ नारदकी माताने बिचार किया

शूद्रसंगतिकारिणी। केनचित्कर्मयोगेनमुनीनामापसंगतिम् ३ तथाप्यपक्वहृदयाज्ञानध्यानविवर्जिता। तथार्थितोरमानाथोनिमित्तेनाहिनाप्रभुः। दंशयित्वातिशीघ्रंवैस्थापयामासस्वान्तिके ४ इति भा० प्रथमस्कं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥६॥ श्लोक ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्तिःप्रवर्द्धतेकृष्णेश्रीमद्भागवते श्रुते। अनेनज्ञायतेब्रह्मन्नत्वनेकतनौहरेः।सूतेनोक्तंकथमिदंछिंधिशंकाम्महीयसीम् १ वाचकउवाच ॥ व्यासोऽपि कथ्यतेकृष्णोमुनिभिश्चादरेण।हि। कृष्णोविष्णुर्जगन्नाथो

शूद्रके कुलमें मेरा जन्म हुआ शूद्रों की मैंने संगति की किसी सुन्दर कर्मके प्रभावते मेरेको मुनियों की संगति प्राप्ति भई है ३ तथा ज्ञानध्यान से हीनहूं मेरे हृदयमें कुछ भी ज्ञान नहीं है अब मैं निराधारहूं मेरा मरण जल्दी होना चाहिये ऐसी बिनती भगवान्से करती भई भगवान् इसकी बिनती मानिके जल्दी मरण होने वास्ते सर्प से कटायके मरण करिके अपने सामने नारदकी माको टिकाते भये इसवास्ते सर्पबाधा से मरण नारद की माको भया भगवान् अपने सामने टिकाते भये सांप काटे से मृत्यु होती है वह प्राणी दुर्गति को जाता है नारद की मा मुनियों की कृपा से ईश्वर के सामने टिकती भई ४ इ० भा० प्र० षष्ठे ऽध्याये षष्ठ वेणी ॥६॥ श्लोक६ ॥

श्रोता पूछतेभये सूतने ऐसा वचन क्यों कहे कि भागवत को सुनैगा तो कृष्ण में भक्ति होवेगी ऐसे वाक्य से क्या मालूम होता है कि भागवत सुनने से कृष्ण अकेले में भक्ति होवेगी और जो भगवान् के अनन्त अवतार हैं तिन में भक्ति न होवेगी यह बड़ी शंका हमारे सबके मन में है तिसका आप छेदन

बहुनासाजगत्पतिः २ तथापिगुरुराचार्यस्सूतस्यमुनिना यकः। कृष्णेतिवक्तमन्तस्यसूतस्यसततंहृदि ३ एतदर्थं च कृष्णेवैभक्तिरुत्पद्यतेऽनिशम्। उक्तंनतुविरोधेनसर्वं विष्णुमयंजगत् ४ इतिश्री भागवतेप्र०सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्यक्तमात्रश्चब्रह्मास्त्रोभस्मकुर्याज्जगत्त्रयं। उत्तरातनुलग्नश्च नददाहकथं त्वरः १ वाचक उवाच ॥ पतिहीनाचवैराटीश्रीकृष्णचरणद्वयम्। स्मरंती सततंभक्त्यानेत्राश्रुपरिमुंचती २ हरे कृष्ण हरे कृष्ण करो १ वाचक बोले मुनियों ने आदर करिके व्यास को भी कृष्ण कहा है क्योंकि भगवान् के अनन्तनाम हैं कृष्ण विष्णु जगन्नाथ इन को आदिले के तोभी व्यास जी सूतके गुरू हैं कृष्ण यह नाम सूतके हृदयमें सदा प्यारा लगताहै ३ इस वास्ते सूतने कहेकि भागवतके सुननेसे कृष्णजो व्यास तिन में भक्तिहोवैगी कुछ विरोधसे नहीं कहे क्योंकि सब संसार भगवान्को रूपहै भगवान्के एक रूपमें भक्तिहुई तो अनन्त रूप में होवेगी ईश्वरके रूपमें भेद नहींहै ४इ०भा०प्र० सप्तमे ऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥श्लोक ७ ॥

श्रोता पूछतेभये कि ब्रह्मअस्त्रको ऐसा प्रताप शास्त्रमेंलिखा है कि जिस बखत योधा लोग ब्रह्मअस्त्रको धनुषपरसे छोड़ैंगे तो जो कदापि तीनलोक भस्म करने वास्ते छोडैंगे तब धनुष से छूटिकै उसी बखत तीन लोक को भस्म करि डारैगा पण उत्तराकी देहमें ब्रह्मअस्त्र लगिकै जल्दी उत्तराको भस्म क्यों नहीं किया १ वाचकबोले पतिसे हीनऐसी उत्तरा राति दिन बड़ी भक्ति से श्रीकृष्णके चरणका स्मरण करतीथीआंखों से

कृपालोभक्तरक्षकानमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमस्तुभ्यन्नमो नमः ३ इतिमंत्रंजपन्तीसालस्थौपांडववेश्मनि। अश्वत्थाम्नाविसृष्टश्चब्रह्मास्त्रः प्राप्यतत्तनुम् ४ बभूवशीतलश्शीघ्रंकृष्णस्मरणतेजसा। तथापिविह्वलाभूत्वाऽप्याजुहावयदूत्तमम् ५ इति० भा० प्र० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥श्लो० ८ ॥

श्रोतारऊचुः॥ भीष्मोमहात्मामुनिभिः कथितस्सत्सभासुच। सःकथंक्रूरवचनम्प्रोक्तवान्पांडवान्प्रति १ वाचकउवाच॥ अज्ञानान्मत्तरूपांस्तान्ज्ञात्वामानविवर्द्धितान्। तेषांमानविनाशायभीष्मेणोक्तमिदंवचः २ इति० भा० प्र० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥श्लो० १२ ॥

प्रेम के जल बहे जाते थे २ हे कृपा के स्थान हे भक्तों के रक्षक हे कृष्ण ३ हे हरे ३ आपको नमस्कार है३इसमंत्रको जप करती उत्तरा पांडवों के महल में टिकी थी उसी वखत अश्वत्थामा करिके छोड़ा जो ब्रह्मास्त्र सो उत्तरा की देह में लागिके ४ श्रीकृष्णके स्मरणके प्रभाव से ठंढा होगया तो भी उत्तरा व्याकुल होके श्रीकृष्ण को पुकारती भई जो ईश्वर का भजन उत्तरा न करती तो उसी वखत भस्म करिदेता परन्तु भजनके प्रभाव से नहीं जलाया ५ इ० भा०प्र० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो०८ ॥

श्रोता पूछतेभये भीष्मजीको ज्ञानियों की समाज मेंमुनियों महात्मा कहे थे सोई भीष्मजी मूर्खसरीके खोटे वचन पांडवों को क्यों कहे १ वाचक बोलते भये भीष्मजीने पांडवों को बड़ा उन्मत्त बड़ा अभिमानी जानिकै पांडवों के ऊपर कृपा करिकै पांडवोंके अभिमानकोनाश करने वास्ते ऐसा क्रूर वाक्य

श्रोतारऊचुः ॥पतिभीरहिताब्रह्मन्कुरुनार्य्योनिरीक्ष णम्।श्रीकृष्णस्यकथंचक्रुःप्रेमव्रीडास्मितेक्षणैः १ पतिव्रताःप्रकुर्वन्तिप्रेमव्रीडास्मितेक्षणम्। स्वपतौप्रीतिभावेनजारिण्योजारकर्तरि २ कुरुनार्य्यः कुलोत्पन्नाः कर्मणापतिवर्जिताः। कथंचक्रुश्शुभाचाराःप्रेमव्रीडास्मितेक्षणम् ३ भगवन्तंपरिज्ञाय चेद्यदाकुरुवल्लभाः चक्रुस्तदाप्ययोग्यंचतत्रयोग्याकरांजलिः ४ करुणानमनंयोग्यमश्रुपातसमन्वितम्। अनयाशंकयास्माकंम

पांडवों को भीष्मबोलते भये इ० भा० प्र० नवमेऽध्याये नवमवेणी ६ श्लो०॥१२॥

श्रोतापूछते भये विधवा जो कुरुवंशियों की स्त्रियां थीं सो प्रेम करिकै लज्जाकरिकै मुस्किआइकै श्रीकृष्णको क्यों देखती भईं यह बड़ी शंका होतीहै१पतिव्रतास्त्री अपने पतिको प्रीति करिकै प्रेम में तथा लज्जामें तथा मुस्किआइकै देखतीहैं तथा जारिणी स्त्री व्यभिचारी पुरुषको इसी तरह देखती हैं२ कौरवों की स्त्री सब बड़ेबड़े कुलकी जन्मी हुई बड़ी पतिव्रता शुद्धधर्म करने वाली ऐसीस्त्री किसी जन्मके पाप से विधवा होगई तो कुछ चिंता नहीं परन्तु श्रीकृष्ण परपुरुषहैं तिनको प्रेमसे लज्जा से मुस्किआइकै क्यों देखती भईं३ जो कदापि कुरुवंशकी स्त्रियोंने श्रीकृष्णको भगवान् जानिकै प्रेम करिकै लज्जा करिकै मुस्किआइकै देखती भईं तो भी अयोग्यहै भगवान् जानिलिहीं कृष्णको तोभी हाथजोड़िकै नमस्कार करना चाहता रहा४अपनी गरीबी देखाय कै कृष्णको तथा आंखोंसे अश्रुपड़िरहीहै इस प्रकार से नमस्कार करना योग्य रहा है

नोआस्यितानत्यशः५वाचकउवाचानिहताःपतयोऽस्मा
कंसंग्रामेपांडुनन्दनैः। अतोऽयम्भगवान्विष्णुस्त्राताना भ
विताहरिः६इतिप्रेमावलोकन्तारचक्रुःकृष्णस्यनायिकाः।
युद्धात्पूर्वंयदातेनकृष्णेनगमनंकृतम् ७नागाह्वयेसभा
मध्येकुरूणांसंस्थितोहरिः। तिरस्कृतश्चकुरुभिरसकृद्या
दवर्षभः ८ स्त्रीभिश्चापिकदाप्येषोनादृतोभक्तवत्सलः।
कामवेगपरिक्षिप्तमनश्चंचलराशिभिः ९ संस्मृत्यकुरु
नार्यस्तत्तिरस्कारंरमापतेः। व्रीडावलोकनंचक्रुर्लज्जिताः
इस शंका करिकै हमारे सबके मन नित्य भ्रमको प्राप्तहोरहे
हैं ५ वाचक बोले कि कुरुवंश की स्त्रियों ने अपने २ मनमें
विचार किया कि हमारे सबके पतियों को पांडवों ने युद्ध में
मारडाले अब हम सब अनाथ हो रही हैं इस वास्ते हमारी
सबकी रक्षा करनेवाले ये भगवान् हैं ६ इस वास्ते कुरु वं-
शियों की स्त्रियों ने प्रेम करिकै श्रीकृष्णको देखती भई तथा
कौरव पांडव की युद्ध नहीं भई थी तब श्रीकृष्ण अनेक दफे
हस्तिनापुर को आये थे ७ तब हस्तिना पुरमें जो कौरवों की
सभा तिसमें बैठते भये तब कौरवों ने बारम्बार श्री कृष्ण को
अनादर करते भये ८ तब कौरवों की स्त्रियों को मालूम परा
कि हमारेपतियों ने भगवान् का अनादर बहुत दफे किया
ऐसा स्त्रियों ने जान लई तौ भी कामदेव करिकै उन्मत्त हो
रही थीं सो भगवान् को आदर कभी नहीं करती भई विषय
सुख के अभिमान से पागल हो रही हैं ९ उस भगवान् के अ-
नादर को कुरुवंशकी स्त्रियों ने याद करिकै ईश्वर के संग
पेस्तर उन्मत्त होके बुराई करती भई उसी कर्म करिकै
बहुत लज्जा को प्राप्त होकै मुख नीचे करिकै बड़ी लज्जा

पूर्वकर्म्मणा १० क्षत्रान्वयेप्रसूतानान्नारीणाञ्चनृणान्तथा। महाक्रूरस्वभावश्चस्वस्वस्वभावानुगाःस्त्रियः ११ कुरुनार्य्योनिरीक्ष्यैनंस्मितयुक्तम्पुनःपुनः । यथानेनवयंहीनाःपतिभिर्वर्जिताःकृताः १२ तथाप्यस्यभविष्यन्ति प्रेमदानेननिश्चितम् । हीनाश्चिरेणश्रोतारश्चातस्ताभिः कृतन्तदा १३ इति० भा० प्र० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोतारऊचुः॥गुरुरेकश्च सर्वेषांवर्णानांद्विजसत्तम। दुर्बुद्धिश्चसुबुद्धिश्चसवैनारायणस्स्मृतः १ सर्ववस्तूनि दृष्टानिबहूनिभुवनत्रये।बहवोगुरवःस्वामिन्नदृष्टाःक्वापि करिकै देखती भई १० क्षत्रियों के कुल में जो स्त्री तथा पुरुष जन्मते हैं उनहूं को स्वभाव बड़ा कठिन होता है हजारों वर्ष बीति जावैं तो भी आपने को जो दुःख देवैगा उस को दुःख देने के वास्ते मरते बखत सब से कहिकै तब प्राण छोड़ैंगे इसी वास्ते कौरव की स्त्री अपने २ स्वभाव में हुसियार रही हैं ११ इस कठिनस्वभाव ते कौरव की स्त्रियों ने कृष्ण को मुस्किआइके देखी है कौरव की स्त्रियों ने विचार किया कि जिस प्रकार से हम सबको ये कृष्ण पति से हीन करि दी है १२। तैसेही इनकी भी सब स्त्री इन करिकै हीन होजावैंगी थोरेही दिनमें हे श्रोताजनों इस वास्ते कौरव की स्त्रियों ने मंदहास्य करिकै कृष्ण को देखी है ॥ १३ ॥ इति श्री भा० प्र० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोता पूछतेभये कि, हे द्विजों में उत्तम वाचकजी ब्राह्मण क्षत्री वैश्य को गुरु एकही होता है चाहै तो दुष्टहोवै चाहैतो महात्मा होवै परन्तु गुरु नारायण सरीके है १ हे महाराज

केनचित् २ लक्षणंग्रहणन्तेषान्दत्तेनापिकृतंयदि । नतूप
देशकर्तारः तस्याप्येकोगुरुर्मनः ३ ऋषिभिरप्युक्तं गुरु
रेकोद्विजातीनामिति प्रजाभिःकथमुक्तोयंकृष्णः परम
पुरुषः त्वंसद्गुरुर्नोभगवन्निति शंकामहीयसी ४
वाचक उवाच ॥राक्षसैर्दितंसर्वमिदंलोकंचराचरम्।या
दवाश्चविशेषेणपूर्वेश्रीकृष्णजन्मनः ५ कृष्णेनपालिताः
सर्वेसुखंप्राप्ताश्चनित्यशः । गर्गशिक्षितास्सर्वेद्वारि
कास्थाःप्रजास्तदा ६ कृष्णमेनंविजानीध्वंपरब्रह्म

तीनलोकमें ब्रह्माकी बनाईहुई चीज सब बहुत प्रकार की देख
परतीहै परन्तु गुरु तो बहुत होनाकभी कोईभी प्राणीनहीं देखा
२जो कोई सज्जन ऐसा कहैं कि दत्तात्रयने चौबीस २४गुरु कि
या है तो यह सत्य है परन्तु दत्तात्रयने चौबीस को लक्षण
ग्रहण किये हैं वो चौबीस सज्जनोंने दत्तात्रयको उपदेशनहीं
दिया उपदेश देनेवाले को शास्त्र में गुरूकहे हैं उपदेश देने
वाला गुरु १ एक दत्तात्रय को मन दत्तात्रय के भी रहा है ३
ऋषियोंने भी कहे हैं कि,ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको गुरु एक कर-
ना चाहिये लोक शास्त्र तो गुरु एक होना कहता है तो फिरि
द्वारका वासी प्रजा श्रीकृष्ण को क्यों कहे कि, आपु हमारे
सब के सत्गुरूहो यह बड़ीशंका होती है क्योंकि सत्के कहे
से असत्भी गुरु होतेहोवैंगे जैसा पाप पुण्य जन्म मरण हानि
लाभ यश अपयश राति दिन आदि की जोड़ी है तैसेही सत्
असत् की भी जोड़ी है ४ वाचक बोले कि,यह तीन लोक
चरअचर को कृष्ण नहीं अवतार लियेथे तब राक्षसाने बहुत
दुःख देतेभये ५ कछुदिन पीछे कृष्ण अवतार धरिकै तीनलोक
चरतथा अचरकी रक्षा करतेभये परन्तु यदुवंशियों की तो बहुत

सनातनम्। गर्गोक्तिंहृदयेस्थाप्यसर्वेन्त्यज्ञ्चराचरे ७ शास्त्रादिवेदतीर्थानियोग्यायोग्यविचारणम्। संशुद्धमनसस्सर्वेकृष्णंजानन्तिमानसे ८ अतोनस्सद्गुरुस्त्वं वाइतीदंप्रोक्तमूचिरे ९ इतिश्री भा० प्र० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥११॥ श्लो० ७॥

श्रोतारऊचुः॥ धर्मराजेनतेपृष्टादैवज्ञाब्राह्मणोत्तमाः। शिशोर्भविष्यकालस्यवर्णने वै परीक्षितः १ द्विजैरुक्तमयम्बालोभविष्यतिमहामतिः। साम्येपितामहसमः प्रसादेगिरिशोपमः २ सर्वभूताश्रयोह्येषोयथा प्रकार से रक्षा करते भये तथा द्वारिका में बसनेवाले मनुष्यों को गर्गजी भी सिखाते भये ६ गर्गमुनि कहैं कि द्वारिकावासी प्रजा हो तुम सब इन कृष्ण को परब्रह्म जानो इनसे दूसरा देवता तीनलोक में कोई भी नहीं है ऐसे गर्ग के वाक्य को सब प्रजा अपने २ हृदय में टिकाय के तीनलोक में जो सब वस्तु है सो त्यागिकै ७ शास्त्र आदि लेके चारों वेदकी बातको तथा तीर्थ को तथा यह कर्म करना योग्य है यह कर्म करना नहीं योग्य है ऐसा विचार त्यागिकै शुद्ध मन होकै सब प्रजा अपने २ मनमें सब संसार में ब्रह्मकी रची वस्तु श्रीकृष्ण को जानते भयेहैं ८ तीन लोक चर अचर रूप कृष्णको जानिकै आपु हमारे सबके सतगुरु हो ऐसा वाक्य द्वारिकावासी प्रजा कहते भये इ० भा० प्र० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी॥ ११॥ श्लो० ७॥

श्रोता पूछते भये कि परीक्षित्को जन्म भया तब परीक्षित् कैसा होवैगा भविष्य कालकीबातयुधिष्ठिर ज्योतिषी ब्राह्मणों से पूछते भये १ तब ज्योतिषीबोले कि हे राजन् युधिष्ठिर यह

देवोरमाश्रयः।उत्पत्यवननाशानांकर्तॄणांजगतः कदा ३
उपमैतादृशीकेषांनदृष्टानश्रुताचनः । सततम्भ्रामयत्ये
षाशंकास्माकम्मनःप्रभो४वाचकउवाच॥कथितोनैवश्रो
तारोद्विजैरस्मिपितामहः । विधिर्गिरीशोनशिवोविष्णु
नैवरमाश्रयः ५ पितामहाश्शिशोस्सर्वेपांडवाः पंचकी
र्तिताः।तेषांसाम्येसमःप्रोक्तोनैवंविधिसमश्चतैः ६ यथा
गिरीशोहिमवानचलोवर्ततेक्षितौ । तथाचलमतिश्चाय
म्प्रसादेतत्समस्स्मृतः ७ रमादीप्तिस्समाख्यातासवित्ता

बालक बड़ाबुद्धिमान् होवैगा तथा संसारको ब्रह्मासरीके
एक दृष्टि देखैगा दान देने में शिवसरीके उदार होवैगा २
रमापति जो भगवान् तिससरीके सब प्राणियोंको मालिक
होवैगा संसारकी उत्पत्ति पालन व नाशके करनेवाले जो तीन
देवता तिनकी बरोबरि कभीभी ३ ब्राह्मणों ने तीन देवों की
बरोबरि परीक्षित् की उपमा दिया परन्तु ऐसी उपमा सं-
सारमें किसीकी भी नहीं दीगई तथा हम सब ने ऐसी उपमा
कभीसुनी भीनहीं यहशंका नित्य हमारे सबके मनको भ्रमाती
है ४ वाचक बोले हे श्रोता जनो पितामह (समस्साम्ये) इस
श्लोक में ब्राह्मणों ने ब्रह्मा को पितामह नहीं कहेथे तथा शि-
व को गिरीश नहीं कहेथे तथा विष्णु को रमाश्रय नहीं कहे
थे ५ पांच पांडव धर्मराज,भीम,अर्जुन,नकुल,सहदेव, बालक
जो परीक्षित् तिस के पितामह दादा हैं तिन आपने पिता
मह जो दादा तिन की बरोबरि संसार को एकदृष्टि परीक्षित्
देखैगा ऐसा मुनियों ने कहा है ब्रह्मा की बरोबरि नहीं कहै६
जैसा भूमि में सुंदर कर्म में गिरीश कहे हिमवान् पर्वत
चलायमान नहीं होता तथा दूसरे को बरदेने में बड़ा उदार

चतदाश्रयः । तस्मान्नसर्वभूतानांशिशुस्तद्दस्समाहृतः
८इति०भा०प्र०द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी १२श्लो० २३

श्रोतार ऊचुः ॥ धृतराष्ट्रस्यपांडोश्चकथयते विदुरः कथम्। अनुजस्सर्वशास्त्रेषुभारतादिषुभोगुरो १ यस्स्व मातरिसञ्जातस्स्वजन्यादनुबालकः । सोनुजः कथ्य तेनान्योलौकिकेष्वपिनैवच २ वाचक उवाच ॥ उद्वाहे योविधिः प्रोक्तोवेदेषुलौकिकेष्वपि । चतुर्णांचैववर्णानां विधिःसाप्रथमास्मृता ३ द्वाभ्यांविरहितायाचसाविधि है तैसा परीक्षित् भी गिरीश कहे हिमवान् सरी के दानदेने में उदार होवैगा ७ रमानाम रोशनी को है तिस रोशनी को मालिक सूर्य है इसीवास्ते सब प्राणियों को मालिक सूर्य है सूर्यबिना जीव को निर्वाह नहीं होता मुनियों ने कहेथे कि जैसा सूर्य उदय होके संसार को आनंद देता है तैसा परी-क्षित् भी राजा होके अपनी प्रजाको सुखदेवैगा ऐसा मुनियों ने कहेथे ईश्वर के बरोबरि नहीं कहेथे ॥ ८ ॥ इति भा० प्र० द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० २३ ॥

श्रोता पूछतेभये धृतराष्ट्र को तथा पांडुको छोटा भाई बिदुर कैसे होते भये हे गुरुजी सब शास्त्रों में तथा भारतआदि इति-हासों में १ अपने जन्मभये पीछे अपनी माता में जो बालक जन्मता है उस को शास्त्र में और लोक में छोटा भाई कहते हैं दूसरी माता को जन्माया बालक लोक में और शास्त्र में छोटा भाई नहीं कहाता धृतराष्ट्रतथा पांडु ये क्षत्री के पुत्र और बिदुरशूद्री के पुत्र धृतराष्ट्रको छोटाभाई बिदुर क्यों भये यह बड़ी शंकाहोतीहै २वाचक बोले ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चारों वर्णों के विवाह होनेकी बिधि शास्त्रमें तथा

श्चानुकथ्यते।तद्वत्स्याजायतेयोवैसोऽनुजःकथ्यतेद्विजैः ४ अतोनामानुजस्तेषांविदुरणामितीरितम् । स्वमात रिचयोजातस्स्वजन्यादनुबालकः। अनुजस्सोपिविख्या तः शास्त्रलोकद्वयोरपि ५ अर्थप्रतीतिंसंवीक्ष्ययत्राया यत्प्रतीयते । तदर्थस्तत्रकर्तव्यश्शब्दार्थश्चापिभूरिशः ६ इ० भा० प्र० त्रयोदशाऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सप्तद्वीपाधिपेनैवधर्मराजेनवैकथम्। चाराद्वापत्रद्वाराद्वानज्ञातायादवामृताः १ महदाश्चर्य लोकमें कही है सोई बिधि श्रेष्ठ है तथा प्रथम है ३ शास्त्रसे तथा लोक से राहित जो बिवाह की बिधि है उस को अनुकहते हैं शास्त्र में उस अनुकी बिधिमाले अन्याय करिकै जो जन्म लेवै उस को अनुज मुनिजन कहते हैं ॥ ४ ॥ इसी वास्ते बिदुर लोगों का नाम अनुज है बिदुर कहे वर्ण- संकर तथा आपने जन्मभये के पीछे अपनी माता में जो जन्मलेवै उसको भी शास्त्र में लोक में अनुज कहते हैं ५ शब्दके अर्थ अनेक प्रकारके हैं परन्तु जो अर्थ जिस जगह जैसा घटि जावै अयोग्य न मालूम परै सोई अर्थ उसजगह करना चाहिये जैसा पय जल को कहतेहैं और पय दूध कोभी कहते हैं गोधेनु को नाम गोभूमि गोजल गो इन्द्री गो वाक्- स्थान देखिकै अर्थ करना इसीवास्ते(विदुरेणानुजेन) ऐसा वचन व्यासजीने कहा धृतराष्ट्रको छोटाभाई नहीं कहा ॥ ६॥ इति भा०प्र०त्रयोदशाऽध्याये त्रयोदशवेणी॥१३॥श्लो०२॥७॥

श्रोता पूछते भये सातद्वीपपृथ्वी को राजा युधिष्ठिर तिनको चिट्ठी से तथा दूतसे यह बात क्यों न मालूमपरी कि

मेतद्विन्यूनराज्ञापिज्ञायते । स्वराज्यसकलावार्ताशंके यन्नोगरीयसी २ वाचक उवाच ॥ अर्जुनागमनात्पूर्वं न्दिवसेदशमेश्रुताः। चारैर्निवेदितोराज्ञेयादवास्सुखिनो ऽनिशम् ३ विप्रशापेनतेनाशंक्षणेनैवप्रपेदिरे । कर्मकृत्वासमायातस्सप्तमेदिवसेऽर्जुनः ४ इतिश्री भा० प्र० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कुरुक्षेत्रेमृतास्सर्वेक्षत्रियायेसमागताः। त्रयोवसिष्ठाः कुरुषुसप्तैवपांडवेषुच १ कथंधनंजयेनोक्तमेकोहम्पारगोऽभवम्। कुरुसैन्यार्णवंविप्रमहत्कौतूहलन्त्विदम् २ वाचक उवाच ॥ नकुरुक्षेत्रवार्तेयमर्जुने सबयदुवंशी मरिगये१हमारे सबके यह बड़ा आश्चर्य तथा बड़ी शंका होती है कि छोटाभी राजा होता है सोभी आपने राजका सब हाल मालूम करिलेता है और धर्मराज सातद्वीप को राजा उनको नहीं मालूम पराकि यदुवंशका नाशहोगया यदुवंशी भी छोटेनहीं बड़े आदमीथे२ वाचकबोले जिसदिन द्वारिका से अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया उसके दशदिन पेश्तर दूतों करिके धर्मराज सुनेथेकि बारंबार यदुवंशी आनंद करिरहेहैं३हे श्रोताजनो कालकीगति कठिन है ब्राह्मणके शाप करिके एक क्षणमें यदुवंश को नाश होगया तब सब को मृतक कर्म करिके सातवेंदिन अर्जुन युधिष्ठिरके पास आया ४॥इति भा० प्र०चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी॥१४ ॥श्लोक॥२५

कुरुक्षेत्र में जो क्षत्रिय आयेथे सो सब मरिगये कौरव में तीनबचे पांडव में सातबचे १ फिरि अर्जुन क्यों कहे युधिष्ठिर से जिस भगवान्की कृपासेती कौरव की समुद्ररूप सेनाको मैं अकेला पारगया २ वाचकबोले युधिष्ठिर से अर्जुन कहेकि

नेनैवभाषिता। विराटनगरस्यैषावार्तागोग्रहणोद्भवा ३
कृतेगोग्रहणेतत्रकौरवैर्भीष्मप्रेरितैः। पार्थस्तान्मूर्छिता
न्कृत्वासर्वेषाम्मुकुटानिवै। संगृह्यप्रययौशीघ्रंविराटाय
प्रदत्तवान् ४ इति० भा० प्र० पंचदशोऽध्याये पंच
दशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ परीक्षितिनृपेब्रह्मन्याते दिग्विजये
तदा। गानञ्चक्रुश्चकेतत्र पाण्डवानाम्महद्यशः १
वाचक उवाच ॥ दुष्टभीताश्चमुनयोगायकास्तत्रतेऽ

जिस भगवान् की कृपासेती कौरवकी समुद्ररूप सेना को
मैं अकेला पारगया यह बात कुरुक्षेत्र की नहीं है जब
कौरवोंने विराटकी गौवों को हरतेभये उहांकी बात यह है ३
भीष्मकी आज्ञाको पायके जब कौरवोंने बिराट की गाइयों
को हरतेभये तब अर्जुन नें सब कौरवोंको मूर्छित करिकै तथा
समस्त कौरवकी फौज में बड़े बड़े योधारहैं तिन्हों के मुकुट
लेके जल्दी विराट नगरको गया तथा विराट राजा को कौर-
वोंको मुकुट देताभया तबकी बात धर्मराज से अर्जुननेकहा
है ॥ ४ ॥ इति श्री भा० प्र० पंचदशोऽध्याये पंचदशवेणी ॥
१५ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछतेभये कि परीक्षित्राजा दिग्विजयकोगया तबपांड
वोंको बड़ायश मनुष्यगानकरतेभये तबराजा जहांगया उसी
जगहसो यशगान करनेवाले मनुष्य कौनहैं १वाचकबोले कि
जुआरीचोर व्यभिचारी ठग इनको आदिलेकै और अनेकदुष्ट
हैं तिन्हों करिकै डरैहैंजो मुनिजनसो सब पांडवोंकोयशगान
करिकै परीक्षित् को सुनाते भये कि राजा तेरेदादे लोग ऐसे
भयेकि जिन्होंके राजमें हम सब आनन्द से तप करतेथे और

भवत् । महाधनन्ददौतेभ्योनिर्भयंराजसत्तमः २ इति श्री भा० प्रथमस्कंधेषोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० १३ । १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञापृष्टोयदाधर्म्मोनोवाचक्लेश दायकम् । जानन्नपिमहाशत्रुमात्मनः कथमुक्तवान्॥ अन्तंमहदाश्चर्यमिदन्नोहृदिवर्तते १ वाचक उवाच ॥ एवंविचार्य्यहृदयेधर्म्मोनाकथयद्रिपुम् । पाण्डवेयोनृपो धीमान्सर्वज्ञास्यतिचेतसा २स्वप्राणसंकटेचैवपरेषामपि अब तेरे राजमें दुष्ट दुःख देते हैं ऐसामुनियोंका बचनसुनिकै परीक्षित् राजा उसी वखतदुष्टोंको नाशकरिकैमुनियोंको नि र्भयरूप बड़ा धन देता भया २ इ० भा० प्र० षोडशेऽध्याये षोडश वेणी ॥ १६ ॥ श्लोक १३ से ॥ १५ ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी यह बडा आश्चर्य हमारे सबनके हृदयमें है कि बयलरूप धर्मसे राजा परीक्षित् पूछते भये बैल रूपधर्म तुमको जो प्राणी दुःख देताहै तिसको मुझे बतावो तुम्हारे दुःखदेनेवाले प्राणीको मैं मारिडालूंगा तब धर्म अपने दुःखदेने वाले बैरीको जानतेथे कि कलियुग मेरेको दुःखदेता है फिरि क्यों नहीं राजासे बताये और झूठ क्यों बोलेकि अप ने दुःखदेनेवाले को मैं नहीं जानताहूं झूठबोलना धर्म का कामनहीं है १ बाचक बोलेकि धर्म अपने हृदयमें ऐसा विचा रिकै अपने बैरीको राजासे नहीं बताये क्याविचारे धर्म कि राजापरीक्षित् पांडवों का पोता है बड़ा बुद्धिमान्है अपने मन करिकै सब संसार को चरित्र जानि लेवेगा २ अपनाप्राण नष्टहोता होवै और झूठबोले से प्राण बचि जावै तथा दूसरे किसीको प्राणनष्टहोता होवै और झूठबोलेसे बचिजावैगातो

चानृतम् । सत्यम्भवतिवेदेषुचातोऽनृतमुदीरितम् ३ इति श्री भा० प्र० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७॥ श्लो० १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ राज्ञःपरीक्षितश्चैवंबुद्धिभ्रंशःकथं गुरो । योमृताहिंसमुद्धृत्यविप्रकंठे न्यवेशयत् १ मन्येकलिकृतंचेद्वैतथापिनचशोभते। नवर्तितव्यम्मत्क्षेत्रेकलिन्नृपेणवै २ वाचकउवाच ॥ सप्तवर्षोयदा बालोबालक्रीडाकुतूहले। मुनिंसंतर्जयामाससूत्रसर्पेण झूठबोलना सत्य होता झूठनहीं कहाता वेदोंमें ऐसा लिखाहै धर्म विचारेकि जो अपने बैरीको बताऊँगा तो उसी वखत राजा मेरेबैरीको मारिडालेगा मेरे को पाप होवेगा अपने मन से मेरेबैरी को जानिके जैसा चाहैगा वैसा करैगा इसवास्ते धर्म झूठ बोले ३ इति० भा० प्र० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७ ॥ श्लो ॥ १७ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी राजा परीक्षित् बडाबुद्धिमान् तिस्कीबुद्धि भ्रष्टक्यों होगई कि बुद्धिभ्रष्ट होके परीक्षित्मरेहुये सांपको उठायके मुनिके गलेमें पहिराय दिया यहक्या तमाशा किया बडा पागल होगा सो भी ऐसानहीं करैगा १ जो कदापि ऐसा मानि लेवैं कि परीक्षित् की बुद्धि भ्रष्ट कलियुगने करिदिया तोभी शोभानहीं होती क्योंकि कलियुगको राजा परीक्षित् ने टिकाया तब कलियुगको राजाकहथे कि हमारे राजमें तुम अपना पराक्रम मति करना ऐसी राजाकी तथा कलिकी बोली भईथीसो तुरन्तही कलि वाक्य अपना नहीं छोड़ैगा २ वाचकबोले राजापरीक्षित् सातबर्ष को बालक रहा तब बालकों के खेल खेलते २ पांडवों की सभामें बैठे

पावकम् ३ तेनशप्तस्सभास्थेनपांडवानान्निरीक्षताम्। त्वापिमृत्युस्सर्पेणभविताक्षुद्रबालक ४ इति श्री भा० प्र० अष्टादशोऽध्याये अष्टादशा वेणी॥१८॥श्लोक॥३० ॥

श्रोतार ऊचुः॥शापोदत्तश्चमुनिनान्नृपायसप्तमेह्नि। सर्पेणास्यभवेन्मृत्युरितिवाक्यमुदीरितम् १ तत्कथंस प्तदिवसास्सर्वेकार्याःकृतागुरो ।श्रुत्वाशापंसुतेराज्यंदत्त्वा गाङ्गाह्लवीतटं २ प्रयाणमुनिधीराणांशुकस्यागमना देच । पूजानास्वासनंतेषांकथाप्रश्नः पुनः पुनः ३

जो पावक नाम मुनि तिनको मृतक सर्प करिकै डराता भया ३ तब सभा में टिके जो पावक मुनि हैं सो परीक्षित्को शाप देते भए पांडवोंके देखते देखते कि हे दुष्ट बालक हमकोसर्प करिकै तूने डरवायाहै इसवास्ते तेरीभी मृत्यु सर्प करिकै होवैगी ऐसे मुनिके शाप करिकै राजाकी बुद्धि भ्रष्ट होगई तब ऐसा बड़ा पापपरीक्षित् करता भया ४ इ० भा० प्र० अष्टादशोऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतापूछते भये परीक्षित्को मुनिने शापदिया कि आजुके सातवेंदिन सर्प काटे से राजा की मृत्यु होवैगी१हे गुरुजी तब सातादिन में राजापरीक्षित् सब काम कैसा करता भया मुनि का शाप मुनिके पुत्रको राज देके परीक्षित् गंगा के तटपर गया२ फिरि सातदिन में मुनियों का आना तथा मुक्तिकी रस्ता में चतुर जो प्राणी तिनका राजा के पास आना शुकदेवजी को राजाके पास आना आदि लेकै और अनेक प्रकार को काम जैसा गंगातटपर आये जो देवमुनि राजऋषि औरभी बहुत से प्राणी तिनको पूजन करना तथा सब को आदर करना तथा वारंवार कथा में प्रश्न करना ये सब सातादिन में कैसा

वाचक उवाच ॥ श्रुत्वाशापंद्विजराजाभूत्वाव्याकुलमान सः । श्रीकृष्णम्मनसाध्यात्वाचाश्रुपूर्णोतिविह्वलः ४ प्रमाणंसप्तदिवसांविज्ञायचिन्तितोहरिः । दिनानांवर्द्धनंचक्रेनृपेणयदुनंदनः ५ गोलोकस्थोजगत्स्वामी पांडवानांसुहृत्सखा ६ इतिश्रीभागवतेप्र०एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ ३७॥

करते भये ३ वाचकबोले परीक्षितने ब्राह्मणों करिके अपने वास्ते मुनिके शापको सुनिकै व्याकुल होकै मनकरिकै श्रीकृष्ण को ध्यान करता भया परीक्षित्की आखों से जलबाहि रहा है ४ परीक्षित ने अपनी मृत्यु जानि कै विचार किया कि जिस दिन मेरे को शाप मुनिने दिया सो दिन आजु है क्योंकि कल मैंने मुनिका अपराध किया था आजु मेरेको शाप दिया आज से सातवें दिन मेरी मृत्यु होगी और काम मेरे को बहुत करना है ऐसा विचारि कै श्रीकृष्ण को चिंतवन किया तबकृष्णने सातदिनों को बढ़ाय देतेभए ५ कैसे श्रीकृष्ण हैं गोलोक में टिके हैं पांडवों के मित्र हैं तथा बड़े प्यारे हैं इस प्रकार से दिन बड़े होगये तब राजा परीक्षित सातदिन में सबकाम करिलेते भए ६ इतिश्री भा०प्रथमस्कंधे एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ ३७ ॥

इतिश्रीमद्भागवतप्रथमस्कंधशंकानिवारणमञ्जरीसुधामयीटीकासहितासमाप्ता श्रीरस्तुशुभम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

द्वितीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतारऊचुः॥शुकःप्रोवाचराजानम्पुराणम्ब्रह्मसम्मितम् । श्रीमद्भागवतन्तत्रलक्षणन्तन्नदृश्यते १ वाचकउवाच ॥ इतिहासान्यनेकानिभूपानाञ्चरितानिच॥श्रीमद्भागवतेशास्त्रेप्रोक्तानिमुनिनापुरा २ ब्रह्मज्ञाश्चैव जानन्तिसर्वंब्रह्ममयञ्जगत् । भेददृष्ट्याभिमानेनभूरिभावःप्रदृश्यते ३ ब्रह्मवेत्ताशुकोयोगीब्रह्मरूपंचराचरम् ।

श्रोता पूछतेभये श्रीशुकदेव जीने राजा परीक्षित् से कहे कि भगवान् नाम यह पुराणजो है सो ब्रह्मके गुणसे मिला है पण भागवत में ब्रह्मके लक्षण को वर्णन एक भी नहीं देखि परता १ वाचक बोले व्यासमुनि पाहिले भागवत में अनेक प्रकार को इतिहास तथा राजोंका चरित्र वर्णन किया है २ ब्रह्मज्ञानी मनुष्य सब भले बुरे संसार को ब्रह्मरूप जानते हैं तथा जोप्राणी ब्रह्मज्ञानसे हीनहैं वोलोग अभिमान युक्तआंखों से बहुत प्रकार संसारको देखतेहैं भलाको भला बुराकोबुरा ३ शुकदेवजी ब्रह्मज्ञानी हैं चर अचर सबको ब्रह्मरूप जानते हैं

ज्ञात्वाऽतः प्रोक्तवान्भीत्यापुराणम्ब्रह्मसम्मितम् ४ इति भागवतशंका निवारण मजर्यां द्वितीयस्कंधेप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

द्वितीयस्यद्वितीयादौपुराब्रह्मनिरूपणम्। तत्पश्चाद्विष्णुभक्तिंचततश्चैवकथारतिं । मुनिनोक्तंकथन्त्वेतद्भ्रांतिदंवचनंगुरो १ वाचक उवाच ॥ कथायाश्श्रवणेनैव भक्तिरुत्पद्यतेसताम्। भक्त्याप्रवर्द्धतेज्ञानंज्ञानेनब्रह्मचिन्तनम् २ अतस्त्रीन्कारणानूचे मुनिर्ज्ञानविशारदः

इतिहास पुराण राजों का चरित्र इनको भी ब्रह्मरूप जानिके भागवत को ब्रह्म सम्मिति कहे हैं ४ इति भागवतशंकानिवारण मंजर्य्यां बुधाशिवसहाय विरचितायां सुधामयी टीका सहितायांद्वितीयस्कंधेप्रथमेध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥श्लोक॥८॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी व्यास मुनिने यह शंका देने वाला वचन कैसे वर्णन किया है द्वितीय स्कंध के दूसरे अध्याय के आदि में पहिले तो ब्रह्म को वर्णन किया तिस के पीछे भगवान् की भक्तिको वर्णन किया तिसके पीछे भगवान् की कथा की प्रीति वर्णन किया इसमें शंका यह है कि पेश्तर कथा की प्रीति तब भक्ति तब ब्रह्म चिंतवन होना चाहिये १ वाचक बोलते हैं हे श्रोताजनो कथा सुनने से सज्जनों के हृदयमें भक्ति उत्पत्ति होतीहै भक्तिकरिके ज्ञानहोताहै ज्ञान करिके ब्रह्म को चिंतवन होता है २ इसी वास्ते ज्ञान में चतुर जो व्यास सो मुक्ति होने वास्ते तीनधर्म वर्णन कियाहै तथा ब्रह्म के ध्यान में मस्त जो योगी हैं तिनको ऐसा विचार नहीं रहता कि यह बात पेश्तर वर्णन करना चाहिये या पीछे वर्णन करना चाहिये इस वास्ते पेश्तर वर्णन करने वाले को

पूर्वापरविरोधश्च क्कद्विनैवप्रवर्त्तते । योगिनास्त्रहृणोध्या नमग्नानान्नकदाप्यहो ३ इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्या येद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १ से ३२ ब्रह्मनि० श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरिकथा ॥

श्रोतार ऊचुः । म्रियमाणेनकिंकार्यमितिपप्रच्छभूप तिः । अनापृष्टः कथंप्रोचेसर्वदेवसुरार्च्चनम् १ वाचक उवाच ॥ संसारिणांसुखालाभार्थेविचार्य्यहृदयेमुनिः । अना पृष्टोपिराज्ञा च प्रोचेसर्वसुरार्चनम् २ मयोक्तैर्नवविधिना सुखंप्राप्स्यंतिमानवाः । स्वकार्य्यंवीक्ष्यहृदयेदेवान्सम्पू ज्यभिन्नशः ३ इति० भा० द्वि० तृ० अ० तृ० वे० ३ श्लो० २ पीछे बर्णन किये हैं और पीछे वाले को पेश्तर वर्णन किये हैं इ० भा० द्वि० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १ से ३२ ब्रह्मनि श्लो० ३३ भक्तिव० श्लो० ३६ हरि कथा ॥

वाचक से श्रोता पूछते भये शुकजी से परीक्षित् पूछे कि महाराज मरने वाले मनुष्यों को क्या कर्म करना चाहिये सो प्रश्न को उत्तर मुनि जी पीछे दिहें पण राजा सर्वदेव को पूजन नहीं पूछा तो भी मुनि ने सब देवों को पूजन क्यों वर्णन कि- ये हैं १ वाचक बोले शुकजी अपने हृदय में विचारे कि सब कामना सिद्धि होने के वास्ते जुदा २ देवतों के पूजन की विधि हम बर्णन करैंगे तब सब जीवों को सुख होवेगा ऐसा विचारि के राजा पूछा नहीं तौभी सब कामों के प्राप्ति होनेके वास्ते सब देवतों का पूजन जुदा २ कहे हैं २ शुक जी विचा रे कि सब मनुष्य अपने २ हृदय में अपने २ काम को देखिकै हमारी कही विधि करिकै देवतों को पूजन करिकै सुख को प्राप्त होवेंगे ३ इति भा० द्वि० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आदौद्वितीयस्कंधस्यशुकेनोक्तो नृपोत्तमः । भूपतेऽयंवरः प्रश्नोननेमेमुनिरीश्वरम् १ तृतीयाध्यायमुल्लंघ्यतेषूक्ताविविधाः कथाः । बहुश्लोकैश्चतुर्थेचकथन्नेमेहरिंमुनिः २ वाचक उवाच ॥ श्रुता शुकेनबहुशः परीक्षिद्वैष्णवोत्तमः।नकदादर्शितस्तेननच सन्मानितः पुरा ३ नूतनांसंगतिम्वीच्ययवरम्प्रश्नमुवाच सः । पश्चात्प्रीतिन्निशम्यास्यजहर्षबहुशोमुनिः ४ सर्प्पबाधाविनाशेचविधिलेखविभाज्जने । शक्तः प्रापयितुम्भूपंवैकुंठेमुनिसत्तमः ५ जगज्जंबहुभिश्श्लोकैर्नमन्विष्णुपदांबुजम् ६ इति भा० द्वि० चतुर्थेध्यायेचतुर्थवेणी ॥४॥ श्लो० १३ ॥

श्रोता पूछते भये द्वितीयस्कंधकी आदिमें शुकजी परीक्षित से कहेंकि राजा यह तुमारा प्रश्न श्रेष्टहै पण मुनिने भगवान् को नमस्कार क्योंनहीं किए नमस्कार करना चाहता रहाहै १ तीन अध्यायको बिताय के तथा तीनों अध्यायों में अनेक प्रकारकी कथा कहिके तथापीछे से बहुत श्लोकों करिके चौथे अध्याय में भगवान्को नमस्कार मुनिजी क्यों किए २ वाचक बोले अनेक दफे शुकजी सुनेथे कि राजा परीक्षित् बड़ा वैष्णव है पणकभी राजा को देखे नहीं थे तथा पेश्तर कभी परीक्षित् पूजन भी मुनिको नहीं कियाथा ३ शुकजी राजाकी नवीन संगति देखिके तारीफ मात्र किया है राजा तुमारा प्रश्न अच्छा है क्योंकि नई मुलाकात में तुरंत मनप्रसन्न नहीं होता पीछे से भगवान् में परीक्षित् की प्रीति देखिके मुनिजी बहुत खुशी भए४ शापकी भय नाश करने को तथा ब्रह्मको लेख उजाटि देने में तथा परीक्षित् को वैकुंठ में प्राप्ति करने में शुकजी

श्रोतार ऊचुः ॥ नारदोविष्णुभक्तश्चवैष्णवानांशिरोमणिः । विस्मृत्यकमलानाथमज्ञवच्चविधिंकथम् १ सम्मेनेईश्वरंज्ञानीदेवर्षिर्विष्णुवल्लभः । वाचक उवाच ॥ यत्रकुत्रमुनीन्दृष्टामायामोहितचेतसः २ सर्वान्वदति देवर्षिः कीदृशीसाविमोहिनी । व्यतीतंचिरकालंवाएवं मानयुतेमुनौ ३ मायेशो मोहयामास मायाम्प्रेर्यमहामुनिं । मायाग्रस्तश्चदेवर्षिम्मेनेब्रह्माणमच्युते ४इति भा० द्वि० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चराचराणांसर्वेषाम्भगवान्वैपरा समर्थ हैं ५ इस वास्ते बहुत श्लोक करिकै भगवान् के चरणों को नमस्कार करिकै गर्जते भए६ इति० भा० द्वि० चतुर्थे ऽध्याये चतुर्थ वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता बोलते भए नारदमुनि भगवान् के बड़े भक्त तथा वैष्णवों में शिरोमणि हैं ऐसे नारद भगवान्को भूलिकै ब्रह्मा को ईश्वर क्यों मानते भए १ वाचक बोले जिस किसी स्थान पर मुनियों को भगवान् की माया करिकै मोहित भये देखिकै माया से दुःख को प्राप्ति जो मुनिजन तिन सब से नारद अभिमान से कहते थे कि जो माया तुम सबको मोहि लिया वो कैसी है ऐसा अभिमान करते करते नारद को बहुत दिन बीति गये२ तब भगवान् नारदको उन्मत्त देखिकै मायाको आज्ञादेकै उसी माया करिकै बड़े मुनि जो नारद तिनको मोहित कराय दिया है तब माया से ग्रसित भए जो नारद सो पागल होगये ब्रह्मा को ईश्वर मानि लिया३।४इति० भा० द्वि० पंचमे ऽध्यायेपंचमवेणी॥५श्लो०१॥

श्रोता पूछते भये ईश्वर जो है सो तीन लोक चौदा भुवन

यथाःसमेतवकुमाराणांभवस्यचपरस्यवै १ विज्ञानस्य चधर्म्मस्यकथमुक्तंपरायणम् । विधिनाभिन्नभावश्च बलात्कारः कथंकृतः २ वाचक उवाच॥ संसारवाचक श्शब्दोभवशब्दोविकथ्यते। शिवश्चापिभवोज्ञेयश्शब्द शास्त्रानुमानतः ३ भवस्यमध्येयेजाताः चकारादनुमीय ते।जंगमस्थावराश्चैवप्राणिनस्सचराचराः। तेषाम्पराय णोविष्णुर्मदुक्तानांविशेषतः ४ इतिश्री० भा० द्वि० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ११ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मणोक्रमसन्मार्गेनपतन्तिममे न्द्रियाः। स्वात्मजांवीक्ष्यकामेनरन्तुंचक्रेकथम्मनः १ में संपूर्ण चराचर का मालिक है ऐसे भगवान् को नारद से ब्रह्मा ने क्यों कहा कि हमारा तुमारा तथा सनकादिक को महादेव को विष्णु को विज्ञान को धर्म को मालिक है १ ऐसा भिन्न भाव जबरदस्ती से ब्रह्मा क्यों करते भये श्लोक २ को अर्थ मिला है इसको युग्म कहते हैं व्याकरण के मत से भव संसार को नाम है तथा महादेव का भव नाम है ३ ब्रह्मा ऐसा कहैं कि (भवस्यच) इस श्लोक में चकार है उस चकार करिके इस श्लोक का यह अर्थ भया कि भव जो संसार तिसके बीच में उत्पन्न जो चर अचर जंगम स्थावर प्राणी उन सब के मालिक भगवान् हैं पण हे नारद जिसको २ हम तुम से कहा है उनको तो विशेष से मालिक है ४ इतिश्रीभा० द्वि० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥६ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोता बोले कि नारद से ब्रह्मा कहे कि हमारी इन्द्रिय खोटी रस्ता में नहीं प्राप्त होती सोई ब्रह्मा अपनी लड़की को देखिके उसी के संग रमण करने को मन क्यों किया महा-

वाचक उवाच ॥ एकदा च सुरैः सार्द्धंजग्मतुर्गिरिशालयम् । विधिविष्णूमुनिगणैः सुमग्नौ दुःखसागरे २ तारकस्यवधार्थायप्रार्थितुंगिरिजापतिं । तस्थतुस्तौ शिवस्याग्रेविनयानतकन्धरौ ३ प्रार्थनांचक्रतुस्तस्यतारकस्यवधंप्रति । तत्क्षणेगरुडंवश्यंहंसीकामविमोहितं ४ दृष्ट्वामन्दस्मितञ्चक्रेविधिर्भूरिसभातले । विधेर्मानंच विज्ञायशशापगरुडोपितं ५ स्वजात्यांरन्तुकामोऽहंनान्यायंपक्षिणाञ्चनः । भवान्स्वतनुजांवीक्ष्य रन्तुकामोभविष्यति ६ एवंशापवशीभूतो तनुजांरन्तुमुद्यतः । नो

चंडाल कर्म १ वाचक बोलते भये तारक नाम राक्षसको किया दुःख को समुद्र तिसमें डूबेहुये जो ब्रह्मा तथा विष्णु सो एक दिन देवतों को मुनियों को संगलेके ब्रह्मा तथा विष्णु कैलास को जाते भये २ तारक नाम दैत्य के मारने वास्ते शिव जीकी प्रार्थना करनेवास्ते शिवके सामने ब्रह्मा विष्णु देव मुनि साहित टिकते भये बारंबार ब्रह्मा विष्णु शिव को नमस्कार करते भये ३ तारक को मारने वास्ते शिवकी प्रार्थना ब्रह्मा विष्णु करते भये उसी समय में बड़े जितेंद्रिय जो गरुड़ तिनको हंसीके कामकरिके मोहित ४ ब्रह्मा देखिके उसी शिव की सभा में मुस्कियाते भये ब्रह्मा के अभिमान को जानिके गरुड़भी ब्रह्माको शाप देते भये ५ अपनी जाति के संग हमने क्रीड़ा करने को विचार किया है तथा हमसब पक्षियों को अन्याय यह कर्म नहीं है तौभी तुमने हमारी मस्करी कियाहै ऐसेही हमारे शापसे तुम अपनी कन्याको देखिके उसी के संग रमण होनेको मन करोगे ६ इस प्रकार के शापवश ब्रह्मा होके अपनी लड़की के संग रममाण

स्त्वेच्छयाविधिस्सुज्ञश्श्रोतारःकारणन्त्विदम् ७ इति० भा० द्वि० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥७॥ श्लो०३२॥

श्रोतारऊचुः ॥ नकेष्वपिचशास्त्रेषु श्रुतंकैश्चापिसज्जनैः। दिधिक्षोस्त्रिपुरंशम्भोर्मार्गंसिंधुर्ददौकिल १ विधिनातत्ररामायसिंधुर्मार्गंददौतदा।पुरंदिधिक्षोश्शंभोश्विशंकामहीयसी २ वाचक उवाच ॥ स्याच्छंभुस्सर्वदा मग्नोभक्तप्रेमपयोनिधौ। कदापिकुरुतेक्रोधंसिंधुर्मार्गं ददातिन ३ दिधक्षोस्त्रिपुरं शम्भोर्भक्तप्रेमौघवारिधिः।

होनेको मन करता भया हे श्रोताजन आपनी इच्छा से ब्रह्मा नहीं ऐसा चंडालकर्म करनेलगा ॥ ७॥ इति भा० द्वि० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७॥ श्लोक ॥ ३२॥

श्रोता पूछते भये किसी शास्त्र में भी कोई सज्जन भी नहीं सुने कि त्रिपुरासुर के पुरको जलाने की इच्छा शिवने किया तब शिवको पुरके सान्ने जानेवास्ते समुद्रने रस्तादिया १ तथा नारद से ब्रह्मा कहा कि, रामजी को लंकामें जानेवास्ते समुद्रनेरस्ता दिया जैसा तीनों पुरको जलाने की इच्छा किहे जो महादेव तिनको समुद्रने रस्तादिया यह बड़ीशंका है २ बाचक बोले हे श्रोता हो सुनो शंकरके चरणों में शंकर के भक्तों को बहुत प्रेमसोई समुद्र है उसी समुद्र में शिवसर्व काल मस्तरहतहैं जबकभीभक्तोंके ऊपरशिवक्रोधकरते हैं तब प्रेमरूप समुद्र शिवके भक्तोंके पास जानेवास्तेक्रोध को रस्ता नहींदेता ३ जब तीन पुर जलाने के वास्ते विष्णु आदि सब देवतामहादेव की प्रार्थना किया तब शिव जी अपने हृदयमें थोरात्रिपुर जोभक्त तिसके ऊपर नाराजहोते भयेउस नाराज होने के कारण से प्रेम समुद्र ने रस्ता दिया रस्ता देना यह

निष्ठुरत्वाद्ददौमार्गं विधिनोक्तमतोवचः४इति०भा०द्वि० सप्तमेध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥२४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ म्रियमाणस्स्वयंराजा कथम्पप्रच्छ सर्वशः । चराचराणांसर्वेषां कर्म्माणिविविधानिच १ वाचकउवाच॥ऋषिणानुग्रहीतंचज्ञात्वात्मानन्नृपोत्तमः म्रियमाणोपिपप्रच्छ सर्वकर्मविनिर्णयम् २ इति० भा० द्वि० परीक्षितप्रश्नेअष्ट०नवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिणाप्रेरितोब्रह्मा तपःकर्तुंसमुद्यतः । किन्नामसस्तपश्चक्रे संस्थितोजलजासने १ वाचकउवाच ॥ समागृह्यहरेराज्ञांसमाधायमनोविधिः । स है कि त्रिपुर को जलाने वास्ते बिलकुल निश्चय शिव करि लिहे इसी वास्ते ब्रह्मा ने कहा कि शिव को समुद्र ने रस्ता दिया ४ इति भा०द्वि०सप्तमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥८श्लो०॥२४॥

श्रोता पूछते भये परीक्षित् राजा मरबेयोग्य हो रहा है तो भी भगवान् को चरित्र छोड़िके सब चराचर जीवों के कर्म को क्यों पूछता भया क्योंकि मरण समयमें तो मूर्ख भी जंजाल छोड़ि के ईश्वर में मन लगाता है और परीक्षित् तो बड़ा बुद्धिमान्था १ वाचक बोले परीक्षित्नेजाना कि मेरेऊपरशुक जीकीकृपाहोगई अबमेरीदुर्गति नहीं होगी ऐसाजानिकेमरबे योग्यहोगा तौभी सबकर्मोंके निर्णयको पूछता भयाकि संसार में यह सब कर्मों का निर्णय बना रहैगा २ इतिश्री भा० द्वितीयस्कंधे अष्टमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये भगवान् की आज्ञा को पायके ब्रह्मा कमल के फूल पर बैठि के तपस्या करते भये पण उस तपस्या को क्या नाम है तप तो गनती से हीन है इसवास्ते ब्रह्माने कौन

नमोच्चारणंविष्णोस्तपश्चक्रेऽतिप्रेमतः २ इति० भा० द्वि० नवमाऽध्याये शंकानि० मं० तपस्तपीयानित्यस्य शंकानिवृत्तौदशमवेणी॥ १० ॥ श्लो० ॥ ७ ॥

श्रोतारऊचुः॥विपश्चितोनगृह्णंति मायासृष्टेउभेपिच। शंकायुक्तमिदंवाक्यं तौकौब्रह्मन्वदस्वनः १वाचकउवाच संसारेऽव्याप्यब्रह्मांशोजीवरूपश्चराचरे।द्वितीयस्सगुणो देवस्सविरंचिमहेश्वरः । एतेचोभेनगृह्णंतिमायासृष्टेवि पश्चितः २ इति० भा० द्वि० उभेअपिनगृह्णंतीत्यस्यशं कानि० दशमेऽध्यायेएकादशवेणी॥११॥श्लो०॥३५॥

सा तप किया १ वाचक बोले भगवान् की आज्ञाको ब्रह्मा पा-यके अपने मन को हृदय में स्थिर करिके बड़े प्रेम से भगवान् के नाम का जप करते भये सोई तप ब्रह्मा किया २ इ० भा० द्वि० नवमेऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछते भये शुकजी कहैकि ज्ञानी प्राणी माया करिके रची हुई जो दोवस्तु तिसको नहींग्रहण करते हेब्रह्मन् वोदो चीज क्या हैं सोहम लोगोंसे आपकहो १ वाचक बोले भगवान् को अंश जीव रूप होके चरअचर संसार में व्याप्त होरहा है एक जीव को ज्ञानी लोग नहीं मानते कि भगवान् का अंश भंगी आदि खोटी देहों में क्यों बसैगा तथा दूसरी चीज गुण सहित विष्णु ब्रह्मा शिव इनको भी नहीं मानते कहते हैं कि येभी सुखी दुखी होते हैं तथा जन्मते मरतेहैं इस दोयचीजको ज्ञानीलोगनहीं ग्रहण करते ॥ २ ॥ इतिभागवतशंकानिवारण मंजर्य्यांद्वितीयस्कंधे दशमेऽध्यायेएकादशमवेणी११श्लोक३५

समाप्ताचेयं श्रीमद्भागवत द्वितीयस्कंधशंकानिवारण मञ्जरी॥श्रीरस्तुशुभम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी

तृतीयस्कंधे ॥

सुधामयी टीका साहती विरच्यते ॥

श्रोतारऊचुः ॥ निजराज्येसदाप्रीतिर्य्यमस्यहृदये गुरो । तद्रूपोविदुरोजातस्तीर्थसेवनसत्क्रियाः । कथंच कारसर्वेषांप्रकृतिर्दुस्त्यजासदा १ वाचकउवाच भव द्भिश्चैवसत्योक्तःप्राणिनाम्प्रकृतिस्सदा। दुस्त्यजाचैव सर्वेषांसद्गतिस्तद्विमार्जिनी । वेदव्यासांशसम्भूतोयमः क्रूरप्रशासनः २ अतःक्रूरमतिन्त्यक्त्वा विदुरस्सत्क्रिया रतः। बभूवभगवद्भक्तो व्यासस्यकृपयानिशम् ३ इति

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी यमराजके हृदय में अपने राज में सदाप्रीतिबनी रहती है सोई यमराज विदुरहोते भये तथा विदुरहोके तीर्थसेवन आदिलेके सुंदरिक्रिया क्यों करतेभये यम को अकातिआर चलते तो दूसराजीव भी सुंदर कर्म नहीं कर ने पावता आपु यम क्योंकिया तथा सबजीवभी जिसी योनिमें जाँयगे उसी योनि में प्रकृति बड़े दुःख से छुटैगी यम की प्रकृति क्यों छूटिगई कि तीर्थ करते भये१वाचक बोलते भये हे श्रोताहो तुम सबजन सत्य कहतेहो सब प्राणियों की प्रकृति बड़े दुःखसे छूटती है पण उसी बड़े दुःखसे छूटनेवाली प्रकृ- तिको साधु लोगों की संगति बुरी प्रकृति को सुंदरि प्रकृति

श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंका निवारणमंजर्य्यांशिव सहायबुधवि० प्रथमाध्यायेप्रथमवेणी॥१॥श्लो०॥१७॥

श्रोतारऊचुः॥ सर्वेषुविष्णुभक्तेषुसर्वशास्त्रेषुज्ञानिषु। उद्धवःकथितोऽत्यन्तम्भक्तज्ञानाशिरोमणिः १ बोधितोऽपिमहाबुद्धिःकृष्णेनापिकृपालुना। शुशोचविरहाक्रान्तस्स कथम्मूर्खवत्प्रभो २ वाचकउवाच॥ विष्णोर्विरहजन्दुःखं कलौख्यापयितुंसुधीः। विष्णुभक्तोमहाज्ञानी चकारशुचमुद्धवः ३॥ इति० भा० तृ० द्वितीयाऽध्याये द्वितीयवेणी॥ २॥ श्लो०॥ १॥

करिदेती है दुष्ट जीवोंको त्रास करनेवाले यम हैं पण व्यास के अंशसे बिदुर होके जन्मते भये हैं २ इस वास्ते यमराज बिदुररूप होके दुष्टमति त्यागि कै सुंदरि क्रिया करते भये व्यासकी कृपासे बिदुर भगवान् के भक्त होते भये ३ इति श्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुध विरचितायांसुधामयीटीकासहितायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी १॥ श्लोक॥ १७॥

श्रोताबोलतेभये सबविष्णुके भक्तों तथासबज्ञानियोंमेंतथा सबशास्त्रोंमें उद्धव बड़ाज्ञानी तथा बड़ेभक्त १कृपाकेसागर श्री कृष्णजीनेउद्धवको ज्ञानभीदिया ऐसेबड़ेज्ञानी उद्धव बिदुरसे श्रीकृष्णबलदेव तथा सबयदुवंशियोंको नाशसुनिके मूर्खसरीके कैसाशोक करतेभये २ बाचक बोले उद्धवनेविचारकिहे जोमैं भगवान् के बिरहको सुनिकै शोच करोंगा तौमेरा चरित सुनिकै कलियुग में सबजीव भगवान् को बिरह सुनिकै शोचकरैंगे प्रेमसे तब सबजीवोंको कलियुग में बैकुंठ मिलैगा इस वास्ते उद्धव ज्ञानी हैं विष्णुभक्त भी हैं तोभी शोच करते भये

श्रोतारऊचुः ॥ विदुरश्चोद्धवेनोक्तोब्रह्मविद्यामवाप्तवान् । सान्दीपनेश्चश्रीकृष्णास्तत्कथम्मुनिसत्तम १ वाचकउवाच॥चतुष्षष्टिकलाप्राप्तास्तस्मात्कृष्णेननिश्चितम् । सर्वंचराचरमिदम्ब्रह्मांशेनप्रकाशितम् २ दृश्यते नाणुमात्रंहितंविनायाद्विचेष्टितम् । अतोवाचोद्धवोधीमान्ब्रह्मविद्यामधीतवान् ३ इति० भा० तृ० तृतीयाऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उद्धवोविदुरम्प्रोचे मह्यंचसभगवान्परः । प्रोवाचसाचकाब्रह्मन्नात्मनःपरमास्थितिम् १

कलियुग में जीवों को सुख होने के वास्ते ॥ ३ ॥ इतिश्रीभागवतेतृतीयस्कंधे द्वितीयेऽध्याये द्वितियेवेणी ॥ २॥श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछतेभये हे मुनिसत्तमजी उद्धव विदुर से कहतेहैं कि सांदीपन नाम गुरु के पासते श्रीकृष्ण मोक्ष प्राप्त होने की विद्या प्राप्त होते भये सोमोक्ष विद्या प्राप्तहुये फिरिरागद्वेष क्यों जीवोंसे करते भये १ वाचक बोलतेभये सांदीपन गुरु से श्रीकृष्ण चौसठि कलाको प्राप्त होतेभये पणतीनलोक चौदह भुवन बृह्मके अंश करिके प्रकाशमान होरहा है चरअचर चौसाठि कला भी २ ऐसी कोई संसार में बस्तु नहींहै कि,जो बस्तु बृह्मके अंशसे हीन होवे ऐसा ज्ञान चौसाठि कलाके मिस करिके कृष्ण सिखतेभये तब जिस जीव को जैसी इच्छा रही तिसके संग तैसी लीला किहैं फिरि रागद्वेष कहांरहा इस वास्ते उद्धव बृह्मविद्या प्राप्ति होनेको कहते भये ३ इतिश्रीभा० तृ० तृतीयाऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछतेभये हगुर जी उद्धव विदुर से कहेकि, हेविदुर भगवान् मेरे को बड़ी सुन्दर स्थिति आपनी बताते भये सो

वाचकउवाच ॥ भक्तौवसतिविश्वात्मा भगवान्जग
दीश्वरः । परमास्थितिश्चसातस्यताम्प्रोवाचोद्धवाय
सः २ इति०भा०तृ०चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी४ श्लो१९

श्रोतार ऊचुः ॥ मैत्रेयोक्तमिदंवाक्यं वीर्यमाधत्तवी
र्य्यवान् । स्वमायायांजगत्स्वामी स्वात्मरुद्धस्यतच्च
किम् १ वाचकउवाच॥आधारपात्ररहितन्नच किंचिच्च
राचरे । सृष्टिपात्रमतोमायां कृत्वात्रिभुवनेश्वरः २ त
स्यामाधत्तस्ववीर्यं मिच्छारूपंजगत्पतिः । नचात्रग्रहणं
कार्य्यं रेतसोवीर्य्यशंकया ३ इति० भा० तृ० पंचमाऽध्या
येपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

भगवान् की बड़ी सुंदर स्थिति टिकना क्या है १ वाचक
बोले भगवान् की बड़ी सुंदर स्थिति भक्ति में है सबको
त्यागिकै भक्ति में ईश्वरवसते हैं भगवान्की बड़ीस्थिति-
सोई है उसीबड़ी अपनी स्थिति को भगवान् उद्धव से कहा
तेभये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥
श्लोक ॥ १९ ॥

श्रोतापूछते भये कि, बिदुर से मैत्रेय ऐसा वाक्य कहेकि
अपनी माया में भगवान् वीर्य को स्थापना करते भये तब
अपने शरीरमें सबबस्तु टिकाये जो भगवान् सोऊभी शरीर
के बाहेर किसी बस्तुको नहीं जानेदेते तौ मायामें कैसावीर्य्य
को धारण करते भये १ बाचक बोले हे श्रोताजनो तीनलोक
चौदहभुवन में आधारके पात्रसे हीन कोईभी चीज नहींहै
इस वास्ते ईश्वर सृष्टिको आधारको पात्र मायाको बनायकै २
सृष्टि की रचना करनेको भगवान् की इच्छाहै सोई इच्छा
रूप वीर्य माया में भगवान् धारण करते भये इसवीर्य के धारण

श्रोतार ऊचुः॥ मुनिःप्रोवाचविदुरम्भ्रातुः क्षेत्रेभुजिष्यया। जनितोसिमहाबाहो तस्यक्षेत्रंकथंचसा १ कदाप्युद्वाहिताशूद्री नक्षत्रेणश्रुताचनः। वाचक उवाच॥ अर्थोनैवात्रकर्तव्यो क्षेत्रशब्दस्यपौर्विकः २ क्षेत्रेधर्म्मावनेभ्रातुर्भुजिष्यागर्भसंभवः। बभूवविदुरोज्ञानी वंशेनष्टेऽनुजस्यच ३ इतिश्री भा० तृ० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी॥ ६॥ ॥ श्लोक २०॥

श्रोतार ऊचुः॥सृष्टिविस्तारप्रश्नेन किमापविदुरः

रूप मैत्रेय के वाक्य में बीर्य को ग्रहण नहीं करना जैसा जीवोंकोवीर्य होता है उस बीर्यकी शंकानहीं करना॥३॥इति० भा० तृ० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी॥ ५॥ श्लोक॥२६॥

श्रोतापूछते भये मैत्रेय बिदुरसे कहे कि हे बिदुर व्यासके भाईको क्षेत्रजो दासी तिसमें तुमजन्मेहो तब व्यासको भाई जो शन्तनु राजाको तथा सत्यवती को पुत्र तिसका क्षेत्रदासी कैसे होतीभई क्योंकि हमसब शास्त्र तथा लोकमें नहीं सुने कि कोईभी क्षत्री होके शूद्रीकेसंग अपना विवाह किया है १ बाचक बोले कि(भ्रातुःक्षेत्रे)इस श्लोकमें पेश्तरजो क्षेत्रशब्द को अर्थ नहीं किया जावेगा २ इस श्लोक में क्षेत्र कहे धर्म कीरक्षा करने वास्ते दासीके गर्भसे बिदुर बड़े ज्ञानी जन्मते भये क्या धर्म नष्ट होतारहा जिसकी रक्षा करने वास्ते बिदुर जन्मे व्यासके छोटेभाई जो चित्रांगद तिसकावंश नष्टहोता रहा तिसकी रक्षा करनेवास्ते बिदुरजन्मे रक्षाकरना ये है कि धृतराष्ट्र तथा पांडुको ज्ञानसिखाना येहीरक्षा॥ ३॥ इ०भा० तृ० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी॥ ६॥ श्लोक॥ २०॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भक्तिज्ञान बैराग्य प्राप्त होने का

फलम् । ज्ञानभक्तिविरागादिंत्यज्यपप्रच्छयंसुधीः १ वाचकउवाच ॥ भगवद्ध्यानवेलायांयोगिनोहृदयेनिशम् । स्वकीयेचैवपश्यन्ति ब्रह्मसृष्टिंचराचरम् २ अश्रुत्वासृष्टिरचनां कथम्पश्यन्तितेहृदि । योगिनोऽतोविपृच्छन्ति सृष्टिसंकल्पनाम्मुदा ३ इतिश्री भा० तृ०सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ १५ से २९तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मैत्रेयोवर्णयामास शृंगारंनरवद्धरेः । महायोग्यमिदम्मन्ये भूपतेस्स्वाशनंयथा १ वाचक उवाच ॥ अज्ञानिनाम्प्रलोभाय शृंगारन्नरवद्धरेः । यंश्रुत्वा

उपाय त्यागिकै जिस प्रकार ब्रह्मा संसार को बनाये उसको बिस्तार मैत्रेयसे बिदुर पूछते भये जिसकरिकै बिदुर को क्या फल प्राप्तभया१ योगीजन नित्य ईश्वर को ध्यानअपने हृदय में करतेहैं उस वखत ईश्वरके स्वरूप में चरअचर संसार को देखतेहैं२ संसारकी रचना बिना सुने अपने हृदयमें कैसे देखेंगे ईश्वर कोरूपसहित इस वास्ते योगीलोग संसार की रचनाको बहुत आनंदसे पूछतेहैं ३ इतिश्रीभा० तृ० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥ से २९ तक ॥

श्रोता पूछतेभये मैत्रेयने मनुष्यसरी के भगवान् की पोशाक विदुर से वर्णन किया यह महा अन्यायहै क्योंकि त्रिलोकनाथ को मणिमोती हीराआदिकी पोशाक भई तो क्या आश्चर्यहै जैसाराजा को कोई कहै कि राजा आजु बहुत प्रकार को सुंदर भोजन करतेरहेहैं यह बड़ा अयोग्यहै जिसके कोटियों रुपैया घर में पड़ा है और नित्य आताहै उसको सुंदर भोजन करना क्या आश्चर्य है तैसेही त्रिलोकनाथकी पोशाक के वर्णन करने में बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले

भगवद्भक्तिन्तेपिकुर्वन्तिमोहिताः २ मुनिभिर्वर्णित श्चातश्शृंगारोनरवद्धरेः ३ इति श्री भा० तृ० शंकानि० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८॥श्लो०॥२३से३१तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ हरिःप्रोवाचब्रह्माणं सर्गमुद्यमसा वह। पुरःस्थितोदर्शयित्वा स्वरूपंजगदीश्वरः १ स्व वाक्याद्दर्शनाच्चैवश्रेष्ठमत्वोद्यमंकथम्।प्रेरयामासब्रह्मा णंकर्तुंयंकमलापतिः २ वाचक उवाच ॥ विनोद्यमज्ञासि

ज्ञानी जनतो भगवान् को त्रिलोकनाथ जानतेही हैं पण अ- ज्ञानी जन भगवान् को कुछभी नहीं जानते सुंदरि चीज को भगवान् करिके जानते हैं उन अज्ञानियों को लोभ करने वास्ते मनुष्य सरीके ईश्वर को शृंगार वर्णन भया है जिस भगवान् के शृंगार को सुनिके अज्ञानी जन भी मोहकोप्राप्त होवेंगे जानेंगे कि ऐसे बड़े लक्ष्मीवान् भगवान् हैं ऐसा जा- निके अज्ञानी भी भगवान् की भक्ति करेंगे धनवान् होने वा- स्ते फिरि धीरेधीरे ज्ञानी होजावेंगे २ इस वास्ते मुनिजनोंने मनुष्य की पोशाक सरीके भगवान् को शृंगार वर्णन करते हैं ३ इतिश्री भा० तृ० अष्टमे ऽध्याये अष्टम वेणी॥ ८ ॥ श्लोक २३ ॥ से ३१ तक ॥

श्रोता पूछतेभये ईश्वर ने ब्रह्माके सामने खड़ेहोके अपना रूप ब्रह्मा को दिखायके ब्रह्मासे बोलेकि हेब्रह्मा संसारके बनाने वास्ते तुम उपाय करो १ तब ईश्वर ने अपने स्वरूपसे तथा अपने दर्शन देने से उद्यमको बड़ा क्यों मानते भये जिस उद्यम करनेवास्ते ब्रह्मा को आज्ञा दिया क्या ईश्वरका दर्शन ब्रह्माकिया तथा ईश्वरका वचन इनदोनोंसे ब्रह्मा संसार को न बनाय सकता उद्यम बिना यह बड़ी शंका होती है २ वाचक

क्वंति सर्वेऽर्थाभवसागरे । अङ्गोभगवतश्चाय मुद्यमो भगवत्तनुः ३ तद्वाक्याद्दर्शनाच्छ्रेष्ठो हरेर्भवसुखाकरः। अतोस्यहरिणाप्रोक्त मधिकत्वञ्चब्रह्मणे ४ इतिश्रीभा० शं० तृ० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥श्लो० ॥ २९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पुनःपप्रच्छमैत्रेयंविदुरस्सृष्टिकल्पनां। कथमेतन्महाबाहो शंकेयम्भारगर्विता ॥ वाचक उवाच ॥ मणिहीनोयथासर्प्पो गतवित्तोयथाजनः । नष्टपुत्रोयथाप्राणी बभूवविदुरस्तथा २ श्रीकृष्णविरहा बोलेकि हेश्रोताहो इस संसाररूप समुद्रमें बिनाउद्यम कोई भी काज नहीं होसक्ता क्योंकि यहउद्यम जोहैसो ईश्वरकी देहहै ३ ईश्वरके दर्शनते तथा वचन से बड़ानहींहै परंतु संसार में उद्यम जोहैसो सुखकी खानिहै इसवास्ते ब्रह्मा से ईश्वर उद्यमकी बड़ाई करिके उद्यम करनेको ब्रह्माको कहते हैं ४ इतिश्री भा० शंकानि० मं० तृतीयस्कंधे शिवसहाय बुध विरचितायां नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥९ ॥ श्लोक ॥ २९ ॥

श्रोतापूछते भये विदुरने मैत्रेय से फिरि सृष्टिकी रचना क्यों पूछते भये हे गुरुजी यह शंका बड़ेभारसे गर्बकरती है कि मेरेको काटनेवाला कोई बुद्धिमान् संसार में नहीं है १ वाचक बोले जैसा मणिको नष्टदेखिके सर्प्प दुःखी होताहै तथा धन को नष्टदेखिके मनुष्य दुःखी होता है पुत्रको नष्टदेखिके सब जीवदुःखी होतेहैं तैसेविदुरभी २ उद्धवसे श्रीकृष्ण को तथा यदुबंशियों को कौरवपांडवों को तथा सबराजोंको नाश सुनि के कृष्णके बिरहकरिके बहुत दुःखी बिदुर होगयेबिह्वल भये पर किसी चीजकी सुधि नहीं रहती तैसे बिदुरकी सुधि

क्रान्तस्सश्रुत्यचोद्धवात्तयम् । यादवानांकुरूणांच त
थाचसर्वभूभुजाम् ३ इतिश्री भा० तृ० दशमेऽध्याये
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः । मुनिनोक्तंकथंब्रह्मन्संभवस्सर्वदेहिनां।
बभूवकर्मभिस्सृष्टेः पूर्वंकर्मनजायते १ वाचक उवाच ॥क
र्मशब्दोपिसंप्रोक्तोमुनिभिर्ज्ञानतत्परैः । कृत्यंचसर्वयोनी
नांनतुप्रारब्धमुच्यते । जनिर्बभूवभूतानांकर्मभिर्भवकार
णैः२इतिश्रीभा०तृ०एकादशेध्यायेएकादशवेणी॥११॥
॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विधेर्वेदशपुत्राश्चकथंजाताःपृथक्
नहीं रही कि यह प्रश्न पहिले हमकिहेरहेहैं विह्वल होके सृष्टि
कीरचना पुनि पूछते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० तृ० दशमेऽध्याये
दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी मैत्रेयमुनि विदुरसे कहेकि सब
प्राणियोंकी उत्पत्ति अपने २ कर्मकरिकै भई पण जब प्रलय
में सब चर अचर नष्ट होगया एक ईश्वर बचे कछु दिन पीछे
ईश्वरकी नाभिसे कमलको पुष्पभया उस फूलमें ब्रह्माजन्मले
कै सृष्टिको बनानेलगे तबसृष्टि के पेश्तरकर्म कहांरहा कर्मतो
प्राणी जन्मैंगे कर्मकरैंगे तब होवैगा यह बड़ीशंका है १ वा-
चक बोले इसलोक में ज्ञानवान् जो मुनिहैं सो कर्म को प्रारब्ध
नहीं कहते सब योनिके करनेके उपायको कर्म कहते हैं जिस
योनिका जैसा उपाय ब्रह्मादेखे हैं उसी योनिको उसी प्र-
कारको रूप शब्द चलना खाना पीना आदि सब कारण करिकै
जुदा २ सब योनियों को बनाये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० तृ०ए-
कादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

पृथक्। शरीरात्किमभिप्रायाद्ब्रह्मन्वदसविस्तरम् १ वाचकउवाच॥ मानसानकृताःपुत्रानारदाद्याविरंचिना। ज्ञात्वासांसारिकांस्तांस्तुविद्यापक्षविवर्जितान् २ कदा मोहंकदाक्रोधमित्याद्वितत्परान्ध्रुवम्। शरीरांगात्पृथक् चक्रे तेषांजन्मस्वभावतः ३ इतिश्री भा० तृ० शं०नि० द्वादशोऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२॥ श्लो०॥ २२॥

श्रोतार ऊचुः॥ सृष्टिपूर्वकथंजाता राक्षसाःकनकाद यः। येषांभारसमाक्रान्ता गताभूमीरसातलम्। रसातल

श्रोता पूछते भये हे आचार्यजी ब्रह्मा अपनी देहते जुदा२ अंगसे दश १० पुत्र क्यों उत्पन्न करते भये देहके एकअंगसे क्यों नउत्पन्न किया दश १०पुत्रोंको जुदा जुदा उत्पन्न करने का क्या अभिप्राय है १ वाचक बोले नारद आदि दशपुत्रोंको ब्रह्मा ध्यानसे जानिलिहेकि येहसारेपुत्र मोक्षविद्याको नहीं जानैंगे संसारके कर्ममें बड़ेचतुर होवेंगे ब्रह्मा ऐसाजानिकै नारद आदि दशपुत्रों को मनकरिकै नहीं उत्पन्न किहे २ ब्रह्मा जा- निलिहेकि निश्चय करिके हमारे दशपुत्र कभी मोहको कभी क्रोधको कभी कामको इन आदिलकै अनेक जो संसारको कर्म तिसमें चतुर होवैंगे इसवास्ते देहके जिसअंगको जैसा स्वभाव उस अंगकरिकै वैसही पुत्रब्रह्मा उत्पन्न करते भये ३ इ० भा० तृ० द्वादशाऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२॥ शूलोक॥२२॥

श्रोतापूछते भये हेगुरुजी भागवत तृतीयस्कंध बीसअध्या- यके तेरहशूलोकके अर्थसे मालूमपरताहैकि हिरण्यकशिपुआदि राक्षसोंके मरपीछे सृष्टि रचना ब्रह्मा ने किये हैं तब सृष्टिके पेशतर हिरण्यकशिपु आदिराक्षसकैसे जन्मते भये जिनराक्ष- सोंके भारकरिकै पृथ्वी रसातलको चलीगई तथा रसातलको

गतास्मिन्नि ज्ञाताब्रह्मणाकथम् १ वाचकउवाच ॥ मनु
नोक्तादिनेपूर्वं मारीचकुलसम्भवाः। राक्षसाबहवोजाताः
सृष्टिश्चार्द्धप्रवर्द्धिता २ हिरण्याक्षेनवसुधा तपसाद्योति
तेनवै। हतातूर्णमधस्सप्त कल्पितानविरंचिना ३ व्यती
ताघटिकैकाच पृथिव्याहरणेकृते। यावद्यायान्तिविज्ञप्तुं
सुरास्तावत्स्वयम्भुवा। मनुनोक्ताश्रुतातूर्णं हरिराविर्बभू
वह ४ इतिश्री भा० तृ० भूमिहरणशं० मं० त्रयोद०
त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विहायसर्वान्सचराचरान्तनून् ज
गन्निवासोजगतीविमोचने । दधारकेनैवसुनिन्दितां

गईथकी ब्रह्माको क्योंनहीं मालूम परा मनुराजा पृथ्वीका
हालब्रह्मासे कहेतौ ब्रह्माको मालूमपर यह बड़ीशंका होती है१
वाचकबोले जिसदिन ब्रह्मासे स्वायंभूमनु कहेकि पृथ्वी को
तो हिरण्याक्ष हरिलेगया उसदिन मरीच के कुलमें राक्षस
बहुत जन्मेथे तथा उसीदिन आधी सृष्टिभी वानिकै वृद्धिको
प्राप्तहोरही है२ हिरण्याक्षने तपस्याके प्रभावसे पृथ्वीको हरि
लेगया जल्दी नीचेके सातलोकों को ब्रह्मा उसदिन नहींरचे
थे केवल नीचे सातलोकों की जगहपर जलभराथा ३ पृथ्वी
को हरण भये पीछे घड़ीएक बीतिगई जबतक देवता पृथ्वी
का हाल ब्रह्मासे कहने वास्ते आने लगे तबतक मनुने जल्दी
पृथ्वी का हाल ब्रह्मासे कहते भये तब ब्रह्मा सुनिके दुःखी
होगये तब उसीवखत ईश्वर प्रगट होके सब कामकिया इस
प्रकार से सृष्टिके पेशतर राक्षस जन्मतेभये४इति०भा० तृ०
शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥१५॥

श्रोतापूछते भये ईश्वरने पृथ्वीको हिरण्याक्षसे छुड़ाने

तनुंक्रोडसिंत्रकर्म्मग्रसितोयथाजनः १ वाचक उवाच॥ विज्ञायतंब्रह्मवरप्रमादिन्नमृत्युमाव्रंगमितासुरेश्वरः।लोकेसजीवैस्सचराचरैरहोविरंचिकृत्यैरपिक्रोडवर्ज्जितैः २ विचार्य्यैवंरमानाथो धृत्वाक्रोडतनुंहरिः।जघानाशुजलादुदैत्य मुज्जहारावनिंहरिः ३ इतिश्रीभा० तृ० शूकररूपधारणशं० मं० चतुर्दशेऽध्या० चतुर्दशवेणी॥१४॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नसन्तिसर्वैरिपवोविकुंठिनो वैकुंठलोकेमदनादयोगुरो । प्रचक्रतुर्भेदमतिंजयोकथं शेपुर्द्विजाश्चाप्यरुणाननाश्चतौ १वाचकउवाच ॥ हरिर्विजघ्ने वासूते अनेक प्रकारके सुंदर २ शरीरको त्यागिकै जैसाकोई जीवबुराकर्मकरै उसीजीवको बुरेकर्मकारिकै खोटीयोनि धारण करनापरै तैसेबडी निंदित सूकरकी योनि तिसको क्यों धारण किहे सूकरकी योनि बडीखराबहै १ वाचक बोलेकि हेश्रोता हा ईश्वरजानिलिहे कि,यह हिरण्याक्ष ब्रह्माके वरदान करिकै बहुत प्रमादमें मस्तहोरहाहै संसारमें जितने चरअचरप्राणी ब्रह्माके बनाये हैं तिन्हों करिके यह मरैगा नहीं सूकरको बर्जित करिके सूकर से मरैगा यह बडी आश्चर्य की बात है २ लक्ष्मीकेनाथ ऐसा विचारिकै सूकर का शरीरधरिके जल्दी हिरण्याक्ष को मारिडाले तथाजलमें डूबती जो पृथ्वी तिसको जलसे उठायकै पृथ्वीके स्थानपर पृथ्वी को टिकाते भये३इति०भा०तृ० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी१४ श्लोक॥१॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी प्राणियों की बुद्धिके नाश करने वाले कामक्रोध आदिलेके अनेक दुश्मन बैकुंठमें नहींहैंऐसा हमसब शास्त्रमें सुनाहै फिरिजय बिजय भेदयुद्ध क्योंकिया।कि

भृगुवल्लभांयदा निरीक्ष्यक्रोधारुणचक्षुषंद्विजाः। तन्तैश्चपृष्टः करुणाकरोहरिः कथंत्वयीशेमदनानुजोऽप्यरिः२ प्राणिनामिन्द्रियाणिप्राः प्रबलास्सर्वदेहिनाम्। योगिनामपिचेतांसि समदीनस्यकाकथा ३ आकर्षतीतिमुनिभिश्शनकाद्यैर्नस्वीकृतम्। अतोमायावशीकृत्वा हरिस्स्वा

ये ब्राह्मण ईश्वरके पासजाते हैं कुछु उत्पात करेंगे तथा दूसरे फिरि सनकादिमुनि लालमुखहोके क्रोधसे उनदूनोंको शापदिया यहतो मृत्युलोक सेभी वैकुंठलोक कामक्रोध भेद आदिको समुद्र होगया १ वाचक बोले भगवान्ने भृगुकीछाती को जब मारिडाले तब ईश्वरके नेत्र क्रोधकरिकै लाल होगये तबऐसे ईश्वरके रूपको देखिकै सनकादिक भगवान्से पूछते भये हे भगवन् आपुतो बड़ेदयालुहो आपुमें कामदेव को छोटाभाई जो क्रोधसो क्यों है २ ईश्वर सनकादिकसे बोले हे ब्राह्मण सब प्राणियोंकी इंद्रियबड़ी जबरदस्त हैं योगियों के चित्तको खैंचिकै बुरी रस्ते में पटकि देती हैं तौ मेरी गरीबकी क्या कथा है इन्द्री के वशहोके मेरेभी क्रोध होगया३ ईश्वरके ऐसे सुंदर वचनको सनकादिक सुनिके नहीं मानतेभये अभिमान से मनमें विचारे कि क्या इन्द्री करि सक्तीहैं सनकादिकके मानकोजानिके कुछदिन पीछेईश्वरने अपनेदास जय बिजय को मायाके वश करिके ४ जयविजय करिके सनकादिकोंको मरवाते भये तथा सनकादिकोंकेहृदय में क्रोधकी वृद्धि करायके जयविजय को सनकादिकोंसे शाप

टीप—तृतीयस्कन्धकेअ० १४ श्लोक १ में कारणसूकरात्मनःकी शंका है कारणसो शंकायोनिधर्म॥

नुचरौतदा ४ ताडयित्वाचतांस्ताभ्यान्तेषुक्रोधंव्यवर्द्धयत् ५ इतिश्रीमद्भागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजर्यांजयादिसनकादिक्रोधकारणे पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी१५ ॥ श्लो० ॥ ३० से ३३ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ हरिर्यर्याचिरेविप्रान चिरेणैवमेऽन्तिकम् । इमावायास्यतोविप्रै स्स्वीकृतंतच्चिरंकथम् १ चेज्जन्मत्रयसम्बंधं तथापि क्षणमात्रतः । कोटिशोरचितुं शक्तो भगवान्जगदीश्वरः २ वाचकउवाच ॥ सुज्ञाजानन्तिमांल्लोके नेतराभुवनत्रये।अनयोःकारणंकृत्वा प्रावि

दिवाते भये जयविजय को दुःख होवेगा पण सनकादिकों के मान नाश होनेके वास्ते यह काम ईश्वर करतेभये ५ इतिश्री भा० तृ० शंकानि० मं० पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ३० से ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये भगवान्ने सनकादिकोसें कहेकि हेब्राह्मण लोगो ये दोनों हमारे पार्षद जल्दी हमारे पासको प्राप्त होवें यह बरदान प्रसन्न होके हमको दीजिये सनकादिक बोले हेईश्वर बहुत जल्दी आपुके पास आयजावेंगे फिरि बहुत युगतक क्योंराक्षस बनेरहे जल्दी ईश्वरकेपास नहीं आये १ हे गुरुजी जो यह कहोकि तीन जन्मकी करार सनकादिकोंने करिदिया इस वास्ते देरभई ईश्वर के पास आने में भगवान् तो एक क्षणमें कोटियों योनि बनानेको समर्थ हैं तीन जन्म की क्या बातहै २ वाचक बोलेकि ईश्वरने विचार किये कि तीनलोक में ज्ञानी प्राणीतो हमको जानतेहैंकि ईश्वर

र्भावत्त्रिधाममम ३ भविष्यतिचितौसर्वे मांज्ञास्यन्तिजग
त्पतिम्।इतिप्रथयितुंकीर्तिंविलम्बोहरिणाकृतः ४ इति
श्री भा० तृ० शंकानि० मं० षोडशेऽध्यायेचिरकालेषो
डशवेणी १६ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वकक्ष्यातीत्यहेमाक्षोनित्यन्तिष्ठति
स्वालयेदिनेशंनश्रुतोस्माभिरीदृशोनैत्यिकस्तनुः १ मा
यिकोविश्रुतोस्माभिःराक्षसानान्त्वनेकधा। वाचकउवाच
भ्रातरौद्वौमहावीरौ सूर्यभक्तौ बभूवतुः २ शरीरवर्द्धनं

जगत्पतिहै परंतु मूर्ख लोग हमको कुछभी नहीं जानते इस
वास्ते ये दोऊ राक्षस होवेंगे तौ इनके वास्ते तीन दफे
हम मृत्यु लोक में प्रगट होवेंगे ३ तबहमको सब मूर्खभी ज-
गत्को पति जानेंगे इसवास्ते भगवान् दोनों पार्षदों को अ-
पने पास आने में देरकिया ४ इति० भा० तृ० शं० मंज०
षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछतेभये हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु ये दोनों भाई
अपने २ कर्म करिके सूर्य को नीचे करिके आपनेघरमें टिकते
भये राक्षसों को शरीर जोनित्य बनारहता है सो ऐसा लंबा
शरीर किसी राक्षसको हमलोग नहीं सुने मायाकरिके अनेक
शरीर लंबा राक्षसोंका सुनाहै पण नित्य रहनेवाला शरीर
ऐसानहींसुना १ वाचकबोले हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु येदोनों
भाई सूर्यके बड़े भक्त होते भये सूर्यके पूजनको नित्य करते
भये उस पूजनमें जोकोई विघ्न करनेवाले देवता तिनको त्रास
करने वास्ते शरीर को बढ़ातेभये २ शरीरकी लम्बाई देखिके
विघ्न करने वाले देवता भागि गये इसवास्ते पूजन के वखत

कृत्वा त्रासार्थं विघ्नकारिणाम्॥ नित्यंसूर्यंपूजयन्तावतोदेह विवर्द्धनम् ३ इति० भा० तृ० देहवृद्धिशं०मं०सप्तदशे ऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ हरेर्नानावताराश्च श्रुतानःशांतिसंयुताः। प्रचंडमन्युःक्रोडेन ब्रह्मन्कस्मात्कृतस्तदा १ वाचक उवाच ॥ येषांभगवतादत्तो यस्स्वभावश्चराचरे नत्याज्यस्तैःकदासश्च इतितस्यानुशासनम् २ स्वभावंक्रोडवपुषःपालितुंहरिणाकृतः ३ इति ०भा० तृ० क्रोधवृद्धिशं मं० अष्टादशाऽध्यायेअष्टादश वेणी १८ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जघानकर्णमूलेवै प्रथमोक्रंकरेण

नित्य शरीरको बढ़ायके पूजन करिके घरमें आयके दो घड़ी पीछे छोटी देहकरिके घरमें रहना३ इतिश्री भा० तृ० शं०मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ शूलोक ॥ १७ ॥

श्रोता बोलतेभये हेगुरुजी भगवान् के अनेक अवतार हम सबोंने सुनेहैं कैसे हैं बड़ेक्षमावान् परन्तुशूकर भगवान्नेयुद्ध में बड़ा क्रोध क्योंकिया १ वाचक बोले संसारमें जिस प्राणी को जैसास्वभाव भगवान्ने दिहेहैं उस स्वभावको वहप्राणी कभीनहीं त्यागेगा ऐसीजीवोंके वास्ते ईश्वरकी आज्ञाहै२ शूकरको स्वभाव बड़ा क्रोधी होता है इस वास्ते शूकरके देह की मर्यादा पालन करनेवाले शूकर अवतार भगवान् प्रचंड क्रोधकरते भये ॥ ३ ॥ इतिश्रीभा० तृ०अष्टादशाऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ शूलोक ॥ ८ ॥

श्रोतापूछते भये पाहिले युद्धमें हिरण्याक्षको शूकरभगवान्

तम् । हरिःपश्चात्स्तुतावुक्तः पदाहतकथम्मुने १ वाच
कउवाच ॥ आहतोशक्तसस्तस्य पत्प्रपश्यन्मुखन्तथा।
तनुंससर्जतस्याय मत्र्थोव्यासप्रकीर्तितः २ इति०भा०
तृ०१९अ०पदाहतशं०नि०मं०१९वे०श्लोक॥ २९॥

श्रोतारऊचुः॥ विधिर्देहंवितत्याज भूयोभूयःपुनः
पुनः। रचित्वाचरन्दित्वाच भूरिशःप्राणिनःकथम् १
वाचकउवाच॥ रचित्वामानसींसृष्टिं ग्लानिन्दृष्ट्वातदु
द्भवाम्२ ग्लानिबीजंतनुंज्ञात्वा तत्यक्त्वान्यंसमादधौ।
तस्मिन्नपिनिरीक्ष्यैवपुनस्तत्याजतामपि३ इतिश्रीभा०
तृ० विविधदेहत्यागशंकानि० मं० विंशाऽध्यायविंशवेणी
२०॥ श्लो०॥ २८ से ४७ तक॥

हाथके थपड़से कानकेनीचे मारेतब हिरण्याक्ष मरिगया ऐसा वर्णनभया हिरण्याक्षके मरेपीछे शूकरकी स्तुति देवतोंनेकिया। तब देवतोंने कहे कि शूकरके पगसे मारिगया राक्षस येदोबात की बड़ी शंका है १ बाचक बोलतेभये(पदाहतः) इसका अर्थ व्यासजी ऐसा वर्णन कियेहैंकि भगवान् करिकै मारा जो राक्षस सो भगवान्को चरण तथा मुखदेखते २ शरीर को त्यागिदिया ॥२॥ इतिश्री भा० तृ०शंकानिवारण मं० एकोन विंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ श्लोक॥ २९ ॥

श्रोता बोलतेभये बूह्माने अनेक प्रकारकेप्राणियोंको बनाय कै बारंबार अपनी देहको क्यों त्यागते भये १ बाचक बोले बूह्माने अपने मनसे प्राणियोंकी सृष्टि बनायके पीछे उसी सृष्टिसे उत्पत्ति जोग्लानि तिसको देखिकै बूह्मा जानिलिये कि यह मेरीशरीर ग्लानिको बीज है ऐसीअपनी देहकोजानि

श्रोतार ऊचुः॥महदाश्चर्यमेतन्नःश्रुतम्भागवतगुरो। दशवर्षसहस्रंच चकारकर्दमस्तपः। भार्यार्थेनैवमुनिभिः कृतंकैश्चापिनश्रुतम् १ वाचकउवाच॥ देवहूत्यैवरोदत्तो बालेवयसिविष्णुना। तवात्मजोभविष्यामिमातर्वैकपिलो ह्यहम् २ ज्ञात्वैवंकर्दमोधीमान् नारदस्योपदेशतः। नान्यैर्ज्ञातन्तपश्चक्रे भार्यार्थेमुनिसत्तमः ३ इति० भा० तृ० कर्दमविवाहार्थेतपश्चक्रेइत्यस्यशंकानि०मंएकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी॥ २१॥ श्लो०॥ १६॥

श्रोतारऊचुः॥ कर्दमोक्तिरियम्ब्रह्मन्मनुम्प्रतितवा

के उस देहको त्यागिके दूसरीदेह धारण करतेभये उस देहमें भी ग्लानि देखितो उसदेहको भी त्यागि देतेभये॥२३॥ इ०भा० तृ० विंशेऽध्यायेविंशवेणी॥ २०॥ श्लोक ॥२८॥ से ४७ तक

श्रोता बोलतेभये हेगुरुजी भागवतमें हमसबने ऐसा सुनाहै किकर्दममुनिनेस्त्रीप्राप्ति होनेवास्तेदशहजार१००००बर्षतपस्या करतेभये यह बड़ा आश्चर्य है कि कोईमुनि स्त्रीप्राप्ति होने वास्ते तप नहीं किया ऐसा हम सबने सुनाहै१ बाचक बोले देवहूती लड़की रही तब भगवान् बरदान दिहोकि हेमाता तुमारापुत्र हमहोवैंगे कपिल हमारानाम होवैगा २ इसबरदान का हाल नारदमुनि कर्दमसे कहेथे और कोईमुनि जानता नहींरहा इसचरित्र को ऐसा नारदके उपदेशको पायकै कर्दम मुनि देवहूतीको अपनीस्त्री होनेवास्ते तपस्या करतेभयेबिचारे कि देवहूती जो हमारी स्त्रीहोवैगीतो कपिल हमारेपुत्रहोवैंगे३ इति०भा०तृ०एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी॥ २१॥श्लोक॥१६॥

श्रोता पूछतेभये कर्दममुनि स्वायंभुव मनुसे कहेकि तुमारी

त्मजा। अप्रमत्ताकथंज्ञात्वा मुनिनासावरांगना १ वाच कउवाच॥ आविर्भावोभगवतःश्रुत्वातदुदरेमुनिः। वि चार्य्यहृदयेस्वीयेप्रमत्तायास्सुतोहरिः। भविष्यतिकथं श्रीशो मुनिनोक्ताप्यतोहिसा २ इति० भा०तृ०अमत्ता तवात्मजेत्यस्यशं० मं द्वाविंशाऽध्यायेद्वाविंशवेणी २२ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारऊचुः॥ पुराययाचेभवनं देवहूतिर्निजंपतिम्। रत्यर्थंकल्पितंदृष्ट्वा नातिप्रीतिमनाःकथम् १ वाचकउ वाच॥ अप्रभावविदापूर्वन्देवहूतिर्बभूवह। दृष्ट्वाप्रभावं स्वपतेर्विमानंतपसाकृतं २ किंयाचितंमयातुच्छं मोक्ष

कन्या देवहूती प्रमाद कर्मोंसे हीनहै सुंदरकर्म करनेवाली है इसवास्ते हम विवाह करैंगे यहबड़ी शंकाहैकि कर्दममुनि देवहूती को कैसे जाने कि प्रमत्त कर्म्मों से रहित है १ वाचकबोलतेभये कर्दममुनि नारद के मुखसे देवहूती के उदर से भगवान्‌को जन्म सुनिकै अपने हृदयमें विचार किहेकि बुरे कर्म करनेवाली स्त्रीकेपुत्र भगवान् कैसे होवैंगे भगवान् को जन्म सुनिकै कर्दम जानिलियेकि देवहूती उत्तम कर्म करनेवाली है इसवास्ते मनसे कहे २ इ० भा० तृ० द्वाविंशेऽ ध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये देवहूतीने अपने पति जोकर्दम मुनि तिनसे पेश्तर तो रतिसुख वास्ते सुन्दर मकान बनाने वास्ते याचना की जब कर्दम मुनि ने अद्भुत मकान बनाये तब मकान को देखिकै उदास क्यों होगई१वाचक बोलते भये पे- श्तर देवहूतीने अपने पतिके प्रभावको नहीं जानतीथी तपस्या

मार्गोनयाचितः । एनंप्राप्य महाबुद्धिमित्यप्रीतमना भवत् ३ इति० भा० तृ० अप्रीतमनेत्यस्यशं० त्रयो विंशाऽध्यायत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ ॥श्लो०॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचकर्दमोजायां सत्त्वयाराधितोहरिः । सुतस्तेभवितविष्णुर्हरिःकुत्रार्चितस्तथा १ वाचकउवाच ॥ इहजन्मनिसाविष्णुम्पूजयन्तीदिवानिशं।पुत्रार्थेहृदयेस्वीये तद्ज्ञातंकर्दमेनवै २ इतिश्रीभा० तृ० त्वयाराधितः अस्यशं० मं चतुर्विंशाऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ देवहूतिः सुतं प्राह निर्विण्णाहं

करिके कर्दम मुनिने विमान बनाया तिसको देखिकै अपने पतिके प्रभावको जानतीभई कि ये सिद्धहैं २ मैंने ऐसा समर्थ पति पायकै तुच्छ मकान मांगा मोक्ष नहीं मांगा इस वास्ते उदास होगई ३ इतिश्री भा० तृ० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कर्दमने देवहूती कोकहेकि तुमनेईश्वर को पूजन किया इसवास्ते भगवान् तुमारे पुत्र होवैंगे यह भ्रम होती है कि किस जन्ममें परमेश्वर को पूजन देवहूती करती भई १ वाचक बोलेइसीजममें देवहूती अपने हृदयमें रातिदिन भगवान् को अपनापुत्र होनेवास्तेमानसिक पूजन करती रही यह देवहूती के कर्मको कर्दममुनि जानिलेतेभये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥श्लोक॥४॥

श्रोता पूछतेभये देवहूतीनें कपिलसे कहीकि हेपुत्र खोटी

सुतेन्द्रियात्। असतश्चैवपप्रच्छपुनर्मुक्तिसुतंकथम् १ वाचकउवाच ॥ निर्विरणापिसुतंदृष्ट्वा हरिंनारायणंप्र भुम्।मुक्तिलुब्धा च पप्रच्छ पुनस्तत्पुष्टिहेतवे २ इति० भा० तृ० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५ श्लोक७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वैंद्रियास्सुरैस्सार्द्धंतमुत्थापितुमोज सा। यत्नंचक्रुश्चनोत्तस्थौसाविराट्कोमुनीश्वर १ वाचक उवाच ॥ सोविराडत्रनज्ञेयोयस्माज्जातमिदंज गत्। विराड्देहोत्रविख्यातोयश्चैतन्येनचेतितः २ इति० भा० तृ० विराडित्यस्यशं० नि० मं० षड्विंशाऽ ध्याये षड्विंशवेणी २६ ॥ श्लो० ॥ ६१ ॥

इंद्रियोंसेतो मैं निर्विरण कहेछूटिगईहोंतो फिरि कपिलमुनिसे मुक्ति होनेका उपाय क्योंपूछतीभई क्योंकि जो खोटी इन्द्रियों सेछूटिगया वोतो संसारसेछूटिगया उसको मुक्तिहोनेका उपाय पूछनेसे क्याकाम है वाचक बोलतेभये देवहूती खोटीइन्द्रियों से छूटिगईहै तौभी भगवान् को अपना पुत्रदेखिके मुक्तिहोने वालेकामों की लोभकरिकै तथा मुक्तिके कर्मोंको पुष्टकरनेवास्ते पूछती भई १।२॥इति० भा०तृतीयस्कंधेपंचविंशेऽध्यायेपंचविंश वेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥

श्रोता पूछतेभये हेमुनियों में ईश्वर वाचकजी जलमें जो बिराट् रूप अंडरहा तिसको उठाने वास्ते सब इन्द्रीगण अपने अपने देवतोंसहित यत्नकरतीभईपण वहतो नहीं उठा उहांसे वह विराट् कौन है वाचक बोले जिस विराट् ईश्वर करिके ये तीन लोक चौदह भुवन उत्पन्न होतेहैं वह विराट् उसको नहीं जानना चाहिये यहतो विराट् कहे चौरासी लाख योनिकी देहको विराट् मुनियोंने कहेहैं जो देह जीवकरिकै चैतन्य

श्रोतार ऊचुः ॥ अहंकारेणसंग्रस्तोजीवोभवतिनिश्चितम् । परेच्छयास्वेच्छयाचशंकेयम्महतीचनः १ वाचक उवाच ॥ परेच्छयानैवनचैवस्वेच्छयामानाभियुक्तः प्रभवजीवः । कदिन्द्रियाणांनितरांचसंगतोविमूढभावंगमितोनिरंजनः २ सुरापात्रेयथागंगागंगापात्रे यथासुरा । अन्योन्यासम्प्रतीतिश्चतथाजीवस्यसज्जनाः ३ इति० भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशाऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० २ ॥

होरही है जीवसे हीन नष्ट होजातीहै सब इंद्रिय तथा देवता देह में रहते हैं पणजीव बिना नष्ट होजाती हैं ऐसी देहरूप विराट् जीवको पायकै चैतन्य होगई ॥१२ इतिश्री० भा०तृ० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षडविंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोतापूछते भये जीव निश्चय करिकै अभिमानी हो जाता है सो भगवान्की इच्छा करिकैकि अपनी इच्छा करिकै भ्रष्ट होताहै यह हमारे सबके मन में बड़ी शंका है १ वाचक बोले हे श्रोताजनो निरंजन जो जीवहै सो न तौ अपनी इच्छाकरिकै अभिमानी होताहै तथा न भगवान्की इच्छा करिकै अभिमानी होता है खोटी इन्द्रियोंकी नित्यसंगति करताहै उसी संगातिसे मूर्ख होके अभिमानी हो जाता है २ जैसा मदिराके बरतन में गंगाजल रखिजावैगा तौ जल मदिरा नहीं होवैगा जल रहैगा पण मनुष्य मदिरा जानिकै उसको छुवैंगे नहीं तथा गंगाजल के बरतनमें मदिरा रखिदेवैगा तौ मदिरा गंगाजल नहीं होवैगा मदिराई रहैगा पण मनुष्य जानैंगे कि इसमें गंगाजल है इसी प्रकार गंगाजलसरीके जीव मदिराको

श्रोतार ऊचुः॥ सबीजस्यैवयोगस्यवक्ष्येहंलक्षणं शुभम्। इत्युवाचप्रसूम्प्रीत्यानबीजम्प्रोक्तवान्मुनिः १ ब्रह्मन्कोयोगबीजश्चकृपांकृत्वावदस्वभो। वाचक उवाच सतांसंगेसतांसंगेयोऽनुरागोविदृश्यते २ निशानुरागः सततंयोगबीजः सउच्यते। नोचेस्वमातरंज्ञात्वामुनिः पक्तहदं शुभाम् ३ इति० भा० तृ० शं० मं० अष्टाविंशे अध्यायेअष्टाविंशवेणी॥ २८॥ श्लो० १॥

श्रोतार ऊचुः॥ जननीकपिलेनोक्तासर्वभूतेषुसंस्थि तम्। तिरस्कृत्यार्च्चतेर्चायांभस्महोतुरिवाफलम् १

पात्र सरीके खोटी इन्द्री तिसकी संगतिसे अभिमानीहोगया ३॥ इतिश्री भा० तृ० शं० मं० सप्तविंशेऽध्यायेसप्तविंशवेणी २७॥ श्लोक॥ २॥

श्रोताबोले कपिलजी अपनी मातासे बोले कि,हे मैया बीज साहित योगको लक्षण मैं तुमसे कहोंगा ऐसा अपनी मासे कहेथे पण योगकाबीजसहित लक्षणक्यों नहींकहेथे हेगुरुजी योगके बीजको लक्षण क्याहै सो कृपा करिकै आप कहो १ वाचक बोले सज्जनोंकी संगति में प्रेम तथा दुष्टोंकी संगति में प्रेम नहीं करना ऐसा विचार करिकै नेत्रसे नित्य भगवान् में स्नेह देखना तथा दुष्टकर्मको बुरादेखना सोई योगके बीजको लक्षणहै कपिलने पेश्तर जानेथेकि, हमारी माता ज्ञानमें कच्चीहै इसवास्ते योगके बीजको लक्षण कहनेकोकहेथे पीछे संगति किहेपर मालूम करिलियेकि मातातो ज्ञानमें बड़ी पक्की है इसवास्ते योगके बीजको लक्षणनहीं कहे१।३ इतिभा० तृ० अष्टविंशे ऽध्याये अष्टविंशवेणी॥ २८ ॥ श्लोक ॥ १॥

श्रोतापूछते भये कपिल मुनि मातासे बोलेकि हेमाता सब

कपिलेनेदृशंवाक्यंकथमुक्तन्द्विजोत्तम। अज्ञाश्चैवन्नवेदानांवदन्तिवाक्यखंडनं २ वाचक उवाच ॥ सर्वज्ञानामिदंकर्मनत्वपक्कहृदांक्वचित्। सर्वज्ञाजननीतस्य सर्वज्ञः कपिलोहरिः। अतः प्रोवाचसद्ब्रह्मव्यापकत्वं जगत्पतिः ३ इ०भा० तृ० शं० मं० एकोनत्रिंशे० एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो० २२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पाशैर्बध्वागलेजीवंविकर्षन्तियमानुगाः। जीवस्यपुद्गलंनास्तितदभावेकथंगलम् १

चर अचर जीवोंमें हम टिकेहैं हमको तो कोई जानते नहीं हमारा अनादर करिकै प्रतिमाको पूजन करतेहैं उन लोगों को कुछभी फल नहीं प्राप्त होता जैसा राखमें होम करने वालोंको कुछभी फल नहीं होता १ हेमुनियोंमें उत्तम प्रतिमा को पूजन वेदको वाक्य मानिकै होताहै ऐसे वेदोंके वचन को छेदन मूर्खभी नहीं करैंगे तथा कपिल मुनि बड़े ज्ञानी होके वेदों के वचनको छेदन क्यों किया कि प्रतिमाको पूजन नहीं करना २ वाचक बोले सब देहमें ईश्वरको माननाकि ईश्वर सब देहमें टिकेहैं यह ज्ञानियोंके कर्महैं ऐसा मानने वाले प्राणी प्रतिमाको नहीं मानैंगे यह कर्म अज्ञानी को नहीं है अज्ञानीको कर्म प्रतिमाको पूजनहै कपिलकी माता ज्ञानीहै तथा कपिल ज्ञानीहैं इसवास्ते ऐसा ब्रह्मज्ञानका वाक्य कहे हैं अज्ञानीके वास्ते नहीं कहे ३ इति श्री भा० तृ० शंकानि० मं० एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कपिल मुनि अपनी मासे कहते भयेकि यमराजके दूत यमके पाश करिकै जीवके गलामें बांधिकै

वाचक उवाच ॥ वायुनावर्द्धितोदेहः कथ्यतेपांचभौतिकः। चतुर्णांगुप्ततादेहेवायुः प्रत्यक्षचारितः २ सवायुर्जीवसहितोनिर्वायुर्मृतकोच्यते। स्वस्वबुद्ध्यनुसारेणवदन्तिकवयस्सदा ३ वायुरेवशरीरेस्मिन्जीवइत्यभिधीयते। वायोः सर्वाणि चांगानि शास्त्रेप्रोक्तानिभूरिशः। तस्मात्पाशैर्गलेबध्वाकर्षन्तियमकिंकराः ४ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशाऽध्यायेत्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक २० ॥

घसीटते २ यमपुरीमें जीवको लेजातेहैं यह बड़ी शंकाहै कि जीवके देह नहींहै विना देह गल कैसे भया जिसमें बांधिकै सब जीवको यमपुरी को ले जातेहैं १ वाचक बोले पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश इन पांचके अंश करिकै चौरासीलाख योनिकी देह वनीहै परन्तु प्रत्यक्ष देखनेमें वायु करिके देह वर्द्धित होतीहै पृथ्वी जल अग्नि आकाश ये चारि तो देह में प्रत्यक्ष देख नहीं परते और वायु प्रत्यक्ष मुखमें नाकमें गुदा में चलता देखताहै २ जबतक देहमें वायु चलतीहै तबतक देह जीवती कहलातीहै वायुको चलना बंदभयाकि देह मरी कहावैगी जीव की वार्ताको कविजनोंने अपनी २ वुद्धि माफिक वर्णन कियेहैं ३ परन्तु सब शास्त्रों का भी ऐसा मतहैकि इस शरीर में वायु जोहै सोई जीवहै वायुके अंश करिकै देह के सब अंग चैतन्य रहते हैं इसवास्ते यमदूत वायुरूप जीवके गलेमें यमके फांससे बांधिकै उसी वायुरूप जीवको यम पुरीमें ले जातेहैं ४ इति० भा० तृ० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंश वेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भुक्त्वायमपुरीदुःखंरेतोभूत्वाकणा श्रयः। पुंसः प्रविशतेकालेस्त्रियश्चोदरमंडले १ इत्युक्तं महदाश्चर्यंकपिलेनश्रुतं च नः। कथम्भवतिजीवस्यरूपं जलनिभम्प्रभो २ गलित्वाधातुवत्केनप्रविष्टः प्रमदो दरम्। वाचक उवाच ॥ वायुरूपस्यजीवस्यसर्वत्रगम नसद्मा ३ प्रविष्टस्सर्वभूतेषुसूक्ष्मेणैवचराचरे। अतोवै पुद्गलंवायोर्भुक्त्वादुःखंयमालये । भूत्वातोयनिभंरेतः प्रविष्टः प्रमदोदरम् ४ इति० भा० तृ० शं० नि० मं० एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पितॄन्यजंतिसर्वेवैकामात्मानोजितें द्रियाः। कपिलोक्तिरियम्ब्रह्मन्नूहरिंविस्मृत्यसंततम्।

श्रोतापूछते भये हेप्रभुजी, कपिल अपनी मातासे कहेकि जीवयमपुरी में दुःखको भोगकरिकै पुरुषके रेतस कहे वीर्य होकै स्त्रीके उदर में प्रवेश करता है १ ऐसा हम सबसुने हैं बड़े आश्चर्यकी बातहैकि वायुरूप जीव सो शीसारांगा सरीके गलिके जलरूपकैसे होगया २ वाचक बोलतेभये वायुरूपजीव को नित्यसब चीजों में जाना होताहै सबचीजों में चरअचर में सूक्ष्मरूप होके प्रवेशकरताहै ३ इसीवास्ते वायुको देहरूप जीवयमपुरी में दुःख भोगिकै जलसरीके होकै स्त्रीके उदरमें प्रवेश करताहै क्योंकि वायुतो सबमें जीव है तब तैसारूप धरिकै घुसिजाता है ॥४॥ इतिश्री भा० तृतीयस्कंधे शं० नि० मंजर्यां एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी कपिल भगवान् अपनी माताजो देवहूती तिससे कहेकि सब प्राणियोंने संसारको काम सिद्धि होने वास्ते दुष्टइन्द्रियों के वशहोकै नित्य ईश्वरको भूलिकै

सांख्यवेत्ताकथंचैतत्प्रोक्तवान्भेददृष्टिवत् १ वाचकउवाच ॥ पितृरूपोहरिः प्रोक्तोमुनिभिस्सांख्यकोविदैः।स्वस्वरूपेभेददृष्टिंकुरुतेकपिलः कथं २ भगवद्भक्तिपुष्ट्यर्थं नराणांसुखहेतवे।उवाच कपिलः स्निग्धंवचनम्भेददृष्टिवत् ३ इ० भा० तृ० शं० मं० द्वात्रिंशे० द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोकाधिपतिर्विष्णुर्भगवान्कपिलोहरिः। कथंबभूवभोब्रह्मन् सिंधुदत्तार्हकेतनः १ वाचक उवाच ॥ संस्थापनायसांख्यस्यकपिलोऽयततारह।

पितरोंको पूजन करते हैं ऐसाभेदरूपवचन सांख्ययोग के जाननेवाले कपिल क्यों कहे सांख्ययोगवाले चरअचरको एकसम देखते हैं १ वाचक बोले सांख्ययोगके जाननेवाले मुनियोंने कहेहैकि, पितरजो है सो ईश्वरको रूपहै तब भगवान् के रूपजो पितर तिसमें भेदकहे पितर औरहैं भगवान् औरहैं ऐसीदृष्टि कपिल क्यों करैंगे परन्तु २ ऐसा वाक्य इस वास्ते कहेहैंकि जराभेदकिहेसे भगवान्में मनुष्योंकोप्रेमबढ़ैगा तौ मनुष्य सुखपावैंगे तथा भगवान्की भक्तिको पुष्टईहोजावैगीकि किसी गामको जाना भयातो भटकना क्यों किसीसे सुधरि रस्ता पूछिके गामको चले जाना तैसेवाक्य कपिलमुनि कहेहैं भेदरूप वचन नहीं कहे ॥३॥इ०भा०तृ०शं०मं०द्वात्रिंशेध्यायेद्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी तीनलोकको मालिक कपिल भगवान् सो समुद्रको दीथकी भूमिमें क्यों टिकके तपकरते भये गरीब होताहै सो चीजदूसरेसे मांगता है १ वाचक बोले

यथेच्छन्तिप्रजाः सर्वास्तत्सर्वंकुरुतेहरिः । जग्राहात स्सिंधुदत्तंसम्यगर्हांनिकेतनम् २ इ० भा० तृ० शं० नि० त्रयस्त्रिंशेऽध्याये त्रयस्त्रिंशवेणी ॥ ३३ ॥श्लो० २४ ॥

सांख्ययोगनष्ट होगयाथा तिस सांख्ययोग को प्रगट करिके पृथ्वीमें सांख्ययोगकेटिकाने वास्ते भगवान् कपिल अवतार धारणकिहेहैं जैसा चर अचर प्राणी प्रसन्नहोके शुभकर्म करैंगे तैसा भगवान् भीकर्म करैंगे किसी जीवमात्रको दुःख नहीं देवैंगे इसवास्ते समुद्रको दिया मकान तथा पूजन ग्रहण करते भये ॥ २ ॥ इ० भा० तृ० शं० मं० त्रयस्त्रिंशेऽध्यायेत्रयस्त्रिंशवे० ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इति श्रीभागवततृतीयस्कंधशंकानिवारणमंजरी समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

चतुर्थस्कंधे ॥

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्माविष्णुशिवाःप्रोचुर्मुनिंसंकल्प सिद्धये । तदर्थं च वयम्प्राप्ता यथातेमानसेकृतः १ सस्सं कल्पश्चकोब्रह्मन् मानसेयोत्रिणाकृतः २वाचकउवाच॥ जजापप्रणवन्नित्यं ज्ञात्वातंत्रिगुणात्मकम् । तदात्मकं सुतंवांछन्नत्रेर्हार्दंविचार्य च । मनसाचिन्तितंगुप्तं बभूवुस्तनयाश्चते ३इतिश्रीभा० चतुर्थस्कंधेशंकानिवारण मंजर्यांशिवसहायबुध विरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथम वेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी ब्रह्मा विष्णु शिव अत्रि मुनिसे कहेकि जो संकल्प आपने मनमें करिके तपस्या कियोहै उसी संकल्प की सिद्धि होनेवास्ते हम तीनों जन आपुके सामने प्राप्त भयेहैं १ हे वाचक अत्रि मुनिने अपने मनमें यों संकल्प करिके तपस्या किया सो क्या संकल्पहै जिसको अत्रि गुप्त राखे तथा विष्णु शिवभी गुप्तराखैं २ वाचक बोले अत्रिमुनि- जी ॐकार अक्षरको ब्रह्मा विष्णु शिवका रूप जानिकै तथा ॐकारको रूप ब्रह्मा विष्णु शिवको अपना पुत्र होने वास्ते ॐकार अक्षरका जपकरते भये गुप्तकरिकै ब्रह्मा विष्णु शिव

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्यादारक्षकश्शम्भुर्दृष्ट्वादक्षंसमागतम् । स्वासनात्कथमुत्तस्थौ नसतीपितरंयदा १ वाचक उवाच॥दक्षेणनिंदितास्सर्वे सज्जनाश्चमहीतले। महामानाभिमत्तेन प्राप्तराज्येनभूरिशः २ सज्जनैःप्रार्थितोदेवस्तन्माननाशकारणे । बीजमुत्पादितुंशम्भुर्नोत्तस्थावागतन्द्विजम् ३ इति०भा० च० शं० मं०द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

अत्रिके हृदयको अर्थ विचारि के तीनों देवता अत्रिके पुत्र होतेभये ३ इ० भा० चतुर्थस्कंधे शंकानिवारणमंजर्यां शिवसहाय बुध विरचितायां सुधामयीटीकासहितायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोतापूछते भये कि शास्त्रों में लिखाहै कि ससुर को पिता सरीके मानना चाहिये ऐसी मर्यादाके रक्षणकरनेवाले जो शंकर सो ब्रह्माकी सभामें दक्षजो सतीको बाप तथा शिवको ससुर तिसको देखिके अपने आसनसे क्यों नहीं उठते भये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले जब बड़ाराज दक्षको प्राप्त हुआ तब दक्ष सब सज्जनोंकी निंदा रातिदिन करताभया बड़ामस्त होगया पृथ्वी में दक्ष २ तबसब सज्जनदक्षको अभिमाननाश करने वास्ते शिवकी बिनती करते भये तब शिवजी दक्षके मानको नाशकरनेको बीज उत्पत्ति करनेवास्ते सभामें आया जो दक्ष तिसको देखिके नहींउठे विचार किये कि इसको देखिकै हमको अपने आसनसे उठना चाहिये हम नहीं उठैंगे तो यह अभिमानसे हमको खोटा बचन कहेगा तब इसके अभिमानको हम नाशकारि देवैंगे ॥ ३ ॥ इति० भा० च०शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योद्देष्ट्यभ्यागतान्पापी मदमान विमोहितः । सस्त्याज्येतिशिवप्रोक्तः केतेऽभ्यागतसत्त माः १ वाचक उवाच ॥ कर्हिचिद्येनजानंति देहसौख्यं विचक्षणाः । तेऽभ्यागताःपुनन्ती मंलोकंचसचराचरम् २ इति०भा०च०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३श्लो०३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ निरीक्ष्यसासतीयज्ञे पित्राशंकरहे लनम् । कृतन्दक्षेणकिंतत्र हेलनंगिरिजापतेः १ वाच कउवाच ॥ लिलेखस्तंभमध्ये च योवदेदत्रशंकरम् । सयज्ञबाह्योभविता यदिसाक्षात्पितामहः २ त्रासिता

श्रोतापूछते भये सतीसे शिवजी कहैंकि,जोप्राणीअभिमान करिकै अभ्यागतोंसे द्रोह करता है इसवास्ते उस पापीको त्याग करना चाहिये उससे बोलना आदिलेकै सब कामों में दुष्टको त्यागि देना चाहिये जिन अभ्यागतोंका ऐसा उत्तम माहात्म्य है वह अभ्यागत कौनहैं इस भ्रमको नष्टकरो१वाचक बोले जो प्राणी कभी भी देहके सुख दुःखको नहीं जानते तथा भजन करने में बड़े चतुर हैं ऐसे मनुष्योंकी अभ्यागत संज्ञा है ये अभ्यागतलोग क्षणभरमेंइन तीन लोकों को पवित्र कर ते हैं ॥२॥ इति० भा०च०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षने अपनी यज्ञमें शिवकी निंदाकरने वास्ते क्याचिन्ह करि राखाथा जिस चिन्हको देखिकै सती भस्म होगई १ वाचक बोले दक्षने अपनी यज्ञमें एक खंभामें अपने हाथसे ऐसा लिखे थे कि सबके वास्ते सूचना किया जाता है कि, इस हमारी यज्ञमें जो कोईप्राणी शिवको नाम मखसे उच्चारण करैगा सो प्राणी उसी वखत यज्ञके बाहर

मुनयःसर्वे भाविस्वान्नोत्तरन्ददुः ।इदंतद्देलनंदृष्ट्वा सती क्रोधंसमाददे ३ इतिश्रीभा० च० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ रक्षितोवेदमंत्रैश्च यज्ञःपरमपावनः। तेमंत्रास्तंकथन्नैव ररक्षुर्वेदरूपिणः १ वाचकउवाच ॥ तेनिरीक्ष्यसतीदेहत्यागन्द्विजवरास्तदा । भविष्यज्ञा श्चत्वरितं चक्रुर्मंत्रविसर्जनम् २ इति० भा० च० शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी५ श्लो० ॥ १३ से २६ तक॥

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचशंकरंब्रह्मा यज्ञोच्छिष्टंतवा

निकाला जावैगा जो कदापि हमारा पिता ब्रह्माभी यज्ञमें शिवको नाम लेवेंगे तो वोभी यज्ञके बाहर निकाले जावैंगे और दूसरे प्राणीकी क्या बातहै २ भावी के जोरसे सब मुनि भी दक्षसे डरते भये इसीवास्ते उत्तर दक्ष को नहीं दिहेकि दुष्ट ऐसा अन्याय क्या करता है ऐसी शंकरकी निंदा खंभा में लिखीहुई सतीदेखिकै क्रोध करिकै भस्म होगई ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० नि० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये दक्षकी यज्ञको ब्राह्मणोंने वेदके मंत्रों करिकै रक्षा कियेथे तो जब वीरभद्रने यज्ञको नाश करनेलगे तबवो वेदके मंत्र वेदरूप होकै यज्ञकी रक्षाक्यों नहीं करते भये १ जबसती भस्म होगई तब मुनियोंने सतीकी देहको भस्महुई देखिकै भविष्यके जाननेवालेउनसबोंने जानिलिये कि यज्ञजल्दी भ्रष्टहोगा देर नहीं है ऐसा जानिकै बड़ी जल्दी सेवेदमंत्रोंको विसर्जन करिदेते भये ॥ २॥ इति०भा० च०शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥१३॥से२६ तक ॥

स्तुवै। भागस्तेपार्वतीनाथ तंजग्राहकथंशिवः १ वाच
कउवाच ॥ भच्चयावशिष्टन्ब्रह्मत्र शब्दशास्त्रप्रमाणतः।
सर्वेचराचरेनष्टेयदूर्ध्वविशिष्यते २ तदुच्छिष्टमितिख्या
तं स्वानंदसुखमुत्तमम्। तंवैयजनशीलश्च यज्ञःसंसार
उच्यते। तस्मिन्विनष्टेयच्छेषंतद्भागंपार्वतीपतेः ३ इति०
भा० च० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो०॥५३॥

श्रोतारऊचुः॥ अष्टम्प्रजेशबालानामघं नैवानुचिं
तये। शंकरोक्तिरियम्ब्रह्मन्कथंयज्ञविनाशनम् १ वाचक

श्रोता पूछतेभये ब्रह्मा शिवसे कहे कि हे पार्वती नाथ यज्ञ
में जो बस्तु सबके खानेमें भोगनेमें बचेसो तुम्हाराभाग ऐसी
बुरीचीज शिवजगत्पति होके क्यों ग्रहण करतेभये १ वाचक
बोले व्याकरण शास्त्रके प्रमाणते उच्छिष्ट इस शब्दको जूठा
अर्थ नहीं होवैगा उच्छिष्ट शब्दको यह अर्थ है कि, सबतीन
लोक चौदहभुवन में चर अचर सब नाशभये पीछे चीज उत
कहे सबके ऊपर बाकी रहे २ अपनी आत्मामें आनंदरूप
ब्रह्म तिसकी उच्छिष्टसंज्ञा है उस आनंदरूप ब्रह्मके भजन
करनेमें स्वभावहै जिसको तिसको यज्ञ कहना यज्ञनाम संसार
को है उस यज्ञरूप संसारको नाशभयेपर जो ब्रह्म आनंद
बाकी रहता है सो भागशिवको है ब्रह्माकहे कि हे शिव आपु
ब्रह्मानंदहो मूर्खोंके कर्मको नहीं यादिकरना चाहिये ३
इति भा० च० शं० मं० षष्टेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लो० ॥ ५३ ॥

श्रोता पूछतेभएकिब्रह्मासे शिवजी कहे कि ब्रह्मामूर्खों के
कर्मोंकोहम चिंतवननहीं करते भला बुराकर्मजोमूर्खहमारवास्ते
करते हैं सोसब हम सहिलेतेहैं तब दक्षको बुराकर्म समुझिकै
दक्षकी यज्ञको नाश क्यों करेतभए १ याचक बोले शिव बिचार

उवाच ॥ महाघकारीदक्षश्चमानीसर्वविनिंदकः । यदि
नप्राप्स्यतेदंडन्तदारक्षोभविष्यति । एतदर्थम्महादंडं
दद्दौभूतपतिर्द्विजम् २ इति० भा० च० शं० मं० सप्तमेऽ
ध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ कपित्थबदरीशुष्कतृणपर्णकृताशनैः ।
अब्वायुनाकृताहारश्चत्वारः प्रथमादयः १ बभूवैते
श्शरीरस्यनतृप्तिर्भोजनैर्गुरो । उपवासव्रतश्चापिभ्रष्टोभूत्त
ञ्चकेवलम् । नचकारकथन्धीमान्ध्रुवोऽस्माकंभ्रमोम
हान् २ वाचकउवाच ॥ धर्म्मशास्त्रप्रणीतेयंवाणीसिद्धा

किहैकि दक्ष बड़ा पापी है अभिमानीहै सब जीवमात्रकी निंदा
करताहै ऐसा दक्ष दुष्टहोरहाहै जो दंडको नहींप्राप्त होगातो
ब्रह्मकर्म छोड़िके राक्षसहो जावैगा-ऐसी कृपाकरिकैशिवने दक्ष
की यज्ञ को नाश करिकै दंड देते भए दक्षको बुराकर्म समुझि
कैयज्ञको नाश नही किये २ इति० भा०च० शं०नि०मं०सप्तमेऽ
ध्यायेसप्तमवेणी ॥७ ॥श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये ध्रुवको बड़ातपकरतेकरते मास चार४बीति
गये पहिले महीनामें तीसरे २ दिन कवीठ तथा बैर को
फल खायकै तप किहे दूसरे महीना छठयें२ दिन सूखा चारा
तथा पत्ता खायकै तप किहे तथा तीसरे महीना नवमें २ दिन
जलमात्रा ६ पीके तप किहे तथा चौथा महीना बारहें २दिन
वायु पीकै तप किहे १ हे गुरुजी कवींठ बदरीफल सूखा चारा
जल वायु इन भोजनों करिकै ध्रुवके शरीर में भूखभी नहीं
गई तथा उपवासको व्रतभी भ्रष्ट होगया तब इन फलोंको
छोड़िकै कोरा उपवासई करिकै ध्रुवने तप क्यों नहीं कियेयह
हमारे सबके मनमें बड़ी शंकाहै दो श्लोक को अर्थ मिलाहै

सनातनी । यज्ञोपवीतहीनैश्चेदुपवासकरैस्तपः ३ कृतंद्विजैर्न्नतत्सिद्धिंगामिष्यतिकदाचन । एतद्ज्ञात्वा ध्रुवश्चक्रेतृणपर्णाशनंसुधीः ४ इति० भा० च० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेऽष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ७२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रथमंहृदिसन्दृष्ट्वापश्चात्सन्निधिमास्थितम् । बभूवातद्विदोब्रह्मन्ध्रुवो वीक्ष्यहरिंकथम् १ वाचकउवाच ॥ बालःपित्राचसन्त्यक्तोदुःखितोहर्निशं तथा । प्रेमाश्रुणाबद्धगिरस्स्तोतुन्नैवाशकच्छिशुः । चित्रेवसंस्थितोभूत्वासोऽतोऽतद्विदउच्यते २ इ० भा०च० शं० मं० नवमे ऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ४॥

युग्महै २ वाचक बोलेकि हे श्रोताजनो सुनो यह वचन धर्मशास्त्रमें लिखाहै कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो यज्ञोपवीत नहीं लिहे होवैंगे तो बिना जनेऊ पहिरे उपवास करिके तप करेंगे ३ तब उस तपकी सिद्धि नहीं होवेगी बड़े बुद्धिमान् ध्रुवने ऐसा जानिके चारा तथा पत्ता खायके तप करते भये ऐसे भोजन किहेपर उपवास भी नहीं भया तथा तृप्तिभी नहीं भई ४ इति श्री भा० च० शंकानिवारणमंजर्यां अष्टमेऽध्याये अष्टम वेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ७२ ॥

श्रोतापूछते भयेकि ध्रुवने भगवान् को पेश्तर अपने हृदय में देखिके फिरि तुरन्त अपने सामने भगवान्को खड़ा देखिके फिरि मूर्ख क्यों होतेभये भगवान्कोजरा नामलेतेहैं सो ज्ञानी हो जाते हैं और ध्रुवतो दर्शन किये पीछे फिरि मूर्खक्योंरहा १ वाचक बोले पांचबर्षके ध्रुवको पिता त्यागिदिया इस वास्ते राति दिन ध्रुव दुःखी होते भये तथा भगवान् को देखिके प्रेमसे ध्रुवकी आंखोंसे जल बहने लगा तिस जल करिके ध्रुव

श्रोतारऊचुः ॥ श्रुत्वोत्तमस्यमरणान्ध्रुवो यत्तगणैः कथम् । महद्युद्धंचकारोऽमज्ञवद्भगवत्प्रियः । राज्यार्थेक्षत्रियाणाञ्चयुद्धोभवतिशोभनः १ वाचकउवाच। ज्ञात्वापिकुत्सितं युद्धम्भ्रातुर्मरणकारणम् । तथापिलोकिकंवीक्ष्य क्षत्रियाचरणंसुधीः । यक्षैर्युद्धंचकारोऽस्मभगवद्वत्सलोऽपिसः २ इतिश्री भा० च० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ परमाश्चर्यमेतद्धिहत्वाग्र क्षान्ध्रुवश्च

से बोलि नहीं गया इस वास्ते भगवान्‌की स्तुतिभी बालक जो ध्रुवसो नहीं करिसके इसवास्ते अतद्विदठ्यास मुनि ध्रुवको कहेहैं २ इतिश्री भा० च शं० मं० नवमेऽध्यायेनवम९वेणी ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतापूछते भयेकि हे गुरुजी ध्रुवने अपना भाई जो उत्तम तिसके मरणको सुनिकै कुबेरके संग बड़ा युद्ध मूर्खसरीके क्यों करते भये भगवान् को प्यारा होके विचारसे हीन काम करना यह बड़ा आश्चर्य है तथा राज्य के वास्ते क्षत्रियोंको युद्ध करना यह बड़ी शोभाहै बिना प्रयोजन युद्ध करना यह मूर्खताहै १ वाचकबोले भाईके मरणको कारण मानिकै युद्ध करना क्षत्रियोंको निंदितहै ऐसा ध्रुव जानते रहे तोभी लोक की निंदाको डरे कि संसार कहैगा कि इनके भाईको यक्षोंने मारिडारा इनने कुछभी यक्षोंको त्रास नहींदिये यह कादरपना क्षत्रियोंको नहीं करना चाहिये ऐसे लोकमें निंदा के डरसे भगवान् के ध्रुव प्यारेहैं तोभी यक्षोंके संग युद्ध करते भये २ इति० भा० च० शं० मं० दशमे ऽध्याये दशम वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

तान् । परंलोकान्निनायाशुयस्मात्स्यूर्ध्वरेतसः १ ब्रह्म न्युदेहतानांचस्वर्गोभवतीनिश्चितम् । नह्यूर्ध्वरेतसांलोकः कपालभेदिनांतथा २ वाचक उवाच ॥ हतानांशास्त्रेणतत्स्पर्शाद्विशेषतः । अपितत्किंकराश्लोकायक्षाः प्राप्ताः परंपदम् ३ इति भा० च० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनेकेभगवद्भक्ताबभूवुर्भुवनत्रये । नकैश्चापिपदन्दत्त्वामृत्योर्मूर्ध्निपदंहरेः १ सम्प्राप्तंकल्प

श्रोतापूछते भये बड़ा आश्चर्य यह होताहैकि ध्रुवने यक्षों को मारिके योगियों के लोकको प्राप्त करदिये १ हे गुरुजी जो प्राणी युद्धमें मरिजातेहैं उनको स्वर्ग प्राप्त होताहै परंतु ब्रह्मांडमें प्राणको राखनेवाले तथा ब्रह्मांड को फोरिकै परम पदको जानेवाले मुनियों के लोकको युद्धमें मरेहुए प्राणी कभी भी नहीं जासकेंगे ध्रुव यक्षोंको कैसे उसलोकको भेजते भए २ वाचक बोले ध्रुवजी यक्षोंको नारायण अस्त्र करिकै मारते भए तथा नारायण अस्त्र यक्षोंकीदेहमें छुइगया नारायण अस्त्रके मारेसे तथा उसी अस्त्रको छुइकै तथा भगवान्‌को दास ध्रुव तिसको देखिकै यक्षोंने प्राणकों छोड़ दिया इसवास्ते परमपदको यक्ष जाते भये ३ इति श्री भा० चतुर्थस्कंधे शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछतेभये तीनलोक में अनेक प्रकारके भगवान् के भक्त भए परंतु कोई भी भक्त ऐसा नहीं भया कि जो कालकी मस्तकको पगों से दाबिकै भगवान्‌के लोकको गया होवै कल्प कल्पांत तप करते १ मुनियोंको बीतिगयेहैं पण कालका

कल्पांततपश्चरणाकारकैः । ध्रुवश्चमहदाश्चर्यंकथंकृत्वा पदङ्गतः २ वाचक उवाच ॥ तपतान्नध्रुवश्श्रेष्ठोनापि भरितरन्तपः । चक्रे निःकाशितंज्ञात्वापित्राबालंकृपानिधिः ३ तस्योपरिकृपां चक्रे चातोदत्वापदंगतः । मृत्योर्मूर्ध्निध्रुवोदीनोयोगागम्यंहरेः पदम् ४ इति० भा० च० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अंगस्यहयमेधेचनगृहीतानिदैवतैः । स्वस्वभागान्यतः प्रोचुर्द्विजाश्चांगन्त्वमप्रजाः १ अतोभागंनगृह्णंतिसुरास्तेयजनेनृप । तत्कथंबहुभि

मस्तकको पगसे दाबिके कोई मुनिभी परंपदको नहीं गया ध्रुवने बड़ा आश्चर्य कियाकि थोरादिन तपकरिकै कालकी मस्तकको पग से दाबि कै भगवान् के लोकको गये बड़ी शंकाहोतीहै २ वाचकबोले तपस्वियों में ध्रुवबड़े तपस्वी नहींहैं तथा बहुत तपस्याभी ध्रुवनहीं किहे परन्तु भगवान् कृपाके सागरहैं जानि लिये कि ध्रुव बालकहै इसके पिताने घरसे इसको निकाल दिया ध्रुवके पिता हमीहैं ३ ऐसा भगवान् जानिकै ध्रुवके ऊपर ईश्वर कृपा करते भये उसीकृपाकेप्रभाव से ध्रुवकालकी मस्तकको पगसे दाबिकै भगवान्के परमपदको जातभये ॥४॥ इतिश्री भा०च०शं० मं द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी १२ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतापूछते भये कि राजा अंगनेअश्वमेधयज्ञ किया तबउस राजा अंगको अश्वमेध में देवता अपना २ भागनहीं ग्रहण किहे तब ब्राह्मणोंने अंगको कहे कि राजा तुमारे पुत्र नहींहै १ इसवास्ते तुमारी यज्ञमें देवता भागको नहीं ग्रहण करते

स्चान्यैरन्नैर्वेर्जनंकृतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वकुला चारंतंमुक्ताभूपाश्चान्येविवेकिनः । अन्नजैश्चार्पितैर्दृत्तं भागमात्तंसुरैस्तदा ३ अंगोभ्रष्टकुलाचारस्सुनीथारति लालसः । अतोनात्तस्सुरैर्भागश्चान्नजेनार्पितस्तदा ४ इति० भा० च० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदश वेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वातंदुष्टमतिंवेनंमुनयः पृथिवी पतिम् । चक्रुःपुनश्चतंभस्मचक्रिरेशापतःकथं १ वाचक क्योंकि निर्वंशीके हस्तको जब अन्न पितर तथा देवता नहीं ग्रहण करते हे गुरुजी तो फिरि और अनेक राजा निर्वंशी यज्ञकरतेरहेहैं तो उनराजों की यज्ञमें देवता भाग क्यों ग्रहण करते भये यह बड़ी शंकाहै२ वाचकबोले अंगसे दूसरेगनती से हीन राजा अपने अपने कुलके धर्ममें निपुणथे बड़े विवेक मानथे इसवास्ते पुत्र करिकै हीनथे तोभी उनराजों करिकै दिया जो यज्ञमें भाग तिसको देवता ग्रहणकरते भये ३ और अंग राजा सुनीथा जो अंगकी स्त्री तिसके संग रातिदिनभोग की इच्छा करिकै अपने कुलके धर्मको भ्रष्टकरिदिया नीचबुद्धि होगया इसवास्ते अंगको पुत्रहीन जानिकै अंगको दियाभाग देवतोंने नहींग्रहणकिये ४ इति० भा० च० शं०मं० त्रयोदशे ऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछतेभये हेगुरुजी मुनियोंने वेनको दुष्टजानिकेपृथ्वी को राजा करतेभये फिरि राजाबनायकै वेनकोभस्ममुनिलोग क्यों करतेभये बालक सरीके तमाशाभया जो कोई कहै कि, राजपायकै वेनने सबको दुःखदिया तो वेनकोदुष्टतापहिलेही जानिकै मुनि जन राजदिहेहैं १ वाचकबोले ब्राह्मणों ने ऐसा

उवाच ॥ ज्ञात्वेतिसङ्गतिम्प्राप्यसज्जनानामयन्नृपः। सुबुद्धिर्भवितासुज्ञोऽप्यतोराज्यंद्विजाददुः २ न चक्रेशासनंतेषामतश्चक्रुश्चभस्मसात् ३ इति० भा० च० शं० मं० चतुर्दशो ऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथन्दुष्टशरीराद्धसंजातः कमलापतिः। नाविर्भावोभगवतोभूमिसम्पीडनंविना १ वाचक उवाच ॥ वेदमंत्रेणतद्देहशुद्धिंचक्रुर्द्विजोत्तमाः। तस्माज्जातोजगन्नाथश्शीघ्रंवेनविनाशिताः। प्रजावीक्ष्यमहादुःखंपीडिताः कृपायाहरिः २ इति भा० च० शं० मं० पंचदशोऽध्यायेपंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

विचार किहेथे कि वेन राजाहोवैगा तो बड़ेबड़े महात्मा लोगों की संगतिपायके बड़ाज्ञानी बड़ाबुद्धिमान्होजावैगा इसवास्ते मुनि वेनको राजदेतेभये २वेन राजको पायकेमहात्मा लोगोंकी आज्ञा नहींकियाउनकोबहुत दुःखभीदेने लगा तोराजदेनेवाले मुनिजन वेनको शापकरिके भस्म करिदेते भये३ इतिश्री भा० च०शं०मं०चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभये कि महादुष्टजो वेन तिसकी देहसे लक्ष्मीनाथजो भगवान् सो क्यों प्रगट होते भए तथा भूमिको दुःख देखेबिना भगवान् नहीं अवतारलेते वेनके वखत में पृथ्वी को क्यादुःख रहा जिसवास्ते जल्दी भगवान्प्रगट भए १ वाचकबोले ईश्वरने वेनकरिके नाशभई जोप्रजा तिसको देखिके तथा जीती प्रजाको बहुत दुःखी देखिके भूमिके तथा प्रजाके ऊपरकृपा करिके भगवान् जल्दी प्रगट होनेकी इच्छा करतेभए तब ब्राह्मणोंने ईश्वरको विचारजानिके वेदों

श्रोतार ऊचुः ॥ येधृताहरिणाब्रह्मन्नवताराबभूविरे त्रिलोकपतयः सर्वेसूतैरुक्तः प्रथुःकथम् । यावत्सूर्यस्तत्पत्येषस्तावत्त्राताभवेदयम् १ वाचकउवाच ॥ ज्ञात्वावेनविनष्टाम्वै पृथिवींपृथिवीश्वरः । केवलंभूपमर्यादांस्थापितुंजगदीश्वरः।प्रजासुखविवृद्ध्यर्थम्पृथुराविर्बभूवह २ इति० भा० च० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजानांवचनंश्रुत्वा भूमिंहंतुंसमुद्यतः । अन्योपायम्परित्यज्यठ्यज्ञवच्चप्रथुः कथम् १ के मंत्रकरिकै वेनकी देहको शुद्धकरते भएतब उसी शुद्ध देह से भगवान् उत्पन्नहोते भए २ इति भा० च० शं० मं० पंचदशे ऽध्यायेपंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभए जोजो अवतार भगवान् धारणकिहे सो सब तीनलोकके मालिक होते भए परंतु सूतलोगोंने ऐसा क्यों कहे कि जहांतक सूर्य प्रकाश करता है तहांतक राजा पृथु रक्षाकरैगा १ वाचकबोले तीनलोकके पति ईश्वर वेन राजा करिकै पृथ्वी को नष्टभईजानिकै तथाराजोंकी सनातनी मर्यादा भी नष्ट जानिकै अकेले पृथ्वी कोसुख देने वास्ते पृथु भगवान् प्रगट होते भए इसवास्ते पृथुराजाको सूतोंने केवल भूमिको मालिक बर्णन करतेभए २ इति० भा० च० शं० मं० षोडशे ऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥श्लोक॥ १४ ॥

श्रोतापूछते भए प्रजाके बचनको सुनिकैउसी वखत राजा पृथु कुछ दूसराउपाय प्रजाके सुख होने वास्ते नहीं विचार किया प्रजाको सुख होने वास्ते सब उपाय त्यागिके बड़ा मूर्ख सरीके पृथ्वी को मारने वास्ते राजा पृथुने क्यों तयारी

वाचक उवाच ॥ करुणापूर्णहृदयोविचार्य्यनिजमानसे। दुष्टान्संशिक्षितुम्भूपान्येभविष्यन्तिभूतले २ प्रजार्थे पृथिवींहन्यादन्यानामपिकाकथा। अतोभूमिसमाहन्तु मुद्यतोनतुरोषतः ३ इति भा० च० शं० मं० सप्तदशे० सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नैवासन्पृथुपूर्वेहिपुरग्रामादिकल्प

किया क्योंकि प्रजाको सुख होने का उपाय लोक शास्त्र में अनेक प्रकारका कहा है तथा पृथ्वी को मारना किसी में नहीं कहा यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले बड़े दयावान् पृथुराजा अवतारधरिकै राजगादी परबैठे तौक्या देखते भए बड़ा २ घोर २ अन्याय पृथ्वीपर होरहा है तिसको देखिकै अपने मनमें पृथुराजा बिचार किहे कि येराजा वेनके राजके बिगड़े हैं अब अगाड़ी होवैंगे राजा से सब इनको देखिकै वोभी राजा बिगड़िजावैंगे तो पृथ्वी तौ रसातलको जावैगी इसवास्ते इनदुष्टराजों को त्रास देखाइकै सिखाना चाहिये २ दुष्ट राजों को ऐसा मालूम परा पृथ्वी ने प्रजा को दुःख दियाथा वेनके राज में से अब पृथुराजा पृथ्वी को प्रजाकी द्रोही जानिकै प्रजाके सुख होने वास्ते पृथ्वी को मारने की तयारी किया दूसरे प्राणी की क्याबात है अरे भाई प्रजाको सुख देवो नहीं तो सब मारेजावैंगे ऐसा दुष्ट राजा सबत्रासकरिकै प्रजाको सुख देनेलगे इसवास्ते पृथ्वी को मारने को पृथु ने बिचार किहे हैं क्रोधकरिकै पृथ्वी को मारने को नहीं बिचारे ३ इति० भा० च० शं० मं० सप्तदशे० सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे द्विजोत्तम बाचक राजा पृथुकेपेश्तर

ना। बभूवुर्भूरिशोभूपाः पृथुपूर्वन्द्विजोत्तम १ नगराः पत्तनाश्चैवप्राचीनाः पृथिवीतले। कोशपूर्णञ्चकैस्तेषा मभूद्राज्यादिकर्म्मच २ वाचक उवाच॥ कालीनन्तन्न मन्तव्यम्पृथुपूर्वपदेबुधैः। वेनराज्यन्तात्कालिकम्पृथु पूर्वन्निगद्यते ३ इतिश्रीभा० च० शं० मं० अष्टादशे ऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अत्रिर्मुनिवरश्रेष्ठो ज्ञानिनांज्ञानचन्द्र माः। हयरक्षाकृतालेनकथन्नयज्ञकर्म्मणि १ वाचक उवाच॥ शताश्वमेधंसंकृत्यस्वर्गंप्रापशचीपतिः। अतो विष्णुप्रियःख्यातस्सुरेशोहरिवल्लभः २ मानभंगंशची

पृथिवीमें पुरगांव नगर पत्तन ये सब नहींरहेथे तथा पृथुकेपेश्तर राजातो अनेक होगये १ जो पृथिवीमें पृथुके पेश्तर नगरगांव पत्तन शहर किशानोंके गांव नहींथे तो राजा लोगोंकेखजाना किस चीजसे भरताथा तथा राजों की कोटियों रुपयोंका काम काहेते होताथा क्योंकि तहसीलतो होती नहींथी पृथिवी में जंगल होगयाथा यह बड़ी शंकाहोतीहै २ वाचकबोले विद्वान् जन पृथुके पेश्तर इस अर्थ में बहुतदिन नहीं मानते पृथुके पेश्तर इस अर्थमें पृथुको पेश्तर वेनको राज मानतेहैं किवेन के राजमें नगरगांव आदि लेकै सब नष्ट होगया इसवास्ते शंका नहीं करनाचाहिये ३ इति० भा० च० शं० मं० अष्टा दशे ऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतापूछतेभये कि अत्रमुनि बहुत मुनियों में बडे श्रेष्ठ और भूतभविष्य वर्तमान जानने में चतुर ज्ञानियों में चन्द्रसरीके प्रकाशमान ऐसे अत्रिमुनिके सामने इन्द्र पृथुकी यज्ञमें घोड़ा को हरि लेगया उसी वखत अत्रिमुनि क्यों नहीं रक्षणकरतेभये

भर्त्तुर्नकरोतिकदापिसः। अतोमंत्रान्वितेयज्ञेविघ्नकर्ता नतद्भयम् ३ इतिश्री भा० च० शं० नि० मं० एको नविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लो० ॥ १५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पूर्वोक्तंतुस्वयंविष्णुः पृथुर्भूपोबभूवह।यज्ञान्तेविष्णुनाचोक्तः पृथुस्तेमयिभूपते।भाक्तिर्धीश्चसदास्त्वेवंकोविष्णुःकः पृथुर्गुरो १ वाचक उवाच॥ दधातिनस्वयंविष्णुरवतारंरमापतिः ।श्वासंसम्प्रेर्य्यभूभारहरणायजगत्पतिः २ धृत्वावतारंशतशस्तद्रूपइवकारकः । करोतिशिक्षांकस्मिंश्चित्कस्मिन्नैवकरोतिच ३ इतिश्रीभा० च० शंकानि० मंजर्यां विंशेऽध्याये विंशवेणी॥२०॥श्लो०॥ ३२ ॥

वाचकबोले पूर्व जन्म में इन्द्र सौ १०० अश्वमेध किया तब स्वर्गको राज पायाहै इसीवास्ते इन्द्र भगवान् को बड़ा प्यारा भीहै २ यज्ञके प्रभावसे भगवान् इन्द्रको मानभंग कभीभीनहीं करते इसीवास्ते मुनियोंने मंत्रों करिके यज्ञकी रक्षा बहुत प्रकारसे करतेहैं परन्तु इन्द्रयज्ञमें विघ्नकरिदेताहै वेदमंत्रोंकी तथा ईश्वर की भय नहीं होती क्योंकिपेश्तरके यज्ञों की पुण्य उसके पास है इसी वास्ते पृथुकी यज्ञमें अत्रिको भी घोड़ा की रक्षा करनेमें अख्तियार नहीं चला ३ इतिश्रीभा० च० शं०मं एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी॥१९॥श्लो०१५॥

श्रोतापूछते भए भागवत में शुकदेवजी पेश्तरतो वर्णन किहैकि पृथुराजा विष्णुका रूपहै तथा पृथुकी यज्ञके अंतमें भगवान् पृथुराजासे कहे कि हे राजन् हमारे स्वरूपमें तुमारी भक्तितथा तुमारी बुद्धि सदाकाल बनी रहैगी इससे मालूम परता है कि पृथुभगवान् को अवतार नहींहै आदमी सरीके

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदेषु सर्वगोत्राणि लिखितानि श्रुतानि नः । किं तदच्युतगोत्रं च यन्नादंडयद्दो पृथुः १ चेद्धि ख्यातानि लोकेस्मिन्साधवोऽच्युतगोत्रिणः । तथापि त्रियुगे ब्रह्मन्त्रिवर्णा एव साधवः २ वाचक उवाच ॥ इन्द्रियाणां सुखैर्हीना व्रतं सार्ष्टिपकमाश्रिताः । पश्यन्तोऽजस्रयं विश्वन्ते प्रोक्ताच्युतगोत्रिणः ३ इति भा० च० शं० मं० एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

भगवान् वरदान दिहे हे गुरुजी आपु कहो कौन विष्णु है कौन पृथु है यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले आपु खुद भगवान् अवतार नहीं धारण करते पृथ्वी को भार नाश होने वास्ते आपने अंश करिके अवतार लेते हैं २ भगवान्को अंश अनेक प्रकारको रूप धरिकै भगवान्सरीके कार्य करतेहैं किसी अवतारमें भगवान् अपने अंशको सिखा तेहैं भूमिमें आयकै किसी अवतारमें नहीं सिखाते सिखाना क्या भगवान् कहते हैं कि तुम हमारे अंशहो हमको भूलना नहीं इसवास्ते पृथुको भी सिखाय गये हैं कि हमारे रूप में तुमारी भक्ति तथा बुद्धिसदा बनी रहैगी ॥ ३ ॥ इति० भा० च०शं०मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये चारों वेदों में सब गोत्र लिखा है और हमलोगोंने सुनाभीहै परन्तु अच्युत गोत्र क्या है जिस अच्युत गोत्रसे कुछ अपराधभी होगया तौभी पृथुराजा नहीं दंडदिहे छोड़दिहे १ जब ऐसा कोई मर्त्यलोक में कहैगा कि साधुकी अच्युतगोत्रसंज्ञा है तौभी हे गुरुजी सतयुग त्रेता द्वापर में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य साधु होतेथे तो ये अच्युतगोत्र कैसे होसकैंगे क्योंकि इन तीनोंका तो जो गोत्र गृहस्थ में रहा सोई

श्रोतार ऊचुः॥नकेषांस्तुतिनिंदेचकुर्वंतिसनकादयः। इतिश्रुतंचसर्वत्रपृथुशीलंकथंचते। प्रशंसिरेमहाश्चर्य्यमिदंन्नोहृदयेगुरो १ वाचक उवाच॥विष्णोस्स्तुतिंसदाचक्रुर्म्मुनयस्सनकादयः। तदंशश्चपृथुर्भूपोनातोयोग्यस्प्रशंसने २ इतिश्री भागवतेच०शं०नि० मञ्जर्य्यां द्वाविंशोऽध्यायेद्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लो० ॥ ४२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्लोकेत्रयोदशेप्रोक्तंब्रह्मभूतः कलेवरम्। तस्यजेन्नृपतिः-कस्मादग्निनासंस्कृतःक्रिया १ वनारहैगा यह बड़ी शंका है इसवास्ते गुरुजी इसकी आपु शान्तिकरो २ वाचक बोले हेश्रोताजनो योंप्राणियों को इन्द्रिय १० को सुख न मालूमपरे तथा अजगर सरीके परारहना जो प्राप्तिभया सो खाना नहीं प्राप्ति भयातो चिन्ता नहीं करना तथा तीनलोक में सबदेहों में भगवान् को रूप देखना ऐसे जो जीव उन को अच्युत गोत्र शास्त्र में कहा है ऐसा अच्युत गोत्र भगवान् को प्राप्त है ॥ ३ ॥ इति० भा० च० शं० नि० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ १२॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी ऐसाहम सब शास्त्र में सुनाहैकि सनकादि मुनिजन न किसी की तारीफ करते हैं न किसीकी निंदा करते हैं सब देहों में भगवान् को रूप देखते हैं फिरि पृथुकी तारीफ क्यों करतेभये १ वाचक बोले सनकादिकमुनि नित्य भगवान्की स्तुति करतेहैं तथा पृथुभी भगवान्को अंश है इसवास्ते सनकादि मुनियोंने पृथुकी तारीफ कियातो कुछ अयोग्य नहीं योग्य है।२॥ इति भा० च० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ ४२ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्लोक१३ तेरहमें कहाथा कि शुकदेव-

नदाहोब्रह्मभूतानांश्रुतोऽस्माभिः कदाचन॥२॥ वाचक उवाच॥ पतिव्रतातद्देहेनदग्धुमात्मानमिच्छती। अत श्चकारतद्देहदाहंप्रीत्यापतेश्चसा ३ इति० भा० च० शं० नि० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी॥ २३॥ श्लो०॥ २१॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्राचीनबर्हिषाराज्ञायज्ञैर्यज्ञैर्विचिन्वतः। प्राचीमुखैः कुशैर्ब्रह्मन्नास्तृतंपृथिवीतलम्‌ १ अस्मात्पाठ्यमिदंवाक्यंसप्तद्वीपवतीमही। कथंकुशैरास्तृताऽ

जीने राजासे कहे पृथुराजा ब्रह्ममें लीनहोके शरीरको त्यागते भये फिरि पृथुकी स्त्री अग्निमें पृथुकी देहजलाई क्योंकि ब्रह्ममें लीनहोनेवाले प्राणी को अग्नि संस्कार नहीं लिखता है १ ब्रह्ममेंलीन होनेवाले प्राणियोंकीदेह हमलोगोंने आजुतक कभी नहीं सुने २ वाचक बोले हे श्रोताजनो तुमारा वचन सत्यहै ब्रह्ममें लीन होनेवाले प्राणीको दाहनहीं लिखता पर पृथुकी स्त्री पतिव्रताथी पृथुकीदेहके संग अपनी देह जलाने की इच्छा करिके पतिकी प्रीति करिके अपने पतिके देहको जलाती भई उसी पतिकी देहके संग आपुभी जलिके पतिलोक को गई इस वास्ते पृथुराजा ब्रह्म में लीन होगये तौभी पृथुकी देहको दाह करतीभई॥ ३॥ इति० भा० च० शं० सं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी॥ २३॥ श्लोक॥ २१॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा प्राचीन बर्हि यज्ञ २ में बड़े बिस्तार करिके पूर्वदिशा को कुशोंको मुखकिया तथा पश्चिम दिशाको कुशोंका मूलकिया इस प्रकारसे कुश बिछाय के यज्ञ बहुत किया सातद्वीप पृथ्वी कुशोंके बिछौनाके नीचे होगई जैसी पलंग बिछौनेके नीचे होती है १ यह वचन बड़े

भून्महत्कौतूहलन्त्विदम् २ वाचक उवाच ॥ महीतल न्नमुनिना प्रोक्तंहिवसुधातलम् । ब्राह्मणानांशरीरन्तु कथ्यतेवसुधातलं ३ योगशास्त्रेप्युक्तंहियेश्वरंचवसुन्धत्तेसा प्रोक्तावसुधाद्विजैः । विष्णुप्रीतिस्तलन्तस्याद्विजानां हृदयंस्मृतम् ४ आत्मदेहन्दर्शयित्वाविदुरायमहामुनिः । चकारांगुलिनिर्देशंब्राह्मणास्तेनतर्पिताः ५ इतिश्री भा० च० शं० नि० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंश वेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

तमाशा सरीके मालूम परता है बड़ा अयोग्य वाक्यहै कि सातद्वीप पृथ्वी कुशोंके बिछौनाकेनीचे होगई यह हमारे लोगों को बड़ातमाशा रूप मालूम परता है २ वाचक बोले मैत्रेय ऋषिने सातद्वीप पृथ्वीको वसुधातल नहीं कहेथे ब्राह्मणोंका शरीरजो है तिसको वसुधातल मैत्रेय मुनि कहेथे ३ वसु नाम भगवान् को है उन भगवान् को जो धारणकरै तिसका नाम वसुधाहै भगवान्में प्रीतिहोना उसको नाम वसुधा तिस वसुधा कहे भगवान्की प्रीतिको तलकहे मकान ब्राह्मणों का हृदय है ४ चतुर्थ स्कंध अध्याय २४ में श्लोक १० में इदंऐसा लिखा है उस इदंको अर्थ यह मैत्रेय मुनिकिहे हैं कि आपने हाथकी अंगुलीसे अपनी देह बिदुरको देखाये कि हे विदुर यह हमारा हृदयजो है सोई बसुधा तलहै इसी बसुधा तलके प्राचीन बर्हि राजा कुशोंके बिछौना नीचेकरिकै तृप्ति करिदिया क्यों ब्राह्मणों को बिनामांगे जबरदस्तीसे दानदेता भया संकल्प करते वखत हाथमें कुशलेना तौ कुशको मुख पूर्व दिशातरफ राखना तथा कुशको मूल पश्चिम दिशाको राखना ऐसी शास्त्रकी बिधि है सो कुश करिकै संकल्प करिकै ब्राह्मणोंके हृदय वसुधा तलको

श्रोतार ऊचुः॥ नारदोक्तिरियम्ब्रह्मन् जीवास्तेबहवो हताः।तेत्वांसम्यक्प्रतीक्षन्तेमार्गेमार्गेत्वनेकशः १छे त्स्यन्तित्वांकुठारैश्चमृतस्तेतत्कथंगुरो । जीवोदेहंपरित्यज्यस्वकृतंचसमाव्रजेत् २ वाचक उवाच ॥ येनयेनिह ताजीवास्तेषांरूपंविधायच । दास्यंतियमदूतावैदंडं जीवप्रघातिनाम् ३ इति०भा० च० शं०मं०पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ॥ ८॥

कुश के बिछौना नीचे करिदेता भया ऐसा अर्थ मैत्रेय कहेथे पृथ्वी को नहीं कहेथे ॥ ४ ॥ इति० भा० च० शं०नि० मंजर्य्यां चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा शंका देने वाला वाक्य नारद मुनिने प्राचीनवर्हि राजा से कहा कि हे राजा यज्ञ में तुमने बहुत जीव मारेहो सो सबजीव तुमारी रस्ता २ में बैठिके अनेक प्रकार से तुमको देखेंगे कि जब राजा मरैगा तो इस रस्ता में आवैगा तौ हम सब अपनी दावलेवेंगे १ राजा तुम मरोगे तौ तुमाराजीव उसी रस्ताको जावैगा तबतुमकोवो सबजीव कुल्हारीसे काटैंगेहजारों वर्षतकहेगुरुजी यहकैसीबात है जिस वखत देहको जीव त्यागता है उसी वखत जैसा कर्म जीव करि राखता है तैसी योनि में जन्म प्राप्त होता है फिरि बहुत दिन रस्तामें बैठना वैरी को देखना कुल्हारी से काटना यह सब नारद ने क्यों कहे हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले जो प्राणी जिस प्रकार के जीवको मारता है उसी प्रकार को रूप यमराज के दूत धारण करि के मारने वाले प्राणियों को बड़ा दुःख देते हैं उस जीवको ऐसा मालूम परताहै कि जिसको मैंने मारा सो यही है यह नहीं मालूम परता कि वो

श्रोतारऊचुः ॥ राज्ञ्यांकर्म्मप्रकुर्वन्त्यांपश्चात्कारीपुरंजनः। कथंजायाम्परित्यज्यगतवान्काननंनृपः १ वाचक उवाच ॥ विचाररहितोजाल्मोवंचितोऽप्याकुलोनिशम्। मृगासक्तमतिर्मूढस्तांविसृज्यवनंगतः २ इति० भा० च० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी॥ २६ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ नारदः कथयामासस्वमात्मानंब्रह्मद्रुतम्। सःकथम्मोहितोब्रह्मन्स्त्रियाकामालयामुनिः १

नहीं है यहतोयम को दूतहै इसवास्ते नारदने जीवकोरस्तामें बैठनावर्णन किहे हैं ३ इति भा० च० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लो० ८ ॥

श्रोता पूछते भये पुरंजनीरानी पेश्तर जो कर्म करती थी तिस पीछे उसी काम को पुरंजन राजाभी करते थे ऐसा भागवत में लिखा है फिरि पुरंजनी जो अपनी स्त्री तिसको त्यागि कै पुरंजन राजा वनको क्यों चले गये १ वाचक बोले पुरंजन राजा विचार से हीन है स्त्री के वशि है ठगि भी गया है राति दिन व्याकुल हो रहा है मूर्ख है मृग मारने में बुद्धि लगाय कै स्त्री को त्यागि कै चला गया यह नहीं विचारकिया कि पीछे से मेरी दुर्गति पुरंजनी करेगी२ इति० भा० च० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि प्राचीनबर्हि राजा से नारद कहे कि मैं काम को आपनी देह में से नष्ट करने वाला हौं इस वास्ते मेरा नाम देव ऋषि है ऐसे नारद काम की घर रूप जो स्त्री तिस करि कै क्यों मोहि गये तथा पागल हो कै स्त्रियों के पीछे २ रोते फिरे विष्णु पुराण तथा विष्णु संहिता में यह

वाचक उवाच ॥ मोहात्पूर्वदिनेवाक्यम्प्राचीनबर्हिषम्प्र
ति। मुनिनोक्तं वचस्सत्यंश्रोतारस्तान्निबोधत २ इति०
भा० च० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७॥
श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चितारोहंयदाशक्तानदाताद्विज
सत्तमः। बोधयामासज्ञानेन प्रथमं किन्न बोधिता १
वाचकउवाच ॥ मदोन्मत्तः पुराभूत्वाबोधितोपिनजगृहे
मदेसंस्खलितेजातेऽमदिनो बोधग्राहकः २ मदोन्मत्तंस
माज्ञायज्ञानंनादावुवाचसः ३ इति० भा० च० शं०
मं० अष्टाविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी ॥२८॥ श्लो०॥ ५२

नारद को मोह होने की कथा लिखी है वाचक बोले जिस
दिन प्राचीनबर्हिष से नारद कहे कि मैंने जितेन्द्रिय हो काम
देव को नाश करिदिया उस दिन के पीछे नारदको मोह भया
जिस दिन प्राचीनबर्हि से कहे थे उस दिन तो वैसेई रहेथे
हे श्रोताहो नारद का वाक्य सत्य है २ इति भा० च० शं० मं०
सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥२१ ॥

श्रोता पूछते भये जब पुरंजन स्त्री होके अपने पति के
संग भस्म होने वास्ते चिता में बैठने लगा तब भगवान्
ब्राह्मण को रूप धरिके ज्ञान करि के सब हाल जीव स्त्री हो
गया था उस को बताते भए परन्तु पेशतर क्यों नहीं ज्ञान
दिहे कि ऐसा दुःख जीव पाता है यह शंका है १ वाचक
बोले पेशतर स्त्री रूप पुरंजन अभिमान करि कै बड़ा उन्मत्त
हो रहा था भगवान् ज्ञान दिहे परन्तु सुनि लिया यादिनहीं
किया जो अभिमान नष्ट होता है तौ जीव ज्ञानको सिखता है
भगवान् जीवरूप स्त्रीको बड़ाअभिमानी जानिकै पेशतर बारं

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वज्ञोनारदश्चैवज्ञात्वाऽप्यज्ञन्नृ पोत्तमं । कथंप्रोवाचप्रथमं चालौकिकमयंवचः १ वाचकउवाच॥ अपक्कहृदयंज्ञात्वासदाचारविवर्जितम्। प्रथमम्भूपतिम्वीक्ष्यचोन्मत्तमजितेन्द्रियं। ज्ञानीकृत्वा क्षणेनापिप्रोवाचराजसत्तमम् २ इ० भा० च० शं०मं० एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो०॥२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिभक्तामहात्मानस्सर्वेब्रह्मनृप्र चेतसः । भस्मचक्रुः कथंवृक्षांस्तेदयारहिताइव १ वाचक उवाच ॥ दंडंविना न सिद्ध्यंति राजकार्याणि

वार ज्ञान नहीं कहे जब मानन्ष्ट होगया तब कहतेमात्रईश्वर के वाक्यको मानि लिया ३ इतिश्रीभा० च०शं०मं०अष्टविंशेऽ ध्यायेअष्टविंशवेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ ५२ ॥

श्रोतापूछतेभये हेगुरुजीनारदमुनिसबकेहृदयकी बात जानने वाले प्राचीनबर्हि राजाको बड़ामूर्खजानिलिये तौभी गूढ़वचन राजासे क्यों बोलतेभये क्योंकि गूढ़वचनको तो चतुरप्राणी समझतेहैं मूर्ख नहीं समझते यह बड़ी शंकाहै १ वाचकबोले नारदने ऐसेतरही प्राचीनबर्हि राजाको ज्ञानसे कच्चा हृदयजानितथा सुंदर कर्मसे हीनजानिकै उन्मत्त कामी क्रोधी जानिकै राजाके ऊपर कृपाकरिकै एकक्षणमें प्राचीनबर्हिको बड़ाज्ञानी बनाय कै तब गूढ़ वचन राजासे कहेहैं २ इतिश्रीभा० च० शं० मं० एकोनत्रिंशेऽध्यायेएकोनत्रिंशवेणी ॥ २९ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतापूछतेभये प्रचेतस भगवान्के बड़े भक्त महात्मा ऐसे होकै दयाहीन प्राणी सरीके वृक्षोंको भस्म क्यों करते भये महात्माकाकर्म यहनहींहै यहकर्म बड़े चंडालकाहैयहबड़ीशंकाहै १वाचकबोले हेश्रोताहो तुमारा वाक्यसत्यहै निर्दयीकर्मचंडाल

कर्हिचित्। अतस्तत्कन्यासन्दाहं चक्रुस्तेकामतत्पराः २ इति० भा० च० शं० सं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंशवेणी॥ ३० श्लो०॥ ४६॥

श्रोतार ऊचुः॥ दीक्षितान्ब्रह्मसत्रेण सर्वेब्रह्मन्प्रचेतसः। ज्ञानोपदेशं कृतवांस्तान्पुनर्नारदः कथम् १ वाचकउवाच॥ वैष्णवीमजितां मायांज्ञात्वासम्यङ्मुनीश्वरः। ज्ञानोपदेशं कृतवांस्तेषां पुष्टयर्थहेतवे २ इति० भा० च० शं० सं० एकत्रिंशेऽध्याये एकत्रिंशवेणी॥ ३१॥ श्लो०॥ २॥

है परन्तु इतना काज राजाको है सो सबकाज दंडबिना कभी नहीं सिद्ध होवैंगे अनेक उपायकरैं पण त्रासादिहे विना नहीं सिद्ध होवैंगे इसी वास्ते प्रचेतस वृक्षोंकी लडकी को अपना बिवाह करना चाहते थे इसकाम करने वास्ते वृक्षों को भस्म करते भये कुछ निर्दयपनसे नहीं भस्म किये॥ २॥ इति० भा० च० शं० सं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंशवेणी॥ ३०॥ श्लोक॥ ४६॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी सब प्रचेतस शिवसे भगवान्से नारदसे ब्रह्मज्ञान सिखेथे फिरि नारद प्रचेतोंको ज्ञान क्यों देतेभये १ वाचक बोले पेश्तरतो अभिमान से नारदमुनि माया को कुछभी नहीं जानतेथे जब माया बहुत दुखदिया तबसे मायाको डरनेलगे अपने शिष्यों को भी सिखाने लगे मायासे हुसियार रहियो इसवास्ते नारद बिचारे कि भगवान्की मायाबड़ी जबरदस्त है किसीसे जानी नहीं जाती प्रचेतस ज्ञान में पक्को है परन्तु इनको ज्ञानमें और पुष्टकरि देवैं नहीं तो

माया कभी पटकि देवैगी इसवास्ते नारद दूसरेदफे प्रचेतों को ज्ञान देतेभये॥ २॥ इति० ॥भा० च० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतचतुर्थस्कंधशंकानिवारणमञ्जर्यां सुधामयीटीकायांशिवसहायबुधविरचितायांचतुर्थ स्कंधशंकानिवारणमंजरीसमाप्ता॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

पञ्चमस्कंधे ॥

सुधामयी टीकासहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रियव्रतरथश्चैकोयमारुह्याभ्रम न्नृपः । सूर्यस्यानुदिनंकर्त्तुंरजनीनाशनायच १ नकृत न्दिवसन्तेनकथंरात्रिर्ननाशिता । आकाशेभ्रमतानेनभू मौतेसिन्धवः कृताः २ द्वीपाश्चैवकथञ्चसन्पूर्वस्मा दुत्तरोत्तरम्। द्विगुणास्सिन्धवश्चैवबभूवुः कथमद्भुतं ३

श्रोता पूछते भये प्रिय व्रत राजा कोरथ १ जिस रथ में बैठिके राति को नाश करने वास्ते तथा प्रहर आठ ८ दिन करने वास्ते सूर्य के पीछे पीछे राजा प्रियव्रत भ्रमण करता भया १ क्यों राजा प्रियव्रतने रातिको नाश नहीं किया तथा दिनभी क्यों नहीं किया तथा राजा प्रियव्रत रथ में बैठिके आकाश में भ्रमण करता था फिरि रथके पहिआ करि के जमीन में सात समुद्र कैसे होते भए भूमिमें रथ भ्रमण करता होता तब तौ रथ के पहिआ करि के समुद्र होते भए तब शंका नहीं होती परन्तु आकाश से जमीन में पहिआ करि के समुद्र ७ तथा द्वीप ७ भए यह बड़ी शंका है २ तथा रथ१ रथकी चौड़ाई लंबाई एक माफिक फिरि सात समुद्र तथा ७ सातद्वीपये पहिले से दूसरा दूना लंबाभया दूसरे से दूना

नेमिभिर्नैकेनचक्रेणरथेनभूपतेस्तदा। शंकात्रयमिदन्नित्यं वर्त्ततेहृदये चनः ४ वाचक उवाच ॥ दिनंरात्रिर्भगवता मर्य्यादावैपुराकृता। पश्चान्नृपोविचार्य्यैवंनचकारद्वयंसु धीः ५ आकाशेभ्रमतस्तस्यपृथिवीमपितत्क्षणात्। यदा पिब्वात्क्षितिंराजातदाह्वीपाह्यासन्‌सिन्धवः ६ भ्रमतारथवेगस्य

तीसरा भया तीसरे से दूना चौथा भया चौथे से दूना पांचवां भया पांचवेंसे दूना छठा भया छठे से दूना सातवां समुद्र तथाद्वीप होते भये येभी बड़ी शंका है ३ रथ १ रथकी पहिआ एक माफिक रथकी चौड़ाई लंबाई एक माफिक ऐसे रथ करि के एक सरीके समुद्र सात ७ द्वीप ७ को होना चाहिये दूना २ बढ़ते क्यों गये है गुरु जी यह तीन शंका राति दिन हमारे सबके हृदयमें बसी रही हैं श्लोक तीन को अर्थ मिला है कुलक श्लोक है वाचक बोले पेश्तर तौ प्रियव्रत राजा तपस्या के अभिमान ते विचार किया कि राति को मैं नाश करि देऊंगा अकेला दिन संसार में रहैगा ऐसा मन में विचारि कै सूर्य के पीछे २ फिरने लगा परन्तु फिरते वखत राजा को ज्ञान भया कि दिनरातिकी मर्यादा भगवानने किया है इसको मैं नष्ट करोंगा तौ ईश्वर मेरे को दंड देवैंगे ऐसा डरि कै रातिको नाश नहीं किया तब अकेला दिन भी नहीं किया ५ राजा प्रियव्रत तपस्या के जोर करिकै आकाश में भ्रमण करता भया तथा भूमिमें भी भ्रमण करता भया कुम्हार को चक्रसरीके रथको फेरता भया जब भूमिमें रथ को फेरने लगा तब बड़े वेग करि कै भ्रमण करता जो रथ तिसके चक्र करिके जमीन में समुद्र ७ तथा द्वीप ७ होते भये सात दफे राजा रथको फेरता भया श्लोक दो को अर्थ मिला है युग्म है ६ लक्ष्मी के पति भगवान् भूमि में अपनी

चक्रनेमिकृतास्तद्वासनातनींस्वमर्य्यादांनष्टांवीक्ष्यरमा पतिः ७ सिंधवस्सप्तद्वीपाश्चभूमावेतेसनातनाः । एत दर्थस्स्वयंविष्णुस्साराथनिर्मिमायया ८ बभूवसारथि हत्यन्नचाज्ञातोनृपेनह।रथंनेमिंचचक्रंचाविस्तार्य्यस्वेच्छ याहरिः ९ स्वेच्छयाचालयित्वाश्वान्द्विगुणान्पूर्वपूर्वतः। चकारसिंधुद्वीपांश्चयथापूर्वरमापतिः १० इतिश्रीभा० पंच० शं० नि० मंजर्य्यांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ स्त्रीप्राप्त्यर्थंतपश्चक्रेचाग्नीध्रोमहदद्भु

बनाई सनातन की जो मर्यादा सात ७ समुद्र ७ द्वीप एक से एक दूना तिसको नष्ट देखिकै ७ सात ७ समुद्र तथा ७ द्वीप ये पृथ्वी में सदासे हैं ब्रह्मा स्वायंभू मनुसे सृष्टिकी रचना कराया तब ७ समुद्र तथा सात ७ द्वीप नहीं बनेथे इस वास्ते अपनी माया करि कै भगवान् प्रियव्रत राजा के सारथी होते भये ८ राजा को मालूम नहीं परा राजा के सारथी को हरि के दूसरे स्थान पर बैठाय देते भये आपु सारथी होके अपनी इच्छा से रथकी लंबाई चौड़ाई तथा पहिआ तथा रथकी कील इन सबको जैसा चाहता था तैसा विस्तार करिकै ९ भगवान् घोड़ों को अपनी इच्छासे चलायके एक दफेसे दूना दूसरीदफेसे दूना तीसरीदफे इसी प्रकारसे समुद्र द्वीप एकसे एकदूना दूना जैसा पेश्तर रहा तैसा बनायकै बैकुंठ लोकको गये इसीवास्ते समुद्र तथा द्वीप दूना दूना भया है १० इति भागवतेपंचमस्कंधेशंकानि० मं०सुधामयीटीकायांप्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछते भए बड़ी आश्चर्यकी बात है राजाआग्नीध्र

भुतम्। दीनाश्चैवन्नकुर्वन्तिविवाहार्थेतपःप्रभो १ जम्बुद्वीपपतिस्सश्चकथन्तस्मैददुर्नते। कन्यांभूपतयःसर्वेतद्वशाश्चविशेषतः २ वाचकउवाच॥ सृष्ट्यादौक्षत्रियान्नस्युस्स्वायम्भुवसुतान्विना। जज्ञिरेक्षत्रियाः पश्चाद्यदा सृष्टिश्चमैथुनी। एतदर्थन्तपश्चक्रेविवाहार्थन्नृपोत्तमः३ इ० भा० पं० शं० मं० द्वितायाऽध्यायेद्वितीयवेणी २॥ श्लो०॥ २॥

श्रोतार ऊचुः॥ आविर्भूतंजगन्नाथंस्वकार्य्यसिद्धिहेतवे। स्वीयेयज्ञेकथन्दृष्ट्वाननानामतुतोषन १ ऋषिभिस्संस्तुतोदेवोराजाऽपरइवास्थितः। एषानोमहती स्त्रीप्राप्ति होनेवास्ते तपस्या किया है हे गुरुजी गरीबभी विवाह होनेवास्ते तप नहीं करैगा १ राजा आग्नीध्र जंबूद्वीप को मालिक था उसको राजा लोगोंने लड़िकी क्यों नहींदिहे सबराजा लोग आग्नीध्र राजाके अखतिआरमेंथे फिरि विवाह होनेवास्ते तप क्यों किहे वाचक बोले सृष्टिकी आदि में कोईभी क्षत्री नहीं रहेथे अकेले स्वायंभुवकेपुत्र क्षत्रीरहेथे जब मैथुनी सृष्टि ब्रह्माने बनाया तब पीछेसे क्षत्री जन्मते भये जो क्षत्री रहेनथे तौ आग्नीध्र को लड़िकी कौन देवै इसवास्ते आग्नीध्र विवाह होनेवास्ते तपस्या करते भये॥ ३॥ इति० भा० पं० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक २॥

श्रोता पूछते भये राजानाभिने अपनी यज्ञमें प्रगट जो भगवान् तिनको देखिके नमस्कार किया तथा स्तुतिभी नहीं किया यह क्यों न किया १ ऋषियोंने भगवान्की स्तुतिकी है और राजातौ दूसरा आदमी सरीके खड़ा रहा जैसाकुछ यज्ञमें दावा नहीं ऐसा खड़ा रहा यह बड़ी शंका है इस शंकाको आप

शंकावचसातान्निवारय २ वाचक उवाच ॥ दृष्ट्वायज्ञ समायान्तंसभार्य्योनृपतिर्हरिं । प्रेमाश्रुपूर्णनयनोध्यान मग्नोबभूवह ३ अशक्तोवचनोच्चारेऽपतद्भूमौसगद्गदः। ईदृशन्नृपतिम्वीक्ष्यतत्पक्षेऋषयोस्तुवन् ४ इतिश्री भा० शं० मं० पं० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्षत्रियाणांशिशोर्न्नामब्राह्मणैः क्रियतेसदा । श्रुतन्नोवेदमार्गेणनाभिश्चक्रेकथंस्वयम् १ छिंधिशंकामिमाम्ब्रह्मन्त्वंस्ववाक्यासिनागुरो २ वाचक उवाच ॥ युगत्रयेद्विधानामकृतं च सर्वप्राणिभिः ।
अपने वचन करिकै निवारण करो २ वाचक बोले राजानाभि अपनी यज्ञमें भगवान्को देखिकै स्त्रीसहित राजाके नेत्रोंसे जल बाहि रहा है भगवान् को दर्शन करिकै ध्यान में मस्त होगये ३ जब नाभि स्त्री सहित बोलि नहीं सकेथे भूमि में पड़िगये प्रेमकरिकै शरीरमें रोमांच खड़ा होगया ऐसा राजा को प्रेमकरिकै आतुर देखिकै तब राजा नाभिकी तरफ से ऋषियों ने भगवान् की स्तुति करते भये इस वास्ते नाभि राजाने भगवान् को नमस्कार तथा स्तवन नहीं किया॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० नि० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी हम सबने ऐसा सुना है कि क्षत्री के बालक होता है तौ उस बालक को नाम ब्राह्मण लोग वेदकी रीति से करते थे परन्तु नाभि राजा अपने पुत्रको नाम आप क्यों करते भये १ हे गुरु जी आप अपने वचन रूप तरवार करिकै इस शंका को काटो २

वेदमार्गेणविप्रैश्चपित्रामात्राचकर्मभिः३विप्राज्ञातोनृप
श्चक्रेकर्म्मवीक्ष्यसुतस्यवै। विप्रान्सन्तोष्यदानेननाम
पुत्रस्यनिर्मलम् ४ इति० भा० शं० सं० पं० चतुर्थे
ऽध्यायेचतुर्थवेणी ४॥श्लो०॥ २॥

श्रोतार ऊचुः॥ पुरीषवर्णनंशास्त्रेनकेषांकविभिः कृ
तम्। हरेश्चाप्यवताराणान्नोश्रुतंचकदापिनः १ तत्सौ
गन्धिर्महाश्चर्यमभितोदशयोजनम्। सौरभ्यंवायुने
तद्धिकृतमेतत्सुकौतुकम् २ पिपीलिकानाम्पृष्ठेचयथैव
गिरिधारणम्।सिंधोर्विशोषणन्दंशैस्तथेदमपिभाव्यते ३

बालक बोले सतयुग त्रेता द्वापर में सब प्राणी बालकों के
दो नाम करते थे वेदकी रीतिसे तौ ब्राह्मणों से नाम कराते
थे तथा बालकको कर्म देखि कै माता पिता बालकको नाम
करते थे ३ ब्राह्मणों की आज्ञा लेकै तथा अपने पुत्रके कर्म
देखि कै दानकरि कै ब्राह्मणों को प्रसन्न करि कै तब राजा
नाभि पुत्रको नाम करते भये मानसे वेदरीति नहीं त्यागे ४
इति० भा० पं० शं० सं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी॥ ४॥
श्लोक २॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पुरीष को वर्णन शास्त्र में किसी
को कविलोग नहीं किए भगवान् के अनेक अवतार भये तिन
के भी पुरीष वर्णन कवि लोग नहीं किये तथा हम सब ने
सुनाभी नहीं कभी १ उस पुरीषकी सुगंधि वायु बहती है तौ
चारोतरफ कोश ४०चालीस तक अतर सरीके खुशबोयजाती
है यह आश्चर्यमें आश्चर्य होताहै कि मलमें सुगंधि कैसीभई
२ जैसा कीड़ीअपनीपीठि पर पर्वत लेकै चलै तथा मसामाषी
डंस येसब समुद्रको सुषायदेवैं यह बड़ीआश्चर्य सरीकीबातहै

वाचक उवाच ॥ वालानांरोगशान्त्यर्थंयथायत्नमनेकधा। कुर्वन्तिपितरोनित्यंलोभानिविविधानिच ४ दर्शयित्वासुमिष्टादीन्कट्वादीन्दापयन्तिच। एवंजीवस्यमोक्षायहरिर्लोभम्प्रदर्शिवान् ५ मोक्षमार्गंविनष्टंसस्समीक्ष्यऋषभोहरिः। जीवानांलोभनार्थायमहाश्चर्यंठ्यदर्श

तैसे उस मलमें सुगंध होनायहभी बड़ा आश्चर्यमानना चाहिये तथा जिसजगह पर मल पड़ा रहैगा उसी जगह से चारोंतरफ चालीस ४० कोश तक सुगंधि होना यह बड़ा आश्चर्य है हे गुरुजी यह बड़ा गप्प शास्त्र में लिखा है वाचक बोले जैसा वालकों को रोगनाश होने वास्ते माता पिता भाई भौजाई आदि लेके बहुत यत्न करते हैं वालक दवाई नहीं खातातौ उसको दुलार करिके सुन्दर २ चीजोंको लोभ देखातेहैं ४ वालकोंको माता पिता मीठी २ चीज देखायके रोग नाशहोने वास्ते कटुकटु चीज पिलायदेते हैं तैसेही जीव भ्रष्ट होरहेहैं तिन जीवोंको मोक्ष होने वास्ते भगवान् लोभ देखाते भये ऋषभदेव भगवान् मोक्ष मार्गको नष्ट देखिके विचार कियेकि हमको तौ बहुत दिन मर्त्यलोकमें रहनाहै नहीं और विना बहुत दिनके सत्संग मोक्ष मार्ग प्रगट नहीं होगाऐसा विचारिकै जीवोंको लोभ देखाने वास्ते विष्ठामें सुगंधिउत्पत्ति करिकै संसार को देखाते भये ऐसी चमत्कारी देखिकै सब प्राणी लोभको प्राप्ति भये कहने लगे कि हे भाइयो मोक्षमार्ग को सेवन करो देखो ऋषभदेव मोक्षमार्ग को सेवन करते हैं तौ जिस की विष्ठा चालीस ४० कोशतक अतर सरीके खुशबोय करती हैं तौ उनको यम की भय क्यों होगी आपना सब मोक्ष मार्ग सेवन करैगें तो अपनी भी ऐसी कीर्ति होगी ऐसे

यत् ६ इतिश्रीभा० शं० नि० मं० पंच० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोता ऊचुः ॥ हरेस्सर्वेवताराश्चशुकदेवेनवर्णिताः। नकानपिनमश्चक्रेकथन्नेमेतमीश्वरम् १ वाचक उवाच॥ चक्रुस्सर्वेवताराश्चकर्मसंसारकारणम्।कैवल्यशिक्षणञ्चक्रेस्वयंचकृतवांस्तदा २ इति० भा० शं० मं० पंच० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १९ ॥

श्रोतारऊचुः॥ भरतःपूजनंचक्रेपुलहाश्रमसंस्थितः। तुलसीपत्रपुष्पैश्च कस्यरूपस्यवैहरेः १ अनेकरूपो

विचारि कै सब प्राणी मोक्ष में आनंद करने लगे हे श्रोताजनों इस वास्ते सब में सुगंधि होती भई ६ इति भा० शं० मं० पंचमस्कंधे पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥५॥श्लोक॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजी ने भागवत में भगवान् के सब अवतार वर्णन किये परन्तु नमस्कार किसी अवतार को नहीं किये ज्ञानमें चतुर वैरागको फल्लायमान सान करने में सूर्य ऐसे शुकदेव जी ऋषभ देवको नमस्कार क्यों करते भये १ वाचक बोले भगवान् अनेक अवतार धरिकै जैसा मनुष्य संसार को कर्म करताहै तैसा ईश्वरभी करतेभये और ऋषभ देवने प्राणियोंको मोक्षकी रसता सिखाये तथा आपुभी मोक्ष होनेको कर्म किये इसवास्ते बड़ेज्ञानी शुकदेव जीने ऋषभ देवको विषय मार्गसे हीन जानिकै परमहंस मानिकै नमस्कार करतेभये ॥२॥ इति० भा० शं० मं० पं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥१९॥

श्रोता पूछते भये पुलह मुनिके आश्रम में टिकिकै भरत तुलसीपत्र तथा पुष्प करिकै पूजन करते भये परन्तु कौन से

भगवान्कथितोवेदपारगैः २ वाचक उवाच ॥ ध्यात्वासु मनसाविष्णुंवैकुंठस्थंजगत्पतिम् । तस्मैसमर्प्ययत्सर्वं संमंत्रेणैवप्रेमतः ३ इ० भा० शं मं० पं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ यदर्थंराज्यमुत्सृज्य जगामभरतोवनम् । तन्मृगीपुत्रव्याजेनत्यक्तवान्सकथन्नृपः १ येन न्मोहसमाग्रस्तस्तथापिमहदद्भुतम् । रोहपर्वतंपङ्गु रितिनोभातिमानसे २ वाचक उवाच ॥ मृगरूपंमुनिं दृष्ट्वाधवलंलोकलज्जया । स्वपत्नींचमृगींकृत्वारमन्तं कानने नृपः ३ जहासभरतः शीघ्रंतेनशप्तोद्विजन्मना।

भगवान् की मूर्ति को पूजन किये १ वेदके जानने वाले मुनियोंने भगवान् को अनेक रूप कहे हैं २ वाचक बोले भरतने स्थिरमन करिकै वैकुंठवासी जगत् के पति ऐसे भगवान् को ध्यान करिकै उन्हहीं भगवान् के मंत्रों करिकै जो आपने मन में वस्तु सो सब वस्तु वैकुंठनाथके चरणों में अर्पण करिकै बैकुंठनाथको पूजन करते भये बड़े प्रेमसे ॥ ३ ॥ इति०भा० शं० मं० पं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ११ ॥

श्रोतापूछते भये भरत राजा जिस भगवान् को पूजन भक्ति करिकै करनेवास्ते राजको त्यागि कै बनको गये सो पूजन अति सुंदर कर्म मृगी के बालक के वास्ते क्यों छोड़ि दिये १ जो कोई कहैकि मृगी के बालक के मोह करिकै व्याकुलहोकरिकै भगवान्को पूजन त्यागिदिये तौभी बड़ाआश्चर्य होता है राजको कुटुंबको मोह छोड़िदिया और पशुके मोहसे व्याकुलहोना यह कैसा है कि जैसापग करिकै हीन आदमी पर्वतपर चढ़िजावै तैसा आश्चर्य हमारे सबके मनमें होताहै २

अवनान्मृगपुत्रस्य मोक्षंप्राप्स्यत्यतोहिसः । मोहितःपरिचर्यांचहरेस्तत्याजकौतुकम् ४ इ० भा० शं० मं० पं० अष्टमेऽध्याये अष्टमवेणी ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कश्यपंसृष्टिकर्तारम्वर्जयित्वाचसौभरिम् । नश्रुतोनश्चशास्त्रेषुमहत्कौतूहलन्त्विदम् १ द्विपत्नीकोमुनिः कश्चित्कथंतस्यचद्वाऽभवत् २ वाचक उवाच ॥ अपक्वहृदयोविप्रोगृहीपत्न्यांसुताननम् । अदृष्ट्वाचैवपुत्रार्थंपुनरूढातपस्विनी ३ सायदोढाद्विजस्यैव

वाचक बोले जब भरतराजा एक दिन बनको गये तब बनमें क्या देखते कि धवलनाम मुनि संसारकी लज्जाकरिके आप मृगहोके और अपनी स्त्रीको मृगी बनाय कै रमण करि रहे हैं तिनको राजा भरत देखिके ३ हसते भये तब जलदी धवलमुनि शापदिहे कि हेदुष्ट मृगीके बालककी तूरच्छा करैगा उसीरच्छाके कारणसे तेरी एकजन्म में मुक्तिनहीं होवैगी तीन जन्ममें मोक्षको प्राप्त होवैगा हे श्रोताहो इस शापते भरतने तमाशा सरीके मृगीके बच्चेमें चित्त लगायके उसी के मोहसे भगवान्‌को पूजनआदि त्यागि देतेभये ॥ ४ ॥ इतिश्री भा० शं०मं०पंचमस्कंधेअष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥८॥ श्लोक॥१५ ॥

श्रोता पूछते भये कि हम सबोंने शास्त्र में ऐसा सुना है कि मुनियों में स्त्री कश्यप मुनिके बहुत रही हैं सृष्टि करने वास्ते तथा सौभरि ऋषि के स्त्री ५० रहीहैं १ और किसी ब्राह्मण को नहीं सुने कि दो स्त्री रही हैं सो इस ब्राह्मणके दो स्त्री क्यों होती भई यह बड़ी तमाशासरीकी बात है २ वाचक बोले हे श्रोता ब्राह्मण गृहस्थ था गवांर था कुछ पढ़ा नहीं था पहिली स्त्री में पुत्र नहीं भये तब पुत्र होने वास्ते दूसरी

बभूवुस्तनयाद्वयोः ४ इतिभा० पं० शं० मं० नवमे ऽध्यायेनवमवेणी ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मूकवाक्यइवाश्चर्य्यंशिविकावाहन्वेषणम्। कारयामासविप्रेंद्रकथंराजारहूगणः १ महादरिद्रीभूपोपितस्याऽपिबहवस्सदा। शिविकावाहकास्सन्तितस्यासन्किमुतेनहि २ वाचकउवाच ॥ज्ञानलब्धिभविष्याच्चयोजिताश्चसहस्रशः। नृपेनखंडितश्चैकस्सम्बभूव पुनः पुनः ३ सप्तावशेषितान्दृष्ट्वावाहकान्वेष

स्त्री से बिवाह कर लिया ३ जब दूसरी स्त्री को बिवाह कर लिया तब ब्राह्मण के दोनों स्त्री के पुत्र होते भये ४ इतिश्री भा० पं० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा रहूगण मिआना ले चलने वाले आदमी को क्यों शोध लगवाया एक खंडित होगया तो क्या और पालकी ले चलने वाले नहीं रहे राजा होके एक आदमी ज़्यादा नहीं राखा जैसा गूंगा वाक्य बोले तब लोगों को आश्चर्य मालूम परता है तैसा ये भी आश्चर्य है क्योंकि १ बड़ा दरिद्री राजा होगा तिसके भी पालकी ले चलने वाले आदमी बहुत रहते हैं और रहूगण राजा के बहुत क्यों नहीं रहे कि एक दुःखी हो गया तो पालकी जंगल में रह गई दूसरे को पकरि मँगाय तो पालकी चलती भई यह क्या तमाशे की बात है २ वाचक बोले राजा रहूगण के हजारों आदमी पालकी ले चलने वाले रहे थे एक दुःखी हो गया तो दूसरेको तैयार किये ओभी दुःखी होगया इसी प्रकार हजारों आदमी पालकी ले चलने में जोड़ते भये परन्तु भरत के मुखारविंद से राजा को ज्ञान प्राप्ति होना लिखा था इस वास्ते जिसी को पालकी

श्रान्तदा । कारयामासतीर्थेप्सुर्दैवाद्भरतमागमत् ४ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मनोविभूतयश्चासन्सर्वाजीवस्य नित्यशः। भरतेनकथम्प्रोक्तंमाययाकल्पितस्यच १ न मायारचितोजीवोजीवस्साक्षात्स्वयम्प्रभोः। अंशोमाया वशीभूतोनतुमायाविकल्पितः २ वाचक उवाच ॥ यो यस्मात्त्रासमाप्नोतितन्न्यूनमपिमन्यते । श्रेष्ठांमेनेतदा मायांजडस्सर्वगरीयसीम् ३ स्वात्मानंचतयाग्रस्तंवीक्ष्या

के चलने की आज्ञा देवै तब सात आदमी अच्छे रहैं एक दुःखी होजावै ३ बहुत उपाय राजा किया परन्तु सात आदमी खुशी रहैं एक दुःखी हो जावै पालकी में कंधादियेकि एक दुःखी भया तथा राजाको तीर्थ जाने की जल्दी इच्छा इस वास्ते अपनी पालकी लै चलने में कोई बाक्री नहीं रहा तब दूसरे आदमी को ढुंढ़वाया दैवयोग से भरत मिलिगये इसी वास्ते विघ्न होता था काम हो गया इस कारण दूसरे आदमी का शोध लगाया है कुछ दरिद्रपना नहीं ४ इ० भा० पं० शं० मं० दशमेऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछते भये कि रहूगण से जड़ भरत कहे कि माया करि कै बनाया हुआ जो जीव तिसको जेतना मनको पदार्थ है सो सब होता है उसी पदार्थ को जीव भोगता है परन्तु भरत ने जीवको माया करिकै बनाया क्यों कहे थे १ जीवमाया करि कै रचित नहीं है जीव तो भगवान् को अंश है परन्तु मायाके बशिहो गया भरतने जीवको माया रचितक्यों कहेथे २ जोप्राणी जिस से भय मानता है सो प्राणी आपना त्रास

तन्नसितस्तया। मायारचितजीवं सस्समुवाचविमोहि
तः ४ इतिश्री भा० पंच०शं० मंजर्य्यांएकादशेऽध्याये
एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ संसारेस्थूलकृश्यादिसदसद्वृद्ध
ह्रादिच। यत्सर्वंयुग्मभावंचतदुक्तंमाययाकृतम्। भरतेन
कथंस्वामिन्नेतदीश्वरवैकृतं १ वाचक उवाच ॥ बीजंवि
नानकस्यापिसमुत्पत्तिर्विजायते। ईश्वरप्रेरितामायासा
शक्तिरितिकथ्यते २ तज्जातोऽमबीजश्चतेनोत्पन्नमिदं

देनेवाला छोटाभी होगा तौभी उसको सबसे बड़ा करिके
मानैगा ज्ञानियोंके सामने माया बिल्कुल छोटीहै परन्तु जड़
भरत को बारंबार माया दुःख देती है मायासे भरत हारिगये
तबसब चीजोंसे मायाको भरत बड़ी मानते भये ३ जड़भरत
ने आपने को माया करिकै दुःखी देखिकै मायासे बहुत डरे
इसीडरसे जीवको माया करिकै बनाया कहे हैं क्योंकि उस
वखत भरत ऐसा मायासे डरेथेकि आपने मन में विचारतेथे
कि ब्रह्मा विष्णु शिव मायासे बड़े नहीं हैं माया सबसे बड़ी
है ॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादश
वेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी संसार में जो वस्तु मोटी
तथा पतली सुंदर खराब बड़ी छोटी पाप पुण्य राति दिन
हानि लाभ जन्म मरण आदिलेकै जोड़ीकहं दोको जोड़ है
सो सब माया को बनायो है ऐसा रहूगण राजा से भरत क्यों
कहे क्योंकि यह तो सब भगवान् को बनायो है १ वाचक बोले
कि बीजबिना कोई भी प्राणी नहीं जन्मलेता इसी वास्ते
ईश्वरकी आज्ञा को प्राप्त हुई माया उसी को शक्तिभी मुनि

जगत् । प्रोवाचातोमहायोगीभरतोमाययाकृतम् ३ इतिश्री भा० पं० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी॥ १२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चत्वारोवर्णिताःस्कंधाश्शुकेननृपविश्रुताः। हेराजन्राजशार्दूलचेत्याद्यन्यसुबोधनैः १ समुच्चार्यमुनिर्भूपंकथयामासनैककथाः । तेनोक्तश्चोत्तरामातः कथमत्रमहाभ्रमः २ वाचक उवाच ॥ हरिकीर्तनसंलब्धं पृच्छन्तन्तम्पुनः पुनः । धन्यास्यचोत्तरामाता

जन कहते हैं २ तिस माया करिकै भ्रमभया भ्रमयह है कि, विश्वास किसीको नहीं मानना सोई भ्रम करिकै यह संसार उत्पन्न होता भया इस वास्ते बड़े योगी जड़भरतने मायासे किया कहे हैं ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेव जीने भागवत को चारिस्कंध वर्णन किहे तथा राजाभी चारों स्कंधोंको सुनता भया शुकने राजाको ऐसा दुलार नामलेकै कथा चारोंस्कंधमें वर्णन करते भये हे राजन् हे राजशार्दूल हे नृपशिरोमणे हे कौरवोत्तम ऐसा आदिले के अनेक प्रकार को संबोधनसे दुलार करिकै कथा कहते भये१ परन्तु पंचमस्कंधके अध्याय१३ श्लोक२४में परीक्षित् को उत्तरा मातः क्यों कहे उत्तरा माता को अर्थ यह है कि उत्तरा है तुम्हारी माता ऐसे हे परीक्षित् यह बड़ी शंका होती है जो और कभी परीक्षित् की माता को नामलेकै राजा को दुलार शुक किहे होते तौ शंका नहीं होती गुरु जी शंका कहो दो श्लोक को अर्थ मिला है युग्म है वाचक बोले शुकदेव जी ने परीक्षित् को भगवान् के कीर्तन में बड़ा

जनयामासयात्रिमम्।ज्ञात्वैवमुत्तरामातर्मुनिर्हर्षाद्धुवा चह्व ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयो दशवेणी१३ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ सर्वान्जीवान्परित्यज्य संसारेमोहिता न्मुनिः। वानरस्योपमादत्ताकुटुम्बभरणेकथम् १ वाचक उवाच ॥ सर्वेचराचरेजीवाः कुटुम्बभरणेरताः। तथा पिवानराणांवै केषामपिनगीयते । कुटुम्बपोषणेप्रीति स्सदृशीनीतिसंचये ॥२॥ इति० पं० शं० मं० चतुर्दशे ऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥श्लो० ॥ ३० ॥
लोभी जानिकै तथा देह नाश होने की चिंता को त्यागि कै बारंबार भगवान् के चरित्र को पूंछि रहे हैं परीक्षित् भगवान में ऐसा प्रीतिमान् परीक्षित् को देखिकै शुकजी विचारते भये कि परीक्षित् की माता जो उत्तरा तिसको धन्य है ३ जो उत्तरा परीक्षित् को जन्माती भई तिसको धन्य है ३ ऐसा बड़ा हर्ष करिकै राजा को(उत्तरा मातः)इस पद से दुलार करि कै कथा वर्णन करते भये॥ ३॥ इति० भा० पं० शं०मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३॥ श्लोक २ ४ ॥

श्रोता पूछते भये चौरासी लाख योनिमें सब जीव मोहके बशिहोकै अपने अपने परिवार के पालन करने में रातिदिन लगिरहे हैं परन्तु शुकजीने सब जीवों को त्यागि के परिवार के पालन करने में बानर की उपमा क्यों दिया क्या बानर सब जीवोंसे ज्यादा परिवार को पालन करता होगा यह शंका है १ वाचक बोले संसार में सब जीव परिवार के पाल- ना करने में चतुर हैं परन्तु नीति शास्त्र में लिखा है कि बानर

श्रोतार ऊचुः ॥ समदृष्टिःसमाख्यातोव्यासपुत्रःशुको मुनिः । कथम्प्रोवाचमेधावीचान्यान्पाखंडिनोजनान् १ वाचक उवाच ॥ राक्षसैर्नाशितावेदाश्चत्वारश्चयुगत्रये । कलौ पाखंडिभिर्ध्वस्तास्तेभविष्यन्ति निश्चितम् २ विज्ञापनायजीवानांकलिजानाम्मुनीश्वरः । वेदानांरक्षणायैव प्रोचेपाखंडिनोजनान् ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

सरीके परिवार का मोह तथा पालना कोई प्राणी नहीं करैगा इस वास्ते शुकजी वानर की उपमा परिवारपालन करने में देते भये ॥ २ ॥ इ० भा० पं० शं०मं०चतुर्द०चतुर्दशवेणी॥१४॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये शास्त्र में तथा लोक में मुनिजन शुकदेव को समदृष्टि कहते हैं कि शुकदेवजी भला बुराको एक रकम देखते हैं ऐसा परमहंसशुक जी दूसरे प्राणी को अज्ञानी सरीके पाखंडी क्यों कहते भये १ वाचक बोले कि शुक जी अपने मनमें बिचार किये कि सतयुग त्रेता द्वापर में चारोंवेदों को राक्षस नाश करते हैं तथा कलियुग में पाखंडी प्राणी निश्चयसे चारों वेदोंको नाश करैंगे २ कलियुग में जो प्राणी जन्मे हैं उन प्राणियों को वेदकी रीति सिखाने वास्ते तथा हुसियार करने वास्ते तथा कलियुग के प्राणी चतुर होवैंगे तो वेदकी रक्षा होवैगी इस वास्ते दूसरेको पाखंडी कहेहैं क्योंकि अपने धर्मकी रक्षा करने वास्ते परमहंस भी थोराभेद करते हैं ॥ ३ ॥ इति श्री भागवते पं० शं० मं पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ कदम्बाम्रजम्बूवटानां चरित्रन्तथातद्भवानान्नदीनांह्रदांच । विश्रुत्वामनोनस्सदाभ्राम्यते कम्पतेशंकयात्रासितम्भीतिभग्नं १ वाचकउवाच ॥ यदा ब्राह्मणक्षत्रविट्छूद्रवर्णास्स्वकर्मस्थितास्संस्थितावेदमार्गे। तदासर्वमेवंत्विदंसंस्थितंवैपरीत्याहृतंविष्णुनातत्समस्तम् २ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० १६ से ॥ २५ ॥ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ आत्मनाकथमात्मानं तुष्टुवुर्जगदीश्वराः । एषानोमहतीशंका नार्य्या नार्य्यांरतिर्यथा १

श्रोता पूछतेभए हे गुरुजी कदंब, आम, जामुनि, वट, इन वृक्षों को चरित्र सुनिके तथा इन वृक्षों करिके उत्पत्ति भये जो नदी तथा कुंडसब चीज देनेवाले को सुनिके हमारा सब को मनचक्करखाय रहा है शंका करिके कांपता है शंकासे डरिके उसी शंका की भय में छिपिगया क्योंकि ऐसी बात सुनने में नहीं आई नदी में तथा कुंड में सब पदार्थ भरेहैं हर३ १ बाचक बोले जब ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अपने अपने धर्म में तथा वेदके मार्ग में टिकेथे तब कुंडोंको नदियों को वृक्षों को प्रभाव जो भागवत में लिखा है सो सब सत्य रहा जब चारोंवर्ण कलियुग में अपने २ धर्म को तथा वेदोंकी मार्गको त्यागि देतेभये पाखंडी होगये तब भगवान् कुंडोंको नदियों को वृक्षों को प्रभाव हरि लेतेभये ॥ २ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥१६ से२५ तक॥

श्रोतापूछते भए अपने मुखकरिके भगवान् के अवतारों की स्तुति क्यों करते भए बड़ी शंका होती है जैसा स्त्रीके संग स्त्री रमण करैतो क्यासुख प्राप्त होवैगा कुछुभी नहीं

वाचक उवाच॥ हरेर्नामानिरूपाणिविविधानिजगत्त्रये। अज्ञान्ज्ञापयितुंतानि स्वात्मनात्मानमीश्वराः। स्तुनुवन्तिसदास्तोत्रै रेतदर्थं च नान्यथा २ इतिश्रीभा० पं० शं० नि० मंजर्य्यांसप्तदशे ऽध्यायेसप्तदशवेणी॥ १७॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ सिंधुजोक्तश्च भगवान् त्वत्पादसेवनंविना। नमाम्प्राप्नोतित्रैलोक्ये कोपीतिवचनंकथं १ दुरात्मानोनजानंति विष्णुंचैवचतुर्युगे। दैत्यादिमानवास्सर्वे तेषांश्रीरचलामुने २ वाचक उवाच ॥ सेवका

तैसे अपने मुख से अपनी स्तुति करने में क्या महत्त्वहोवैगा १ वाचक बोले तीन लोकमें भगवान् को नाम तथारूप अनेक हैं उननाम रूपोंको ज्ञानी जनतो जानतेहैं परंतु अज्ञानी नहीं जानते अज्ञानियों को अपने नामरूप की महिमा मालूम करनेवास्ते भगवान् अपने मुखसे अपनी स्तुति करते हैं क्योंकि वो अज्ञानी जन ऐसे मूर्ख शिरोमणि हैं कि दूसरेकी बात मानते नहीं २ इ० भा० पं० शं० मं० सप्तदशे ऽध्याये सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतापूछते भए लक्ष्मी भगवान् से कही कि हे भगवन् जो प्राणी तीनलोक में आपुको पूजन सेवन भजन नहीं करते वो प्राणी मेरेको कभी भी नहीं प्राप्त होवैंगे जन्म जन्मदरिद्री बनेरहैंगे ऐसा वाक्य लक्ष्मीने क्यों कहीं क्योंकि १ हे मुनि दुष्टजीव जैसे दैत्य दानव दुष्टमनुष्य ये सबचारों युगमें विष्णुको नहीं जानते कि विष्णु क्या चीज हैं और सेवनतो धरारहा परंतु तिनके घरमें लक्ष्मी अचलहोके टिकी हैं तौ लक्ष्मी का वाक्य झूठा भया हे गुरुजीइस शंकाको

वासुदेवस्यतेनराःपूर्वजन्मनि।स्वस्वकर्म्मानुसारेण तपो भ्रष्टाऽभवन्क्षितौ ३ कुयोनिंचसुयोनिंच प्राप्तास्स्वेनैव कर्म्मणा । तपसैश्वर्यमापन्ना भ्रष्टादुर्बुद्धयोऽभवन् ४ यावद्धरिकृतासेवा तावदैश्वर्य्यमद्भुतम् । भवेयुस्तेच तत्क्षीणे दुःखिनोऽतोरमोदितम् ५ इति० भा० पं० शं० मंजर्य्यांअष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८॥श्लो०॥२२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वर्णिताःक्षुद्रनद्योपि यालोकेनैवज्ञायते।अवन्त्यंतिकगाचिप्रागीताशास्त्रेषुभूरिशः।सालोके रपिविख्याता नोक्ताभागवतेकथम् १ वाचक उवाच ॥

आप नाश करो २ वाचक बोले जो दैत्यआदि दानव तथा म्लेच्छऔर कोई दुष्टमनुष्य भगवान्को नहीं जानते तथा लक्ष्मी को सुख भोगते हैं वो जीव पूर्व जन्म में भगवान् के सेवक थे मर्त्यलोकमें आयके अपने अपने कर्म से भ्रष्ट होगये हैं भगवान्को भूलिगयेहैं ३ तपसे भ्रष्ट होके दुष्टबुद्धि होके कोई सुंदरि योनि को प्राप्त भए कोई खराब योनिको प्राप्त भए परंतु भगवान्के सेवनरूप तपस्या करिके अचल लक्ष्मी को सुख भोगिरहेहैं ४ जबतक भगवान्की सेवाको पुण्य उनलोगों के पास रहेगा तबतक अचल लक्ष्मी को सुख भोगेंगे जब सेवाकी पुण्य नष्टहोजावैगी तथा इसजन्म में भगवान्को पूजन नहीं करते हैंइसवास्ते बहुत दुःख पावैंगे खाने को अन्नभी नहीं मिलैगा इसवास्ते लक्ष्मीने भगवान् से कहीथी की आपु को सेवन नहीं करते हैं सो जीव मेरेको नहीं प्राप्त होते ॥ ५ ॥ इ० भा० पं० शं० मंजर्य्यांअष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ २२ ॥

श्रोता पूछते भये कि मर्त्य लोक में जो छोटी२नदी हैं जिन

पश्चिमोत्तरतोमार्गेन्दृष्टौक्षिप्रानचागतान्। मुनीन्पूजयितुंशम्भुमेकदाशम्भुरात्रिषु २ पूजनंभ्रष्टमन्वीक्ष्यतैश्शप्ताचादरन्नते। भवेद्भागवतेशास्त्रेमुनिनातोनवर्णिता ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दर्भशाल्मलप्लक्षानां शाकपुष्करशाखिनाम् । जम्बोरपिचविस्तारं श्रुत्वावर्द्धतिनोभ्रमः १ को नाम भी कोई नहीं जानता उनको तो भागवतमें वर्णन व्यास जीने किया तथा उज्जैन के सामने बहनेवाली क्षिप्रा नदी जिस को शास्त्र में नाम लिखाहै तथा लोक में प्रजाभी क्षिप्रा को जानते हैं ऐसी क्षिप्राको वर्णन भागवतमें व्यास जीने क्यों नहीं किये १ वाचक बोले एकदिन शिवरात्रिके समय मुनिजन शंकर के पूजन करनेवास्ते पश्चिम दिशासे आतेभये उसीदिन दैवयोगसे क्षिप्रा भीजल करिके पूर होरहीहै मुनि जन उतरने लगे तो क्षिप्राने रस्तानहीं दिया मुनिजन पश्चिम में दिशा के तटपर बैठे रहिगये २ शिवरात्रि को शिव को पूजन मुनियों ने भ्रष्ट देखिके क्षिप्रा को शाप देतेभये हेदुःष्टे नदि भागवत में जिस्का वर्णन भया सो धन्य है तेराआदर भागवत शास्त्रमें नहीं होगा हे श्रोताहो ऐसा मुनियों को शाप जानिके व्यासजी ने भागवत में क्षिप्रा को वर्णन नहीं किया ३ इति भा० पं० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कुश को सेमला को पाकरि को शाकको कमल को जामू को इनबृक्षों की लम्बाई चौड़ाई सुनिके हमारे सबके मनमें दिन २ प्रति शंका बाढ़ती है क्योंकि येवृक्ष हैं कि तमाशा है १ वाचक बोले कि राजा प्रियव्रत करि

वाचक उवाच ॥ प्रियव्रतकृतंकर्म्म शंकनीयंकदापिन।
ईश्वरेणकृतंसर्वन्निमित्तंकृत्यभूपतिम् २ पंचमेप्रथमेप्रो
क्तंश्लोकेचैकोनत्रिंशके। कर्म्मप्रैयव्रतंकर्तुमीश्वरात्को
पिन क्षमः ३ इति० भा० पं० शं० मं० विंशेऽध्याये
विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोककोनेमनहीं ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ आकाशेभूम्यधोनैव सविताश्रूयते
चनः। त्रिलोकीन्तपतेसूर्य्यः कथम्मुनिरुवाचह १ वाचक
उवाच ॥ भूम्यधस्सप्तलोकानां गाथानोक्ताशुकेनसा।
मर्त्यादूर्ध्वंत्रिलोकान लोकाभ्यन्तःप्रवर्तिनी। सात्रिलो

के किया जो कर्म तिस कर्म्म में शंकाकभी भी नहीं करना
चाहिये क्योंकि जो आश्चर्य करने लायक कर्म प्रियव्रतने किया
है सो सबकर्म भगवान्ने किया है राजा प्रियव्रत को निमित्त
करिके २ क्योंकि पंचम स्कंध के प्रथम अध्याय श्लो ३९ में
व्यासजी कहे हैं कि राजा प्रियव्रत करि के किये जो कर्म
तिन कर्म्मों को करने वास्ते ईश्वरकी सामर्थ्य है और दूसरे
प्राणीकी किसीकी नहीं है ऐसे व्यासके वाक्यसे मालूम परता
कि जो आश्चर्य रूप काम प्रियव्रतने किया सो सब भगवान्
ने किया है इसवास्ते प्रियव्रत के किये कर्म में शंका नहीं करना
चाहिये ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥
२० ॥ श्लोक को नेम नहीं अध्याय भरेमें शंका है ॥

श्रोता पूछते भये सूर्य आकाशमें हैं भूमिके नीचे सूर्य नहीं
हैं फिरि व्यासकैसे कहाकि तीन लोक में प्रकाश सूर्यकरते हैं १
वाचक बोले भूमिके नीचे जो सातलोक हैं तिनलोकों की
कथा शुकजी नहीं कहेथे मर्त्य लोक के ऊपर जो लोकहैं
तिन लोकों के बीचमें जोलोक हैं तिनको त्रिलोकी कहेथे

की समाख्यातातपन्पेताम्प्रभाकरः २इति० भा०पं०शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी २१॥श्लो०॥ ३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भूमौतपःप्रकुर्वन्ति सर्वेब्रह्मर्षिसत्तमाःशास्त्रेश्रुतंचनोब्रह्मन् केचोर्ध्वेयेसमाश्रिताः१ वाचक उवाच ॥समाप्यतपसांसिद्धिं भूमिन्त्यक्त्वा च येगताः। तत्रतिष्ठन्तितेसर्वे शिष्यास्तेषांक्षितिंश्रिताः २ इतिश्री भा० पं० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शिशुमारस्यहृदये ग्रहाणाम्मध्यसंस्थितः। नारायणःकोभगवान् महाश्चर्यमिदंश्रुतम् १

उसी त्रिलोकी कहे तीनलोक में सूर्यप्रकाश करते हैं २ इति भा० पंचमस्कंधे शं० नि मंजर्यां एकविंशेऽध्याये एकविंशवेणी २१ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये हमसबशास्त्रमें ऐसा सुना है कि सबऋषि जन पृथ्वी में तपस्या करते हैं परंतु हे गुरुजी मुनिजन ऋषि लोक में टिकिके तपकरते हैं वोमुनि भूमिमें तपकरनेवाले हैं कि दूसरे कोई हैं १ वाचकबोले भूमिमें तप करने वाले जो मुनि सो तपस्या की सिद्धि की समाप्ति करिकै पृथ्वी को त्यागि के ऋषिलोकको जाते भए ऋषिलोक में भगवान्को ध्यान करनेलगे कठिन २ तप छोड़िदिए परंतु उनहीं ऋषियों के शिष्य भूमिमें टिकेहैं अपने २ गुरुवों के आश्रमपर तप करिरहेहैं २ इति भा० पं० शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोतापूछते भए शिशुमार चक्रके हृदय में नवग्रहों के बीच में नारायण भगवान् टिके हैं ऐसा भागवत में हम

वाचकउवाच ॥ बद्रिकायान्तपस्तेपेयश्चिरन्धर्मनन्दनः।
शिशुमारस्थितानांसः शिक्षार्थंतत्रसंस्थितः २ इतिश्री
भा० पं० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी २३ ॥
श्लो० ॥ ७ ॥
श्रोतार ऊचुः ॥ वत्सरेवत्सरेदुष्टौ सूर्य्यौपीडयतोनिशम्।
चक्रस्यापिभवेत्कष्टन्नजघ्नेतौहरिःकथम् १ चेत्ताभ्यांच
सुधापीतातथापितत्कृतासुधा २॥वा.उ.॥ चक्रपूतौहरि

सबने सुना है हे गुरुजी नारायण भगवान् कौन हैं बड़ी शंका होतीहै क्योंकि जो वैकुंठ नाथ नारायणहैं सो ग्रहोंकेबीच में कैसे टिकैंगे१ वा.वाचकबोले धर्मके पुत्र जो नारायणहैं जिन्हों ने बद्रिकाश्रम में बहुतदिन तक तप किये सो नारायण शिशुमारचक्र में टिके जोसब देवता तिनको सुंदर धर्मसि-खानेवास्ते ग्रहों के बीच में टिके हैं २ इति भा० पं० शं० मं त्रयोविंशेऽध्या० त्रयोविंशवेणी २३॥ श्लो० ७ ॥

श्रोता पूछते भए राहुकेतु ए दोनों दुष्टवर्ष २ सूर्य को तथा चन्द्रको पीड़ाकरते हैं तथाइन दोनों से सूर्यचंद्रकी रक्षाकरने वास्ते भगवान् को सुदर्शनचक्र आताहै तो हमेश आनेजाने में रक्षाकरने में सुदर्शन कोभी कष्टहोता है ऐसे दुख देने वाले राहुकेतु को भगवान् क्यों नहीं मारडालेकि किसीको दुःख नहीं होता १ यह जोकोई कहैकि राहु केतु अमृत पियेथे किसी केमारेनमरते तो सत्यहै परंतुअमृत भी भगवान् का बनायाहै भगवान् माराचाहते तो अमृत रक्षा नहीं कर सक्ता २वा.वाचक बोले भगवान् सुदर्शन चक्र करिके राहुको मारते थे तबसे राहु केतु चक्रको छुईकै पवित्र होगयेभगवान् सुदर्शन चक्र करिकै पवित्रराहुकेतुको जानिकै नहींमारते भये तथा

ज्ञात्वाचासुरौनावधीद्धरिः। चक्रचिन्हंविलोक्यैवहरिःप्रीतोद्वयोरभूत् ३ इतिश्रीभा० पं० शं० मं० चतुर्विंशेध्याय चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥ से ॥ ३ ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुमुक्षुरन्यंकंसेवेच्छेषादन्यमिति प्रभो । नकुत्रापिश्रुतंचैतद्बालवन्मुनिनोदितम् १ वाचकउवाच ॥ शेषशब्दस्यद्वेधार्थो मुनिनासंकृतःपुरा। शब्दशास्त्रविहीनैश्चज्ञायतेपृथिवीधरः २तत्कृतश्रमविद्वद्भिर्नष्टेसर्वेचराचरे । यश्शेषोज्ञायतेसस्तु मुमुक्षूणांसुखप्रदः ३ भूमिभारधरंशेषं निमित्तंकृत्यवैमुनिः । राजानं

दोनोंकी देहमें चक्रको चिह्न देखिके राहु केतुके ऊपर प्रसन्न होगये ३ इति भा० पं० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लोक १ से ३ तक ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरुजी शुकदेवजी राजासे कहेकि मुक्ति होने की इच्छा किहे जो प्राणीहै सो शेषसे दूसरो देव कौन है जिसको सेवन करैंगे मुक्ति देनेवाला शेष सिवाय दूसरा देवता कोई नहींहै ऐसा वाक्य कभी भी हमलोगनहींसुने कि मुक्ति देनेवाले शेष भगवान्हैं शुकजी बालकसरीके क्यों ऐसे वचन कहे १ वाचक बोले व्यास मुनिनेशेष शब्दको दो अर्थ कियेहैं व्याकरणको जो मनुष्य नहीं जानते वो मनुष्य तोशेष अपनी मस्तक पर भूमिको धरेहैं उसको शेष कहैंगे २ तथा जो मनुष्य व्याकरण को जानते हैं वोसब शेष शब्द को अर्थ ऐसा करैंगेकि तीनलोक चौदह भुवन चरअचरको नाश भये पीछे जिस भगवान् को नाश नहींहोता उसको शेष कहतेहैं सोईशेष भगवान् मुक्तिकी इच्छाकरनेवाले जीवों को सुखदेने वाला है इसी वास्ते मुक्तिकी इच्छा करनेवाले जीव शेषभगवान्

कथयामास नष्टशेषस्मुनीश्वरः४इतिश्री भा० पं० शं० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी२५॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ द्विजादयोनविश्रुताः कदाऽस्माभिर्मुनीश्वर । श्वगर्द्दभानांपतयो मुनिनोक्तंकथन्त्विदं १ वाचक उवाच ॥ समीचीनश्शुनामर्थो भ्रमोऽस्तिगर्द्दभेपदे । प्रोक्तस्सर्वेषुकोशेषु वस्तोऽपिगर्दभोच्यते २ त्रिवर्णैःपाल्यतेवत्सस्तस्मात्तेपतयस्स्मृताः । श्वगर्द्दभानाम्पतयः चातःप्रोक्ताद्विजातयः ३ इ० भा० पं० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी २६ ॥श्लो०॥२४॥

को त्यागिके दूसरे देवको किसको पूजनकरैंगे ऐसामुनिनेकहेहैं३ पृथिवी जीवों को धारण किये जो शेष तिन को व्याज करिके संसार के नष्टभये पीछे जो शेष भगवान् तिनके वास्ते राजा से शुक जी कहे हैं ॥ ४ ॥ इति० भा० पं० शं० नि० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोता पूछते भये कि हमसबोंने ऐसा कभी नहीं सुना कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्य कुत्ता गदहा आदि लेकै और पशु हैं तिन को पति होतेभये मुनिने ऐसा वाक्य क्यों कहे १ वाचक बोले श्वान को पति होनातो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के वास्ते प्रगटहै क्योंकि उसश्वान को तीनों वर्ण पालतेहैं गर्धभको पतिहोना तीनवर्ण को नहीं चाहिये तौभी बड़े बड़े कोशों में बकरा को भी गर्दभ कहते हैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य बकरा को पालन चारों युगमें करते भये कोई यज्ञवास्ते कोई जीव दया मानि के इन आदि कारण से बकराको पालते भये इसवास्ते मुनिने तीनों वर्णों को श्वान तथा गर्द्दभ को पति कहेथे क्यों कि तीनवर्णोंको कुत्ता बकरा पालना बड़ा बुराकर्म शास्त्र में

लिखा है परन्तु जो प्राणी प्रमाद से उनकी पालना करेंगे सो दुःख भोगेंगे ॥ ३ ॥ इति० भा० पं० शं० मं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ २४ ॥

इतिश्रीभागवतशंकानिवारणमंजरी शिवसहाय बुधविरचितासुधामयीटीकासहितासमाप्ता श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

षष्ठस्कंधे ॥ ६ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विद्वानजामिलोज्ञानी गुर्वग्नितिथि सेवकः । दृष्टमात्रःकथंशूद्रीं स्वधर्म्माद्विररामह । मह दाश्चर्य्यमेतद्धिवर्ततेहृदयेचनः १ वाचक उवाच ॥ ऋषि म्पराशरन्दृष्ट्वाच्युतवीर्य्यंजहासवै । योनौचनीचकन्या यागंगामध्येसुविह्वलम् २ तेनशप्तस्त्वमप्येवंक्षणाच्छूद्रो

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अजामिल बड़ा पण्डित था ज्ञानीथा गुरुकी अग्नि की महात्मों की सेवा करने वालाथा ऐसा अजामिल शूद्री को देखतेई मात्र अपने धर्मसे भ्रष्ट होगया यह बात सुनिकै हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य मालूम परता है क्योंकि कोई मूर्ख भ्रष्ट होता है तोभी एक क्षणमें नहीं होता यह तो बड़ा चतुरथा क्षणएकमें क्यों भ्रष्ट हुआ १ वाचक बोले गंगा की बीच धारा में पराशर मुनि काम करिकै दुःखी होगये तब भील की कन्याके संग रमण करतेभये ऐसे पराशर मुनिको अजामिल देखिकै बहुत हंसता भया २ अजामिल को हसता देखिकै पराशरमुनि अजामिल को शाप देते भये हे दुष्ट हमेसरीके तूभी किसी समयमें शूद्री को देखिकै कामसे व्याकुल होकै ब्रह्मकर्म से भ्रष्ट होजावैगा

भविष्यति । शूद्रीकामेनसंतप्तश्चातश्शीघ्रंविमोहितः ३
इतिश्रीभा० ष० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी १
श्लो० ॥ ६१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अजामिलोयदाशुद्धो नारायणप्रकी र्तनात् । तंवक्तुंस्वात्माभिर्वीक्ष्य तद्दूताश्चकथंगताः १ वाचक उवाच ॥ नारायणेतिशब्दस्य कीर्तनाद्यमत्रास तः । विमुक्तोनचपापैश्च सर्वैश्शुद्धोबभूवह २ चेच्छुद्ध स्तन्नयन्तिस्मते वैकुंठंतदाक्षणात् । ब्रह्महत्यासमंपापं हमतो एकदफ़े भ्रष्टहो शरीर को शुद्ध करिलेवैंगे परन्तु तूंतो बिलकुल ब्राह्मण नहीं रहैगा चंडाल एक क्षणमें होजावैगा हे श्रोताजनो इसवास्ते अजामिल क्षणमें भ्रष्ट होगया॥ ३ ॥ इति श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजर्य्यांशिवसहायबुधविरोच तायांसुधामयीटीकायांषष्ठस्कंधेप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १
श्लोक ॥ ६१ ॥

श्रोतापूछते भये कि नारायणको नाम मरते वखत अजामिलने लिया तौ अजामिलको पातक सब नष्टहोगया अजामिल शुद्धहोगया तो भगवान्‌के दूतोंसे कुछबात करनेकी इच्छा अजामिलकिया तौ दूतोंने विचार किये कि यह हमसे बोलेगा तौ हमारे सबको पापलगैगा ऐसा जानिके क्यों चलेगये क्योंकि अजामिलतो पापसे छूटिगयाथा यह शंकाहै १ वाचक बोले नारायणके नामको अजामिललिया तबउसी नामके पुण्यसे यमराज के त्राससे छूटिगया तथा सबपाप करिके नहीं छटा २ जब पापसे छूटि गया होता तौ उसी वखत भगवान्‌के दूतोंने अजामिलको बैकुंठको एक क्षणमें लैजाते पृथ्वीमें तपस्या करनेको फिरि क्या कामथा दूतोंने

पापिनाम्भाषणेनच । एवंज्ञात्वागतास्सर्वे तपस्तप्तुं द्विजोगतः ३ इति० भा० ष० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी २ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ ऋषयोनैवजानन्ति धर्म्मम्भागवतम्भटाः। वयन्द्वादशजानीमः प्रह्लादजनकादयः १ इमे नोक्तमिदंवाक्यमहदाश्चर्य्यदायकम् । प्रह्लादादृषयो न्यूनाहरिर्य्येषांचकिंकरः२वाचकउवाच॥नन्यूनाऋषयः सर्वेतेश्रेष्ठाभुवनत्रये।मानिनोनैवपश्यन्ति धर्म्मंभागवतं

विचार कियेकि पापीके संगवात करनेवाले प्राणीको ब्राह्मण मारेसे जो पाप होताहै सो पाप उसको लागताहै ऐसा जानिके अजामिलको छोड़िके चलेगये तव अजामिल पाप नाश करने वास्ते तपकरनेको गया ३ इति भा० ष० शं० मं० द्वितीयेऽध्याय द्वितीय वेणी ॥ २॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतापूछते भये कि यमराजने अपने दूतोंसे कहेकि हे दूतलोगों भागवत रूप धर्मको ऋषलोगभी नहीं जानते हैं प्रह्लाद तथा जनकराजाको आदिलेके हम वारह १२ जन भागवत रूप धर्मको जानतेहैं हेगुरुजी बड़े आश्चर्य की बात यहहै कि जिन मुनियोंको भगवान् दासहै सो मुनिजन भगवान्के धर्म जाननेमें प्रह्लादसे भी मूर्ख होगये यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले मुनिजन भगवान् से बड़ेहैं दूसरे प्राणी से किसी कामसे छोटे क्यों होवैंगे तीन लोकमें सबसे बड़े हैं परंतु तपस्याके अभिमानसे भागवत रूप धर्मको नहीं देखते विचारतेहैं कि क्या हमारे तपसे भागवत धर्म बड़ा है ऋषिजन तपकरिके अभिमानी होरहे हैं इसवास्ते भागवत धर्मको नहींजानते और प्रह्लाद जनकआदि येगरीब हैं इनको

शुभम् ३ तपसामानिनस्सर्वे प्रह्लादाद्यास्तुकिंचनाः ४ इति० भा० ष० शं०मं०तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी॥३॥ श्लो० ॥ १९ ॥ से ॥ २० ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रचेतससुतानूचे द्विपदानांचतुष्पदः। अन्नंकथमितिब्रह्मन् महाश्चर्यंनिशाकरः १ वाचक उवाच॥नह्यत्रशशिनाप्रोक्ताःपशवश्चचतुष्पदः।भक्ष्यभोज्यौचोष्यलेह्यौ पदास्स्वादन्निगद्यते २ चत्वारैतत्पदोयस्मिन्कथ्यतेसश्चतुष्पदः । सुभोजनोक्तश्शशिनानपशूनाम्प्रभक्षणम् ३ इति० भा० ष० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ४॥ ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

भगवान् सिवाय दूसरा आधार कोई नहीं है इसवास्ते भागवत धर्मजाननेको यमराज अपने दूतोंसे कहेथे ३ इ० भा० ष० शं० मं० तृतीयेध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३॥ श्लो० ॥ १९ ॥ से२०॥

श्रोतापूछते भये चंद्रमाने प्रचेतसके पुत्रोंसे कहेकि मनुष्य को आहारपशु है बड़े आश्चर्य की बातहै हर ३-१ वाचक बोले हेश्रोताहो(द्विपदानां चतुष्पदः)इसश्लोककोअर्थ चन्द्रमा चतुष्पदयाने चारि पगवाले पशुनहीं किये ऐसा अर्थ किहे कि चतुः कहे चारि प्रकारको भोजन भक्ष्य १ भोज्य २ चोष्य ३ लेह्य इन चारों प्रकार भोजनोंको पदकहे सोई स्वाद मनुष्यों को आनंदसे आहार है २ इनचारों भोजन को पदकहे स्वाद जिस भोजन में होवै उस भोजन को चतुष्पद कहेथे चतुष्पद नाम बहुत सुंदर भोजनको है चंद्रमाने मनुष्य को पशुखानेको नहीं कहेथे ॥३॥ इति० भा०ष० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थ वेणी॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ९ ॥

श्रोता पूछते भये हर्यक्ष जो दक्षके पुत्र हैं सो सबभाई

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रजाविवृद्धयेयुक्तान्हर्य्यश्वान्नारदो मुनिः। तान्निवार्य्यप्रजासृष्टेर्योगमार्गेष्वप्रेरयत् १ वाचक उवाच ॥ तेषामिच्छाप्रजासृष्टौ नाभवत्पितुराज्ञया। कर्तुं समागतास्सृष्टिन्तद्विचार्य्यचनारदः। तेषाम्मनोगतम्भावम्बारयामासतत्क्षणे २ इतिश्रीभा० ष० शं ० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥तिमिश्चसरमेलाचसुरसाद्यामुनेस्स्त्रियः। तृणादिगृद्धजलजाशुनोयासांसुतास्स्मृताः १ किन्त्वासन्ताश्चब्राह्मण्यःकिन्तुश्वानादिमातरः। महदाश्चर्यमेतद्धिब्राह्मणीनांकुजातयः २ वा० उ० मुक्ताशुक्त्यांयथोत्पन्ना

मिलिकै सृष्टि बनाने वास्ते तपस्या करनेलगे तब तिनसबको नारद ने सृष्टि बनाने वास्ते मना करिकै योगकरने को क्यों आज्ञा देते भये सृष्टि बनाने में नारद को क्या हर्जा होताथा १ वाचक बोले दक्षपुत्रोंकी इच्छा सृष्टि बनाने की नहींथी योग करने की इच्छाथी परन्तु पिताकी आज्ञा मानि कै सृष्टि बनाने वास्ते तपकरने को गये तब नारद उनके हृदयकी बातको विचारिकै तिनके मनकी बात जानि कै सृष्टिबनाना मनाकरिकै योगकरने को उपदेश करतेभये॥२॥ इ० भा० ष० शं० मं० पंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ॥५॥ श्लोक६॥

श्रोता पूछते भये कि कश्यप मुनिकी तिमिसरमाइला सुरसा आदिस्त्री होतीभईं जिन्होंके तृण सर्प गीध जल के जानवर सब तथा कुत्ता ऐसे २ पुत्रहोते भये १ हे गुरु जी जिनके ऐसे पुत्रभये सो सब स्त्री ब्राह्मणीथीं कि कुत्ता आदिजो जन्मे तिनकी माता को रूप धारण कियेथीं कैसारूप तिन्होंकाथा बड़ा आश्चर्य होता है कि ब्राह्मणियों के पेटसे ऐसेखराब पुत्र

गजमुक्ता गजश्रवे । मृगनाभ्यांसुगंधालिगोकर्णे धेनुरोचनम् ३ वंशद्रेचवंशादि मुनिस्त्रीषुप्रजज्ञिरे । तथा ध्येते चब्राह्मण्य स्ताविधेर्बलवान्गतिः ४ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥श्लो० ॥ २६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ युगान्यतीतान्बहुवश्चेन्द्रे राज्यंप्रशासति । अथासीत्सदसन्नित्यमिन्द्रस्यभगवान्गुरुः १ नोत्थचालासनादिन्द्रस्तद्दिने गर्वितःकथम् । वाचक उवाच ॥ बलिनाकारयामास शत्रुंजयमखंगुरुः २ तत्स माप्तिदिनन्तत्तु सुरेशस्तेनमोहितः । गुरोरनादरादन्ध

जन्मते भये हर३-२ वाचक बोले जैसे सीप में मोती होता है तथा हाथी के कान में गजमोती होताहै जैसा मृगाकी नाभी में कस्तूरी होती है गायके कानमें गोरोचन होता है ३ जैसा बांसमें बंशलोचन होता है तैसा ब्रह्माकी इच्छा करिके तिमि सुरसाइला आदिलेके कश्यप मुनिकीस्त्री थीं ब्राह्मणीथीं पशु पक्षिणी रूप नहींथीं परन्तु ब्रह्मा का कर्म बड़ा जबरदस्त है इसवास्ते ब्राह्मणियोंके उदरसे ये सब जानवर जन्मते भये ॥ ४ इ० भा० ष० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ श्लोक ॥२६ ॥

श्रोता पूछते भये तीन लोकको राज करते करते इन्द्रको बहुत युग बीतिगया तथा बृहस्पति जो गुरु सो नित्य इन्द्रकी सभाको आतेथे कभी भी गुरुको अनादर इन्द्रने नहीं किया. परन्तु उसदिन अनादर क्यों किया बुद्धिभ्रष्टहोगया यह बड़ी शंकाहोती है हर१ वाचकबोले कि बलिको दुखी देखिके शुक्राचार्य शत्रु को जीतने वास्ते बलिसे यज्ञ कराते भये जिस दिन यज्ञकी समाप्ति होगई उसीदिन इंद्रकी पुण्य नष्ट होगई तब बलि की यज्ञकी पुण्य से इन्द्र पागल होगया २

दुपायंनैवतज्जये। कारयित्वाप्यतस्तस्यातिरस्कारोमखो गतः ३ इतिश्रीभा० प० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तम वेणी ॥७॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्राप्तकालोनृपोऽपृच्छन्मुनिम्बुस्मंक थंगुरो। कथाप्रश्नम्परित्यज्य हरेर्नारायणस्य च १ वाचक उवाच ॥ आत्मार्थंसज्जनाः कर्मनकुर्वन्तिकदा पिच। नदीगिरितरूणाम्वै स्वाभावमिवसोनृपः २ तवबलिकी यज्ञमें विचार कियाकि जबइन्द्र अपने गुरुको अनादर करैगा तब इन्द्रको बलि जीतैगा इस उपायसे दू-सरा उपाय इन्द्रके जीतने का नहीं है ऐसा विचारिकै बलि की यज्ञ इन्द्रको मोहिकै इन्द्रसे बृहस्पतिको अनादर कराय कै चलागया इस कारणसे उस दिन इन्द्रगुरुको अनादर किया ३ इति भा० प० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतापूछते भए राजा परीक्षित् को मरण नगीच आया था तब राजा भगवान्की कथाको पूछनातौ छोड़ि दिया नारायण वर्म क्यों मुनिसे पूंछा नारायण वर्मतौ शरीर की रक्षा है सोशरीरतौ राजाका छूटने वाला फिरि क्यों पूंछा १ वाचक बोले सज्जन पुरुष अपने सुख होने वास्ते कुछभी कर्म्म नहीं करते दूसरे को सुख होने वास्ते काम करते हैं राजा परीक्षित् नदीको पर्वतको वृक्षको स्वभाव ग्रहण किया जैसी नदी राति दिन जलसे भरी रहती है पण अपने वा-स्ते नहीं भरी रहती है दूसरे जीवोंको सुख देने वास्ते जल से भरी रहती है तथा पर्वत चारा लकड़ी आदि अनेक वस्तु अपने ऊपर राखता है परंतु अपने वास्ते नहीं दूसरे जीवों को सुख देने वास्ते जैसा वृक्ष दूसरे वास्ते फलपत्ता

सुखायसर्वजीवानां पप्रच्छकरुणापरः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ ववृधेसततम्वृत्तश्चतुर्दिक्षुकथंगुरो। इषुमात्रंमहाश्चर्यमिदंचकौतुकंकिमु १ वाचक उवाच॥ इषुशब्दोत्रचापश्च विद्वद्भिर्नचगृह्यते। इषीकेषुश्चस म्प्रोक्ता विश्वकोशादिमंडले २ मात्रंस्थूलमितिप्रोक्त मिषीकास्थूलसंचयः। दिनेदिनेसोववृधेन तुचापप्रमा णतः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवम वेणी॥ ९॥ श्लो०॥ १३॥

फल आदि राखते हैं तैसा परीक्षित् भी २ आपुतो मरबे योग्य होगया परंतु सबजीवों को सुख होने वास्ते नारायण वर्म पूंछे हैं ३ इति० भा० ष० शं० मं० अष्टमे ऽध्याये अष्ट-मवेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये कि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर इनचारों दिशा की तरफ नित्य चारि चारि हाथ सोरह १६ चारों तरफ वृत्रासुरकी देह बाढ़तीथी रोज यह बात बड़े आश्च-र्य की है तमाशासरीके मालूम परता है क्यों वर्ष १ को हिसा-ब जोडो तौ कितनी मोटी देह होवैगी और वृत्रासुरतो लाखों वर्ष जीता रहा तब कैसी देह भई होगी हर ३ वाचक बोले इषुमात्र इस श्लोक में विद्वान् जन इषुको बाण नहीं कहते क्योंकि विश्वकोश कमंडलुकोश आदि कोशों में इषु को सींकभी लिखते हैं २ मात्रको मोटा अर्थ लिखते हैं इस प्रमाणसे इषुमात्र कहे सींकसरी के ज्यादा वृत्रासुर की देह नित्य चारों तरफ बाढ़तीथी चार हाथ प्रमाण एक धनुषको

टीप--सींक कांसकी सलाई को कहते हैं-

श्रोतार ऊचुः ॥ विश्वरूपस्सुरानूचेसः शोच्यस्स्थावरैरपि। शोकादृषोनवृक्षाणां कथंशोचन्तितेनरान्‌ १ वाचकउवाच ॥ स्थावरास्तरवःप्रोक्ता नान्यत्रभगवत्पदात्‌। स्थापयन्तिमनोयेते मुनयःस्थावराःस्मृताः। तेऽपिशोचन्तिमुनयस्त्वाष्टेनभाषितंनरम्‌ २ इति० भा० ष० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशम वेणी॥१०श्लो०॥८॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वृत्रासुरस्यशब्देन लोकाश्चासन्‌विचेतसः। कथमेतच्छुकेनोक्तं लोकाश्चबहुविस्तृताः १ है सो धनुष प्रमाण माने चारि हाथ नहीं नित्य देह बाढ़तीथी ३ इति भा० ष० शं० मं० नवमे ऽध्याये नवमवेणी॥ ९ ॥ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोता पूछते भये विश्वरूप देवतों से कहेकि ऐसे प्राणी को वृक्षभी शोच करते हैं कि इसकी सुंदरि गति किस प्रकार से होगी यहबड़ा दुष्ट है तो यह शंका होती है कि वृक्षतौ जड़ हैं उनको तो किसी बातको शोच आदिलेके जो दुःख सुख सो नहींहै फिरि वोवृक्ष मनुष्यको शोच क्योंकरैंगे १ वाचक बोले (सश्शोच्यस्थावरैरपि) इस श्लोक में व्यासजी वृक्षों को स्थावर नहीं कहेथे भगवान्‌ के चरणों में जो मुनि लोग नित्य मनको टिकाते हैं तिनको व्यासजी स्थावर कहेथे ऐसे मुनिजन जो हैं सो विश्वरूप करिके कहाजो मनुष्य तिसका शोच करते हैं २ इति भा० ष० शं० मं० दशमे ऽध्याये दशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भए शुकदेवजी परीक्षित्‌ से कहेकि हे राजन्‌ वृत्रासुरके शब्द करिके सब लोक व्याकुल होगया ऐसा वाक्य सुनिके बड़ी शंका होतीहै क्योंकि लोकतो बहुत हैं वृत्रासुर कैसा शब्द किया जिस करिके सबलोक व्याकुल होगया

तथापिविष्णुर्भगवान् विरंचिशंकरोगुरौ। महात्मानश्च मुनयो लोकेष्वेवसन्तिच २ वाचकउवाच॥ लोक शब्दःप्रजावाची लोकोलोकोपिकथ्यते। युद्धस्यपरितो लोकास्संस्थितास्तेविचेतसः ३ इतिश्रीभा० ष० शं० मं०एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी॥ ११॥ श्लो०॥ ६॥

श्रोतार ऊचुः॥ यावच्छिच्छेदवृत्तस्य मूर्द्धानमयनद्वयम्। तावद्व्यतीतवंज्रस्तु महदाश्चर्यकौतुकम् १ चतुर्युगेबभूवुश्च राक्षसानेकशोगुरो। नकेषामीदृशंकर्म श्रुतमस्माभिरुत्तमम् २ वाचक उवाच॥ नह्यत्रज्योतिषामर्थो

यह बड़ी शंका है १ जो सबलोक शब्द से व्याकुल भये तो लोकईमें तौविष्णु ब्रह्मा शिव ऋषि बड़े बड़े महात्मा मुनि येसबरहतेहैं तो ये सब जन व्याकुल होगये होवेंगे २ वाचक बोले लोकशब्द लोकको नहीं मुनियोंने कहेहैं तथा प्रजाकोभी लोक मुनिजन कहतेहैं सब लोकको व्यास जी ऐसा कहेहैंकि इन्द्र वृत्रासुर के युद्धके चारों तरफ जो लोक कहे प्रजा सोसब व्याकुलहोगये सब लोकको व्याकुल होने वास्ते व्यास जी नहीं कहेथे ३ इति० भा० ष० शं० नि० मं० एकादशेऽध्याये एकादश वेणी॥ ११॥ श्लोक॥ ६॥

श्रोता पूछते भये इंद्रको बज्र वृत्रासुरके मस्तकको बारह महीनेमें काटा यह बड़े आश्चर्य की बातहै १ हे गुरुजी सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग इन चारों युगमें अनेक राक्षस भयेहैं परंतु किसीके मस्तक काटने में महीना बारा १२ नहीं बीता हम सब किसी शास्त्रमें ऐसा आश्चर्य सुना भी नहीं २ वाचक बोले(ज्योतिषां अयने) इस श्लोक में ज्योतिष को अर्थ ज्योतिष शास्त्र नहीं व्यास किये ज्योतिषको अर्थ ऐसा

ज्योतिश्शास्त्रस्य गृह्यते। ज्योतिषान्नेत्रदीप्तीनाङ्घ्रिविष्णु पादौसुकोमलौ ३ अयनौमुनिभिः प्रोक्तौ यावत्तौतेनवी क्ष्यते। अहर्गणक्षणेतावद्वज्ञश्चिच्छेदतच्छिरः ४इति० ष० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी १२ श्लो० ३३॥

श्रोतार ऊचुः॥ ऋषिभिर्महदाश्चर्य मुक्तमिष्ट्वा हरिम्प्रभो। हयमेधेनमुच्येत चराचरवधादपि १ पितृगो गुरुमातृघ्नो ब्रह्मघ्नः श्वानभक्षकः। चांडालोपिविमुच्येत तद्यज्ञेनशचीपते २ वाचक उवाच॥ नीतिशास्त्रेषुवेदेषु पुराणेष्वपिसर्वशः। आत्मघातेशिशोर्घाते धेनुस्त्रीघातके व्यासजी किहेहैंकि ज्योतिष जो आंखों का प्रकाश तिसको अयने मानें स्थान भगवान्को कोमल २ पगहै ३ सोई भगवान् के पगको मरते वखत वृत्रासुर जबतक देखने लगा तबतक राति दिनके एक २ क्षणमें वह वृत्रासुरके मस्तक को वज्रेनकाटिडाला ऐसा अर्थ व्यासजीने किहेथे बारहमास १२ नहीं किये ४ इतिश्री भा० ष० शं० नि० मंजर्य्यां द्वादशे ऽध्याये द्वादश वेणी १२॥ श्लोक॥ ३३॥

श्रोता पूछते भये कि मुनियोंने इन्द्रसे बड़े आश्चर्य की बात कहेहैं कि हेइन्द्र तीनलोक चौदह भुवन में जो चरअचर जीवहैं तिनको मारि डाले फिरि अश्वमेध यज्ञकरिके भगवान्को पूजनकरैगा तो पेश्तर कहेहुयेजोजीवतिनकीहत्यासे छूटिजावेगा १ तथापिता गुरुमातांकोमारिडालैब्राह्मणको मारि डालैकुत्ता आदि जीवों को खायलेवै ऐसाचांडाल होवैतोभी हे इन्द्र अश्वमेध यज्ञकरिके पापसे छूटि जावैगा हे गुरुजी ऐसा वचन कहना मुनिको नहीं है चंडालको है तथा सुनने वालाभी चंडाल है हर३ ऐसा अन्याय मुनिहोके बोलना २

तथा ३ नानृतम्बिब्रुवन्पापी भवेदितिविचार्य्यच । लोभयित्वासहस्राक्षमनृतोक्तेनब्राह्मणाः ४ वृत्रेणदुःखितम्बीक्ष्य विश्वमेतच्चराचरम् । घातयित्वासुरेशेन तम्बभूवुःसुखान्विताः ५ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ७ से ९ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥दशलक्षास्त्रियोराज्ञश्चित्रकेतोःप्रवर्णिताःशुकेनैवकथम्ब्रह्मन् तासांरत्यादिपोषणम् १ वाचक उवाच ॥ चित्ररूपाःस्त्रियस्सर्वाश्चित्रिताश्चित्रकेतुना।

वाचक बोले नीति शास्त्र में वेदमें पुराण में धर्मशास्त्र में ऐसा लिखाहै कि अपने शरीर को नाश होता होवै तथा बालक माराजाता होवै तथा गौमारी जाती होवै स्त्रीमारीजाती होवै और झूठबोलसे येसब बचिजावैं तौ झूठ बोलिकै इनसबके प्राणकी रक्षा करना वह झूठ नहीं लिखाजावैगा ३ ऐसा ब्राह्मणोंने विचारि कै इन्द्रको यज्ञका लोभ देखाय कै झूठा बचन बोलिकै इन्द्रकरिकै वृत्रासुर को मराते भये ४ क्यों कि वृत्रासुर ने तीनलोक चर अचर सब को दुःखदेरहा है तीनलोक की रक्षा करने वास्ते गनती से हीन जीवों की रक्षा करने वास्ते झूठ बोलिकै इन्द्रसे वृत्रासुर को मराय के सब सुखी होतभये इसवास्ते अश्वमेध की तारीफ इन्द्रसे मुनिजन करते भये ॥ ५ ॥ इति० भा० ष० शं० मं० त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ ७ ॥से९ तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरु जी राजा चित्रकेतुकेदश१०००००० लाखस्त्री परीक्षित्से शुकदेव जी कहेकि हे परीक्षित् चित्रकेतु राजा के दशलाखस्त्री थीं तब उनस्त्रियों को रति आदिकके और अनेक प्रकारको पोषण भरण कैसा होताथा बड़े

स्वप्रासादेस्वक्रीडार्थं चित्रज्ञेनपृथक्पृथक् २ जाना
तिचित्रविद्याश्च चित्रसंजीवनीमपि। यदेच्छतितदाता
सां कृत्वासंजीवनंचणात् इहाल्याद्विक्रीडांसंकृत्यपुनश्चै
वविसर्जयेत्। विवाहितोयदाराजा तत्पश्चाच्चित्रिता
स्त्रियः ४ दृष्ट्वापुत्रमुखंराजा नित्यन्तासांनजीवनम्।
करोतिजीविताश्चेताः पंचमेद्दिवसेतदा ५ स्वस्वमा
र्जनकर्त्रीभिश्चोक्तास्सर्वानिरादरम्। एकदाजीविता
स्सर्वादैवान्नैवविसर्जिताः ६ गरन्द्दुःकुमाराथशोकार्ते
आश्चर्य की बात है शिव २-१ वाचक बोले राजा चित्रकेतु
चित्रबनाने में बड़ा चतुर था सो अपने सोनेवाले महल में
दशलाख मकान में जुदा २ दशलाख स्त्रियोंकी तसबीर चित्र
की मूर्ति लिखी थी २ चित्रविद्या जानताथा राजा तथा चित्र
को सजीवन करने की विद्या भी जानताथा जब चित्रकेतु
इच्छा करैकि इनस्त्रियों को सजीवन करना चाहिये तब उसी
वखत स्त्रियों को सजीवन करिकै ३ तिनकेसंग हास्यविलास
करिकै फिरि तुरंत विसर्जन करि देतारहा जबराजाको विवाह
भया तब इनस्त्रियों की चित्रकी मूर्ति बनाताभया विवाहके
पेशतर नहीं बनाता था ४ जब राजा चित्रकेतुके पुत्र नहीं
भया तब तौ नित्यस्त्रियों को सजीवन करताथा पुत्रभये पीछे
पुत्रको मुखदेखिकै आनंद में मस्तहोगया तब नित्यस्त्रियों
को सजीवन नहीं किया जब कभी यादि आवै तब पांचवें
दिन कभी सातवें दिन सजीवन करने लगा ५ एकदिन चित्र-
केतु स्त्रियों को सजीवनकरिकै पेशतर सरीके सब कामकरता
भया दैवयोगसे बिसर्जन नहीं किया तबवो सब स्त्रियों से
उन स्त्रियों की झारनेवाली जो दासीथी सो सब कहती भई

नन्नृपेनच । विसर्ज्जितानसर्वास्तायोषिद्भावञ्चसंस्थिताः । ब्राह्मणैर्बालहत्यायाव्रतंचेरुर्निरूपितम् ७ इति भा० ष० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

श्रोतार ऊचुः॥मुनीकथंकोपप्रच्छ युवांराजाविचक्षणः । चित्रकेतुर्मुनीन्सर्वान्जानीतेभुवनत्रये १ वाचक उवाच ॥ यद्यप्याश्वासितोराजामुनिभ्यांचतथापिवै । पुत्रशोकार्तहृदयोनबुबोधमुनीश्वरौ २ इ० भा० ष० शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक १० से ॥ १५ तक ॥

कि जबसे राजा के पुत्र हुआ तबसे तुम सबको अनादर करि दिया अनादर क्या नित्य तुमारा सजीवन करताथा सो अब पांचसात दिन में सजीवन करता है हमसब तुमसब को नित्यभ्मारती हैं सफा करती हैं ऐसे दासियोंके वचन सुनिके बालक को विषदेती भई बालक नष्ट होगया तब राजाशोकसे दुःखी होके उन स्त्रियों को विसर्जन नहीं किया इसवास्ते जीतीरहगई ब्राह्मणों ने बाल हत्या को शांति होनेवास्ते जो उपाय बनाये सो करती भई हे श्रोता हो इस प्रकारकी दशा-लाख स्त्री चित्रकेतुकीथीं आदमी रूप नहीं रहीं ७ इति०भा० ष० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी॥१४ श्लोक ११ ॥

श्रोता पूछते भये राजा चित्रकेतु बड़ा चतुरथा तथा तीन लोकमें जो मुनिजनथे तिनको जानताथा फिरि नारदको तथा अंगिराको क्यों पूछाकि तुम दोजने कौन हौ तुमारा क्या नामहै १ वाचक बोले राजा चित्रकेतु को नारद तथा अंगिरा ज्ञान देते भये तौभी पुत्र शोकसे राजा बहुत दुःखी

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेषांचैवभूपानांसभार्याणांगतिश्श्रुता। विपरीता कथंजाताचित्रकेतोर्गतिश्शुभा १ विद्याधराधिपोभूत्सस्तद्भार्या कुत्रसंगता २ वाचक उवाच॥ छायान्यायोत्रमन्तव्यो यत्र भूपस्तुतत्रसा। ग्रंथबाहुल्यभीतश्चनलिलेखमहामुनिः३इ०भा०ष०शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी॥ १६ ॥श्लो०॥ २९ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अनेकजन्मलाज्ञानी सर्वदेवप्रपूजकः। देवर्षिशिष्योभूत्वापि शेषपादानुकूलवान् १ एतल्ल होरहा है पहिंचानानहीं कि ये तो नारद तथा अंगिरा मुनि हैं २ इतिश्री भा० ष० शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ १० से १५ तक ॥

श्रोता पूछते भये सब राजा जिस लोकको गये हैं तब उन सब राजोंकी स्त्रीभी उनके संग उसी लोकको गईहैं ऐसा हम सब शास्त्र में सुना है परंतु चित्रकेतु तो विद्या धरोंका राजा हुआ तब उसकी स्त्री किसलोकको गई १ वाचक बोले जैसा सबके देह की छाया देहके संगको नहीं छोड़ती इसी प्रकार से पतिव्रता स्त्री अपने पतिको संग नहीं छोड़ती जहां पति जाता है उसी स्थानको वो जातीहै इसी विचारसे चित्रकेतु विद्याधरको राजा हुआ तो वह विद्याधरकी रानी हुई ग्रंथ बड़ा होजायगा इसवास्ते व्यासजी रानी की कथा नहीं वर्णन किये विचार कियेकि पंडितलोग जान लेवेंगे ५ इति भा० ष० शं० मं० षोड़शे ऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक॥ २९ ॥

श्रोता पूछते भये चित्रकेतुराजा अनेक जन्मको ज्ञानी था तथा सब देवतोंको पूजन करनेवाला था नारद का चेलाभीथ

क्षणसंयुक्तो मूर्खवद्विजहासच। जगतःपितरौदृष्ट्वा गि
रिजाशंकरौकथम् २ वाचक उवाच ॥ बलिनाकृतवान्क
र्म पूर्वंविद्याधरस्यसः । जहाराक्षीणपुण्यस्य राज्यंमंत्र
प्रभावतः ३ अतोभगवतोनुज्ञाम्प्राप्यमायाविमोहिनी
विद्याधरंमोहयित्वा कार्यमेतदकारयत् ४इति० भा० ष०
शं० मंजर्य्यांसप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥श्लो० ५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रनाशायसागर्भन्दधौक्रोधेनका
मतः । कथंत्वयानविज्ञातस्सहस्राक्षोन्यरूपवान् १
वाचकउवाच ॥ ईश्वराज्ञांसमुल्लंघ्य कार्यंकर्तुंसमुद्यता

शेषकी कृपा चित्रकेतुकेऊपर बहुतथी १ इतना लक्षणोंकरिके
युक्त चित्रकेतु जगत्के माता पिता जो शिव तथा पार्वती को
देखिके क्यों हंसता भया २ वाचक बोले जैसा बलि राजा यज्ञ
करिके इन्द्र के राजको छोरिलिया आप इन्द्र होगया तब जिस
पुण्य करिकै इंद्र राज पाया था वो पुण्य नष्ट नहींभईथी थोरी
बाकी थी इस वास्ते भगवान् बामन रूप धरिकै इंद्रको राज
देते भये तैसा कर्म चित्रकेतु भी किया विद्याधरों के राजकी
पुण्य नष्ट नहीं भईथी परंतु चित्रकेतु मंत्र जपिकै विद्याधरों
का राजा हुवा ३ इसी वास्ते भगवान् अपनी मायाको आज्ञा
देकै मायासे चित्रकेतुको मोहित करिकै शिवको द्रोहकरायके
चित्रकेतुको नष्ट किया४ इ० भा० ष०शं० मं० सप्तदशेऽध्याये
सप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये दितिने इन्द्रको नाश करने वास्ते गर्भको
धारण किया तब इंद्रने दितिको गर्भ नाश करने वास्ते कपट
करिकै दिति को सेवन करने लगा पणादिति को क्यों नहीं
मालूम पराकि यह इन्द्र है क्योंकि दिति कुछ गँवारि नहीं

अतोसुमोहमोहेन नवुमोभशचीपतिं २ इति० भा० ष० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी १८ श्लो० ५६॥

श्रोतार ऊचुः॥ विष्णोरावाहनाद्यर्च्चा मंत्रश्चोंकार संयुतः। उक्तंचसप्तमश्लोक आहुतिश्चाष्टमेतथा। सो च्चोंकारयुतोब्रह्मन्कथम्पाठ्याविमोस्त्रिया १ वाचक उवाच॥ तदुच्चारंस्वपतिना कारयित्वा पतिव्रता।

थी बड़ीचातुरथी यहशंकाहोतीहै १वाचकबोलेजब दितिनेइंद्रके नाशकरनेवास्ते उपायकिया तब भगवान् मनाकियाहै अंबाजी अभीइन्द्रकीपुण्य बहुतहैअभी इन्द्रकानाश नहींहोगा परिश्रम मतिकरो भगवान्कीआज्ञाको नहींमानी इन्द्रकेनाश होनेवास्ते गर्भधारण किया भगवान् के वचनको नहीं माने इसवास्ते इन्द्रको कपट नहीं जानती भई पागलि होगई॥२॥ इ०भा० ष० शं०मं०अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८ ॥ श्लोक ॥ ५६॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी षष्ठस्कंधके अध्याय १६ श्लोक ७ में विष्णुको आवाहन आदि पूजन को मंत्र ॐकार सहित दितिसे कश्यप कहेथे तथा श्लोक ८। ६ में होम करने की बिधि कहेथे परन्तु ॐकार को तथा वेदके मंत्रोंकोस्त्री कैसे पठन करैगी क्योंकि स्त्रियोंको वेदपढ़ना तथा ॐकारकापढ़ना सुनना दोऊ मनाहै दितिको कश्यप सुनाये तो ठीक है महात्माहैं पण दिति पठन कैसा किया होगा यह शंका है१वाचक बोले दिति पतिव्रताथी अपने पतिजो कश्यप तिनसे ॐकार को तथा वेदमंत्र को पढ़ायकै आपु दूसराजो अक्षरहै स्तोत्र में जैसा नमोभगवते इस आदिलै तिनको पढ़ती भई इसवास्ते दोषनहीं भया ॐकार तथा वेदमंत्र आपु पढ़ती तबतो दोष

पठेदन्न्यात्तरंसाध्वी नदोषोऽनेनसंभवेत्२ इतिश्रीभा० ष० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी १६॥ श्लो० ७ से ६ तक ॥

होता पतिसे पढ़ायके कामकरि लिया ॥ २ ॥ इति० भा० ष० शं०मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ७ से ६ तक ॥

इतिश्रीभागवतषष्ठस्कंध शंकानिवारणमंजरीशिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीकासहितासमाप्ता श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

सप्तमस्कंधे ॥ ७ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः॥ शुकेनोक्तंनमस्कृत्यकथयिष्येहरेःकथाम्।कृष्णम्मुनिम्प्रोक्त पूर्वानतुगाथाहरेश्वसा १ वाचक उवाच ॥ अस्यपूर्वेमयोक्तायान ताहरिकथाःस्मृताः । नविचार्य्यैवमूचेसः कथयिष्येहरेःकथाम् २ प्रह्लादरक्षणार्थय विष्णुराविर्भविष्यति । सिंहरूपेणभगवानतः

श्रोता पूछतेभये कि हेगुरुजी राजासे शुकदेवजीने कहा कि व्यासको नमस्कार करिकै हरिकी कथा अबमैं कहौंगा बड़ी शंकाहै ऐसे वाक्यसे मालूम परताहै कि सप्तमस्कंध के पहिले जोस्कंध ६ वर्णनभये हैं उन्होंमें हरिजो भगवान् तिन की कथा नहीं है १ वाचक बोले शुकदेवजी ऐसा विचारि कै नहीं कहेथे परीक्षितुसे कि स्कंध ६ में भगवान्की कथा नहीं है अब भगवान्की कथा मैं कहताहूं २ शुकजीने जानिलिया कि प्रह्लादकी रक्षाकरनेवास्ते भगवान् सिंहकोरूप धारिकै प्रगटहोवैंगे शास्त्रमें सिंहको हरिनामहै इसवास्ते शुक कहेथे कि हे राजन् अब हरिकहे सिंहरूप भगवान्की कथा मैं

प्रोक्तमिदंवचः ३ इतिश्रीभा० सप्त० शं० मं० शिव सहायबुधविरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिलोकेमुनयश्चक्रुर्दुःखितेसुखितेऽपिवा। उपदेशंकदापीत्थंयमेनापिकृतंश्रुतम् ।नश्चक्रेसः कथंपत्न्या स्सुयज्ञस्योपदेशकं १ वाचक उवाच ॥ बाल्याद्यमस्यसाभक्तिं चकारनृपवल्लभा । अतोयमस्स मागत्य हत्वाशोकंददौगतिम्॥२॥ इ०भा० स० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वेच्छयाप्रददौब्रह्मा सर्वेषाक्वर

कहताहूं ऐसा कहेहैं ३ इति भा० स० शं० मं० सुधामयीटीका यांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतापूछते भये कि प्राणी दुःखीहोवै चाहे सुखीहोवै परंतु तीनलोकमें प्राणीको सुखहोनेवास्ते मुनिजन उपदेश करतेथे ऐसा शास्त्रमेंसुनाहै परंतु यमराज किसीको नहीं उपदेशकिहे ऐसाभी सुनाहै सो यमराज सुयज्ञ राजाकी स्त्रियोंको उपदेश क्योंकिये हे गुरुजी यहबड़ी शंकाहै १ वाचक बोलते भये सुयज्ञ राजाकी स्त्री बालपनसे यमराजकी सेवन करती थी इसी वास्ते रानीको दुःखी देखिकै यमराज रानी के सामने आयकै ज्ञानदेकै शोकको हरिकै सुंदर गतिकहे पतिके लोक को रानीको भेज देते भये रानी ज्ञान पाइकै अपने पतिके पासगई इसवास्ते यमराज उपदेश करते भये २ इति० भा० स०शं०मं०द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥२ ॥ श्लोक ॥ ३६ ॥

श्रोता पूछते हैं हेमुनिजी जो जो प्राणी ब्रह्माकी तपस्या किया उन सबको अपनी इच्छासे ब्रह्मा बर देतेभये ब्रह्माको

मुत्तमम् । अनाहृतस्सुरैरस्य ज्ञापितोदेवतागणैः ।
प्रादाद्धिरण्यकशिपोर्वरम्ब्रह्माकथंमुने १ वाचक उवाच॥
विज्ञायमानसंतस्य भावृन्दातुंवरंहिसः । नहृयेपसुराणा
न्दैदुःखंज्ञात्वाददौवरम् ॥ २ ॥ इ० भा० स० शं० मं०
तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हिरण्यकशिपुर्लेभे वरंयद्दिनद्दा
शुवै । धर्मेविष्णौसुरेसाधौ गविवेदेषुब्रह्मसु १ द्वेषंच
क्रेयदैतेषु हिरिणोक्तमिदंकथम्। द्वेषकारीसभविता तत्क्ष
णेनाशमाप्नुयात् २ वाचक उवाच ॥ पृथक्द्वेषम्प्रचक्रे

देवतोंने प्रार्थना नहीं किया कि तुम बरदेवो और इस
हिरण्यकशिपु को देवतोंके कहे बर क्यों दिया यह बड़ा
आश्चर्य है १ वाचक बोले हिरण्यकशिपु ऐसा विचारिके तप-
स्या करने लगा कि बरदान लेके भगवान् को बधन करोंगा
हिरण्यकशिपुके मनकी बात जानिके ब्रह्माके हिरण्यकशिपु
के वास्ते बरदान देनेकी इच्छा नहींथी परंतु जब देवतोंने
ब्रह्मासे कहेकि हमसब दुष्टके तपके तेज करिके जलतेहैं ऐसा
देवतोंको दुःख देखिके तब ब्रह्मा बर देतेभयेइसवास्तेदेवतों
की प्रार्थनासे ब्रह्मा दिहेहैं २ इति भा० स० शं० मं० तृतीयेऽ
ध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूछतेभये हिरण्यकशिपु जिस दिन ब्रह्मा से
बरदान पाया उसीदिन से धर्म से भगवान् से देवतावों से
साधुवोंसे गायसे ब्राह्मणोंसे वेदोंसे इन सबसे १ बैर करता
भया तब भगवान् देवतोंसे क्यों कहेकि हे देवता लोगो डरो
मति जब हमसे धर्मसे देवतोंसे गौसे वेदसब्राह्मणसे साधुसे
बैर करैगा तब उसी वखत हम हिरण्यकशिपुको मार

स एकसर्वैष्वेतेषुराक्षसः। युगपद्भगवत्प्रोक्तो द्रोहकर्ताविनश्यति ॥ ३ ॥ इतिश्री भा० स० शं०नि० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शक्रादयश्चकम्पन्ति यस्यत्रासान्निरंतरम्। जीवन्तिराक्षसास्सर्वे यत्कृपादृष्टिवीक्षिताः १ तस्यपुत्रः कथम्प्रोक्तोमुनिनाराजसेवकः। चेद्राजासेवकस्तस्यसर्दीनश्चकथम्मुने २ वाचक उवाच ॥ येषाम्पुरोहितायेवैतेषान्तेसेवकाः स्मृताः। धर्मशास्त्रमतन्त्वेत

डालैंगे यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले इन सबसेतो जुदा जुदा बैर राक्षस करता था राजनीति विचारिकै फेरि फेर लगायके परंतु वेदसे भगवान्‌से बहुतबैर करता भयालेकिन ब्राह्मणों से प्रीतिभी करना तथा बैरभी करना ऐसी चतुराई से बैर कियाथा और भगवान् कहेकि जो सबसे एक दफा बैर करैगा तबतो उसी वखत मारि डालोंगा ३ इतिश्री भा० शं० नि० मंजर्यां चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी॥ ४ ॥ श्लो० २७॥

श्रोता पूछते भये जिस शुक्राचार्य के डरसे. इंद्र आदि देवता रातिदिन कांपतेहैं जो शुक्राचार्य कृपाकरिके राक्षसोंको देखतेहैं तब राक्षस आनंदकरतेहैं जब राक्षसोंके ऊपर शुक्राचार्य कृपा न करैं तब उसी वखत राक्षस बहुत दुखीहोजातेहैं१ हेगुरुजी ऐसे प्रतापी शुक्राचार्य तिसके पुत्रको नारद राजा को सेवक क्योंकहे और जो कोई विद्वान् ऐसा अर्थकरै कि शुक्रके पुत्रको सेवक राजा है इसवास्ते राजसेवक कहेहैं तो फिरि दुःखी शुक्रको पुत्र क्योंहुआ यह बड़ी शंकाहै २ बाचक बोले धर्मशास्त्रको यहमतहै कि जिसमनुष्यको जो पुरोहित होताहै सो उसका सेवक कहाताहै पुरोहितमें तथा सेवकमें

इतोनारदभाषितम् ३ इतिश्री भा० स० शं० मं० पंच मेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मानुष्यंजन्मप्रह्लादोवर्णयामा सबालकान् । भगवद्भजनंत्यक्त्वादैत्यानान्तेनमानवाः १ वाचक उवाच ॥ सर्वेभ्यःप्राणिभिर्ज्ञातंमानुष्यं जन्मउत्तमम् । तत्रापिहरिभक्तानामतस्तेषांप्रलोभनम्। कर्तुंप्रशंसयामासमानुष्यंजन्मसोसुरः २ इ० भा० स० शं० मं० षष्ठे ऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वाश्रमेजननान्नीत्वानारदोमेतदन्तिके । सावसदैत्यपुत्रान्वैप्रह्लादोक्तमिदंवचः १ नचा

कुछभी भेद नहीं है इसवास्ते शुक्रके पुत्रको नारद राजसेवक कहेहैं ३ इति भा० स० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचम वेणी ५ श्लोक १२ ॥

श्रोता पूछतेभये कि दैत्योंके बालकोंसे प्रह्लादने भगवान्को भजन त्यागिके मनुष्यके जन्मकी तारीफ किया तब तो दैत्योंके बालक मनुष्य नहींथे वोतो राक्षसोंके पुत्रथे यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले सबप्राणी जानते हैं कि मनुष्य जन्म सबसे बड़ाहै तिसमनुष्योंमें भी भगवान्के भक्त बड़ेहैं इसवास्ते दैत्यके पुत्रोंको लोभ देखानेवास्ते मनुष्य जन्मकी तारीफ प्रह्लाद करतेभये प्रह्लाद विचार किहे कि ये लोग भी मनुष्यको कर्म सुनिके मनुष्यसरीके भगवान्में प्रीतिकरैंगे २ इति भा० स० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ६ श्लोक १ ॥

श्रोता पूछतेभये राक्षसोंके बालकोंसे प्रह्लाद कहे कि नारदमुनि मेरी मैयाको अपने आश्रमपर लेगये तब मेरी मा

ग्रमोनारदस्यनतस्यास्थिरताश्रुता। तयाकृतः कथस्त्वा सरशंकेयम्महतीहिनः २ वाचक उवाच॥ भगवद्भज नार्थस्वैबद्रिकायांशुभाश्रमम्। नारदस्यास्तितत्रैवभ्रा न्त्वासोभुवनत्रये। करोतिभजनंविष्णोस्तत्रस्थानान्नवैभ यम् ३ इतिश्री भा० स०शं० नि० मंजर्यां सप्तमे ऽध्या ये सप्तमवेणी॥ ७ श्लोक॥ १२॥

श्रोतार ऊचुः॥ जग्रहुर्दैत्यपुत्रास्तेप्रह्लादस्यानु शासनम्। लोकेवेदेपितेषान्नैननामाऽपिश्रुतंचनः १ न्यूनानामपिश्रेष्ठानामन्येषान्तपस्विनाम्। ब्रह्मज्ञानां नारदके आश्रममें टिकतीभई जबतक मेरापिता वरदानलेके आयानहीं तबतक १ हेगुरुजी हमलोगोंने ऐसा सुनाहै शा- स्त्रोंमें कि नारदमुनिके आश्रम नहीं है तथा नारदमुनि किसी स्थानपर घड़ीदोचार टिकतेभी नहीं तब नारदके आश्रमपर प्रह्लादकी मा कैसे बहुत दिनतक टिकती भई यह बड़ी शंकाहै २ वाचकबोले भगवान्को भजन करनेवास्ते बद्रिका श्रममें नारदको गुप्त आश्रम है तीनलोकमें नारद भ्रमण करिके अपने आश्रमपर आयके ईश्वरकोभजन करतेहैं नारद के आश्रमपर जोजीव बसतेहैं उनको किसीको भयनहींहोती इसवास्ते प्रह्लाद दैत्यके बालकोंसे कहेहैं ३ इति भा० स० शं० नि० मंजर्यां सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ७ श्लोक १२॥

श्रोता पूछतेभये राक्षसोंके लड़िकोंने प्रह्लादसे ज्ञान सिखतेभये परंतु ज्ञानियोंका नाम लोकमें तथा शास्त्रमें सब जीवोंको मालूम परता है परंतु उनको तो नाम शास्त्र तथा लोक में हम तो नहीं सुने किधरगए वो लड़ के १ हे गुरुजी छोटा तपस्वीको बड़ा तपस्वीको और जो तपस्वी

श्रुतन्नश्च कुत्रतेसंगताःप्रभो २ वाचक उवाच ॥ आग
त्यभार्गवोदृष्ट्वादैत्यपुत्रान्विरागिनःपुनस्ताञ्छिक्षया
मास तद्धर्माञ्छ्रापत्रासतः ३ बालत्वात्तत्यजुस्सर्वे
प्रह्लादशिक्षणन्तथा । राक्षसंकर्म्मतेचक्रुस्तोनैवतपस्वि
नः ४ इतिश्री भा० स० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टम
वेणी ८ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रह्लादेप्रीतिरधिका हरेरद्भुतक
र्मणः ।तत्कथंनददौशीघ्रम्वरंचतत्यजेरुषम् ।विलंबकृतं
वान्भूरि भ्रमोयम्वर्त्तते च नः १ ॥ वाचक उवाच ॥
तथा ब्रह्मज्ञानीहैं उन सबको नाम हमलोग सुनाहै परंतु
प्रह्लाद के शिष्योंको नाम हम नहीं सुना प्रह्लाद से ज्ञानलेकै
वो लोग किस लोकको गये यह भ्रमहै २ वाचक बोले यह उत्पा
त प्रह्लाद की तथा हिरण्यकशिपुकी यज्ञ होना प्रारंभ भया
तब शुक्राचार्य उसके पास नहींथे पीछेसे आयकै सबउत्पात तथा
राक्षसों के लड़कों को सुंदर कर्म करता देखिकै लड़कों से शुक्र
बोलेकि यहकर्मतुम सबजनेत्यागिदेवो नहींत्यागोगे तोहमतुम
सबको भस्म कर देवैंगे ऐसा डरपाय कै लड़कोंको फिर राक्षस
कर्म सिखाते भये ३ बालक लोग तपस्या में कच्चेथे इसवास्ते
डरकै सुंदर कर्म त्याग दिहे और राक्षस कर्म करने लगे इस
वास्ते तपस्वी नहीं भये बिना तपस्वीभये नाम कैसा मालूम
परैगा ४ इतिभा० स० शं० नि० मं० अष्टमे ऽध्याये अष्टम
वेणी ॥ ८॥ श्लोक ॥ १॥

श्रोता पूछते भये नृसिंह रूप भगवान् की बड़ी प्रीति प्र-
ह्लाद के ऊपरथी फिरि जल्दी क्रोधको त्यागिकै प्रह्लादको
बरदान क्यों नहीं दिहे ऐसी प्रीति करिकै फिरि बर देनेमें

शीघ्रं नतत्यजे क्रोधं नचतूर्णं स्म वरन्ददौ। लोकान्ख्यापयितुं चक्रे विलम्बञ्जगदीश्वरः २ इति० भा० स०शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ९ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सार्द्धंकनककेशेन चत्वारःपितरो गताः। प्रह्लादस्यैकविंशैश्च पितृभिःकथमुक्तवान्। हरिस्तन्तेपिताप्तः शंकास्तिदारुणाचनः १ वाचक उवाच ॥ व्यतीतांश्चतुरोज्ञात्वा भविष्यन्दशसप्तच। एकविंश

विलंब क्योंकिये यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले श्रीनृसिंहजी जल्दी क्रोध नहीं त्याग किये तथा प्रह्लादको जल्दी बरदान भी नहीं दिहे तिसका कारण यहहैकि लोकमें प्रह्लादकी भक्तिकी बड़ाई कराने वास्ते क्रोध त्यागनेमें तथा बरदान देनेमें देर किये लोकमें सब ऐसा वचन कहैंगेकि सब देवता नृसिंहजीकी स्तुति किये परन्तु क्रोध नहीं शांतभया जब प्रह्लाद स्तुतिकरते भये तब उसी वखत क्रोधको त्यागि देते भये ऐसा भगवान् को प्रह्लाद प्याराहै इसवास्ते क्रोध देर को त्यागते भये तथा वरदान भी देनेमें देर कियेहैं २ इति भा० स० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी ॥९॥ श्लो०॥२॥

श्रोतापूछते भये प्रह्लादसे नृसिंहजी कहेकि तुमारा बाप एक बीस पीढ़ी को संग लेके बैकुंठको गया है गुरुजी इस बातमें हमारे सबको बड़ी शंका होती है क्योंकिहिरण्यकशिपु सहित गनै तब चारि पीढ़ी होतीहैं क्योंकि ब्रह्मा १ मरीचि २ कश्यप ३ हिरण्यकशिपु ४ ये चारि भयेतो एकबिंशपीढ़ी भगवान् क्यों कहेथे १ वाचक बोले चारि पीढ़ी बीती जानिके तथा सतरह १७ पीढ़ी अगाड़ी की लेकेइस प्रकारसे पीढ़ी१७

मिताश्चैते हरिणोक्तास्तदाभुवम् २ इति० भा० स० शं०मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी १० ॥ श्लो०॥ १८॥

श्रोतार ऊचुः॥ युगत्रयेद्विजास्सर्वे गुणज्ञाःकमला पतेः।येन्यूनाज्ञानवार्तायान्तेऽपिनारायणेरताः १जानंति त्वद्विधाविप्राश्चारित्रं कमलापतेः । नारदंप्रत्युवाचै वन्धर्मराजःकथं गुरो२वाचक उवाच॥ ब्राह्मणान्तपसो न्मत्तान्केचिद्भूपांश्चराज्यतः।धर्मराजोविचार्य्यैवम्प्रो वाचनारदंप्रति ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं० एकादशे ऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥नकस्यापिश्रुतंलोके लौकिकेनावलो

भगवान् कहेहैं २ इतिश्री भा० सप्तमस्कंधे शं० नि० मंजर्य्यां सुधामयी टीकायां दशमे ऽध्याये दशमवेणी ॥ १०॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूंछतेहैं कि हेगुरुजी सतयुग त्रेता द्वापरमें सब ब्राह्मण भगवान्के गुणको जानतेथे जो कोई ब्राह्मण ज्ञान की बात में थोरा समझताथा सोभी भगवान् के चरणोंमें प्रीति करता था १ हे गुरुजी तब फिरि नारदसे युधिष्ठिर क्यों कहेथे कि भगवान्के चरित्रको आपुसरीके ब्राह्मण जानते हैं दूसरा नहीं जानैगा यह बड़ी शंकाहैकि नारद ज्ञानी भये और सब ब्राह्मण अज्ञानी भये २ युधिष्ठिरने किसी किसी ब्राह्मणों को तपस्या करिकै उन्मत्त जानिकै तथा किसी किसी राजोंको भी राजसे उन्मत्त जानिकै नारदसे ऐसा वचनकहे ३ इति भा० स०शं० मं० एकादशे ऽध्याये एकादश वेणी॥ ११॥श्लो०॥४॥

श्रोता पूछते भये ॥ हे गुरुजी यहबात शास्त्रमें हमलोग नहीं सुना तथा लोकमें देखा भी नहीं कि गुरुकी स्त्री शिष्य के

कितम्। गुरुस्त्रीभिश्चशिष्यस्य कृतमभ्यंजनादिकं।कार येन्नगुरुस्त्रीभिरात्मनो ऽभ्यंजनादिकम्।कथंमुनिरुवाचेदं युवार्वधर्मनंदनम् २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वाकलियुगं घोरमागतंसन्निधौमुनिः तज्जानांशिक्षणार्थाय वाक्य मेतदुवाचह ॥ ३ ॥ इति० भा० स०शं०नि०मं०द्वादशेऽ ध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ मुनिनाजगरेणोक्तं सर्वस्मुंजिमपरे च्छया । ददातिकोपिचेदुष्टः प्रमदाद्यन्न्यकुत्सितं १

देहमें मालिश करिके स्नान करायके तेल फुलेल शिष्यके देह में लगावै तथा शिष्यके बार स्मार देवै शृंगार करिदेवै आंखों में अंजन लगाय देवै १ फिरि नारद मुनि धर्मराजसे क्योंकहे कि जवान शिष्य होजावे तो अपनी देहको अंजन आदि कर्म गुरुकी स्त्रीसे न करवाना तथा करवावैगा तौ भ्रष्ट होजावैगा यह बड़ी शंकाहै २ वाचक बोले हे श्रोताहो जब नारदको युधिष्ठिरको संवाद भया उसी दिनके थोरेही दिन पीछे कलि-युगको भूमिमें राज नारद मुनि जानिके ऐसा वचन युधिष्ठिर से कहि रहेथे कलियुगमें जन्मैंगे मानुष्य तिनको सिखाने वास्ते क्योंकि कलियुगमें ज्ञान रहना कठिनहै ३ इ० भा० स० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक॥ ८॥

श्रोता पूछते भये अजगर मुनि प्रह्लादसे कहेकि हमारे वास्ते कोई चीज भली बुरी कोईभी प्राणी देताहै तब उस चीजको हम ग्रहण करतेहैं परन्तु इच्छा किसी चीजकी हम नहीं करते हे गुरुजी संसारमें अनेक प्रकार के जीवहैं जो कोई दुष्ट जीव मसकरी करने वास्ते स्त्री आदि लैके और जो खराबचीज है जैसा मदिरा आदि लैआयके अजगर मुनिको

भाविष्यतिमहादुःखम्मुनिनोक्तंकथंत्विदम्। तदाकिं क्रियतेतेनतद्गृहाण्गृहयोपिच२वाचक उवाच॥सत्यम्मुनि वरेणोक्तंसर्वभोक्ताहिसस्मृतः। यश्चैवंकर्तुमिच्छेच्चतं विधक्ष्यतितत्क्षणे। हरेस्सुदर्शनन्तस्य रक्षणेयोजित स्सदा॥३॥ इति० भा० स० शं० मं० त्रयोदशेऽध्या येत्रयोदशवेणी॥१३॥ श्लोक॥३९॥

श्रोतार ऊचुः॥ लोकेवेदेश्रुतन्दृष्टन्नचैवंनश्चकर्हिचित्। योस्त्र्यर्थेविजहौप्राणान् जघानापितरंगुरुम् १ मैथिल्यर्थेरावणश्च द्रौपद्यर्थेचकौरवाः। एवन्नैवच

देवैगा तौ ग्रहण करते कि त्याग करते २ तौ अजगर मुनि कैसा करैंगे वडा दुःख होवैगा ग्रहण करैंगे तव नरकमें पड़ैंगे त्याग करैंगे तो भेददृष्टि कहावैंगे २ वाचकबोले अजगर मुनि सत्यकहेहैं सब चीजके भोग करनेवाले अजगर मुनि हैं परन्तु जो कोई ऐसा दुष्ट कर्म करनेको विचारभी करैगा तब उसको उसी वखत भगवान् को सुदर्शन चक्र भस्म करि देवैगा क्योंकि अजगर मुनिकी रक्षा करने वास्ते सुदर्शन चक्रको भगवान् सदाहुक्म करिदिहेहैं कि इनकोकोई उपद्रव देवै उसको तुरत भस्म करना ३ इ० भा० स० शं० मं० त्रयोदशे ऽध्याये त्रयोदशवेणी॥१३॥ श्लोक॥३९॥

श्रोता पूछते भये वेदमें ऐसा हमलोग नहीं सुना तथा लोकमें देखाभी नहीं कि स्त्री वास्ते कोई अपना प्राण त्यागि दिया होवै तथा पिता को गुरु को मारि डाला होवै १ जो कोई ऐसा कहै कि जानकी के वास्ते रामचंद्र रावण ब्राह्मणथा उस को मारिडाले तथा द्रौपदी के वास्ते पांडवों ने द्रोणाचार्य आदि गुरुको मारिडाले तौ ऐसा नहीं मानना

मन्तव्यो जीवानाम्मुनिनोदितम् २ वाचक उवाच ॥ तृष्णास्त्री नारदेनोक्ता नस्त्रियंलौकिकीतदा। त्यजन्त्यसून्गुरुंहंति सर्वेतृष्णासमन्विताः ३ इ० भा० स० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी १४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भोक्तव्यौद्वौद्विजौदैवे त्रयःपैत्र्येच नाधिकं। नारदोक्तिरियम्ब्रह्मन् कस्मिन्भोज्याश्चभूरिशः १ वाचक उवाच॥ नह्यत्रद्वौद्वयोरर्थो द्वौप्रकारौप्रगृह्यते। जितेंद्रियाश्चक्षुधिता भोजनीयास्त्वनेकशः२तथात्रीन् त्रिप्रकारांश्च पुत्रस्त्रीशिष्यसंयुतान् । पैत्र्येप्रभोज

चाहिये क्योंकि रामकृष्ण तो पूर्णब्रह्म थे पामर जीवोंके वास्ते नारदकहे हैं २ वाचकबोले तृष्णारूप स्त्री वास्ते नारद कहे हैं संसार की स्त्रीके वास्ते नहीं कहे तृष्णा स्त्रीके वास्ते प्राणियोंने जीवको त्यागि दिया है तथा पिताको गुरुको मारिडालते हैं ॥ ३ ॥ इ० भा० स० शं० मं०चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दश वेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतापूछते भये हे गुरु जी नारद मुनि युधिष्ठिर से कहे कि ब्राह्मण दो २ देवकार्य में भोजन कराना चाहिये तथा पितृकर्म में तीनब्राह्मण भोजन कराना चाहिये तो देवकर्म पितृकर्म से और दूसराकर्म कौन है जिसमें बहुतसे ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये १ वाचकबोले(द्वौ)इसका दोब्राह्मण अर्थ नहीं है(द्वौ)को यह अर्थ है कि दोप्रकार को ब्राह्मण भोजन कराना देवकर्म में एक तो जितेंद्रिय दूसरा भूखा इस प्रकार ब्राह्मण देवकर्म में बहुत भोजन कराना चाहिये २ तिसी प्रकार से चतुर प्राणी पितृकर्म में पुत्र स्त्री शिष्य संयुक्त ऐसा तीनप्रकार को ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये पुत्र १

येद्विप्रान् सख्यातान्सुकौशलः ३ इति० भा० स० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

स्त्री २ शिष्य ३ ये तीनप्रकार ऐसा अर्थ उसश्लोकको है दो ब्राह्मण तथा तीन ब्राह्मण नहीं है जो दो ब्राह्मण तीन ब्राह्मण अर्थ होतातो पहिले युगोंमें राजा लोग असंख्य ब्राह्मण क्यों भोजन कराते ॥ ३ ॥ इति भा० स० शं० मं पंचदशेऽध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

इतिश्री मद्भागवतसप्तमस्कंधशंकानिवारण
मंजरीशिवसहायबुधविरचितासुधामयी
टीकासंहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

अष्टमस्कंधे ॥ ८ ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिविष्टपश्चकस्स्वामिन् यमशास द्रुमापतिः । यज्ञोहत्वासुरगणान् भक्षितुं चागतान्म नुम् १ वाचक उवाच ॥ त्रीन्त्रिभ्यश्चैवयोपाति लो कान्त्रिभ्यएव च । त्रिविष्टपस्यविज्ञेयस्संतोषश्च शची पतिः २ कस्याऽपिमन्यतेशिक्षामिन्द्रोनैवजगत्पतिः ।

श्रोता पूछते भये हे स्वामिन् स्वायंभुव मनुको खानेवास्ते आये जो राक्षस तिनको मारि कै त्रिविष्टप को भगवान् सिखाते भये सो त्रिविष्टप क्या चीज है १ वाचक बोले चोर जारी जुवारी इनतीन दुष्टसे तीनों लोककी रक्षा जो करै तिस को नाम त्रिविष्टप है त्रिविष्टप इंद्रको शास्त्र में कहा है तथा दूसरा अर्थ यह है कि काम क्रोध लोभ इन तीन दुश्मनों से जो तीन लोककी रक्षाकरै तिस को त्रिविष्टप नाम है संतोष को भी त्रिविष्टप शास्त्र में कहा है क्योंकि काम क्रोध लोभ इनको नाश संतोषसिवाय दूसरा कोईभी नहीं करसकेगा२ हे श्रोता हो इन्द्रतो अभिमान में डूबि गया है किसी को भी सिखावन नहीं मानता इसवास्ते यज्ञ भगवान् संतोष को सिखाते भये कि भाई तुम काम क्रोधलोभ इनदुष्टों से तीन

अतोऽन्वशासत्संतोषंत्वञ्जीवान्रक्षसर्वदा ३ इतिश्री भा० अ० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महादाश्चर्यमेतद्धिहरयश्चापिद्राविताः । गजेंद्रगंधमाघ्राययेतेषाम्मदनाशकाः १ वाचक उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तं हरयोघ्नंतिवैगजान् । गजःप्राकृतिकोनाग्न्तपोरक्षात्यिमंसदा । अतोदृष्ट्वाद्रवन्त्येनंहरयोगंधताडिताः ॥ २ ॥ इति० भा० अ० शं० मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

लोक की रक्षाकरो हे श्रोताहो त्रिविष्टप संतोषहै३इति० भा० अ० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये हाथियों के अभिमान को नाश करने वाले जो सिंहसो सब सिंहोंने उस गजकी देहकी सुगंधिको सूंघिकै वनछोड़िके भागिजाते भये बड़े आश्चर्यकी बातहै एक सिंहको देखिके हाथियोंको यूथप भागताहै सो उसके गंधिको सूंघिके सब सिंह भागते भये गुरुजी कालको जीवखाने लगा १ । वाचक बोले हे श्रोता हो आप सब जने सत्य कहते हो हाथियों को सिंह मारते हैं सिंहके सामने हाथी कभी भी नहीं खड़ा हो सकेगा सिंह के बनमें हाथी जाता भी नहीं यह बात जो खुद प्राकृत हाथी होता है तिस की है यह हाथी तौ तपस्वी था शापसे हाथी भया था परन्तु इसको राति दिन इसका पेश्तर का तप रक्षा करताथा उस तप की सुगन्ध से भस्म होते जो सिंह सो सब भागि गये २ इति भा० अ० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ न्यूनंकार्येपिदुद्राव भगवान्कमलापतिः। तुच्छोभूमिनरेशोऽपि नैवन्द्रवतिकर्हिचित् १ वाचक उवाच॥ज्ञानवैराग्ययज्ञादि तपोदानजपादिभिः। अन्यैस्सुकर्मभिस्तूर्णमाविर्भवतिनद्रुतम् २ स्वनामोच्चारणंश्रुत्वागोवत्सामिवधावति। अतोदुद्राववेगेननामोच्चारणमात्रतः ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीये० तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ३० ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अनेकेहरिणास्पृष्टाऽनेकजन्मतपस्विना। विष्णुरूपन्नप्राप्तन्तैर्गजेंद्रःप्राप्तवान्कथम् १

श्रोता पूछते भये कि हे गुरुजी थोरा भी काम करने वास्ते भगवान् आपु से भागि के गजेंद्र को छुड़ाते भये यह बड़े आश्चर्य की बात है किसी देवता को भेजिकै काम कराय देते ऐसा ग्राह क्या दूसरा रावणादिक राक्षस भया था ऐसा तो थोरे काम के वास्ते कोई पृथ्वी में गरीब राजा भी नहीं भागेगा १ वाचक बोले ज्ञान वैराग यज्ञ तप दान आदिलेके और जो सुंदर कर्म तिन्हकर्मों करिके पुकारे हुये जो भगवान् सो जल्दी नहीं प्रकट होते २ परन्तु भगवान् को नाम लेके कोई पुकारता है तो भगवान् कैसा दौड़ते हैं जैसा वत्सके शब्द को सुनिकै गाय दौड़ती है इस वास्ते गजेन्द्र भगवान् को नाम लेकै पुकारा तब आपने नाम को सुनिकै भगवान् जल्दी दौड़ते भये ३ इति भा० अ० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ ३० ॥

श्रोता पूछते भये अनेक तपस्वी जिन्हों को भगवान् बारंबार भेटते थे परन्तु वो तपस्वी लोग भगवान् के रूपमें नहीं प्राप्तभये और गजेंद्र भगवान्की देह जरासे छुइकै भगवान्

वाचक उवाच ॥ भक्तिम्प्रकुर्वतोविष्णोर्व्यतीताबहवो युगाः। गजेंद्रस्यचश्रोतारो व्यासेनोक्तन्नभूरिशः। अतः प्रापहरे रूपं गजेंद्रस्तपसात्ततः २ इतिश्रीभा० अ० शं०मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो०॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शप्तस्सुरेशोमुनिनान त्रिलोकंमुनीश्वरः। निश्श्रीकंयज्ञहीनंच कथंतद्भवत्तदा १ वाचक उवाच ॥ मुनिशप्तेसहस्राक्षे बलिरिन्द्रोबभूवह। तस्मान्निशाचरैर्य्यज्ञास्सश्रीकाश्च विनाशिताः २ इति० भा० अ० शं० मंपंचमेऽध्यायेपंचमवेणी ५ श्लो०१६ ॥

के रूप में प्राप्त हो गया यह बड़े आश्चर्य की बात है वाचक बोले हे श्रोता हो गजेंद्र को तपस्या करते करते बहुत युग बीति गये परन्तु गजेंद्र की तपस्या को व्यास जी बहुत प्रकार से नहीं वर्णन किये तप बलसे गजेंद्र भगवान् के रूप को प्राप्त भया २ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये कि हे मुनि जी दुर्वासा मुनि ने अकेल इंद्र को शाप दिये थे कि हे इन्द्र तेरी लक्ष्मी नाश हो जायगी तथा तीन लोकको शाप नहींदियाथा तब तीन लोक फिरि लक्ष्मी से क्यों हीन हुआ १ वाचक बोले मुनि की शाप इंद्र को भई तब तीन लोकको राजा बलि होता भया इस कारण से तीनलोक को यज्ञ करिकै तथा लक्ष्मी करिकै राक्षस लोग हीन कर देते भये इस वास्ते तीन लोक यज्ञ करि के तथा लक्ष्मी करि कै हीन भया २ इति भा० अ० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ हारनूपुरकेयूरवलयादिविभूषणाः।शि शुस्त्रियोरलंकारा धृताभगवताकथम् १ वाचक उवाच ॥ ब्रह्मादीनांसुराणांच बालरूपस्यवैहरेः। उपासनाप्रिया नित्य मतोबालविभूषणाम्। धृत्वाभूत्त्वाशिशुर्विष्णुस्तूर्णं माविर्भविष्यति २ इतिश्रीभा० श्र० शं०मं षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी॥ ६ ॥श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरान्विमूर्च्छितान्दृष्ट्वा सर्पश्श्वास विषाग्निना। किंस्ववृषुर्घनाब्रह्मन् भगवद्वशवर्तिनः १ वाचक उवाच॥ कुमारौददतुश्शीघ्रं विषवीर्यहरान्रसा न्। तान्मिलित्वाजलेतूर्णंस्मेघावृष्टिम्प्रचक्रिरे २ इति० भा० श्र० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान्‌ने हार तथा पायजेब तथा कंकन कुंडल कंगना आदि लेके बालक को तथा स्त्री को ऐसा गहना क्यों धारण करते भये १ वाचकबोले ब्रह्मा आदि देवतों को बालक रूप भगवान् की उपासना बड़ी प्यारी है इस वास्ते जल्दी बालकरूप होके तथा बालकको सब गहना धारण करके ब्रह्मादिकको दर्शन देते हैं इसवास्ते बालक को गहना धारण करते हैं २ इति भा० श्र० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी सर्पके मुखकी श्वाससे निकला जो विष तिस विषकी अग्नि करिके मूर्च्छित जो देवता तिनको देखिके भगवान्‌की आज्ञा करनेवाले जो मेघ सो काहेकी वर्षा करते भये १ वाचक बोले जहरके वीर्यको नाशकरनेवाला रस अश्विनीकुमार वैद्य मेघोंको देतेभये उसी रसको मेघोंने

श्रोतार ऊचुः ॥ बभूवुर्दानिनस्सर्वेभूपाश्चैवयुगेयुगे। दीर्घायुषश्चार्थपूर्णेनतेषामुपमाकृता १ यथोपमाशुकेनैव कृताराज्ञःपरीक्षितः। सुरवृक्षार्थपूर्णेवै कथमेतद्गुरो वद २ वाचकउवाच ॥ न तु संसारिकार्थानामर्थिना मत्यर्थपूर्तये। उपमैषाप्रज्ञातव्या श्रीमद्भागवतार्थिनः। कथाप्रश्नर्द्धिनाचोक्तस्सुरवृक्षसमोनृपः ३ इतिश्रीभा० अ०शं०मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥ ८ श्लो० ६ ॥

जलमें मिलायके अकेले देवतोंके ऊपर जलकी वर्षा करते भये २ इति भा० अ० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ७ श्लो० १५ ॥

श्रोता पूछतेभये सतयुग त्रेता द्वापरमें बड़े बड़े दानी राजा होतेभये जिनकी बड़ी आयुष होती भई परंतु सब प्राणियों की आशा पूरण करने में तिनकीभी ऐसी उपमा मुनियोंने नहीं किया १ जैसी उपमा याचकोंका मनोरथ पूरण करनेवास्ते शुकदेवजीने कल्पवृक्षकी उपमा परीक्षितकी किया ऐसी उपमा किसी राजोंकी नहींभई यहबड़ी शंकाहोतीहै शिघ्र ३।२ वाचक बोले संसारके सुखको जो याचना करनेवाले प्राणी उसकी आशा पूरण करने में यह उपमा मुनिने परीक्षितकी नहीं कियायह उपमातो जो कोई भागवत की याचना करतेहैं उन की याचना पूरण करने में परीक्षितको शुकदेवजी कल्पवृक्ष सरीके कहे हैं क्योंकि परीक्षित् राजा भागवत को सुनिकै पूंछि पूंछि बहुत कथाका विस्तार किया इसवास्ते कल्पवृक्ष की उपमा राजा परीक्षितको शुकदेवजीने दियेहैं ३इति भाग वत अष्टमस्कंधे शंकानिवारण मंजर्यां अष्टमेऽध्याये अष्टम वेणी ॥ ८ ॥ शलोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वंचनेराक्षसानाम्वैधृता भागवता कथम्। अन्यरूपान्परित्यज्यनिन्दितास्वैरिणीतनुः १ चेत्तेषाम्मोहनार्थाय तथापिमाययान्यथा २ वाचक उवाच ॥ भगवान्नारदंचक्रेसुंदरीम्प्रमदाम्पुरा। बहुवर्ष सहस्राणिव्यतीतानिमुनेस्सदा ३ मायामुक्तश्चतंशेपत्व मप्येवम्भविष्यसि। अतोधृताचहरिणानिंदितास्वैरि णीतनुः ४ इति भा० अ० शं० मं० नवमेऽध्याये नवमवेणी॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ९ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नप्रापुश्चामृतंसर्वेवासुदेवपराङ्

श्रोता पूछते भये राक्षसों को छलनेवास्ते भगवान् सब रूप त्यागिके संसार में बड़ी निंदायोग्य वेश्याको शरीर क्यों धारण करते भये १ जो कोई कहौकि राक्षसों को मोहने वास्ते माया करिकै वेश्या भये तौभी अन्याय है क्योंकि दूसरे रूप करिकै राक्षसों को न मोह करि सक्ते थे भगवान् बड़े बड़े महात्मों को मोहकरि देतेहैं तौ राक्षसों के मोहकरने में क्या कठिनथा २ वाचक बोले सतयुग में भगवान् नारद मुनिको माया करिकै स्त्री बनाय दिया देवीभागवतमें लिखा है तब नारद को स्त्रीभये बहुत हजारों वर्ष बीतिगये ३ नारद मायासे छूटिगये तब पुरुष रूपहोकै भगवान् को शाप देते भये कि हे भगवन् तुम हमेसरीके कभी स्त्रीरूप होजावोगे हे श्रोताहो इसवास्ते भगवान् वेश्या को शरीर धारण करतेभये ॥ ४ ॥ इतिश्री भा० अ० शं० मंजर्य्यांनवमेऽध्याये नवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ९ ॥

श्रोता पूछतेभये कि हेगुरुजी राक्षसतो भगवान्के वैरीथे

मुखाः। दितिजाविष्णुभक्तश्चकथन्नप्राप्तवान्बलिः १ वाचक उवाच ॥ अमृतस्यबलेर्नेच्छाराजधर्म्मान्समी क्ष्यच। कुलधर्म्मान्ज्ञातिधर्मानतस्तेनेदमाकृतम् २इति श्री भा० अ० शं०मं० दशमे ऽध्यायेदशमवेणी॥१०॥ श्लोक॥ १॥

श्रोतार ऊचुः॥ यदामृतासुराञ्छुक्रोजीवयेद्विद्यास्वया। तदातेषांकथंनाशोभविष्यतिसुरात्मनाम् १ वाचक उवाच॥ यावत्तेजोराक्षसानामधिपस्यप्रवर्तते।

इसवास्ते वह अमृतको नहीं पाये परन्तु बलि राजा तो भगवान्को भक्तथा इसवास्ते वो अमृत क्यों नहींपाया यह बड़ा भ्रम होताहै १ वाचक बोले अमृत लेनेकी इच्छा बलिराजा को नहींथी जो कोई कहै कि अमृत लेनेकी इच्छा नहींथी तो यह काम क्यों किया उत्तर राजाको धर्म देखिकै कि राजाको सबकामकी परीक्षा लेना चाहिये तथा जाति धर्म देखिकै जातिकी आज्ञा बलि न मानता तौ जाति नाराज होजाते. इसवास्ते यह काम बलिने किया तथा बलिको अमृत नहीं प्राप्त हुआ २ इति भा० अ० शं० मं० दशमेऽध्याये दशम वेणी॥ १०॥ श्लोक॥ १॥

श्रोता पूछते भये शुक्रजी मरेहुये राक्षसों को अपनी विद्या करिकै जिआय देतेथे तब राक्षसोंका नाशकैसाहोताथा१ वाचक बोले जबतक राक्षसों के मालिक के तेजकी वृद्धि रहती थी तब शुक्राचार्य राक्षसोंको जीताकरि सक्तेथे जब राक्षसों के मालिक को तेजनष्ट होजावैगा तब शुक्राचार्य्य राक्षसोंको कभी भी नहीं जिआय सकैंगे क्योंकि समयके प्रताप को

तावज्जीवयतेदैत्यान्तद्विनष्टेनसः नमः २ इति भा० अ० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११० ॥ श्लोक ॥ ४७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोमहाभगवाञ्छम्भुः कथंकामवशोभवत् । एषानो महतीशंका छिन्ध्याचार्यवचोसिना १ वाचकउवाच ॥ युगानाम्बहुसाहस्रं मायाचक्रे तपःपरम् । शिवेनोक्तावरम्ब्रूहि तयोक्तस्त्वंवशीभव २ शिवेनोक्तपुनर्माया नशैकम्वशगस्तव। भविष्यामिचश्रोतारश्चातःकामवशोभवत् ३ इतिश्रीभा०अ० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी १२ ॥ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

भगवान् भी मानते हैं तो शुक्की क्या बात है॥ २ ॥ इति० भाग०अ०शं०मं०एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी११श्लोक४७॥

श्रोता पूछते भये महादेव कामके नाश करने वाले हैं फिरि भगवान्को स्त्रीरूप देखिके कामकी वश क्यों होगये यह हमारे लोगों को बड़ी शंका है हे गुरुजी आप अपने बचन रूप तरवारि करिके इस शंकाको काटो १ वाचक बोले अनेक हजारों युग(नमःशिवाय)इसमंत्रको जपिके मायातप करती भई तब एक दिन शिवजी बोले हे माया जो वर तेरेको चाहै सो माँगु तब माया बोली हे शंकर तीन लोकमें जो देहधारी प्राणी तथा देवता विष्णु ब्रह्मा आदिलेके सब मेरे वश हैं एक आपु मेरे वश नहीं हो सो आधी घड़ी के वास्ते आपुभी वशि हो जावो २ शिवजी माया से कहेकि क्षण १ तेरी वश हम रहैंगे हे श्रोताहो इसवास्ते शंकर काम के वश भये हैं कुछु कामी होके कामके वश नहीं भये ३ इतिभा०अ०शं०मं० द्वादशऽध्याये द्वादशवेणी१२श्लोक२७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥प्रभाकरसुतश्श्रीमान् सावर्णेरनुजः शनिः। कथम्पीडांकरोत्यस्य सततंजगतःप्रभो१वाचक उवाच॥ज्ञात्वोन्मत्तंत्रिभुवनं वरंलब्ध्वापितामहात्।तेषा म्मदविनाशाय शनिःपीडांकरोतिवै २ इति भा० अ० शं० मं०त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी॥१३॥श्लो० १०॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ग्रस्तान्पश्यन्नृषयो वेदान्कालेनभो गुरो। चतुर्युगान्तेकिंस्याद्वैफलन्तेषाम्प्रदर्शने १ वाचक उवाच॥वेदानांयावदुत्पत्तिः पुनश्चैवभविष्यति।तावत्स मीक्ष्यमुनयो वेदधर्मंचतुर्विधम् २ कथयान्तिमनुष्येभ्यो धर्म्मालोपोभवेद्ध्रुवम्। एतदर्थम्प्रपश्यन्ति ग्रस्तान्वे

श्रोता पूछते भये शनिश्चर सूर्य के तो पुत्र तथा सावर्णि मनु के छोटे भाई ऐसे कुल के वंश होके फिरि नित्य संसार को दुःख क्यों देते हैं १ वाचक बोले तीन लोक को उन्मत्त शनिश्चर देखिकै बिचार किये कि सब प्राणी अभिमान करि कै ईश्वरको भूलि गये ऐसा शनिजी विचारि कै ब्रह्मा से बर दान लैकै उन्मत्त जो जीव तिन को अभिमान नाश करने वास्ते दुष्ट जीवों को दुःख देते हैं और जो सज्जन हैं उन को नहीं दुःख देते २ इति भा अ० शं० निवारण मंजर्यां त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी चारियुगके अन्त में काल करि कै ग्रसित हुआ जो वेद तिनको ऋषिलोग देखतेहैं परन्तु तिन ऋषियोंके देखने में क्या फल हुआ १ वाचकबोले जब तक चारि वेदों की उत्पत्ति फिर होवैगी तब तक ऋषियोंने वेदमें से चारों युगके धर्मको देखिकै २ मानुष्योंको कहते हैं मानुष्यलोग सुनिकै धर्मको नाशनहीं करते जबऋषियोंसे मनुष्यलोग धर्म नहींसुनैं

दान्मुनीश्वराः ३ इतिश्रीभा०अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ विनाशताश्वमेधेन कृतेनेन्द्रासनं मुने। नरेणाधिष्ठितंकश्चिन्न श्रुतंशास्त्रसंचये १ इन्द्रो वशीकृतस्सर्वैं राक्षसैरसकृच्छ्रुतम्। कथंशुक्रार्च्चनेनैव बलिःप्राप्तस्तदासनम् २ वाचक उवाच ॥ रेमेऽहिल्यांसहस्राक्षोयद्दिनेकामतापितः। तद्दिनेषष्ठिमेधस्य फलन्नष्टंबभूवह ३ चत्वारिंशावशिष्टंचाहिरण्यकशिपुस्तदा। तस्थौतदासनेपश्चाद्बलिनाधिष्ठितंचतत्। यथापुण्यन्तथाविष्णुस्सहायंकुरुतेसदा ४ इतिभा०अ० शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लो०॥३३॥

तब वेद तो उस वखत थे नहीं नष्ट हो जाते हे श्रोता हो इस वास्ते ग्रसित हुये वेदों को ऋषिलोग देखते हैं ३ इति भा० अ० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी ॥ १४॥श्लो० ४ ॥

श्रोता पूछतेभये जो मनुष्य तथा जीव अश्वमेध यज्ञ नहीं करते सो प्राणी इन्द्र नहीं कभीहोता बिना इन्द्र भये इन्द्र की गादीपर क्यों बैठेगा ऐसा हमने सब शास्त्र में सुनाहै १ तथा ऐसाभी हम सुना है कि अनेक दफे राक्षसों ने इन्द्रको अपने अख्तियार में करि लियेहैं परंतु यह बड़ी शंका भई कि अकेले शुक्र को पूजन करिकै बलिने इन्द्र कोराज छीनि लिया तथा इन्द्रकी गादीपर बैठगया बिना अश्वमेध किये २ वाचक बोले जिस दिन अहिल्याके संग इन्द्रने खोटा कर्म किया उसी वखत ६० यज्ञकी पुण्य नष्ट होगई ३ चालीस ४० अश्वमेधको पुण्य इंद्रके पासरही तब हिरण्यकशिपु इन्द्रके आसनपर बैठताभया तिसके पीछे बलि बैठताभया जैसी

श्रोतार ऊचुः ॥ स्त्रीणान्नैवाधिकारोस्तिवेदमंत्रेषु कर्हिचित्। अदितिंकश्यपःप्रोचेनाग्नयश्चहुतास्त्वया कुत्रचिन्मयिसंप्राप्तेशंकेयम्महतीचनः १ वाचकउवाच प्रोषितेस्वपतौबालातद्धोमविघ्नशान्तये।जुहुयात्स्वपते र्नाम्ना धर्मशास्त्रमतेनच। ज्ञात्वैवंकश्यपः प्रोचेस्वप्रियामादितिम्मुनिः २ इति भा० अ० शं० नि० मं० षो डशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

इंद्रकी पुण्य तिसप्रकार इंद्रकी रक्षा भगवान् करते भये हे श्रोताहो इसवास्ते बिना अश्वमेध किये बलिने इन्द्रका राज छीनि लिया ४ इति भा० अ० शं० मं० पंचदशेऽध्याये पंच- दशवेणी १५ श्लोक ३३ ॥

श्रोता पूछतेभये अदिति से कश्यपमुनि कहेथे कि हे प्रिये हम किसी दूसरे ग्रामको चलेगयेथे तब तुमने अग्निमें होम नहींकिया इसवास्ते उदासीन बैठीहो हे गुरुजी बिना वेदमंत्रों सेतौ होम होवैगा नहीं और वेदोंको मंत्र पढ़नेको स्त्रियोंको अधिकार भी नहीं है तौ फिरि ऐसा वाक्य कश्यपमुनि क्यों कहे थे यहशंका हमारे सबके मनमें है १ बाचक बोले प्रायश्- चित्त कदंब श्लोक लक्ष १००००० तथा बिधान पारिजातक लक्ष १००००० श्लोक तथा अष्टादशस्मृति श्लोक ५२००० इन आदि लेकै और जो अनेक बड़े २ धर्मशास्त्रहैं तिन धर्म शास्त्रों में ऐसा लिखाहै कि जो स्त्रीको पति मास १ के वास्ते दूसरे ग्रामको चलाजावे तथा अपनी अग्निहोत्रकी अग्नि आदि सामग्री न लैजावै तब अपने पतिके नामको मंत्र मानिकै उसी नामसेस्त्री होमकरिदेवै पतिके होमको विघ्न न होनेपावै ऐसा धर्मशास्त्रों को मत जानिकै कश्यपमुनि अदिति से पूंछेहैं २॥इतिभा०अ०शं०नि०मंज०षोड़शेऽध्यायेषोड़शवेणीश्लोक९॥

श्रोतार ऊचुः॥ महदाश्चर्यमेतद्धिवीर्य्यमाधत्तकश्यपः। अदित्यांविष्णुसूत्यर्थं विना वीर्य्यन्नतज्जनिः १ वाचकउवाच॥सहित्वानेकदुःखानिमर्य्यादांस्वकृतांहरिः सदैवरत्ततेऽतोवैवीर्य्यसृष्टिप्ररक्षणात् । वीर्य्याश्रयंसमाश्रित्यस्वाविर्भावंकरोतिसः २ इतिभा० अ० शं० मं सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ युगत्रयेदधुर्दानंयाचिताश्चनृपाद्विजैः। तथापिगुरुमापृष्ट्वाविचार्य्यशतधापुनः १ तत्कथन्दातुमुद्युक्तस्स्तेनायाचितोबलिः २ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् के जन्म होने वास्ते अदितिके शरीरमें कश्यप मुनि वीर्य्य स्थापन करते भये यह बड़ी शंका होती है कि बिनावीर्य्य स्थापन किये भगवान् को जन्म नहीं होता क्योंकि वीर्यको जन्म तौ चौरासीलक्ष योनिको होताहै और भगवान् तौ सर्वव्यापी हैं उनके जन्म होने वास्ते वीर्यस्थापन को क्या कामथा १ बाचक बोले भगवान् अनेक प्रकारको दुःख सहिकै आपनीबनाई मर्यादाकी रक्षाकरते हैं यहबात शास्त्र में लोक में भी सबको जाहिर है वीर्य बिना संसारकी उत्पत्ति नहीं होती इसवास्ते वीर्य्य की मर्यादा की रक्षाकरने वास्ते वीर्य करिकै आपु प्रगट होतेहैं जो वीर्यकी मर्यादा तथा अपनी बनाई आपही मर्यादा न राखैं तौ सब वस्तुमें विराज मानहै फिरिजन्म लेनेका क्या काम है बैकुंठ में बैठ बैठे जो चाहैसो करिलेवै इसवास्ते कश्यप वीर्य स्थापन अदिति में करते हुये२इतिश्रीभा०अ०शं०मं०सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी १७॥ श्लो० ॥२१॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी सतयुगत्रेता द्वापरमें ब्राह्मण राजों

गृहस्थैर्य्याचितोदानंसन्दद्याद्ब्राह्मणेनृपः। अयाचितोविरक्तैश्चधर्म्मशास्त्रमतान्त्विदम्। अयाचितोवलिश्चैव ज्ञात्वादातुंसमुद्यतः ३ इतिभा० श० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मचारीस्वयम्भूत्वातथाऽप्यनृतवादनम्। चकारवामनोब्रह्मन्महत्कौतूहलं च नः १ वाचक उवाच ॥ शठंकर्म्मसदाकुर्य्याच्छठेनधर्मशास्त्र

से दान मांगतेथे तब राजालोग गुरु से अनेक वार पूंछिकै सुपात्र तथा कुपात्र विचारिकै दान देतेथे १ जब ऐसे विचारिकै दान देतेथे तब बामन भगवान्‌तौ बलिसे दान मांगा नहीं विना मांगे दान देनेको बलि क्यों तैयार हुआ यह भ्रमहै २ वाचक बोले धर्मशास्त्रको यह मत है कि गृहस्थ ब्राह्मण दान मांगै तब राजा दान देवै तथा विरक्तब्राह्मण दान न मांगै तौ भी राजा दान देवै ऐसा धर्मशास्त्रके मतको राजा बलि जानिकै बामन विरक्तहै कुछु मांगे भी नहीं तौ भी बलि दान देनेको तैयार भया ३ इति० भा० श० शं मं अष्टादशेऽध्यायेऽष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य होताहै कि बामन भगवान् होकै तथा ब्रह्मचारी होकै थोरेही कामके वास्ते झूठ बोलते भये हरहर ३ हे गुरुजी क्या बलिको दण्ड देनेको दूसरा उपाय नहीं था वाचक बोलेकि धर्म्मशास्त्र में ऐसा लिखा है कि दुष्टके संग जो दुष्टता करैगे उनको दोष नहीं होता राजा बलि कैसा दुष्टहै कि वह अपने मन में जानताथा कि इन्द्र की पुण्य अभीहै हम राज लेलेवैगे किसी

नम् । शुक्रंपूज्यादद्देराज्यमिंद्रस्यचशठोबलिः २ इन्द्रो बलिसदाविष्णुंपुण्यशेषंचदेहिमे । अतोभगवतेदम्बैकृतंकर्म्मविनिंदितम् ३ इतिभा० अ० शं० नि० मंजय्यां एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥श्लो० १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोग्रहोमुनिभिः प्रोक्तः कथितोयत्पतिर्बलिः । इंद्रासनेसमास्थित्वाकथंगृहपतिःस्मृतः १ वाचक उवाच॥ येग्रह्लंतिसदाप्रीत्याभगवन्नामसादरम् ।

प्रभाव से तब भगवान् को दुःख भोगना परैगा ऐसा जानता रहा है तौभी शुक्रको पूजन करिकै इन्द्रको राज लेलिया २ तब राज से भ्रष्ट इन्द्र भगवान् से नित्य तगादा करनेलगा कि महाराज मैं अश्वमेधयज्ञ १०० कियाहों तब मेरेको आपु इन्द्र बनाये हो कुछु फोकट से नहीं बनाये सो १०० यज्ञमें जो मैंराज किया सोतो भोगिलिया अब जो मेरी बाकी पुण्य होवै उस पुण्य करिकै मेरा राज देवो और न राज देवो तो मेरी पुण्य देवो हे श्रोताहो ऐसे इन्द्र के वचन सुनिकै भगवान् लज्जा तथा दुःख को प्राप्त होके विचार किये कि विना छल किये बलिसे इन्द्रको राज नहीं मिलैगा ऐसा विचारिकै झूठ बोलिकै इन्द्रको राज देते भये ३ भा० अ० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी १९ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये शुकदेवजीने राजा बलिको घरको पति करिकै वर्णन किये हे गुरुजी घर किसका नाम है कि बलि राजा इन्द्रकी गादी पर बैठिकै तीन लोकको पति होकै फिरि गृहपति कहाया ऐसा उत्तम चीज गृह क्या है १ बाचक बोले जो जीव नित्य भगवान् को नाम बड़े आदरसे बड़ी प्रीति से जपते हैं जप करने को ग्रहण करना भी नाम है उन जीवोंको

ते गृह्वा मुनिभिः प्रोक्तास्तेषामुक्तोपतिर्बलिः ॥ २ ॥
इतिश्रीभा० अ० शं० मं विंशेऽध्याये विंशवेणी॥ २० ॥
श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ बलिश्चवामनेनोक्तो विशत्वंनिरयं सदा। पश्चात्सुतलमित्युक्तः कथन्तन्नददौहरिः १वाचक उवाच ॥ यदूचेवामनस्तत्र निरयम्मलयेददौ। अयसो

गृहनाम हैं तिन्हों को पति बलिहै क्योंकि० राति दिन बलि सरीके भगवान्के नामका जप करनेवाला कोईभी नहींहै इस वास्ते शुकदेवजी बलिको गृहपति कहेहैं घरको पति नहीं कहे२ इति भा० अ० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी ॥ २० ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वामन भगवान् पेश्तर तो बलिको कहे थे कि तूं नरक में वास करु ऐसा पापी है तूं फिरि पीछे सुतललोक बलिको देते भये नरक को क्यों नहीं भेजे पामर जीव सरीके यह तमाशा किया जैसा कोई क्रोधी मनुष्य क्रोध भये पर जो चाहै सो मुख से बकिदेवै यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले वामन भगवान् जो लोक बलिको देने वास्ते कहे थे सोई लोक दिये क्योंकि निरयको अर्थ नरकनहीं है तथा जो लोक अयस जो लोह तिस करि के निकहे रहित होवै याने जिस लोक में लोह न होवै उस लोक को भी मुनि यों ने निरय कहा है भगवान् भी निरयको अर्थ ऐसा करि के बलिको कहे थे कि निरयमें वास करोगे इस वास्ते निरय जो सुतल लोक तहां बलिको भेजिदिये क्यों कि सुतल आदि लोकोंमें मणि सिवाय दूसरी धातु कोई नहीं है और लोह

निर्गतंलोकान्निरयंसंस्मृतोबुधैः २ इतिश्री भा० अ०शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी॥ २१॥ श्लो०॥ ३२॥
श्रोतार ऊचुः॥ बलिः कस्मात्संस्थानं यद्दुःप्राप्यं सुरैरपि। स्वर्गस्सुराणांसुतलो नागानामालयंसदा १ वाचक उवाच॥ जीवन्मुक्तःकृतोराजा वामनेनचतद्दशो।यल्लोकंयोगिनोयान्तितल्लोकंप्रापितोबलिः२ इतिश्री भा०अ०शं०मं०द्वाविंशेऽध्या०द्वाविंशवेणी २२श्लो०३७॥
श्रोतार ऊचुः॥ जगत्कर्तुर्जगद्भर्तुर्जगत्पालयितु

की कौन गनती है श्रोताहो निरयको अर्थ विचारिके वामन कहैथे नरक में पड़ने को बलिको नहीं कहेथे इ० भा० अ० शं० मं० एकविं० एकविंशवेणी ॥२१॥श्लो० ३२। से ३४ तक॥
श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा कौनलोक है कि जिस लोकको देवताभी बड़े क्लेश से जासक्ते हैं और उसी लोक को एकक्षणमें बलिराजा चला गया जो कदापि स्वर्ग लोक को चलिगया तौ स्वर्ग लोक देवतोंकाहै औरजो सुतलको गयातौ सुतल नागोंका है हेगुरुजी यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले वामन भगवान् जिस वखत बलिसे दानलिया उसीवखत बलिजीताथा तोभी संसारसे मोक्ष करिदिया चाहे तौ संसार में रहै चाहे योगीके लोकको जावै ऐसे लोकको देवता लोग बड़े दुःखसे भी नहीं जासकैंगे इसवास्ते शुकजी कहेकि जिसलोकको बलि प्राप्त भयासो लोक देवतों से दुःख से भी नहीं जावे योग्य है२इति भा०अ०शं०मं०द्वाविंशे० द्वाविंश वेणी॥ २२॥ श्लो० ३७॥
श्रोता पूछते भये जगत् को करने वाले जगत् को स्वामी जगत् की पालना करने वाले ऐसे जो भगवान् तिन भगवान्

स्तथा। इन्द्रस्याधःकथंचक्रथभिषेकंपितामहः१वाचक उवाच॥ इन्द्रस्यत्रासनार्थाय लघुत्वेस्थापितोहरिः। विचार्य्यविधिनासम्यक् प्रेरितेनचविष्णुना २ इतिश्री भा० श० शं० मं० त्रयोविंशोऽध्यायेत्रयोविंशवेणी २३॥ श्लो०॥ २१॥

श्रोतार ऊचुः॥सप्रचुर्म्मुनयोभूपंभगवद्ध्यानकारणे। स्वयंकथन्नतञ्चक्रुर्ध्यानंभागवतांद्विजाः१वाचकउवाच॥ नवैकुर्वन्तिमुनयश्शरीरस्यसुखायच। ध्यानंभगवतोवि

को इंद्र के हाथके नीचे राज ब्रह्मा देते भये मालिक तौ इंद्र दिवान भगवान् को ब्रह्मा किये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले भगवान् की आज्ञा मानिके ब्रह्मा बहुत प्रकार से विचारि के इंद्रको त्रास देने वास्ते भगवान को इन्द्र के हाथ के नीचे मालिक बनाए क्योंकि लोक में भी अपनी बराबरि पुत्रको भाई को देखिके लोक कुकर्म नहीं करते इसप्रकार से भगवान् इंद्र को छोटा भाई है वामन के सामने इंद्र खोटाकर्म नहीं करैगा इस वास्ते त्रिलोक के नाथको इन्द्र के हाथ के नीचे ब्रह्मा मालिक करते भये २ इ० भा० श० शं० मं० त्रयोविं० त्रयोविंशवेणी२३ श्लोक ॥२१॥

श्रोता पूछते भये मुनियोंने भगवान्को ध्यानकरने वास्ते राजाको कहेथे किराजा भगवान्को ध्यानकरो परन्तुआपु मुनि लोग भगवान् को ध्यान क्यों नहीं करते भये यह बड़ी शंका है१वाचक बोले मुनि लोग शरीरके सुख होने वास्ते भगवान् को ध्यान नहीं करते मोक्ष के वास्ते ध्यान करतेहैं उस वखत

प्राश्यातोनैवकृतन्तुतैः२इति० भा० अ० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥
शरीर की रक्षाको कामथा इस वास्ते मुनियोंने भगवान्को ध्यान नहीं किये २ इ० भा० अ० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

इतिश्रीमद्भागवतअष्टमस्कंधशंकानिवारणमंजरी
शिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीका
सहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

नवमस्कंधे ॥ ९ ॥

सुधामयीटीकासहितविरच्यते॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शम्भुनोक्तंकथम्ब्रह्मन् स्थानमेतद्भवेद्ध्रुवम् । प्रविशेत्पुरुषश्शीघ्रं प्रमदायोऽतिशीलिना १ सर्वंचराचरंविश्वं स्वस्वकार्यार्थसिद्धये । व्रजंतिशिवसंस्थानन्तेभवन्तिनयोषितः २ वाचक उवाच॥ कैलासस्यचशापान्ते स्थापिताबहवोगणाः । विचार्य्य

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी महादेवजी बड़े शीलवान् होके ऐसा क्यों कहेथे कियह हमारे स्थानके सामने जो कोई पुरुष मात्र आवैगा सो जल्दी स्त्री होजावैगा चौरासी लाख योनि में जिस योनिको पुरुष आवेगा उसी योनिकी स्त्री होजावैगी१ और तीन लोक में जो सब चर अचर प्राणी हैं सो सब अपने अपने कार्यको सिद्ध होने वास्ते शिवके कैलासको जाते हैं वो सब स्त्री नहीं होते यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले शाप देके पीछे से महादेव विचारिके कैलास के चारों तरफ़ एक कोशपर बहुत से अपनेगण टिकाय देते भये ३ जोकोई प्राणी कैलासको आता है उसको कोश भरेपर शिवगण खड़ा करिके शिव से पूछते हैंकि हे महाराज अमुक २ प्राणी आपके दर्शन करने को आये हैं तब शिव आज्ञा देते हैं आनेदेवो तब वह

शम्भुनाबाह्येजनैकेचतुर्दिशः ३ आगन्तुकांश्चसंस्थाप्य गणाःप्रच्छंतिशंकरम् । तेनाज्ञसास्समायान्ति तत्रा तस्स्युर्नतेस्त्रियः ४ इति० भा० न० शं० मं प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

हतधेनुम्पृषध्रंच शशापानेनकर्मणा । गुरुस्त्वम्भवि ताशूद्रः कथन्तेषामिदन्नहि १ वाचक उवाच ॥ श्येनेन मुनिनाशप्ता यमभार्य्यात्रिदंडिना ॥ धेनुयोनिस्तथाप्रा प्ता द्वादशाब्दंपुरायुगे २ दत्त्वामहाशिषम्मुक्ता पृषध्रंच

प्राणी कैलास के भीतर जाते हैं इस वास्ते स्त्री नहीं होते कोशभरेपर खड़ा करनेको कारण यह है कि जिस सीमा के भीतर आनेसे स्त्री होते हैं उस सीमाके दूर वह कोशपर खड़ा करते हैं ४ इति भा० नव० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथम वेणी १ ॥ श्लो० ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये गौको बधन किया ऐसा जो पृषध्र तिस को वसिष्ठजी ने शाप दिया कि तूं गायको माराहै इस दुष्ट कर्मसे शूद्र होवैगा ऐसाशाप क्यों दिया क्योंकि गौ मारना यह शूद्रका काम नहीं है यहतो चांडालको कर्म है १ वाचकबोले सतयुग में त्रिदंडी नाम मुनि बाजपक्षी को रूपधरिकै संसार में भ्रमण करिरहे हैं एकदिन यमपुरी को अपनी इच्छा से तमाशा देखने वास्ते चलेगए तबयमकी स्त्री मुनिको चरित्र जानि कै तमाशा करने वास्ते गौको रूप धरिकै पक्षी रूप जो मुनि तिनको अपने शृंगसे मारने दौड़ती भई तब मुनिने शाप दिया कि वर्ष १२ तूं गौहोवैगी इसवास्ते यम की स्त्री गौ होके अयोध्या के राजा की गउवों में रहतीथी २ उसी गौ रूप यमकी स्त्री को पृषध्र दैवयोग से मारडाले तब

जगामसा। मुनिर्ध्यानेनतद्ज्ञात्वा द्वौकार्य्यौसंविचार्य्यच गवान्माहात्म्यवृद्ध्यर्थं तन्मोक्षायशशापवै। शूद्रश्च जान्हवीभ्राता मानेनरहितस्सदा ४ इति० भा० नवम शं० मं० द्वितीयऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक॥ ९॥

श्रोतार ऊचुः॥ एकरूपान्समावीक्ष्य सुकन्यात्रीन् पुरस्थितान्। कथंजगामशरणमश्विनोश्चपतिव्रता १ वाचक उवाच॥ अश्विनोर्मनसाध्यानं चक्रेपार्श्वमसा

मुनिकी शापसे छोटिके पृषध्रकी मोक्ष होने वास्ते आशीर्वाद देके अपने पतिके पासगई वसिष्ठजी ने ध्यान करिके सब चरित्र जानिकै दोकाम विचारिकै १ गौवोंको माहात्म्य बढ़ाने वास्ते कि और कोई ऐसा न करै तथापृषध्रकी मोक्षहोने वास्ते शाप दिया तू शूद्र होवैगा शूद्र होने को कारण यह है कि शूद्र अभिमान से रहित होते हैं तथा श्री गंगाजीके भाई भी शूद्र हैं भगवान् के पगसे शूद्र जन्मे हैं तथा गंगाभी पगोंसे निकली हैं इस दो गुण करिकै शूद्र को मोक्ष जल्दी होताहै हे श्रोताहो इस वास्ते वसिष्ठ पृषध्र को शूद्र होना कहेथे ४ इ० भा०न०शं०मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीय वेणी २॥ श्लो० ९॥

श्रोता पूछते भये सुकन्या अपने सामने एकसरीके तीन पुरुषको खड़ा देखिकै अश्विनी कुमार की शरण कैसे प्राप्त भई क्योंकि वो तीनों तो एकठारहे थे दीप से दीप जलावै तौ क्या मालूम परैगा कि यह तिलके तेलको है यह सरसों अलसी पोस्त घीको दीपहै मालूम न परैगा तैसा वो तीनों एक रूप थे १ वाचक बोले सुकन्या अपने मन में अश्विनी॰ कुमार को ध्यान किया है उन दोनों देवतोंके सामने नहीं गई ध्यान करिकै अपने मन में ऐसी प्रार्थना अश्विनीकुमारकी

गता। दर्शयस्वपतिम्मेद्य युवाम्मेपितरौप्रभू २ इति० भा० न० शं० मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी३श्लो० १६॥

श्रोतार ऊचुः॥ अंबरीषोददौधेनून् षष्ठिकोटिमितान्मुने। महादाश्चर्यमेतद्धि वर्ततेमानसे च नः १ वाचक उवाच॥ ज्योतिश्शास्त्रेचार्बुदस्य संख्यादिक्कोटिनिर्मिता। धर्म्मशास्त्रेसहस्राणां पंचप्रोक्तामुनीश्वरैः २ इति० भा० न० शं०मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी४॥श्लो० ३४॥

श्रोतार ऊचुः॥ अंबरीषस्यचरणौ गृहीतौमुनिना कथम्। तत्तेनापिहरेश्चक्र तेजसाभाव्यमेवतत् १

करती भई महाराज आप दोनों जने मेरे बापहो मेरे पतिको देखाय देवो ऐसी बिनती करिकै अपने पतिको प्राप्त भई २ इति भाग० न०शं० नि० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ३॥ श्लोक॥ १६॥

श्रोता पूछते भये कि राजा अंबरीषने साठि ६००००००००कोटि गाय को दान कियो है गुरुजी हमारे सबके मनमें बड़ा आश्चर्य होता है कि साठि कोटि गाय तथा साठि कोटि बछड़ा बछड़ी तथा साठि कोटि दान लेनेवाले ब्राह्मण एकठा होनेकी बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले ज्योतिष शास्त्रमें अर्बुद १ को दश कोटि लिखाहै तथा प्रायश्चित्त कदंब तथा विधान पारिजातक एलच्च श्लोक हैं इन्हों आदि लेकै और भी जो धर्म शास्त्रहैं उनमें अर्बुद १ को पांच ५००० हजारसंज्ञा लिखी है इसप्रमाणसेती हजार गौ राजा ने दान कियाथा २ इति भा० न० शं० मं०चतुर्थेऽध्याये चतुर्थ वेणी ४ श्लो०॥ ३४॥

श्रोतापूछतेभये हेप्रभुजी दुर्वासा मुनि भगवान्केचक्रके तेज करिकैभस्म होरहेहैं तौभी अम्बरीषको पग कैसा ग्रहणकरते

वाचक उवाच॥ द्विसहस्रान्द्विजान् गृह्य चरन्तं भुवनत्रयम् । दुर्वाससं दंसम्पूर्णं त्रासितं शापकारणात् २ शिवस्त्रक्किंचितन्दृष्ट्वा भगवान्गिरिजापतिः । तन्मानना शनार्थाय यत्नेनं चकारह ३ इतिश्रीभा० न० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ युवनाश्वः कथं राजा यज्ञतोयम्पपौस्वयम् । महदाश्चर्य्यभूतं च शिशुवत्कौतुकम्मुने १ वाचक उवाच ॥ सगर्भां जान्हवीन्दृष्ट्वा पुष्करेसन्तनुप्रियाम् ।

अयेबड़ा अयोग्य कर्म है कलियुगके ब्राह्मण तौ दुर्वासा नहीं थे कि देह के सुख होनेवास्ते नीच कर्म करना वो तो बड़े प्रतापी थे फिरि क्यों नीच कामकिये बड़ा भ्रम होता है शिव ३।१ वाचक बोले दश १०००० हजार ब्राह्मणों को संगलेकै तीन लोक में दुर्वासा भ्रमण करिकै तीनों लोक को शाप करिकै बहुत दुखी करि देते भये जरा से किसी जीव से अपराध होजावै तब उस को ऐसा शाप देना कि बहुतवर्ष तक दुःख पावैगा २ तीन लोकको कंपायमान तथा बहुत दुःखी देखि कै दुर्वासा को अभिमान नाश करने वास्ते यह यत्न महादेव करि कै तीन लोक को सुखी करते भये क्यों कि अंबरीषको चरित्र राति दिन दुर्वासा के हृदय में बशिगया विचारि कै क्रोध करने लगे हे श्रोताहो इस वास्ते मोहको प्राप्तहुये दुर्वासा अंबरीषके पगको ग्रहण करते भये ३ इतिश्री मद्भागवते नवमस्कंधे शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछतेभये हे मुनिजी राजा युवनाश्व आपुसे उठिकै ब्राह्मणों को सोता देखिकै चोर सरी के यज्ञको जलपी लिया यह बालक सरी के कर्म किया बड़े आश्चर्यकी बात है १

युवनाश्वस्तयाक्रान्तो जहासबहुशोनृपः २ तत्रान्तं विष्णुनातत्तु मयानृपसत्तमम् । मोहयित्वातदुदरे गर्भं धारयिताहरिः ३ इतिश्रीभा० न० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥२७॥

श्रोतार ऊचुः॥ सर्वान्यज्ञान्परित्यज्य पुत्रामिषसमुद्भवम् । कर्तुंसमुद्यतोराजा यज्ञमेतत्कथंगुरो । वरुणोपि महापापी शिशुहत्यांचयोग्रहीत् १ वाचक उवाच ॥ पुत्रहीनोनृपोज्ञात्वा स्वात्मानंमनसासुधीः । राजनीतिं विचार्यैव कर्मैतद्वैसमाकरोत् २ इतिश्रीभा० न० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥ से ॥ ९ ॥ तक ॥

वाचक बोले पुष्करजी में राजा युवनाश्व गंगाजी के राजा सन्तनु के वीर्य से गर्भ देखिके बहुत हँसता भया परंतु गंगाजी युवनाश्व के अपराधको क्षमाकिया २ परंतु राजा के अपराधको भगवान्नहीं क्षमाकिहे इसवास्ते राजोंमें उत्तम जो युवनाश्व राजा तिसको माया से पागल करिके जलपिवायके उसके पेट में गर्भ धारण कराते भए ३ इ० भा० न० शं०मं० षष्ठे ऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये राजाहरिश्चंद्रने सबयज्ञको त्यागिके पुत्रकेमांसकरिके वरुणकी जो यज्ञ तिसको करने को क्यों विचार किए और वरुणभी ऐसा उत्तम देवता सो बालहत्या ग्रहण करने को अंगीकार किया वरुणभी बड़ा पापी है गुरु जी शास्त्रकी अंधेर देखते तो कलियुग अच्छो है इसमें ऐसा २ अन्याय तो कोई भी नहीं करता हर २ १ वाचक बोले राजा हरिश्चंद्र अपने को पुत्र करिके हीन जानिके

श्रोतार ऊचुः ॥ और्वश्चब्राह्मणोब्रह्मन् नृपभार्य्यां चतांकथम्। निवारयित्वास्वात्मानं पुत्रवन्तममन्यत १ वाचक उवाच ॥ परावरज्ञश्चौर्वर्षिज्ञात्वासगरवीरतां। स्वशिष्यंचापितंस्वस्य कीर्तिविस्तारणन्तथा। नशिष्य पुत्रयोर्भेदो लोकेशास्त्रेप्रदृश्यते। एवंविचार्यस्वात्मानं पुत्रवन्तममन्यत ३ इतिश्री भा० न० शं० मं० अष्टमेऽध्याये अष्टमेवणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

मनमें राजनीति विचारिके पुत्रके मांस करिकै यज्ञ करने को विचार कियाकि अभी मेरे पुत्र नहीं है वरुणको लोभ देखा-यकै जो पुत्र मेरे होजावैगा तो नहीं मारोंगा पुत्रके वास्ते झूठ बोलने का पाप भी नहीं होवैगा हे श्रोता हो इसवास्ते हरिश्चंद्रने पुत्रके मांस करिकै यज्ञ करने को विचार किया है २ इतिभा० न० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ श्लोक ॥ ८ ॥ से ॥ ९ ॥ तक ॥

श्रोता पूछतेभए हे गुरुजी और्व ब्राह्मणने राजाकीस्त्री पतिके संग भस्म होने लगी तिसको भस्म होनेको मनाकरिकै अपनेको पुत्रवान् क्यों मानतेभए कि यह स्त्रीनहीं भस्महोगी तो हमारे पुत्र होवैगा यह बड़ी शंका है १ वाचकबोले अगाड़ी पिछाड़ी की बात जानने वाले जो और्व ऋषि सो ऐसा जानि कै कि राजा सगर बड़ा वीर होगा तथा हमारा शिष्य होगा संसार में हमारी कीर्ति होवैगी २ लोक में तथा शास्त्र में पुत्र में तथा शिष्य में भेद नहीं देखि परता ये दोनों बराबरि हैं ऐसा विचारिकै सगरको पुत्रमानिकै अपने को पुत्रवान्मानते भये ३ इ० भा० नं० शं० मं० अष्टमेध्याये अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो०॥३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चिरकालन्तपस्तप्त्वा सर्वेभूपमृता ध्रुवम्। नकेनापिक्षितिन्नीता स्वर्धुनीलोकपावनी १ राज्ञा भगीरथेनापिकेननीताक्षितिंचसा २ वाचक उवाच ॥ पंचवर्षोयदाभूत्वा राजाभागीरथस्तदा। पितॄणांचरितंश्रुत्वा गङ्गानयनकारणम् ३ गङ्गानामसहस्रंच पठितुंसरसमारभत्। तस्याजतद्दिनान्नैवमतःप्रीताचस्वर्धुनी ४ इति भा०न०शं०मं०नवमेऽध्यायेनवमवेणी ९॥श्लोक२॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नाभूद्दनिच्छत्तम्मृत्यु रामेराजनि

श्रोता पूछतेहैं हे गुरुजी सब राजा सगरके वंश वाले तपस्या करते २ मरि गये परंतु संसारके पापको नाशकरनेवाली जो श्रीगंगाजी तिनको भूमिमें कोईभी राजान लेआयसके १ परन्तु राजा भगीरथ क्या तप किया जिस तप करि कै भूमि में गंगा जी को लै आया २ वाचक बोले जब राजा भगीरथ पांच वर्ष को भया तब अपने पितरों को चरित गंगा जी को लै आने वास्ते तप करि कै मरे गये पणगंगा भूमिमें नहीं आई ऐसा सुनिकै ३ पांचवर्ष की अवस्था से श्री गंगाजी को सहस्र नाम पाठ करने को प्रारंभ किया परन्तु जिस दिन से पाठ करना प्रारम्भकिया उसदिन से जब तक गंगाजी नहीं आई तब तक छोड़ानहीं राजा बूढा भी हो गया ऐसी पण देखिकै श्रीगंगाजी थोरे दिन तप भगीरथ किया तो भी बालपनसे अपना नाम जपने वाला भगीरथको जानिकै बहुत प्रसन्न होकै थोरेही दिनमें भगीरथके संग भूमि को चली आती भई ४ इति भा० नव० शं० मं० नवमेऽध्याये नवम वेणी ९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूंछते भये हे गुरुजी रामचन्द्र के राजमें जो प्राणी

कर्हिचित् । महदाश्चर्यमेतद्धि मृत्युस्सर्वत्रवर्तते १ वाचक उवाच ॥ शब्दस्यानिच्छतास्य मृत्युरर्थोनभाव्यते । तस्यायमर्थोज्ञातव्यो रामचन्द्रपदोज्झनं २ इति० भा० न० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ ५४ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ यद्विप्रेभ्योददौरामस्तद्द्विजाः प्रददुः पुनः । रामायरामचन्द्रेण तद्गृहीतंकथम्मुने १ वाचक उवाच ॥ ब्राह्मणानाम्प्रसादाश्च गृहीताःक्षत्रियैस्सदा ।

के मरनेकी इच्छाकिया उसको मरण होताथा और जोमरण नहीं होने की इच्छा करता उसको मरण कभीभी नहीं होता था यह बड़े आश्चर्य की बातहै क्योंकि मृत्युतो सब लोकों में है किसी लोक में जलदी किसी लोक में देरकी परंतु ऐसा लोक कोई भी नहीं है कि जिस लोक में मृत्यु न होवै १ वाचक बोले अनिच्छता इस शब्दको अर्थ मरणकी इच्छा करना नहीं होगा इसका यह अर्थ है कि जो प्राणी राम चंद्र के चरणारविंदको त्याग करनेकी इच्छा करते थे राति दिन उसी चरणों में मस्त रहते हैं उन प्राणियोंकी मृत्यु नहींहोती २ इतिभा० न० शं० मं० दशमे ऽध्याये दशमवेणी १० ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो वस्तु रामचंद्रने ब्राह्मणों को दानदियेथे ब्राह्मण दान लिये कछु घड़ी तथा दिन पीछे उसी दानवाली वस्तुको ब्राह्मणों ने रामचंद्र के वास्ते प्रीतिसेदते भए तब रामजी अपनीदानदियेवस्तु क्यों लेतेभये बड़ीशंका इसमें होतीहै१वाचक बोले ब्राह्मण लोग प्रसन्नहोके अपना प्रसाद तुलसीपत्र आदिलेके तथा तीनलोक को सुख

तद्वह्णाकृतेशीघ्रं शापन्दास्यंतिब्राह्मणाः२एवंविचार्यर्थ रामेण गृहीतन्नचलोभतः ३ इति० भा० न० शं० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कालस्यान्नंजगत्सर्वं कथंराजावशेषितः । मरुर्यःकलिनाशेच पुनर्वंशकरःप्रभो १ वाचक उवाच ॥ बाल्याद्योगरतोधीरो मरुर्हरिपरायणः । योगिनान्नाशनेशक्तिर्नास्तिकालस्यकर्हिचित् २ इ० भा० न० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥१२॥श्लो०६ ॥ श्रोतार ऊचुः॥राजानिमिर्महाज्ञानीवसिष्ठश्चमुनीश्वरः।

पर्यंत जब क्षत्रियों को देते हैं तब उसी वखत क्षत्रियलोग ब्राह्मणों को दिया प्रसाद लेलेते हैं जो कभी कोई राजा न लेवैतब जल्दी ब्राह्मणलोग उस राजाको शाप देवैंगे ऐसा रामचंद्र मन में विचारिकै अपनी दईवस्तु ग्रहण करते भये लोभसे नहीं ग्रहण किये ॥ ३ ॥इति भा०नवमस्कंधेशं० नि० मं० एकादशेऽध्यायेएकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पूछते भये हेप्रभुजी तीनलोक में जन्मे जो प्राणी तिनसब प्राणियों को कालखाय लेता है परन्तु राजा मरुको काल क्यों नहीं भक्षण कियाकि जो राजा मरु कलियुग को नाश भये पीछे सूर्यवंश को फिरि उत्पत्ति करैगा आपु कहो१ वाचक बोलेराजा मरु बालपणसे ईश्वर को भजन करनेलगा भजन करते २ बड़ायोगी होगया तौ योगियों को खाने की सामर्थ कालकी कभी नहीं क्यों कि कालतो योगियोंकोदेखि कै दूरडरि जाता है इसवास्ते राजा मरु कालसे बचिगया२ इति० भा० न० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी राजानिमि बड़ा ज्ञानीथा तथा

तौकथन्मूर्खसदृशञ्चक्रतुःकर्मस्मोगुरो १वाचक उवाच॥ स्त्रीकामसोहितन्दृष्ट्वा नारदन्द्वाविमौतदा। हास्यंप्रच क्रतुर्भूरि शप्तौद्वौमुनिनातदा २युवाभ्यांहसितश्चा हृक्स्मा याद्यस्ताऽचिराच्छठौ। अतश्चमादृशौभूत्वा दुर्दशां चगमिष्यतः ३ इति० भा० न० शं० मं० त्रयोदशेऽ ध्यायेत्रयोदशवेणी॥ १३॥ श्लोक ४ से ५ तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ कथंजहारताराम्वैगुरुपत्नींनिशाकरः। मातृरूपान्तयारेमे सापिशापन्ददौनतम् १ वाचक

वशिष्ठमुनि मुनियों में पूजन करवे योग्य ऐसे महात्माथे वह दोनों फिरि मूर्खसरीके काम क्यों करतेभये राजा मुनिकोशाप दिया मुनि राजाको शाप दिया यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले जब नारद मुनि स्त्रीके वास्ते मोहि गये विवाह करने की इच्छा करते भए बड़े कामी सरीके संसारमें भ्रमण करने लगे तब राजा निमि तथा वसिष्ठ ये दोनों बहुत हसते भये तबदोनोंको नारद मुनि शापदेते भये २ हेवसिष्ठ हे निमि राजन् हम स्त्रीके वास्ते दुःखी होरहे हैं हमारे मन में इच्छा विवाह करनेकी नहींहै परन्तु भगवान्‌की माया हमको मोहि लिया है तिसपर भी तुम दोनोंजन हमारी हसी करतेहो इस वास्ते तुम दोनों जने बहुत जल्दी मायाके फांसि में पड़िके हम सरीके बड़ी दुर्गतिको प्राप्त होवोगे हे श्रोताहो इसवास्ते दोनों की बुद्धि भ्रष्ट होगई ३ इतिभा०न० शं०मं० त्रयोदशेऽ ध्याये त्रयोदश वेणी १३॥ श्लो० ॥ ४ ॥ से ॥ ५ ॥ तक॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी गुरुकी स्त्रीतारा तिसको चन्द्रमा क्यों हरण किया तथा माता सरीके गुरुस्त्री तिसके संग रमण किया अधर्मको नहीं डरा भगवान्‌भी दुष्टको दण्ड नहीं दिये

उवाच ॥ गुरुणाशिक्षितश्चन्द्रो धर्म्मशास्त्रप्रमाणतः। स्वीकृतःपुरुषःक्रीड़ां स्त्रियाकुर्यान्नदोषभाक् २ तारापि शिक्षितातेन प्रमदारमितायदा । परेणास्वरजःप्राप्य शुद्ध्यतीतिविनिश्चितम् ३ एवंपरस्परन्तौद्वौ महान्याय स्प्रचक्रतुः ४ इति०भा० न० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशश्रेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंनकृतवान्यज्ञं गाधिःपुत्रस्यहेतवे जामातरंययाचे च तत्पत्नीपुत्रहेतवे १ वाचक उवाच ॥

तथा तारा भी चन्द्रमाकोशाप नहीं दियाबड़ा आश्चर्य होता है ऐसा कर्म तौ राक्षसभी नहीं करैगा हर ३।१ वाचक बोले बृहस्पति संहिता आदि और धर्मशास्त्रों के प्रमाण से वृहस्पति चंद्रमा को सिखाये थे कि अपनी इच्छासे स्त्री पुरुष के संग भोग करने वास्ते मन करतीहै तथा पुरुष स्त्रीकी प्रार्थना से उसके संग भोग करता है तौ पाप नहीं पुरुष को लगता और जो स्त्रीकी प्रार्थना नहीं मानता तौ पुरुषको बहुत पाप लगता है २ तथा ताराको भी वृहस्पति सिखाये थे कि जोपर पुरुष के संग स्त्री क्रीड़ा करैगी तौ जबतक स्त्री कपड़ा से नहीं होवैगी तबतक तौ अशुद्ध रहैगी और कपड़ासे भई तौउसी तीन दिन में शुद्ध होजावैगी पाप रतीभरि भी नहीं रहैगा ३ हे श्रोताहो इस प्रकार से वृहस्पतिके सिखाये जोचन्द्र तथा तारा येदोनों बड़ा अन्याय करतेभये४ इति भा० न० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए पुत्रहोने वास्ते सब राजा यज्ञ करते थे पण राजा गाधि पुत्रहोने वास्ते यज्ञ क्यों नहीं किए जिस वास्ते गाधि की स्त्री पुत्रहोने वास्ते जमाई की याचना

करिष्यामिकरिष्यामि नित्यंचिन्तयतेनृपः । तावत्सत्य वतींदत्वा भार्गवायतपस्विने । ज्ञात्वाजामातरंसिद्धं राज्ञीयांचांसमाकरोत् २ इतिश्री भा० न० शं० मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ रेणुकावृद्धभावापि ददर्शरतिकौतुकम् । महादाश्चर्यमेतद्धि विभातिहृदये च नः १ वाचक उवाच ॥ रेणुकापितृवेश्मस्था बालेवयसिचंचला । नदीं स्नातुंगताबालासखीभिःपरिवारिता२क्रीड़न्तीरूपाविणीं

किया यह वड़ी शंका है कि राजाकी स्त्री होके जमाई से पुत्रमांगना और राजाको पुत्र होनेका उपाय नहींकरना यह वड़ी शंका है १ वाचक बोले राजा गाधि नित्य ऐसी चिंता अपने मनमें करते थे पुत्रहोने वास्ते यज्ञ करैंगे ऐसा करते २ वहुत दिन वीति गया तब तक ऋचीक नाम भृगु वंश में तपस्वी था उनके संग राजा गाधि अपनी सत्यवती लड़िकी को विवाह करिदिया तबरानी अपने जमाई को सिद्ध जानि कै पुत्र की याचना करती भई रानी विचारा कि राजा यज्ञ करने को विचारता है परंतु राजा यज्ञ करते नहीं है श्रोता हो इस कारण से रानी जमाई की याचना पुत्रहोने वास्ते किया है २ इतिभा० न० स्कं० शं० मं० पंचदशेऽ ध्याये पंचदशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी रेणुका बूढ़ी थी तौभी स्त्री पुरुषके रतिको तमाशा देखने लगी यह बात हमारे सब के मनमें बड़े आश्चर्य सरीकी मालूम परती है १ वाचक बोले बालपन में रेणुका बड़ी चंचल थी पिताके महलमें रही तब एक दिन बहुत सखियों को संग लेके स्नान करनेवास्ते

वृद्धामपश्यत्पक्षिणासह। हास्यंचकृतयाशप्तात्वमन्ये नकरिष्यसि। दृष्टिक्रीडाचसर्वासां क्रीडानाम्मूलमुच्यते। एतदर्थंतयापापं कृतन्नान्यद्विचिन्तनम् ४ इतिश्री भा० न० शं० मं० षोडशोऽध्यायेषोडशवेणी॥ १६॥ श्लो० ॥ ३॥

श्रोतार ऊचुः॥ कंजुहावगुरुश्चाग्नौ जघानतनया न्नृजेः। यस्मिन्हूयमानेच सद्धस्त्राक्षोगुरोतदा १वाचक उवाच॥ तेषाम्वैरजिपुत्राणां गुरुणाशिष्यरक्षिणा। तेजस्याहूयमानेच सद्धस्त्राक्षोवधीद्धतान् २ इति ०भा ०न० शं० मं० सप्तदशोऽध्यायेसप्तदशवेणी१७॥श्लो०१५॥ नदीको जातीभई २ एक बूढ़ी चिड़ियाअपनेपति पक्षी तिसके संग क्रीड़ा करि रहीहै तिसको देखिके रेणुका बहुत हँसती भई तब चिड़िया ने शाप दिया कि हे दुष्टिनी मैंतो अपने पतिके संग रमण करतीहूं और तू वृद्धापन में दूसरे के संग क्रीड़ा करैगी ३ सम्पूर्ण क्रीड़ाको मूल आंखोंसे देखनाहै सो क्रीड़ा तू करैगी हेश्रोताहो इस वास्ते रेणुका पापाकिया बूढ़ापन में दूसरा कुछ अन्यायको विचारिकै नहीं किया ४ इति भा० न० शं० मं० षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी १६॥ श्लो० ॥ ३॥

श्रोता पूंछते भये हे गुरुजी बृहस्पति अग्निमें क्या चीज का होम करते भये जिस चीज के होमके प्रतापसे रजिराजा के पुत्रोंको इन्द्र मारिडाला यहशंकाहै१वाचकबोले शिष्यकी रक्षा करनेवाले जोबृहस्पति सो राजारजिके पुत्रोंको तेजमंत्र से अग्निमें होमकरि देतेभये तबराजारजि के पुत्र तेज हीन होगये तब इन्द्र राजारजिके पुत्रों को मारिडाला२इति भा० न० शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदशवेणी॥१७॥श्लोक ॥१५॥

श्रोतार ऊचुः॥ ययातिर्लघुपुत्रस्य वयसारीरमन्नृपः। तन्मातरिमहापापं कृतंद्वाभ्यांकथंगुरो १ चेदाज्ञा सर्वदाग्राह्यापितुरेषासनातनी। मर्य्यादासाचकर्तव्या न्यायान्यायंविचार्यच २ वाचक उवाच॥ शर्मिष्ठाऽधरपानेनययातिर्बुद्धिवर्जितः। पूरुर्दैत्यस्यदौहित्रोद्वौ पापावेकसम्मतौ ३ इतिश्रीभा० न० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी॥ १८॥ श्लो०॥ ४५॥

श्रोतार ऊचुः॥ महदन्यायमेतद्धि ज्येष्ठान्पुत्रान् विहाय च। सिषेचलघुपुत्रम्वै राज्येराजाकथंसुधीः १

श्रोता पूछतेभए हेगुरुजी राजा ययाति छोटे पुत्रकी उमरि लेके उसी उमरि करिके उसी छोटे पुत्रकी माताके संग रमण करता भया इससे तो मालूम परता कि पुत्रई माके संग रमण किया क्योंकि राजा रमण करने लायक होता तो दूसरे की उमरि क्यों लेता ये दोनों महापाप क्यों किए हरश॥१ जो कोई ऐसा कहै कि पिताकी आज्ञा करना चाहिये यह भगवान्की बनाई मर्यादाहै सोसत्यहै करना चाहिये परन्तु न्याय अन्याय विचारिके करना क्योंकि ऐसीजोपिताकी बुद्धि मलीन होवै पिता आज्ञा करै किमेरेको वेश्या आदि जो खराब चीज सोलेआयदे तथाविषखावैगा इसीप्रकारअनेक चीजपरदृष्टिकरिकेसज्जन प्राणीजानिलेनातौपुत्रकोपिताकीआज्ञा नहींमानना चाहिये २ वाचक बोले शर्मिष्ठा को ओष्ठपान करिकै ययातिकी बुद्धि भ्रष्ट होगई तथा दैत्यकी लड़िकी को लड़का पूरु है ये दोनों पापी एकसरीके होकै बड़ापाप करते भए ३ इतिभाग० न० शं० मंजर्य्यां अष्टादशे ऽध्याये अष्टादशवेणी॥ १८॥श्लोक॥४५॥

श्रोता पूछते भए कि राजा ययाति बडे बुद्धिमान् थे तौभी

वाचक उवाच ॥ कामिनोलोभिनःक्रोधयुक्तायेप्राणिनः क्षितौ। तेविचारन्नकुर्वन्ति सदैतेस्वार्थतत्पराः २चकारा तोययातिर्नविचारंपापसंश्रयात् ३ इति० भा० न० शं० मं एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंविस्मरणंचक्रे दुष्यन्तोचिर कालतः। शकुन्तलायाःपुत्रस्य स्वात्मनश्चरितस्यच १ वाचक उवाच ॥ जानन्नपिनृपोधीमान् लोकभीत्यान

बड़ाअन्याय क्यों किया बडे पुत्रोंको त्यागिकैछोटेको राज देते भए यह हमारे सबके मनमें बड़ी शंकाहोतीहै १ वाचक बोले कामी लोभी क्रोधी ऐसे २ जीव भूमि में हैं परन्तु न्याय अन्याय को विचार नहीं करते नित्य अपने शरीरको सुख चाहते हैं न्याय में दुःख देखेंगे तब न्यायको त्यागि देवैंगे अन्याय में सुख देखैंगे तब अन्याय करैंगे देहको सुख होना उसको तौ पुण्यजानते हैं तथा देहको दुःख होना उसको पापजानते हैं सुकर्म कुकर्म नहीं देखते २ इस पापके प्रभाव से ययाति राजा छोटे बड़े को बिचार किया नहीं जिसकी देहसे सुख पाया उसको राज दिया॥ ३ ॥ इतिभा० नव० शं० मं०एको नविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये थोरेही दिनमें राजा दुष्यंत अपने चरित को भूलिगया तथा शकुंतलाको अपने पुत्रको भूलिगया गुरु जी यह बड़ी शंकाहै अगाड़ी के लोग कैसे भोले थे हर ३ १ वाचकबोले कि बड़ाबुद्धिमान् राजाजानतारहा कि हमारा पुत्र यह है यह शकुंतला हमारी स्त्री है परन्तु लोककी निंदा

जयहे ज्ञापयित्वान्सोवाण्या सर्वानंगीचकारवै २ इति भा० न० शं० मं० विंशेऽध्यायेविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ समुद्वाहलनयां शुकस्यक्षत्रियर्षभः । कथन्नीपोगुरोह्येतन्महत्कौतूहलम्प्रभो १ वाचक उवाच ॥ श्रेष्ठाब्रह्मविदांकन्या शुकस्यनान्यमिच्छती ॥ पतिंवव्रेस्वयम्भूपन्नृपोऽपिब्रह्मवित्तमः २ इति भा०न० शं० मं० एकविंशेऽध्यायेएकविंशवेणी २१श्लोक२५॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भार्गवोरामचन्द्रेण न्यस्तशस्त्रः

के डर से नहीं ग्रहण किया आकाशवाणी से सबको मालूम कराय के तौ ग्रहण किया है २ इति भा० न० शं० मंजर्य्यां विंशेऽ ध्याये विंश वेणी २० ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा नीपक्षत्री होके शुकदेव जी ब्राह्मण थे तिनकी लड़िकी के संग क्यों अपना विवाह करता भया क्षत्री की लड़िकी को तौ ब्राह्मण सदैव ब्याहि लेते थे परन्तु ब्राह्मण की कन्या को क्षत्री नहीं ब्याहे कभी देवजानी की बाततो शापसे भई है हमारे सब के यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले तीनलोकमें शुकदेव की लड़िकी सब ब्रह्मज्ञानियों में ब्रह्मज्ञानी थी ब्रह्मज्ञानी पुरुष को अपना पति करना चाहतीथी दूसरे पुरुष को नहीं तथा राजा नीप बड़ा ब्रह्म ज्ञानीथा ऐसा विचारि कै अपनी इच्छा से राजा नीपको अपना पति करिलियाथा कुछ संसारकी रीति से वह विवाह नहीं हुआथा ॥ २॥इति भा० न० शंकानिवारण मंजर्य्यांएक विंशेऽध्यायेएकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये रामचंद्र के सामने त्रेतायुग में परशुराम

कृतःपुरा । नदीजेनकथंयुद्ध मकरोद्द्वापरेपुनः १
भार्गवोनपणंकृत्वा न्यस्तशस्त्रोबभूवह । अंबिकास्व
शरण्यार्थे वीक्ष्यविह्वलितामृषिः । कल्पयित्वास्त्रवृंदा
नियुद्धारंभन्तदाकरोत् २ इति० भा० न० शं० मं० द्वा
विंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२॥ श्लो०॥ २०॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दशसाहस्रयोषित्सुशशबिंदोस्सुता
गुरो । शतकोट्यःकथंजाता महत्कौतूहलात्विदम् १
वाचक उवाच ॥ नताश्चतनुधारिण्यस्सर्वाश्चेंद्रिय

जी आपको धनुषबाण रखिकै तप करने को चलेगये थे ऐसा रामायण में लिखागया है फिरि द्वापरयुग में भीष्म जी के संग युद्ध क्यों करते भये क्योंकि उसी वखत परशुराम जी धनुषबाण कहांसे पाये हे गुरुजी यह बड़ी शंका हमारे सबके मनमें है सो आप कृपाकरिके निवारण करो १ वाचक बोले जब परशुराम जी ने रामचंद्रजी के सामने अस्त्रको त्याग किया तब ऐसी शपथ नहीं कियाथा कि आजुसे हम कभी अस्त्रग्रहण नहीं करैंगे इसवास्ते बहुत दुःखी जो अंबिका तिसको अपनी शरण को प्राप्त देखिकै तप करिकै दूसरा धनुषबाण बनायकै भीष्मके संगयुद्ध करते भये ॥ २ ॥ इति भा० न० शं० मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी राजा शशबिंदु के दस-हजार स्त्रियों में सौकरोड़१०,००००००० पुत्रहोते भये यह कैसे तमाशाकी बात है कि कहनेवाले तो महात्मा हैं परंतु सुनने वालेकोलज्जा मालुम परती है शिव ३।१ वाचक बोले हे श्रोताहो राजा शशबिंदु के दशहजार स्त्रीथीं सो मानुष्य को शरीरधारण करने वाली नहीं थीं वोतो राजा बड़ा योगीथा

त्तयः । सहस्रानन्तवाचीच पुत्रास्तासांसुखादयः ।
मुनिनागुह्यभावेन चोक्तंसंसारहेतवे २ इति० भा०न०
शं० मं० त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी२३श्लो०१४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्त्यलोकेप्रजातानां नराणान्नैव
जन्मनि । दुंदुभिवादयामासुस्सुराश्चनोश्रुतंचनः १
त कथंवादयामासुर्वसुदेवस्यजन्मनि २ वाचक उवाच ॥
वसुदेवोयदाजातस्तदादुन्दुभिसन्निधौ । संस्थितश्चन्द्र

सोदशइन्द्रियोंकी प्रकृति सहस्र कहे गनतीसे रहितसोईराजा
की स्त्रीथीं उनास्त्रियोंमें सौकोटिपुत्रभये सो मनुष्यनहीं भयेवो
तो योगमें प्रेमसुख आदि असंख्य गुण मानना येपुत्र भये
व्यासजीने वर्णन तो किया गुप्तकारिके परन्तु संसार के जीवों
को ऐसी वार्ता जल्दी नहीं मालूम परती इसवास्ते संसार
पर घटाय के वर्णन किये हैं ॥ २ ॥ इति० भा० न० शं० मं०
त्रयोविंशेऽध्यायेत्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मर्त्यलोक में जो मनुष्य
जन्मते हैं तिनके किसी के जन्म भयेपर देवता दुंदुभी
नहीं बजाते और हम सबने कभी सुनाभी नहीं कि बजाते
हैं १ तब वसुदेव को जन्मभयेपर देवता दुंदुभी क्यों बजाते
भये जो कोई कहे कि भगवान् वसुदेव के पुत्र होवैंगे इस
वास्ते अगाड़ी से देवतोंने हर्ष मानिके बजाये हैं तो दशरथ
आदि लेके बहुत जने के भगवान् पुत्र भये हैं तो दशरथ
आदि के जन्म में दुंदुभी क्यों नहीं बजाये यह बड़ा भ्रम है२
वाचकबोले जब मथुरा में वसुदेव जन्म लेते भये तब उस
वखत दुंदुभीके सामने चन्द्रमाखड़ाथा चन्द्रमाजानिलियाकि
इसलड़केके पुत्र भगवान् होवैंगे मेरे वंशको प्रकाश करनेवाला

माज्ञात्वातंस्ववंशप्रकाशकम्। अस्माज्जनिष्यतेविष्णुर तोवाद्यंचकारसः ३ इतिश्री भा० न० शं० मं० चतुर्विं शेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लो० ॥ २९ ॥

यह लड़का होवेगा ऐसा जानिकै चन्द्रमा ने दुंदुभी बजाया देवतों ने नहीं बजाया तथा दशरथ के जन्मकी समयमें सूर्य दुंदुभी के सामने नहीं थे होते तौ सूर्य भी बजाते अपने २ कुलकी वृद्धि देखिकै सबको हर्ष होताहै ३ इ० भा० न० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंश वेणी २४ ॥ श्लोक ॥ २९ ॥

इतिश्रीमद्भागवतनवमस्कंधशंकानिवारणमंजरी
शिवसहायबुधविरचितासुधामयीटीका
सहितासमाप्ता ॥

श्रीशङ्करार्पणमस्तु॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

दशमस्कन्धपूर्वार्द्धे ॥ १० ॥

सुधामयीटीकासहितानिरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सूर्य्यवंशाद्भूतस्वामिन्निशादीप्तिकरान्वयः । नृपप्रश्नकृतेश्लोके कथंसूर्य्योनकीर्तितः १ वाचक उवाच ॥ चन्द्रवंशेसमुत्पन्नं कृष्णंश्रुत्वामहीपतिः । स्वस्यापिकुलमान्यत्वात्पुरश्चन्द्रःप्रकीर्तितः २ इति० भा० दशमस्कंधपूर्वार्द्धशंकानिवारणमञ्जर्य्यां शिवसहायबुधविरचितायांप्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी १ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे स्वामी जी सूर्य वंश करिके चंद्र वंश भयाहै और राजा परीक्षित् के प्रश्नवाले श्लोकमें पेश्तर सोम वंशकोनामहै पीछे सूर्यवंश क्यों वर्णनभया पेश्तरतो सूर्यहैं यह बड़ीशंकाहै कि पेश्तरवालेकोपीछेवर्णनकरनापीछेवालेकोपेश्तर वर्णनकरना छंदभीनहीं भ्रष्टदेखताजोछन्द भ्रष्टहोताहोवैतबतो चिंतानहीं १ वाचकबोले राजापरीक्षित् चंद्रवंशमें श्रीकृष्णको जन्म सुनिकै तथा आपनेभी कुलको मान्य करने वास्ते श्लोक में पेश्तर चंद्रमा को कीर्तन किया है २ इ० भा० द० पूर्वार्द्धे शं० मं० ससुधामयी टीकायां शिवसहायबुधविरचितायां प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः॥॥ रोहिण्यावसुदेवस्य चिरन्नाभूच्च संगमम्। विष्णोर्ज्ञातञ्चारित्रंलोकेकैश्चापितत्कथम्। नापकीर्त्तिर्बभवाथ तयोःकिंकारणाद्गुरो १वाचकउवाच॥ त्रैलोक्यांचनिवासिन्यः प्रजाजाताश्चपुष्करे॥ स्नानार्थं भोजराजोपि सर्वान्गृह्यकुलांस्तथा २ तेनसार्द्धंचगतवान् वसुदेवोपिपुष्करम्। रोहिण्यपिगतातत्र नंदगोपाभिरक्षिता ३ सर्वेषांतत्रसंयोगो बभूवपुष्करेतदा। चेन्नाभूद्वसुदेवस्य लोकैर्भूतेवज्ञायते ४इतिश्रीभा० द०पू० शं० सं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥ २॥ श्लोक१५॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी रोहिणी की तथा वसुदेव की मुलाकात बहुत दिन से नहीं भईथी और बलदेव रोहिणी के गर्भ में जन्मते भये तो लोक में निंदा वसुदेव की तथा रोहिणीकी क्यों नहीं भई जो कोई कहै कि योगमायाने सब काम कियाहै तो ठीक है परन्तु संसार में तो भगवान् के चरित्र को कोई नहीं जानता योगमायाकी बाततो कोटियों नर में एक कोई जानैगा इस वास्ते बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले पुष्करजी के स्नान करने वास्ते तीन लोक के वास करने वाले सब प्रजा पुष्करजी को आते भये तब कंस भी यदु के वंश में जो जो कुलथे सबको संग लेके पुष्करजी को गया २ कंस के संग वसुदेव भी पुष्कर को गये तथा नंद आदि गोपों करिकै रक्षा को प्राप्त रोहिणी सोभी गई थी ३ पुष्करमें सबकी मुलाकात भई परन्तु वसुदेवकी तथा रोहिणी की मुलाकात कंसकी त्रासते नहीं हुई परन्तु लोकतो जानि लिया कि पुष्कर में वसुदेव की रोहिणी से मुलाकात होगई है इस वास्ते बलदेव को जन्म भये पर कोई भी वसुदेव

श्रोतार ऊचुः ॥ सुखेनमार्गंप्रददौ यमुनानकदुंदुभिं। श्रियःपतेसिन्धुरिव ददौमार्गपयोनिधिः । कुत्रलक्ष्मी पतेश्चैव नरामायसुखेनवै १ वाचक उवाच ॥ बलये दर्शनन्दातुन्नित्यंगच्छतिवामनः । पातालपन्थानान्यो ऽस्तिसमुद्रविवराहते । नित्यंददातिसौख्येन पन्थानं वामनायसः २ इतिश्री भा० द० पू० शं० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी ॥ ३ ॥श्लो०॥ ५१ ॥

रोहिणीकी निंदा नहीं किये कि मुलाकात तौ भईनहींबलदेव कैसे जन्मे ४ इति० भा० द० पू० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये मुनिजी राजा से कहे कि कृष्णको लेके वसुदेव व्रजको चले तब जैसा भगवान् को समुद्र बड़े सुखसो रसूता दिया है तैसे यमुना वसुदेवको बड़े सुखसे रसूता देती भई हे गुरुजी किस स्थानपर भगवान्को सुखसे रसूता समुद्रने दिया यह बड़ी शंकाहै जो कोई कहै कि लंकाको जानेके वास्ते रामचन्द्र को दिया तब यह बात अनर्थक है क्योंकि रामतो बहुत दुःख सहे हैं समुद्र को शोषणे को तैयार भये तौभी पुल बांधिके गये हैं सुखसों रामचन्द्रको समुद्रने नहीं जाने दिया वाचक बोले इस स्थानपर भगवान् को सुख से रसूता समुद्र देताहै कि राजाबलिको दर्शन देने वासूते वामन नित्य सुतल लोकको जातेहैं तब पाताल जानेको रसूता एक१ समुद्र में है दूजी नहीं है सो नित्य वामनको सो समुद्र आप सूखिके रसूता देता है इस वासूते व्यास भगवान् को रसूता देने को समुद्रको कहे हैं २ इति भा०द० पू०शं०मं०तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ ५१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ किम्ब्रह्मयस्यहिंसाम्वैकारयित्वाच राक्षसैः। भोजराट्स्वहितम्मेने नाहिंस्यम्ब्रह्मकैरपि १ वाचक उवाच॥नतद्ब्रह्मात्रसंज्ञेय ज्ञात्रसत्कर्म्मब्रह्मवै। यज्ञादिस्नानदानादि रमेशहृदयार्जवम् २ इतिभा० द० पू० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ४श्लो०४३॥ श्रोतार ऊचुः॥ वसुदेवःकथंचक्रे मित्रेणसहवंचनम्। नसत्यकथनेनंदः किमुबालमरक्षत १ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये कंस ने राक्षसों करिकै जिस ब्रह्म को बधन कराय के अपना कल्याण मानता भया सो ब्रह्म कौन है क्योंकि सर्वव्यापी अजर अमर चैतन्य कारक ऐसा जो ब्रह्म है सो कभी भी किसी के मारे नहीं मरैगा यह मर नेवाला ब्रह्म कौन है जो राक्षसोंके मारे मरिगया यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले जो अजर अमर सर्वव्यापी ब्रह्महै सो ब्रह्म को(ब्रह्महत्या हितं मेने)इस श्लोक को अर्थ व्यास जी नहीं किये इस श्लोक को अर्थ व्यासजी ऐसा किये कियज्ञ आदिदान आदि स्नान आदि भगवान्को पूजन आदि अनुराग अपने हृदयमें कोमलता दया इनको आदि लेकै और अनेक प्रकार को सुंदर कर्म सोई ब्रह्महै तिसको नाश करायकै कंस अपना हित मानता भया ऐसा अर्थ व्यासजी कियेहैं २ इति भा० द० पूर्वा० शं० मं० चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी४श्लोक४३॥

श्रोता पूछते भये वसुदेव ऐसे महात्मा होकै फिरि मित्र जो नंदातिन के साथ कपट क्यों करते भये जो सत्य बोलते कि हमारे दोपुत्र आपु के पास हैं सो आप रक्षा करो क्यों कि विपत्ति में मित्रसिवाय दूसरा कोईभी सहाय नहीं करता है ऐसा कहेपर क्या श्रीकृष्ण की रक्षा नंद न करते कपटको

मायया मोहितास्सर्वे कर्म्मकुर्वन्तिप्राणिनः। त्रिलोकस्थायथाविष्णुस्तथायमपिमोहितः। पूर्वदत्तवरोनन्दो यशोदा च तपस्विनी। विष्णुनातोऽन्तम्प्रोक्तम्बसुदेवेनगोपतिम् ३ इति०भा० द०पू० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकम्पिरेत्रयोलोकाः कथंशब्देन गोकुले। महदाश्चर्यमेतद्धि पूतनायाश्चनश्श्रुतम् १ वाचकउवाच ॥ त्रिलोकस्थाःप्रजास्सर्वाश्श्रीकृष्णदर्श

क्या कामथा १ वाचक बोले तीन लोक में टिके जो प्राणीसो सब भगवान् की माया करिके पागल हो रहेहैं तैसा वसुदेव भी पागल होगये जो कोई ऐसा कहे विना कारण माया किसी को नहीं मोह करती तौ सत्य है वसुदेवको मोहहोने में यह कारण था २ पहिले नंदको तथा यशोदाको भगवान् वरदान दियेथे किहम जन्मैंगे दूसरेके पण बालक्रीड़ा तुमारे पास करैंगे इसवास्ते भगवान् वसुदेव को माया से मोहित करिके कपट कराया जो वसुदेव सत्य बोलते तौ नंद कृष्ण की पालना करते तौ सही परन्तु जरा भेद दृष्टि तौरहती कि दूसरे के पुत्रहैं इसवास्ते नंदसे वसुदेव कपट किये हैं अपनी इच्छासे नहीं किये॥३॥इति भा० द०पू० शं०मं० पंचमेऽध्याये पंचम वेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गोकुल में पूतना मरती वखत शब्द कियाथा उसी शब्दकरिके तीन लोक कांपने लगा बड़ा आश्चर्य मालूम परताहै हम लोग तौ कभी नहीं सुना कि राचस तथा राचसी के शब्द करिके तीन लोक कांपने लगा हर ३ वाचक बोले जिस वखत पूतना मरते वखत शब्द कियाथा

नायच। प्रच्छन्नाश्चसमायाता गोकुलेसमयेतदा २ ताश्श्रुत्वातद्ध्वंशीघ्रं बभूवुःकम्पितास्तदा। अतोलोक त्रयाःप्रोक्ता द्वयोर्भेदोनदृश्यते ३ इति० भा० द० पू० शं०मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चकारनकथंकृष्णः स्वदेहेभारवर्द्धनम्। दुःखार्दितंव्रजंकृत्वा रोदयित्वास्वमातरम्। स्वतनौकृतवान्पश्चाद्भारस्यवर्द्धनंहरिः १ वाचकउवाच॥ वरम्पूर्वंददौब्रह्मातृणावर्तायवैयदा। त्वत्कृतेनानुतापेन यशोदाश्रुनिपातनम्। भविष्यति च तेमृत्युस्तदातोन

उस समय गुसहो के तीन लोक में टिके जो प्रजा सो सब श्रीकृष्ण को दर्शन करने वास्ते ब्रज में आये थे २ सो सब प्रजा पूतना के शब्द को सुनिके जल्दी कांपने लगे इस वास्ते तीन लोक कांपने वास्ते व्यास जी कहे थे क्यों कि लोक प्रजा को भी नाम तथा प्रजा लोकको नाम है लोकमें तथा प्रजा में भेद शास्त्र में नहीं देखने में आता ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी॥६॥श्लोक ॥१२॥

श्रोता पूछते भय श्रीकृष्णने अपनी माता को तथा सब ब्रजवासियों को दुःखी करि कै तथा अपनी माको रोवाय कै अपनी देह में भारको बढ़ाया तो जब तृणावर्त हरिकै लेचल ने लगा तब अपनी देह में भार क्यों नहीं बढ़ाये कि राक्षस के उठाये न उठते तब सब को दुःख क्यों होता यह शंका है १ वाचकबोले ब्रह्मा ने पहिले तृणावर्त को वरदान दिये थे कि तेरे किये दुःख करि कै यशोदा के आंखों से जब अश्रुपरैगा तबतेरी मृत्यु होवैगी इसवास्ते श्रीकृष्णने पेश्तर अपनेशरीरमें भारनहीं

पुरस्कृतम् २ इतिभा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गर्गोमुनीश्वरोब्रह्मन् चक्रेनंदेन वंचनम्। कथंतद्ब्राह्मणानांवै सर्वस्वंहरतेक्षणात् १ वाचक उवाच ॥विचार्यमनसागर्गोमहोत्पातोभविष्यति अत्रोक्तेचमयासत्येदैत्यैर्ज्ञातोशिशुर्ध्रुवम्। चक्रेऽतोवंचनं पापम्परोपकारणायच २ इतिश्रीभा० द०पू०शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी॥ ८॥श्लो० ॥ ७॥

बढ़ाये ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तमेऽध्यायेसप्तम वेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ २६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी गर्गमुनि नंदके संग कपट क्यों करते भये कि हम श्रीकृष्ण को नाम नहीं धरैंगे क्यों कि इसी वास्ते तो गयेथे हे गुरु जी झूठ वचन क्षण एक में ब्राह्मणों के तप आदि सब धनको नाश करिदेता है सो गर्ग झूठ क्यों बोले हर ३।१ वाचक बोले गर्गमुनि अपने मनमें बिचार कियेकि हमनंद से सत्य २ बोलैंगे और प्रत्यक्ष करि कै कृष्ण को नाम धरैंगे तो बड़े उत्साहसे बाजन बजवाय कै और जो अनेक हर्षसो आनंद करैंगे तब कंसआदि दैत्य जानि जावैंगे कि यह बालक किसी यदुवंशी को है तो बड़ा उत्पात होवैगा इसवास्ते झूठ बोले हैं बिना कपट कियेनंद गुप्तनाम न कराते बड़ाउत्साह करते नाच तमाशा हजारों प्रकार का बाजन बाजते इस कारण से गर्ग कपट किये हैं तथा पराये जीवके उपकार वास्तेझूठको पापभी नहीं होता२ इति० भा० द० पू० शं० मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८ ॥ शूलोक ॥ ७ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ कृत्वानुबंधनम्प्राप्तोयशोदामुरुदुःखिताम्।पुरःकथन्नतद्भेजे कृष्णश्चैतन्महद्भुतम् १ वाचक उवाच॥ सर्वारज्जूनि गोलोकादागताश्चैवदासिकाः। भूत्वागोनाम्व्रजेतेषांमोक्षार्थंनपुरोहरिः। प्रथमं बंधनंभेजे सर्वासाम्मुक्तिहेतवे२इतिभा०द०पू०शं०मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी॥ ९ ॥ श्लो० ॥ १९ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ कैर्नदृष्टश्श्रुतोवापि लोकेशास्त्रेच सज्जनैः। तत्कथंरेमतुर्यत्ता वम्भोजवनराजिनि १

श्रोता पूछते भये कृष्णजी यशोदा माताको बहुतदुःखी करिके पीछेसे रस्सीमें बंधिगये तौ पेश्तर क्यों नहीं जल्दी एकई दफेमें बंधे यह बड़ीशंका है माता को दुःखी करिकेरस्सी में बंधिगये इसका कारण क्या है १ वाचक बोले जब गोलोक से श्रीकृष्णके संग सबगौ व्रजको आनेलगीं तब गोलोक में गौवोंकी सेवन करने वाली दासी रस्सी होकेगौके चरण में सेवनकरि रहीहै नंदजी की गौवोंकी भगवान् बिचारेकि अब इनगौवोंकी दासिनको गोलोकको भेजि देवैं ऐसा बिचारिकै उनगौवों की दासियों की संसार से मुक्ति होनेवास्ते फिरि गोलोक को भेजने वास्ते पहिली दफेरस्ता में नहींबँधे एकई दफे बँधिजातेतौ यशोदा अपने घरकी सबरस्सी क्यों ले आती२ इति० भा० द० पू० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी॥ ९ ॥ श्लोक ॥ १९ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी कोई भी सज्जन नदीमें कमल बन होता है ऐसा शास्त्रमें सुना नहीं तथा लोकमें किसी भी नदी में कमल को बन देखेनहीं फिरि दोऊ यच नदीके जल में प्रवेश करिकै कमल के बनमें स्त्रियोंके संगक्रीड़ा कैसाकरते

वाचकउवाच ॥ नत्वत्रकमलाग्राह्याश्चाम्भोजवनराजि नःसविताज्ञैवज्ञातव्यस्तत्साक्षिणोविरेमतुः २ इतिश्री भा० द० पू० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी॥ १०॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ निरीक्ष्यकृष्णंस्वसुतम्व्रजेश्वरोभृशंरुदन्तन्दृढबन्धनंकटौ । तरोर्निपातादविंतकथंतदा जहासशंकेयमतीवनोगुरो१वाचक उवाच ॥ संस्मृत्य गर्गस्यवचोगवाम्पातिर्दृष्ट्वास्वभाग्यंसुतजन्मनापितम्।

भये बड़ाभ्रमहोता है हर ३।१ वाचक बोले(अंभोज वनराजि-नि)इसश्लोक में 'अंभोज वनराजिनि'इसको अर्थ व्यासजी कमलको वन नहीं किये इसको अर्थ व्यासजी ऐसा कियेहैं कि अंभोज जो कमल तिसके वनको राजि कहे प्रकाश करने वाला जो सूर्य तिनको साक्षीकरिकै नदीमेंस्त्रियोंके संगक्रीड़ा यत्न करते भये साक्षी माने दिवस में क्रीड़ा किये यह अर्थ सुनिकिये हैं कमल को बन नहीं किये ॥ २ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लोक॥ ४॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जो अपना पुत्र तिनको नंदजी ने बहुत रोतादेखिकै तथा कमर में बहुत कसिके रस्सी से बंधादेखिकै तथा वृक्षटूटि कै कृष्ण के ऊपर पड़िगया परन्तु श्रीकृष्णकीदेहमेंचोटनहींलगीदेहकीरक्षाभई ऐसेअपनेपुत्रको देखिकै नंदहंसते क्यों भये बालकको दुःखीदेखिकै तौदूजाभी आदमी शोच करताहै और नंदको पुत्रथे शोच नंद क्यों नहीं किये यह शंका है १ वाचक बोले नंदजी ने गर्ग जीके वचन को स्मरण करिकै क्योंकि गर्ग कहि गयेथे नंदसे कृष्ण नारा-यण को रूपहै कृष्ण के जन्म करिकै अपनी भाग्य को नंद

रमापतिम्प्राणपतिञ्जगत्पतिम्भूयो नमस्कृत्यजहास मानसे २ इति भा० द० पू० शं मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ११॥ श्लो० ६ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ अघासुरस्याधरवर्द्धनंगुरो श्रुत्वामनो नोहृदयंचकम्पते । नरावणस्यापिनतारकस्यवाऽन्येषा मपीत्थंमुखवर्द्धनंश्रुतम् १ वाचक उवाच ॥ कृष्णमाया न्तमालोक्यपुराऽस्यसंचितंतपः । तद्वर्द्धित्वानभः प्राप चोष्ठंचाकृष्यतेजसा २ अनेनजन्मनापापं संचितंतच्च पुप्लुवे। अधोगन्तुंक्षितिंभित्वा चोष्ठंचाकृष्यपूर्ववत् ३ देखिकै लक्ष्मीके पति प्राणके व जगत्के पति ऐसे श्रीकृष्णको वारम्बार नमस्कार करिकै अपनेको धन्य जानिकै मन सहित हँसते भये २ इ० भा० द० पू० शं० मं० एकादशेऽध्याये एकादशवेणी ११ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूंछते भये हेगुरुजी अघ नाम राक्षसके दोनों ओठ की लंबाई सुनिकै हमारे सबको मन तथा हृदय कांपने लगा क्योंकि ऐसी ओठकी लम्बाई रावण की तारक की और अनेक राक्षसों की हम कभी न सुना बड़ा आश्चर्य होताहै हर३ १ वाचक बोले अघासुर की पूर्व जन्मकी पुण्यहै सो श्रीकृष्ण को दर्शन अपने सामने करिकै बड़े हर्ष से वर्धित होकै स्वर्ग को प्राप्त भई परन्तु अपने तेज करिकै अघासुर के ऊपर के ओष्ठको खैंचिकै संग लेतीगई २ तथा इस जन्म करिकै किया जोपाप सो श्रीकृष्ण को देखिकै डरिकै अघासुरकी देह को छोड़िकै भागता भया पाताल में जाने की तयारी किया भूमि को भेदन करिकै अघासुर को पाप पातालको गया परन्तु अघासुरके नीचे को ओठको अपने जोरसे खैंचिकै संग लेता-

कृष्णस्पर्शाद्द्वयंनष्टम्प्राविवेशतनौहरेः। अतोनभासि भूमौच तद्गाधरविवर्द्धनम् ४ इतिश्रीभा० द० पू० शं० मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२॥ श्लो०॥ १७॥

श्रोतार ऊचुः॥ हरेर्नान्यावतारेषु न मोहोब्रह्मण श्श्रुतः। मोहम्प्रापकथम्ब्रह्मा कृष्णाविर्भावमंडले १ वाचक उवाच॥ स्वसुतन्नारदंदृष्ट्वा मायाग्रस्त स्त्रिविधिस्तदा। जहासतेनशप्तश्च मायाग्रस्तेपितः २ कृष्णभोजनमन्वीक्ष्य मोहग्रस्तोभविष्यसि॥ ३॥ इति भा० द०पू० शं० नि० मञ्जर्य्यांत्रयोदशेऽध्याये त्रयोदशवेणी॥ १३॥ श्लो०॥ १५॥

गया पेश्तर सरीके ३ अघासुर ने श्रीकृष्ण के शरीरको स्पर्श किया तब उसका पुण्य पाप दोनों नष्ट होगया तब अघासुर कृष्णकी देह में मिलिगया पाप पुण्य नाश होने का कारण यहहै जब प्राणी के पास पुण्य रहैगा तब वह प्राणी स्वर्ग भोगैगा पापरहैगा तौ नरक भोगैगा दोनों नष्ट होंगे तौ ईश्वर में मिलैगा इसवास्ते आकाश में तथा भूमि में अघासुर के ओठ की वृद्धि हुईथी॥४॥इ० भा० द० पू० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादश वेणी १२॥ श्लोक॥ १७॥

श्रोता पूछते भये भगवान् के अनेक अवतार भये परन्तु किसी अवतारों में ब्रह्माको मोह नहीं भया ऐसा हम सबने सुना है पण श्रीकृष्णके अवतार में ब्रह्माको क्यों मोह भया यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचक बोले ब्रह्मा जी नारदजी को माया से ग्रसित हुआ देखिकै हँसते भये तब नारदजीने ब्रह्मा को शाप दिया कि हे पिताजी तुमको माया ग्रसित करैगी २ एक दिन श्रीकृष्णको भोजन करता देखिकै माया से ग्रसित

श्रोतार ऊचुः ॥ स्तुतिंकृत्वागतो ब्रह्मानोवाचभगवान्कथम्। महाश्चर्यमिदम्ब्रह्मन्तिरस्कारोविधेरभूत् ॥ वाचक उवाच ॥ स्वस्तुतिंस्वाननेनैव कुर्वन्तिदुर्जनाजनाः। कृष्णोऽतोव्रीडितोभूत्वानोवाचकमलोद्भवम् २ इतिश्रीभा० द० पू० शं०मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ स्वस्यश्रेष्ठंकथंचक्रेशेषंस्वांशंयदूद्वहः। एषानो महतीशंकावर्ततेमहतीहृदि १ वाचक

होवोगे हे श्रोता हो इसवास्ते श्रीकृष्णजी के अवतार में ब्रह्मा को मोह हुआ ३ इति भा० द० पू० शं०मं० त्रयोदशेऽध्याये त्रयोदश वेणी १३ ॥ शूलोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछतेभये श्रीकृष्णकी स्तुति करिकै ब्रह्मा अपने लोककोगये परन्तु कृष्णभगवान् ब्रह्मासे क्यों नहीं बोलते भये सबजगह देवतोंसे बोलतेहैं यह बड़ा आश्चर्य भया कि भगवान् खुद ब्रह्माको अनादर किया १ वाचक बोलतेभये अपने मुखसे अपनी तारीफ दुष्टजन करतेहैं मैं ऐसाहौं २ इसीवास्ते श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म जगत्के नाथ ब्रह्मासे किई अपनी स्तुति सुनिकै लज्जायमान होगये ब्रह्मासे कुछभी नहीं बोले विचार किये कि हमने नाहक ब्रह्माके चरित्रको नहींमाने वत्स बालकोंकोब्रह्मा हरिलेगयेथे तौ हमको ब्रह्माकी स्तुति करिकै लेआना चाहतारहाहै ऐसे दयालु भगवान् लज्जासे नहीं बोले २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दश वेणी १४ श्लोक ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये कि श्रीकृष्ण भगवान् बिष्णुहो कैसेअपना अंश जो शेष तिन को अपने से बड़ा क्यों कियेकि बलदेव

उवाच ॥ लक्ष्मणेनानिशंरामः सेवितस्तंवरंददौ । संकृत्यद्वापरेश्रेष्ठंत्वान्तेसेवानुकारकः । कृष्णनामाभ विष्यामिचातश्रेयानहीश्वरः ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥ १५ ॥श्लो० १४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नागेशस्यहृदाद्यातियान्दिशंयमुनातदा । संयोगावधिगंगायाः कथन्नासाविषान्विता १

को सेवन कृष्ण बड़ा जानि कै करते भये हे गुरु जी हमारे सबके मनमें यह बड़ी शंका है वाचकबोले त्रेता में लक्ष्मण जी श्रीरामचन्द्र जीकी बहुत सेवन रातिदिन करते भये तब श्रीरघुनाथ जीने लक्ष्मणको वरदान दिये हेभाई लक्ष्मण हम तुमको प्रसन्न भये इसवास्ते द्वापर में तुमको अपना बड़ा भाई बनायकै हम तुम्हारा सेवन करैंगे श्रीकृष्ण हमारा नाम होगा हेश्रोताहो इसवास्ते शेषजी विष्णुसे बड़े होते भये२इति भा०द०पू०शं०मं०पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लो०॥१४॥

श्रोता पूछते भये कालिय नाग के कुंड से जिस दिशाको यमुना जी गई हैं गंगाजी को तथा यमुनाको मिलाप भया है प्रयाग तक यमुनाके जल में नागको जहर क्यों नहीं मिला रहा क्योंकि कुंड को जल जहर से पूर्ण रहाथा सोई जल प्रयाग तक आया सो जहर से मिला चाहिये जैसा कुंड में जहर से मिलाथा तैसा प्रयाग तक जहरीजल होना चाहिये सो क्यों नहीं भया १ तथा भागवतमें लिखाहै कि कालियके कुंडकेसामने यमुनाके तीरपर जो प्राणी जीवधारी तथावृक्ष आदिसब जलिजातेहैं तो कदंबको वृक्षकालिय कुंड के सामने रहा सोक्योंनहीं भस्महुआ यहदोशंकाहमलोगोंको दुःखदेती हैं१वाचक बोले जिसदिन कालिय यमुनाके कुंडमें वास किया

कदम्बवृक्षश्चकथन्नबभूवाग्निसान्मुने २ वाचक उवाच॥ तद्ध्रदस्थमहिम्बीक्ष्य शतहस्तंचतुर्दिशः। विषव्याप्ति म्बिधिश्चक्रेह्रदान्नान्यत्रसंस्थितिः ३ वैनतेयस्सुधांगृह्य कदंबोपरिसंस्थितः। कदम्बोभस्मसान्नैवबभूवातश्चस ज्जनाः॥ इति भा० द० पू० शं०नि० मं०षोड़शेऽध्याये षोड़शवेणी ॥ १६॥ श्लो० ४ से ५ तक ॥

श्रोतार ऊचुः॥तद्ध्रदःकालियेनैव ज्ञातोनान्यैःकथं प्रभो। सर्पैरेषाचमहृती शंकास्मांस्तुदतेसदा १ वाचक

उसीदिन कुंडमें टिका जो नाग तिसको ब्रह्मा देखिके विचार किये कि ऐसा विषके जोर करिके यमुनाजीका जलतो जहरी होगया कुंडसे प्रयागतक यमुनागई हैं सो जहरी जलभया श्रीगंगाजीमें मिलीतो गंगाजलभी जहरी होजावैगा गंगाजी समुद्रमें मिलीहैं सोभी जहरीहोगा जोकभी यमुनाजी बहुत पूर आवैंगी तब पीछेकोभी जल जायगा सोभी जहरी होगा ऐसा विचारिकै नागके कुंडसे चारोंतरफ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण सौ १०१ हाथ तक जहर रहैगा सौ हाथकेऊपर जहर नहींरहैगा ऐसा प्रमाण करिदिये इसवास्ते सबदेशमें यमुना को जल जहरी नहीं भया ३ हे श्रोताहो गरुड़ अमृत को लै आये तब थोरीदेर केवास्ते कदंब के ऊपर बैठथे तब अमृत को कुछबिंदु पड़गया कदंबपर इसवास्ते नागके जहर करिकै कदंब भस्म नहीं हुआ ॥ ४ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० षोडशेऽध्यायेषोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥ से ५ तक ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी उस कुंडको कालिय जानताथा तथा दूसरे सर्पों को क्यों नहीं कुंडमालूमथा यहशंकाहमलोगोंको

उवाच ॥ देवर्षिशिष्योनागेशः कालियस्तेनज्ञापितः। आपदर्थेह्रदस्तस्मान्नान्यैर्ज्ञातोबभूवह ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं नि० मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदश वेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कदानाचिन्तयद्धन्तो बधनेजगदीश्वरः। प्रलम्बाल्पस्यहिंसायां कथंचिंतान्वितोभवत् १ वाचक उवाच ॥ शेषेनकल्पितोमृत्युस्तस्यपूर्वेविरंचिना॥ कोमलंशेषहृदयं ज्ञात्वाचिन्तान्वितोभवत् २ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्याये अष्टादश वेणी १८ ॥ श्लोक १८ ॥

नित्यचैन नहीं लेनेदेती १ वाचक बोले कि कालियनाग नारद को चेलाथा इसवास्ते नारदने कालिय को कुंडबतायेथे कि तेरेको कभी आपत् काल पड़े गरुड़की तरफ से तौतू यमुना के कुंड में चलाजाना कुंड में गरुड़ को जोर नहीं चलैगा है श्रोताहो इसवास्ते अकेले कालिय को कुंड मालूम था और किसी सर्पोंको नहीं मालूमथा ॥ २ ॥ इति०भा० द०पू० शं० मं० सप्तदशेऽध्यायेसप्तदशवेणी ॥ १७ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये रावण आदिलेकै अनेक राक्षसों को भगवान् मारते भये किसी राक्षस के मारने वास्ते चिंता नहीं किये छोटेसेछोटा प्रलम्बनाम राक्षस तिसको मारने में क्यों चिंता करते भये यह बड़ी शंकाहोती है १ वाचक बोले प्रलम्ब को मृत्यु ब्रह्माने पेस्तर शेष करिकै कियेथे कि तू शेष के मारे मरैगा और किसीके मारे नहीं मरैगा तब ऐसा भगवान् जानिकै तथा शेषको हृदय कोमल जानिकै कि दया देखिकै

श्रोतार ऊचुः ॥ पालनम्बस्तमातॄणांमहिषीणांच निंदितम् । त्रिवर्णानांकथंचक्रे श्रीकृष्णोनंदनंदनः १ वाचक उवाच ॥ अजावत्सतरीगोनाम्माहिष्योवृद्धधेनवः। द्वयोश्चमध्यवर्त्तिन्यो गावःप्रोक्तामुनीश्वरैः। कृष्णेनपालितास्ताश्च नमहिष्योनचाप्यजाः २ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशवेणी १९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सर्वेचगुणिनस्संतिकामिनीभिश्च संयुताः । कामिनीभिश्चत्यक्तास्मतेश्रुतानोकदापिनः ।

शेष नहीं मारेंगे इसवास्ते भगवान् चिंता करते भये ॥ २ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी ॥१८॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये कि ब्राह्मण क्षत्री वैश्यको बकरीपालना तथा भैंसि पालना यह बहुत खराब काम शास्त्र में लिखा है फिरि श्रीकृष्ण बकरी तथा भैंसि को पालन क्यों करते भये १ वाचक बोले पण्डित जन बकरी को अजा कहते हैं परन्तु मुनियोंने अजाको ऐसा अर्थ किये हैं कि बालक जिस में नहोवे उस को नाम अजा है अजाकहे गौवों की बछी तथा महिषी कहेबूढ़ी२ गायबछीके बूढ़ी गाइयोंके बीचमें जो रहने वाली गायमाने ज्वानिगौ तिनकी गाय संज्ञा है श्रीकृष्ण भगवान् बछी तथा बूढ़ी ज्वानिगौकी पालन किये हैं बकरी तथा भैंसिको पालन नहीं किये ॥ २ ॥ इति भा० द०पू० शं० मं० एकोनविंशेऽध्यायेएकोनविंशवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी संसार में जो गुणी प्राणी हैं सो सब अपनी स्त्रियों के संग सुख दुःख गृहस्थी में भोगि

कथमुक्तन्नकुर्वन्तिस्थैर्य्यं गुणिपुयोषितः १ वाचक उवाच ॥ प्रोक्ताश्चात्रनकामिन्यः प्रमदाःशास्त्रपारगैः। संसारसुखतृष्णाया: प्रीतयोभूरिशःस्थिताः। ताःकामिन्योनकुर्वन्तिस्थैर्य्यंगुणिषुकर्हिचित् २ इति भा०द० पू० शं० मं०विंशेऽध्याये विंशवेणी॥२०॥श्लो०॥१७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नद्योरूपान्तरंप्राप्यरेमिरेस्वस्वना यके। जलरूपाश्श्रुतानैव सपिकाःकामविह्वलाः। गोपीभिश्चकथंप्रोक्तन्नद्यः कामातुराऽभवन् १ वाचक उवाच ॥ मनसायेभवन्त्यर्थास्तेसर्वेचमनोभवाः। नत्वे

रहे हैं परन्तु ऐसा किसी गुणी को नहीं सुना किउसकी स्त्री उसको त्यागि दिया होवे तो फिरि शुकदेव जी कहेथेकि जैसा गुणी प्राणीमें स्त्री बहुत देर टिकती नहीं तैसा आकाश में बिजली देरतक नहीं टिकती यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले (स्थैर्यन्नचक्रुः कामिन्यः)इस श्लोक में शास्त्र के जान ने वाले मुनियोंने कामिनीको स्त्री अर्थ नहींकिये ऐसा कामिनी को अर्थ किये हैं कि संसारके सुखकी तृष्णाकी बहुत प्रीति साई कामिनी है सो तृष्णाकी बहुत प्रीतिरूप कामिनी गुणी प्राणी में बहुत देरतक नहीं टिकती देरतक मूर्ख में टिकतीहै ऐसा अर्थ शुकदेवजी ने कियेथे२ इति भा० द० पू० शं० मं० विंशेऽध्याये विंशवेणी २०॥ श्लोक ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये कि ऐसा शास्त्र में हम सबोंने सुना है कि नदी दूसरा रूप धारण करिकै अपने अपने पतिके संग क्रीड़ा करतीःथीं जैसा श्री गंगाजी नर्मदा आदि क्रीड़ा करिकै फिरि जलरूप होजाती थीं परन्तु ऐसा कभीभी नहीं सुना कि कोईभी नदी जलरूप धारण करि कै कामदेव करिकै

कः कामदेवश्चकथितोवैमनोभवः । अतस्ताः कृष्णप्रेम्ना
च्वभूवुरतिविह्वलाः २ इ० भा० द० पू० शं० मं० एक
विंशेऽध्याये एकविंशवेणी ॥ २१ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जह्रारवसनन्तासां कथंकृष्णोजग
त्पतिः । तथादधारस्वस्कंधे तच्छिद्रष्टुन्निरीक्षणम् १
तासांचक्रेमहान्यायं नग्नानांगतिमुत्तमाम् । कर्मभि
स्त्रिभिरेतैश्चकिन्नप्राप्स्यंतिताविना २ वाचक उवाच॥
ताभिस्संपूजितादेवी चक्रेचिन्तांस्वमानसे । कथंचेमाः
प्रदास्यन्तिगोपाःकृष्णायसर्वशः ३ भविष्यतिनचेदा

विह्वल होगई तौ फिरि गोपियों ने क्यों कही कि कृष्ण की
प्रीति से नदीभी काम से विह्वलहोगई यह बड़ी शंका है१
वाचक बोले अकेले कामदेवको मनोभव नाम नहीं है मन
करिकै जितने अर्थ उत्पन्न होवैं तिन सबको मनोभव नाम
है नदियों के मन में कृष्ण को प्रेम उत्पन्नभया सोई मनो-
भवहै उस प्रेमरूप मनोभव करिकै विह्वल होगई २ इति
भा० द० पू० शं० मं० एकविंशेऽध्याये एकविंश वेणी २१ ॥
श्लोक ॥ १५ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जगत् के पति ऐसा कर्म क्यों
करते भये कि गोपकी लड़कियों को वस्त्र हरिलिये तथा
लड़कियों को धारण किया मल मूत्र लगा ऐसा जोवस्त्र उस
वस्त्रको अपने कंधेपर रखिलिये तथा नग्न लड़कियोंको देखते
भये बड़ापातिलभीहोगा सोभीऐसा खोटाकर्म नहींकरैगाहर३
१ क्या इस तीन कर्म को भगवान् न करते तौ वो सब गोप
की लड़िकी वैकुण्ठको न जातीं गुरुजी यह बड़ी शंकाहै श्लोक
दोको अर्थ मिला है युग्महै २ वाचक बोले गोपकी कन्या ने

स्मत्पतिःकृष्णस्तदामम । भूमौनैवकरिष्यंति पूजनं कर्हिचिन्नराः ४ एवंविचार्यसावस्त्रन्तासांहृत्यस्वयंस्थिता । भूत्वावस्त्रमयीदेवी यादृशन्तादृशन्तथा ५ लज्जापनयनार्थाय सर्वमेतत्तयाकृतम् । ताभिर्ज्ञातंचनत्वेतत् क्रीडन्त्यस्तानदीजले ६ तासांरूपंचसन्धृत्य कृष्णान्तिकमुपागताः । वरेदत्तेस्मानाथे मोहिताश्चा पिताययुः ७ ताभिर्ज्ञातमिदंसर्व मस्माभिःकृतमेवतत् । लब्ध्वावरमगुस्सर्वाः कृष्णात्प्राप्तमनोरथाः ८ ज्ञात्वैतदपिसंचक्रेकृष्णोमायामुपागतः । अतोनदोषोहरणेवस्त्र

श्रीकृष्ण को अपना अपना पति होने वास्ते देवी को पूजन करती भई तब तिन लड़कियों करिकै पूजित जो देवी सो अपने मन में चिन्ता करती भई कि गोप लोग इन सब लड़िकियों को बिवाह कृष्ण के संग कैसा करैंगे क्योंकि एक पुरुषकेसंग१ लड़िकीको बिवाह होताहै बहुतको नहींहोसक्ता३ जब इनसब लड़िकियोंके पति कृष्णनहीं होवैंगे तबकभी भी मानुष्य पृथ्वीमें मेरापूजन नहीं करैंगे कहैंगे कि देवीको पूजन झूठा है ४ देवी ऐसा बिचारि कै तिन लड़िकियों के वस्त्र को हरि कै जैसा जिस लडकी का वस्त्र था तैसा वस्त्र होके जहां वस्त्र धरा रहा उसी स्थान पर बैठिगई वस्त्र होकै ५ लडिकियों की लज्जा कृष्णसे त्याग करने वास्ते देवी यह सब काम किया एक दफे स्त्री पुरुष सरीके गोपों की लड़िकी कृष्णसे लज्जा त्यागिदेवैंगी तो चाहै पिता ब्याह कृष्णके संग करै चाहैनकरै ये तो कृष्ण की स्त्री हो जावैंगी तथा संसार में हमारे पूजन की महिमा नहीं घटैगी और लडिकी जल में हास्य तमाशा आपुसमें करि रही थीं यह देवी को किया कर्म लडिकियोंको

स्वस्कंधधारणे । निरीक्षणेचनग्नानां यतोमायापति र्हरिः ६ इति भा० द० पू० शं० मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० १६ से २० तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णेनोक्ताद्विजवधूनस्नेहायकदापिच । देहसंगोनराणांवै ताश्चापिरतिकामुकाः । किमु कृष्णान्तिकम्प्राप्ता भ्रमोयंहृदयेचनः १ वाचक उवाच ॥

नहीं मालूम परा ६ सब लडिकियों को रूप देवी धरि कै कृष्णके सामने गई भगवान् वरदान दिहे तब मायाने सब लडिकियों को मोहि लिया तो मोह को प्राप्त जो सब लडिकी सो अपना २ वस्त्र पहिरकै अपने २ घरको चली गईं वस्त्र को रूप तथा लडिकी को रूप देवी भी काम करिकै छोडि दिया ७ जो जो वस्त्र हरण आदि कर्म भया सो सब काम को वो सब लडिकी जानी कि हम सब किया वरदान लेके भगवान् से मनोरथ को सिद्धि करिकै अपने अपने घर को गईं ८ देवी के चरित्रको कृष्ण भी जानिकै यह सब काम किया है हे श्रोता हो इसी वास्ते माया रूप जो वस्त्र तिस के हरण में तथा वस्त्र को कन्धा के राखने में नग्न लडिकियों के देखने में कुछ दोष नहीं क्योंकि वस्त्र तथा लडिकी सब देवी थीं और देवी को पति भगवान् है इस वास्ते यह सब काम भगवान् किये हैं खुद गोपों की लडिकियों को नहीं किये ६ इति भा०द० पू०शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंशवेणी २२ ॥ श्लोक ॥ १६ ॥ से २० ॥ तक ॥

श्रोता पूछते भये कृष्णने मथुरा के ब्राह्मणों की स्त्रियों से कहे कि हे ब्राह्मणी लोगो हमारा दर्शन करि लिया अब अपने २ घरको जावो क्योंकि स्त्री पुरुष के अंग संग से स्नेह

वेदरूपस्स्वयंकृष्णस्तत्प्रीतयश्चतास्स्मृताः। तदंगच रणास्पर्शुमागताद्विजवल्लभाः। लोकाविर्हेतुनागुप्तं च कृ तासान्नतद्धरिः २ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो विंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चक्रेनान्यावतारेषु क्रोधमिंद्रायक र्हिचित्। तत्कथंकृतवान्कृष्णो येनतन्माननाशनम्। बभूवत्रिषुलोकेषु सर्वदासर्वजन्तुषु १ वाचक उवाच ॥ कभीभी नहीं होवैगा इस वचनसे मालूम परता है कि ब्राह्मणी भी कृष्णके संग रमण होने वास्ते कृष्णके सामने आई थीं क्या यह भ्रम हमारे सबके हृदय में बड़ा है १ वाचक बोले कृष्ण वेदके रूपहैं तथा वेदोंकी प्रीति सोई मथुराके ब्राह्मणों की स्त्री भई हैं वो सब वेदोंकी प्रीति ब्राह्मणी रूप होकै वेद रूप श्रीकृष्णके अंगतथा चरणोंको छूने वास्ते आई थीं भग वान् विचारे कि इनके संग वेद होकै हम इनको अपनी देह तथा चरण छूने देवैंगे तो संसार में हम गुप्त होकै आये हैं सो प्रगट होवैगा इसवास्ते तिन ब्राह्मणी को मनोरथ नहीं किये भगवान् हे श्रोताहो ऐसी अंग संगको कृष्ण ने कहेथे रमण होने को नहीं कहेथे २ इति भा० द० पू० शं० मं० त्रयो विंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी २३ ॥ श्लोक ॥ ३२ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी शास्त्रोंमें ऐसा हम सबने सुना है कि कभीभी भगवान् इन्द्रके ऊपर क्रोध नहीं किये चाहै बैकुंठ में रहेचाहे और अवतार धरिलिये रहैं तौभी फिरि श्रीकृष्ण भगवान् इन्द्र के ऊपर क्रोध क्यों किये जिसक्रोध करिके तीनलोक में जो चौरासी लाखयोनि तिसयोनियों में युग युग इन्द्रके अभिमान को नाश होगया है यह हमारे सबके मन में बड़ीशंका होती है १ वाचक बोले महिना १२

कदापीन्द्राज्ञयागोपान चक्रुश्चंडिकार्चनम्। यज्ञेवार्षिकसम्भूते कृष्णन्दृष्ट्वासतीचतम् २ मोहयित्वासहस्राक्षंविस्मृतस्तेनवैहरिः। कृत्वाक्रोधन्तदाकृष्णश्चक्रेतन्मानाशनम् ३ इति भा० द० पूर्वार्द्ध शं० मंजर्यां चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी २४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ इन्द्रेण प्रार्थितोविष्णुराजगाममहिंहरिः। विस्मृत्यतंकथंचक्रेइन्द्रः कृष्णस्यनिंदनम् १ वाचक उवाच ॥ कृष्णपत्नींसमाश्रित्य देवीमायाच

जिसदिन पूरण होवैं उसदिन सबगोप इन्द्रका यज्ञ करतेरहे हैं उसी यज्ञ में गोपलोग देवीको भी पूजन करने को विचार करैं तब इन्द्र मनाकरि देवैंकि देवीको पूजन तुम मतिकरो सबदेवतोंकोरूपहमकोजानो हमसे बड़ीदेवीनहींहै इसकारण से कभीभी गोपलोग देवीको पूजन नहीं किये जब श्रीकृष्ण भूमिमें विराजमान भये तब देवीके अनादर को देखिकै कृष्ण को भी बुरामालूम परा ऐसा श्रीकृष्णको अपनी तरफ देखिकै देवीने इन्द्रको २ मोहलेती भई मोहको प्राप्त जो इन्द्र सो पागल होकै ईश्वर को भूलिगया तब श्रीकृष्ण इंद्र के ऊपर क्रोध करिकै इन्द्र के अभिमान को नाश करिदिये हे श्रोता हो इसवास्ते कृष्ण जी इन्द्रके ऊपर क्रोधकरते भये ३ ॥ इ० भा० द० पू० शं० मं० चतुर्विंशेध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये इन्द्रकी बिनती से भगवान् पृथ्वीमें अवतार लिये हैं सोई इन्द्र कृष्ण की निंदा क्यों किया १ वाचक बोले भगवान् की प्रिया जो देवी तिसका अनादर अभिमानसे इन्द्र बहुतदिनोंसे करताथा उस अपना अनादर

नप्रिया। स्वापमानं परंस्मृत्य चिरं चेन्द्रेणसंकुलम् २ सुरेशंसोहयामासमोहितःपतितोभवत्। निनिन्दातो जगन्नाथम्वृष्टिंचक्रेदिसुरिसः ३ इति भा० द० पू० शं० सं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी २५॥श्लो० १से६तक॥

श्रोतारः ऊचुः॥ कृष्णकर्माण्यहंवेद पृथिव्यांकोपि नोजनाः इवाचेत्कथंगर्गस्तदन्येकिंनब्राह्मणाः १ वाचक उवाच॥ जातिवाद्विकथचनम्प्रोक्तंगर्गेणतद्वचः। नर्षी न्मुनीन्तिरस्कृत्य मोहमस्ताजनाश्चनो २ इति भा० द० पू० शं० सं० षड्विंशेऽध्याये षड्विंश वेणी २६॥ श्लोक॥ १९॥

इन्द्रने किया तिसको देवी यादि करिकै तथा श्रीकृष्णको पक्षकी पायके पेश्तर इन्द्रका उपद्रव देवी नहीं किया अना-दर सहिलेती भई अब श्रीकृष्ण को रुखपाय के २ देवी इन्द्र को मोहिलेती भई मोहको प्राप्त जो इन्द्र सो पागल होकै भगवान् को भूलिकै श्रीकृष्णकी निंदाकिया तथा व्रजके ऊपर वर्षाभी बहुत करता भया॥ ३॥ इ० भा० द० पू० शं० सं० पंचविंशेध्यायेपंचविंशवेणी॥ २५॥ श्लोक॥ १ से ६ तक॥

श्रोता पूछते भये नंद से गर्ग मुनि कहे कि श्रीकृष्णके कर्म को हम जानते हैं पृथिवी में और कोई भी नहीं जानते गुरु जी यह बड़ी शंका होती है कि गर्ग तो तपस्वी भये गर्ग से और जो मुनि ऋषि रहे थे सो सब ब्राह्मण नहीं थे गर्ग के वाक्यसे ऐसा मालूम परता है १ वाचक बोले सब मुनियों ऋषियों को अनादर करि कै गर्ग जी ऐसा वचन नहीं कहे गर्ग जी अहंपद को यह अर्थ किये थे कि हमारी जाति जितनी है संसार में मुनि ऋषि गृहस्थ किसान सब श्रीकृष्ण

श्रोतारः ऊचुः॥ शताश्वमेधयज्ञेन प्राप्तराज्यंशचीपतिम्। तिरस्कृत्यकथंचक्रे कृष्णंस्वेन्द्रंवृषप्रसूः १ वाचक उवाच॥ महावृष्टिंचकारेंद्रो गवांघातायगोकुले। कर्म्मणातेनतत्पुण्यं दशांशंनाशमापच २ विचार्य्यैवं चसुरभिर्दुष्टोसौस्वार्थसाधकः । गोघातादपिनोभीतः पुनश्चैवंकरिष्यति। अतस्स्वेंद्रंहरिंचक्रे नाधीनास्तस्य धेनवः २ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी २७॥ श्लोक॥ २३॥

के कर्मको जानते हैं परन्तु जो ब्राह्मणों से दूसरा मानुष्य है माया से ग्रसित होरहे हैं वोप्राणी कृष्ण के कर्म को नहीं जानते ऐसा अर्थकिये अपने अकेले वास्तेनहीं किये थे॥२॥ इति० भा० द० पू० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी॥२६॥ श्लोक॥ १६॥

श्रोता पूछते भये सौ १०१ अश्वमेध यज्ञ करिकै राज को प्राप्त जो इन्द्र तिसका अनादर करिकै सुरभी गौजो है सो अपना इन्द्र श्रीकृष्ण को क्यों करती भई क्योंकि गुरु जी तीनलोक में एक इन्द्र सिवाय दूसरा इन्द्र हम सब ने सुनाभी नहीं यह बात सुनिकै बड़ी शंकाभई है १ वाचक बोले इन्द्रने गौवों को नाश करने वास्ते गोकुल में बड़ीवर्षा किया गौवोंको मारना बिचारा दुष्टने उसी कर्म करिकै इन्द्र का दशवां अंश पुण्य नाशभई २ इन्द्र की दशवां अंश पुण्यको नाशसुरभी बिचारिकै अपना इन्द्र भगवान्‌को करती भई सुरभी विचार कियाकि इन्द्र ऐसा चंडाल है अपने काज के वास्ते धर्म अधर्म नहीं देखता गोघात सेभी नहीं डरता भया तौदूसरे पाप को क्या डरैगा अबकी तो कृष्ण रक्षाकिये

श्रोतारः ऊचुः॥ कथंसनन्दश्चर्च्यहरिंव्रजेश्वरः स्नानं बिनावैगतवान्नदीतटम् । समर्च्चनम्प्राणपतेर्जगत्पते स्योग्यमस्नानकृतेनप्राणिना १ वाचक उवाच ॥ मनसापूजनंकार्य्यं वासुदेवस्यसज्जनैः। व्रजेश्वरश्चतत्कृत्वा स्नातुंपश्चाद्गतोहिसः २ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥ श्लोक॥१॥

श्रोतार ऊचुः॥ कथंययाच्चिरेगोप्यो मोक्षरूपाऽध राऽमृतम् । कामाग्निशमनार्थाय भगवन्तान्निरंजनम्। प्रकृताश्चयथानार्य्यो नरंकामविमोहिताः १ वाचक एदुष्ट ऐसा कर्म फिरि कभी करैगा तौ हमारे बालबच्चे मारे जावैंगे इसवास्ते भगवान् को अपना इन्द्र करती भई॥ २॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशेवेणी२७॥ श्लोक॥ २३॥

श्रोता पूंछते भये भागवतमें लिखाहै कि नंदजीएकादशी को व्रत करिकै घड़ी४ राति पीछलीरही तब भगवान्को पूजन करिकै यमुना में स्नान करने गये इस में यह शंका होती है कि विना स्नान किये भगवान्को पूजन कैसा करते भयेक्यों कि जो प्राणी स्नान नहीं करते वो प्राणी भगवान्को पूजन करैगा तौ बड़ी खोटी बात है १ वाचक बोले सज्जन पुरुष भगवान् को मानसिक पूजन करते हैं तथा मानसिक पूजन से भगवान् प्रसन्नभी होतेहैं इसवास्ते नंदजी मानसिक पूजन भगवान् को करिकै पीछे से स्नान कर ने को गये थे २ इति भा०द०पू०शं० मं०अष्टविंशेऽध्यायेअष्टविंशवेणी२८श्लो०॥१॥

श्रोता पूछते भये जैसे कामदेव करिकै दुःखी मानुष्योंकी स्त्री मानुष्यों की विनती करतीहैं ओष्ठ चुंबन करनेवास्ते तैसे

उवाच ॥ विचारितंचगोपीभिर्विद्याहीनावयंसदा। कथं कृष्णंस्तुमस्स्तोत्रैरितिविह्वलमानसाः २ नश्श्रुतंशारदावासः श्रीकृष्णाधरमंडले। चेदस्माकमवेदोष्ठेतस्योष्ठस्पर्शनंशुभम् ३ प्राप्तविद्याभविष्यामश्शारदाकृपयावयम्। तदास्तोत्रैश्चविविधैस्स्तोष्यामोजगतास्पतिम्। अतोयथाचिरेगोप्यश्श्रीकृष्णाधरचुम्बनम्४ इति भा० दश० पूर्वार्द्धे शं० मं० एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी २९ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

गोपी तौ मोक्ष को रूपथीं परन्तु कामकी शान्ति होने वास्ते पूर्णब्रह्म सरीके जो कृष्ण तिन से ओष्ठ चुंबन करने वास्ते याचना क्यों करती भई यह बड़ी शंका होतीहै ब्रह्मरूप कृष्ण मोक्षरूप गोपिका मनुष्य की स्त्री सरीके कर्म करतीभई हर३ १ वाचक बोले गोपियाँ विचार करती भई किहम सब कुछ भी पढ़ीनहीं श्रीकृष्ण को जैसा विद्वान् लोग स्तोत्रों करिके स्तुति करतेहैं तैसा हमभी किया चाहतीहैं परन्तु बिना विद्या कैसा स्तोत्र करिके स्तुति करैंगी २ परन्तु हम ऐसा सुना है कि श्रीकृष्ण के ओष्ठ में सरस्वती को वास है जो हमार सब के ओष्ठ में कृष्णको ओष्ठ छुइजावै ३ तब हम सबको विद्या प्राप्त होजावैंगी तब अनेक प्रकार के स्तोत्रों करिके भगवान् की स्तुति हम सब भी विद्वानों के सरीके करैंगी हे श्रोताहो इसवास्ते गोपियोंने कृष्णके ओष्ठको चुंबन करनेवस्ते याचना करती भईं कामकी वशि होकै नहीं याचना किईथी ४ इति भा० दशम० पू० शं०नि० मंजर्यां एकोनत्रिंशेऽध्याये एकोनत्रिंशवेणी २९ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ तरवश्चकथन्नोचुः कृष्णस्मार्गं गतन्तदा। गोपीपृष्टामहाश्चर्य्य मिदन्नोभातिमानसे १ वाचक उवाच ॥ कृष्णप्रेम्नायथोन्मत्ता बभूवुर्व्रजयोषितः। तरवश्चापितद्ध्यान मग्नास्स्युर्नस्मरन्तिच। परंस्वात्मानमथवानोतरम्प्रदद्रुहुर्यतः२इतिभा०द०पू० शं० मं० त्रिंशोऽध्याये त्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लो० ५ से ६ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रमदानांकरस्पर्शे पुरुषस्यमहासुखम्। स्तनयोर्भवतिसर्वासां नतुतच्चरणाश्रयात् १ कथंयाचिरेगोप्यः कृष्णपादार्पणन्तदा। प्रेमातुरश्चेन्मन्तव्यातद्दर्यन्यांगंनतस्यकिम् २ वाचक उवाच ॥

श्रोता पूछतभये कि वृक्षों से गोपियों ने श्रीकृष्णचंद्र को पूछाथा और वृक्ष जानते थे कि इसी रस्ताले श्रीकृष्ण गयेहैं फिरि वृक्ष गोपियों से क्यों नहीं बोलते भये कि कृष्णको हम सबने देखे तथा नहीं देखे चुप क्योंहोगये यह बड़ी शंकाहै१ वाचक बोले जैसा कृष्ण के प्रेमकरिकै गोपी उन्मत्त होरही हैं कृष्ण सिवाय दूसरीचीज नहीं देखतीं तैसे कृष्णके ध्यान करिकै वृक्षभी मस्त होरहे हैं वृक्षोंकोतो अपनी देहको तथा दूसरी बात को स्मरण नहीं है भगवान् में मनलगाय रहे हैं इसवास्ते उत्तर नहीं दिये॥ २ ॥ इति० भा० द० पू० शं० मं०त्रिंशाऽध्यायेत्रिंशवेणी ॥ ३० ॥ श्लोक ॥५॥ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये स्त्रियों के स्तनको पुरुष हस्तसे स्पर्श करता है तौस्त्रीको सुख होता है कुछ पुरुषके चरणके स्पर्शसे सुख नहीं होता १ तब गोपियोंने कृष्ण को चरण अपने स्तनपर स्पर्श होनेको क्यों याचना करती भई कि महाराज आपका

कालियन्द्दमितंश्रुत्वा कृष्णपादार्पणेनच । विचार्य्य हृदयेगोप्यो निजेचेत्तत्पदार्पणम् ३ अस्माकंस्तनयो दैवाद्भविष्यतिविनाशनम् । कामस्यतद्विनिर्मुक्तानिर्द्वंद्वा भवसागरात् ४ वयंभजेमश्रीकृष्णमतस्तच्चरणार्प्पणम् । अयाचिषुस्तदागोप्यस्साक्षात्ताश्श्रुतिमानिकाः ५ इति भा० द० पू० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्याये एकत्रिंशवेणी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मित्रोपिभगवान्कृष्णो यासान्ता चरण हमारे सबके स्तनोंपर अर्पण करो जो कोई कहै कि गोपी प्रेमसे आतुर थीं उनको पगकी तथा हस्तकी यादि भूलिगई थी इसवास्ते चरणकी याचना किईथी तौ फिरि कृष्ण के दूसरे अंगकी याचना क्यों नहीं करती भई अकेला चरण क्यों सबदेह भरेकी याचना करलेतीं यह बड़ीशंका है २ वाचक बोले गोपियाँ सुनती भई तथा देखतीभी भई कि श्रीकृष्णके चरणों के स्पर्श करिकै कालिय नागकोजहर नष्ट होगया कालियनाग निर्विष होगया इसीसे जो हमारेसब के स्तनपर कृष्णके चरणों को स्पर्श होजावे तौ ३ हमारे सबके कामदेव को नाश होजावैगा क्योंकि कालियके जहरसे काम बड़ानहींहै काम को नाश भयेपर सब संसारके बाधासे छूटि जावैंगेदो श्लोक को अर्थ मिलाहै युग्महै४कामको नाश भये परहम सबभी श्रीकृष्णको भजन करैंगी हेश्रोताहो इसवास्ते गोपियोंने श्रीकृष्णके चरण को अपने स्तनपर स्पर्श होने को याचना करती भई क्योंकि गोपीभी वेदोंकी ऋचाहैं ॥५॥ इ० भा०द०पू० शं०मं०एकत्रिंशेध्यायेएकत्रिंशवेणी ॥३१॥श्लो०७॥

श्रोता पूछते भये जिन्ह गोपियों के मित्र श्रीकृष्णसो सब

श्चासनंकथं । ददुस्तस्मैस्वभुक्तैश्चवस्त्रैगोंप्योनदुर्गताः १ वाचक उवाच ॥ स्वकार्योन्मत्तचित्तानान्नास्तिज्ञानं शुभाशुभे । प्रेमोन्मत्तास्तथागोप्यश्श्रीकृष्णपदयोस्त दा । ताभिर्ज्ञातमतोनैव मशुद्धंवाशुमन्त्विदम् २ इति भा० द पू० शं० मं० द्वात्रिंशेऽध्याये द्वात्रिंशवेणी ॥ ३२ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ गोपीकृष्णकरौगृह्यस्तनयोस्संद धौकथम् । प्राकृतायाश्चतत्कर्म्मनार्य्यैवेदमिदंकृतम् १ वाचक उवाच ॥ प्रह्लादध्रुवयोर्मूर्ध्निकृष्णाहस्तमिदंशु भम् । अनेनविधृतम्पूर्वमतोहंस्तनयोर्दधे । आभ्यां गोपीअपना पहिरा जोवस्त्र तिस वस्त्रकरिकै भगवान्को बैठने वास्ते आसन क्यों देती भई क्यागोपी दरिद्रथी नयावस्त्र संगायके भगवान्को आसन क्यों नहीं दिये वड़ीशंका होती है गुरुजी १ वाचक बोले जो प्राणी अपने काजमें उन्मत्त होजाताहै उसको नहीं मालूम परता कि यह खराब कामहै यह अच्छा काम है इसी प्रकार से कृष्ण के चरणों में गोपी उन्मत्त होरही हैं उनको नहीं मालूम पराकि यह वस्त्र हमारा पहिरा है कि नहीं पहिरा है हे श्रोताहो इसवास्ते भगवान्को गोपियोंने अपने पहिरे वस्त्र करिकै आसन देती भई ॥ २ ॥ इति भा० द० पू० शं० मं० द्वात्रिंशेऽध्यायेद्वात्रिंशवेणी ॥ ३२॥ श्लो० १३ ॥

श्रोता पूंछले भये गोपी श्रीकृष्ण को हाथ अपने हाथ से पकड़िकै अपने स्तनपर क्यों रखती भई जैसा मानुष्यकी स्त्री कर्म्म करतीहैं तैसा कर्म क्यों करती भई १ वाचक बोले गोपी विचार किया कि येई श्रीकृष्ण इसी अपने हस्तोंको प्रह्लाद

मुक्ताभविष्यामि तदाकामोनमान्दहेत् । एवंज्ञात्वा दधौहस्तं कृष्णस्यस्तनयोश्चसा २ इति भा० द० पू० शं०मं०त्रयस्त्रिंशेऽध्यायेत्रयस्त्रिंशवेणी॥३३॥श्लो० १४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दंशन्तिप्राणिनस्सर्पाः क्षुधाशान्त्यैननश्श्रुतम् । स्वभावस्सस्तुतेषांवै कथन्नंदंबुभुक्षितः १ वाचक उवाच ॥ स्वमुक्तिसमयंवीक्ष्य कृष्णस्पर्शात्कुयोनितः । साक्षुधाचतयार्त्तोहिनन्दंजग्राहवेगतः २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुस्त्रिंशेऽध्याये चतुस्त्रिंशवेणी ॥ ३४॥ श्लो० ५ ॥

के तथा ध्रुव के मस्तकपर धरेथे तब प्रह्लाद तथा ध्रुव संसार के दुःख से छूटिकै भगवान् को भजन करने लगे इसवास्ते मैं भी अपने स्तनपर भगवान् को हस्त धरिकै इन दोनों हस्तों के प्रताप करिकै संसार के दुःख से छूटिकै भगवान्को भजन करोंगी कामदेव मेरेको नहीं दुःख देवैगा पुरुषकी ममता शिर-पर बहुत रहती है स्त्रीकी ममता स्तनपर रहतीहै ऐसा गोपी विचारिकै अपने स्तनपर कृष्णको हस्त धराथा कामसे दुःखी होके नहीं रक्खाथा २ इ० भा० द० पू०शं०मं०त्रयस्त्रिंशेऽध्याये त्रयस्त्रिंशवेणी ३३ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोता पूंछते भये सब प्राणियों को सर्प काटते हैं परन्तु सर्प अपनी भूखकी शान्ति होनेवास्ते नहीं काटते कि प्राणि को दंशिकै क्षुधाजावै सर्पोंको तोस्वभावहै प्राणियोंको घटका भरना फिरि भागवत में लिखाहै किभूखा सर्प नंदको दंशता भया हेगुरुजी यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचकबोले सर्प पेश्तर को देवताथा जब इसको मुनिजी शाप दियेथे तब इससे कहेथे कि श्रीकृष्णको हाथ तेरी देहमें छुइ जायगा तब तूसर्पयोनि

श्रोतार ऊचुः ॥ गोप्योदिनानिदुःखेन व्यतीयुः कृष्णवर्जिताः। किंरात्रौमिलितास्तेन तिष्ठन्त्येकत्रगोपिकाः १ वाचक उवाच ॥ शब्दज्ञैर्वासरोह्यत्रदिवसोनैवगृह्यते। वासम्प्रमाणंयोराति वासरस्सोनिगद्यते २ निमिषोवासरोह्यत्र ज्ञातव्यश्शब्दपारगैः। व्यतीयुस्तानिदुःखेन श्रीकृष्णरहिताश्चताः ३ इति भा० द०पू० शं० मं०पंचत्रिंशेऽध्यायेपंचत्रिंशवेणी॥३५॥श्लो०॥१॥

से छूटैगा सो सर्पने समय देखा कि आज योगहै कृष्णके हाथ मेरी देहमें छूनेको ऐसी निश्चय सोई भूख भईहै उसीसे दुःखी होके सर्प नंद बाबा को काटता भया २ इति भा० द० पू० शं० मं० चतुस्त्रिंशेऽध्याये चतुस्त्रिंशवेणी ३४ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोता पूछते भये कि शुकजी परीक्षितसे कहेथे कि हे राजन् कृष्ण दिनको गौ चराने को जातेथे तब कृष्ण करिकै रहित जो गोपी सो सब बहुत दुःखसे दिनको बितातीथीं हे गुरुजी ऐसे वाक्य से मालूम परता है कि सबगोपी व्रजकी रात्रि में कृष्णके पास सभा बनायकै रहतीथीं प्रभातभया जब कृष्ण बनको गये तब सब दुःखी होगईं यह बड़ी शंकाहै १ वाचक बोले व्याकरणके पढ़नेवाले विद्वान्‌जोहैंसो(निन्युर्दुःखेन वासरान्)इस श्लोक में वासरको अर्थ दिन नहीं करैंगे वास सब वस्तुके प्रमाणको नाम हैउसी वासको जो ग्रहणकरै तिसको नाम वासर है २ व्याकरण पढ़नेवाले विद्वान् वासर को अर्थ निमिष किये हैं इसी निमिष को गोपी बड़े दुःख से बितातीं भईं आंखों के पड़ने उघरने को निमिष नाम है ३ इति भा०द० पू० शं० मं० पंचत्रिंशेऽध्यायेपंचत्रिंशवेणी ॥३५॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ धेनूनाम्मानवीनांचवृषभासुरश
ब्दतः । पतंत्यकालेगर्भा नित्यंगर्जतिसःखलः १
तदासृष्टेर्द्वयोर्नाशः कथन्नाभूद्द्विजोत्तम । नैतादृशंश्रुतं
कर्म चान्येषांराक्षसांखलः २ वाचक उवाच ॥ ईश्व
रेणसमाज्ञप्तौ सुवीर्य्यसुरपालकौ । सुरौतत्कंठरोधा
र्थंमतोद्वैत्योमहाबली । शब्दंकर्तुंनशक्तस्तत्राभवन्म
रणोदिने ३ इति भा० द० पू० शं० मं० षट्त्रिंशोऽध्याये
षट्त्रिंशवेणी ॥ ३६ ॥ श्लो० ३ से ४ तक ॥

श्रोता पूछते भये वृषभासुरके शब्द करिकै गौवोंको तथा
मानुष्यों की स्त्रियों को गर्भ उदरसे पड़िजाता था ऐसा भाग-
वत में लिखा है तबतो दुष्टतो नित्य शब्द करतारहा होगा १
तब गौवोंको तथा मानुष्योंको इन्हदोनोंकी सृष्टिको नाश क्यों
नहीं भया इन्हदोनों को वंशनष्ट होना चाहता था सो क्यों
नहींभया यह बड़ी शंका है हर २ तथा ऐसा कर्म किसी राक्ष
सोंको हमलोग नहीं सुना २ वाचक बोले वृषभासुरके शब्द
के प्रभाव को जानिकै भगवान् सुवीर्य तथा सुरपालक इन्ह
दोनों देवतों को आज्ञा दियाकि जो दुष्टशब्द करनेलागे तो
तुमदोनों उसके गलाको रोकिलेवो ऐसी भगवान् की आज्ञा
पायकै वृषभासुरके आसपास रहने लगे जब वृषभासुर गर्ज
ने को विचार करै तब ये दोनों देवता उसके कंठको रोकिलेवैं
इसी प्रकार सब उमरि बीतिगई वृषभासुर शब्द करने नहीं
पाया जिस दिन मरण होने को प्रमाणथा उसदिन शब्द
करिकै भगवान्के हस्त से मारिगया इसवास्ते नित्य शब्द
करने नहीं पाया ३ इति भा० द० पू० शं० मं० षट्त्रिंशेऽध्याये
षट्त्रिंशवेणी ३६ ॥ श्लोक ॥ ३ से ४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः॥ वधोपायान्यनेकानि सन्तिशास्त्रेमुनीश्वर। तानित्यक्त्वाकथंचक्रे हरिर्बाहुप्रवेशनम् १ वाचक उवाच॥ पूर्वन्दत्तवरोदैत्योब्रह्मणातेकदापिन। मरणंममसृष्टिभ्योभविष्यत्यसुरोत्तम २ देहान्तर्भगवद्बाहोःप्रवेशान्मरणन्तव। अतस्तद्धास्येकृष्णेनकृतं बाहुप्रवेशनम् ३ इति भा० द०पू० शं० मं० सप्तत्रिंशेऽध्याये सप्तत्रिंशवेणी॥ ३७॥ श्लो०॥ ६॥

श्रोतार ऊचुः॥ शूद्राणान्निदितम्ब्रह्मकीर्तनंवेदभाषितम्। अक्रूरेणकथंप्रोक्तंशूद्रस्यविषयात्मनः। दुर्लभं कीर्तनंतस्यकिंतद्धीनेश्वसौलभम् १ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये बैरीको मारने वास्ते अनेक उपाय शास्त्र में तथा लोक में जाहिरहैं परन्तु केशी को मारने वास्ते सब उपाय त्यागिकै श्रीकृष्ण अपनी भुजा केशी के पेट में क्यों प्रवेश करते भये वाचक बोले केशी को ब्रह्माने बरदान दिये थे कि हमारे हाथकी बनाई सृष्टि करिकै तेरीमृत्यु नहीं होवेगी २ जब श्रीकृष्ण अपनी बाहुतेरे पेटमें प्रवेश करैंगे तब तेरी मृत्यु होवैगी इसवास्ते केशीके मुख में भगवान् अपनी भुजा को प्रवेश करते भये॥ ३॥ इति भा० द० पू० शं० मं० सप्तत्रिंशेऽध्यायेसप्तत्रिंशवेणी॥ ३७॥ श्लोक॥ ६॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी वेदको कीर्तन श्रवण पठन येसब शूद्रको नहीं करना चाहिये चाहे विरक्तहोवे चाहै गृहस्थहोवै तो फिरि अक्रूर क्यों कहेथे कि विषय में रमित शूद्र तिसको वेदको कीर्तन आदिवड़ो दुर्लभ है इस वाक्य से मालूम परता है कि गृहस्थ शूद्र के वेद को कीर्तन आदि दुर्लभ है तथा विरक्त शूद्र को दुर्लभ नहीं है पुण्य है यह

शूद्रजन्मेतिशब्दस्य नार्थोज्ञेयःकदापिच । शूद्रस्यार्थ स्सशब्दज्ञैः शूद्रेजन्मयस्यवै २ सशूद्रजन्माविज्ञेय स्तथापिविषयातुरः । द्वाभ्यांकुलक्षणां याभ्यांदुर्लभंतेन तत्सदा ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशोऽ ध्यायेअष्टत्रिंशवेणी ॥ ३८ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सत्योक्तेकंसवाक्येच स्वामिद्रोहा घपद्धतिम् । ब्रह्मन्प्राप्नोतिचाक्रूरः कपटेकृष्णपात कम् । किमुवाचतदाक्रूरः पृष्टःकृष्णेनवैव्रजे १ वाचक

श्रम है १ वाचक बोले शूद्रजन्मा इस शब्दका शूद्र अर्थकभी भी नहीं जानना चाहिये शूद्रजन्मा इसको यह अर्थ है कि शूद्र सरीकेजिसको जन्म होवै तिसको शूद्रजन्माजानना चा- हिये २ जन्मतो भया ब्राह्मण क्षत्री वैश्य के कुलमें परन्तु भ्रष्ट सरीके आचरण करै सज्जन प्राणी जानिलीजो यह अर्थ को मैं गुप्त लिखाहूं एक भ्रष्टदूसरे विषय से इनदोनों खराब ल- क्षणों करिकै संयुक्त जो ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य तिसको वेदको कीर्तन आदि दुर्लभहै ऐसाअक्रूरकहेथेशूद्रको नहींकहेथे ॥३॥ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टत्रिंशोऽध्यायेअष्टत्रिंश वेणी ३८ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण ब्रजमें अक्रूरसे पूछे कि आप किस काम के वास्ते बृजको आये हो तब अक्रूर कृष्णसे क्या कहते भये जो कंसका वचन कृष्ण से कहैं कि आपको तथा बलदेव को मारने वास्ते यज्ञ देखने के मिससे कंसने बुलाया ऐसा कहैं तब मालिकके विश्वासघातको पाप अक्रूर को लगैगा क्योंकि यह बात गुप्त करिकै कंस अक्रूर से विश्वास जानिकै कहाथा कि अक्रूर किसीसे नहीं कहैंगे तथा

उवाच ॥ पृष्टःकृष्णेनचाक्रूरः संकटम्प्रापवैतदा। दारुण्युभयतोदुःखं ज्वलितेऽन्तःकरोयथा २ ध्यानमग्नो बभूवाथ ध्यानेकृष्णेनप्रेरितः । कपटम्भोजराजस्य माविःकुरुनदोषभाक् ३ मत्तस्त्रासंत्यजत्वम्वै सर्वज्ञोहं नलौकिकः। अतोवदत्कंसवाक्यं मक्रूरःकपटावृतम् ४ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनचत्वारिंशेऽध्याये एकोनचत्वारिंशवेणी ॥ ३९ ॥ श्लो० ॥ ९ ॥

जो कंस सरीके कपट करिकै कहैं किमहाराज आपको मामा है कंस राजा भी है सो यज्ञको तमाशा देखने को बुलायाहै तब भगवान्‌की तरफ से कपटको पाप भोगेंगे १ वाचक बोले जब श्रीकृष्ण अक्रूर को पूछे कि आपुका आना वृज में किस वास्ते हुआहै तब अक्रूर बड़े दुःखको प्राप्त भये कैसा दुःखी भये जैसा एक लकड़ी दोनों तरफसे जलती होवै उस लकड़ी को कोई आदमी हाथ से पकड़ि लेवै दोनों तरफ से जलने को योगलगा लकड़ी छोड़े तो हाथ जलनेसे बचैगा तैसा अक्रूर होगये कंसको पक्षकरैं तोभगवान् के द्रोही होवैं भगवान् को पक्षकरैं तो कंसके द्रोही होवैं तब प्राण त्यागनेको विचार करते भये २ अक्रूरने कृष्णको ध्यान किये उस ध्यानमें कृष्ण अक्रूर को आज्ञा देते भये कि आपु दुःख क्यों सहतेहो भक्त के दुःख से हम दुःखी होते हैं कंसकी कपट को आपु मति प्रगटकरो हमारी तरफसे कपटको दोष आपुकोनहीं होवेगा३ भगवान् कहे हमारी तरफसे कपट की त्रास त्यागिदेवो क्यों कि हम सब संसार को कर्म जानते हैं आदमी सरीके हम नहीं हैं हेश्रोताहो ऐसी भगवान्‌की आज्ञा पायकै अक्रूर कंस के कपट वचन कृष्ण से कहे यज्ञ देखने को तुम दोनों जनों

श्रोतार ऊचुः ॥ यंसंन्यस्यगमिष्यंति योगिनोयो गतत्पराः । सोयंकृष्णःकिमितिवा शंकेयम्महतीचनः १ वाचक उवाच ॥ योगिभिश्चाप्यगम्यन्त यद्गच्छ न्तिमुमुक्षवः । स्वस्वमिष्टंवदंतिस्म सर्वेब्रह्मसनातनम्। अक्रूरेणाप्यतश्चोक्तः कृष्णोब्रह्मस्वरूपवान् २इति भा० द० पू० शं० मं० चत्वारिंशेऽध्याये चत्वारिंशवेणी ॥ ४० ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथमुच्छिष्टमन्यस्य समलानां दुरात्मनाम् । दधारभगवान्वस्त्रं त्रैलोक्यपतिरीश्वरः १ को कंसने बुलाया है ४ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोन चत्वारिंशेऽध्याये एकोनचत्वारिंशवेणी ३९ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी योग में चतुर बड़े ऐसे योगी जन सब संसारके सुखको त्यागिकै जिस ब्रह्म में मिलिजातेहैं सो कृष्णहै ऐसी शंका हमारे सब के मन में होती है १ वाचक बोले जिस ब्रह्मको मुमुक्षु जीव जातेहैं उस ब्रह्मको योगीभी नहीं जायसकते वह ब्रह्म बड़ा कठिनहै परन्तु संसारमें अपने अपने इष्टको ब्रह्म के स्वरूप सरीके बड़ाई करिकै सब प्राणी वर्णन करते हैं इस वास्ते अक्रूर भी कृष्णको ब्रह्मस्वरूप करिकै वर्णन करते भये २ इति भा० द० पू० शं० मं० चत्वा- रिंशेऽध्याये चत्वारिंशवेणी॥४० ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछतेभये तीन लोककेपति भगवान् दूसरे दुष्ट जीवों को उच्छिष्ट माने पहिरा हुआ कपड़ा आप क्यों पहिरते हुये यह बड़ी शंका होती है हर ३।१ वाचक बोले धर्म शास्त्र में यह लिखाहै कि मामा को पहिरा वस्त्र तथा कुमारि लड़िकी को पहिरावस्त्रतथा ब्रह्मचारीको पहिरा वस्त्रइनहवस्त्रों को कोई

वाचक उवाच॥मातुलानांकुमारीणां कन्यानांब्रह्मचारिणाम्। नोच्छिष्टधारणेदोषं धर्मशास्त्रमतन्त्विदम् २ कटेरधश्चनैतेषा मपिधार्यःकदाचन। मातुलस्यदधौ वस्त्रंज्ञात्वैवंचजगत्पतिः ३ इति भा० द० पू० शं० मं० एकचत्वारिंशेऽध्याये एकचत्वारिंश वेणी॥ ४१॥ श्लोक ३८ से ३९ तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ महदद्भुतमेतद्धि मथुरायाःकुलस्त्रियः। कृष्णदर्शनमोहोत्थस्मरक्षोभाद्विमोहिताः १ बभूवुर्नविदुस्ताश्च स्वा मानंवसनादिच। नायन्धर्मकुलस्त्रीणाम्पुंश्चलीनामिदंमतम् २ वाचक उवाच॥ गोवर्द्धनधरादीनि तादृशानिबहूनि च। व्रजे कृतानि

पहिरि लेवैगा तोपाप नहीं होवैगा२कमर के नीचे कोपहिरा वस्त्रतो मामा कन्या ब्रह्मचारी इन्ह कोभी कभी नहीं धारण करना दूसरे की क्याबात है श्रीकृष्ण अपने मामा को वस्त्र जानिकै उच्छिष्ट वस्त्र धारण करते भये॥ ३॥इति भा०द० पू० शं० मं० एक चत्वारिंशेऽध्यायेएकचत्वारिंशवेणी॥ ४१॥ श्लोक॥ ३८॥ से ३९ तक॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बात है कि मथुरा की स्त्रियाँ कृष्णको देखिकै कामदेव करिकै विह्वल होगई १ ऐसी विह्वल होजाती भई कि अपनी देहकी तथा कपड़ाकी शुधि भूलिगई हे गुरु जीपर पुरुष को देखिकै बिह्वल हो जाना यह गृहस्थकी स्त्रियोंको धर्मनहीं है यह धर्मतो व्यभिचारिणी स्त्रियोंका है यह बड़ीशंका होती है २ वाचक बोलें व्रजमें कृष्ण गोवर्धन को उठाये उस सरीके और अनेक कर्म

कृष्णेनकर्माणिसुबहूनिच ३ श्रुतानितानिताभिश्चत-
त्स्मरत्तोभविह्वलाः।अभूवुर्नतुकामेनकदाप्येवंचनोभवेत्
४ इति भा० द० पू० शं० मं० द्विचत्वारिंशेऽध्याये
द्विचत्वारिंशवेणी ॥ ४२ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दरिद्रोपिसभांयातिस्वशक्त्याशोभ
यान्वितः।जगत्स्वामीकथम्प्रागाद्रक्तबिंदुभिरंकितः।लोक
शास्त्रविरुद्धश्चरक्तलग्नतनुर्भवेत् १ वाचक उवाच ॥ भव
द्भिश्चैवसत्योक्तंरक्तलग्नतनुर्नरः । अशुचिः प्रोच्यते
लोकशास्त्रवेदेषुसर्वदा २ तथापिचैववीराणान्नदोषोऽ
स्तिकदापिच । शूरोभूत्वातदाप्राप्तः कृष्णः कंस
करते भये ३ उस सब कर्मको सुनिकै स्मरण करिकै त्रासमानि
कै बिह्वल होतीभई कामदेव करिकै बिह्वल नहीं भई
मथुराकीस्त्री ऐसीकभी नहीं परपुरुषको देखिकै कामसे बिह्वल
होवैंगी ॥ ४ ॥ इति भा० द० पू० शं०मं०द्विचत्वारिंशेऽध्याये
द्विचत्वारिंशवेणी ॥ ४२ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये हेगुरुजी दरिद्रभी राजाकी सभा को
जाता है तब अपनी सामर्थ्य माफिक कपड़ा आदि और गह
ना पहिरि कै जाता है और शास्त्र लोकमें बहुत निंदित कर्म
कहते हैं कि रक्तदेहमें लगायकै सभाको जाना सो श्रीकृष्ण
जगत् को नाथ होकै अपनी देहमें रक्तके बिंदुको लगायकै
सभाको क्योंगये यह बड़ीशंका होती है १ वाचक बोले हे
श्रोता हो तुम सब सत्य कहते हो जिसकी देह में रक्तलगा
रहता है उस मानुष्य को लोक शास्त्र वेदमें भ्रष्ट कहते हैं २
श्रीकृष्ण कंसको नाश करने वास्ते विचारिकै उन्मत्त प्रमत्त

टीप व्यासजी स्मरशब्दको अर्थस्मरण करनाकियेहैं कामदेवअर्थनहींकिये।।

विनाशनस्याविचिन्त्यप्रभवोन्मत्तोनसरन्नारशुभाशुभस्य ३
इतिभा० द० पू० शं० मं० त्रयश्चत्वारिंशेऽध्याये त्रय
श्चत्वारिंशवेणी ॥ ४३ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ पितरौबोधितौतेनकृष्णेनसूतिका
गृहे । तथापिश्रुतकर्माणौकृष्णचारित्रचारिधेः।कथमज्ञा
नसंयुक्तौपितरावासतुस्तदा १ वाचकउवाच ॥ कदापिअ
ज्ञानिनौनास्तांकृष्णस्यपितरौशुभौ।पुत्रमोहाकुलत्वेनमन
साऽऽकुलीकृतौ । पुत्रमोहाग्निनातप्तावासतुर्मूढवन्‌-
न्हिसः २ इतिभा० द० पू० शं० मं० चतुश्चत्वारिंशेऽ
ध्यायेचतुश्चत्वारिंशवेणी ॥ ४४॥श्लो० ॥ १८ ॥

होके खराब काम तथा सुंदरकामकी यादि भूलिके कंसकी
सभा कोगये तथा शूरबीरों को देहमें रक्तलगाय के सभामें
जाना दोषभी नहीं है इसवास्ते जगत्पति देहमें रक्तलगाय
सभामें गये हैं ॥ ३ ॥ इति भा० द० पू० शं०मं० त्रयश्चत्वा
रिंशेऽध्यायेत्रयश्चत्वारिंशवेणी ॥ ४३ ॥ श्लोक॥ १५॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी यह बडीशंका होती हैकि भग
वान् प्रगट भये तब उसी वखत वसुदेव देवकी को ज्ञानदेते
भये तथा वसुदेव देवकी श्रीकृष्णके समुद्र सरीके चरित के
कर्म को सुनेथेभी फिरि वसुदेव देवकी अज्ञानी क्यों होते भये१
वाचक बोले श्रीकृष्ण के माता पिता अज्ञानी नहीं भये पुत्र
के मोह से व्याकुल होगये पुत्रके मोह रूप अग्नि से भस्म
होरहे हैं इस वास्ते अज्ञानी सरीके होगये हैं क्योंकि संसार
में पुत्रको मोह बड़ा है २ इति, भा० द० पू० शं० मं० चतुश्च-
त्वारिंशेऽध्याये चतुश्चत्वारिंशवेणी ४४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः विभृयात्पितरंवृद्धमितिकृष्णेनभाषितम्। शास्त्रेष्ववस्थानियमोनकृतस्तस्यसेवने १ अनेन कृष्णवाक्येन पितुर्यूनश्चसेवनम्। नकुर्याद्वसमर्थोपि शंकेयंधर्षयतेमनः॥ २॥ वाचक उवाच॥ नैवावस्थाकृतो वृद्धस्तेनोक्तो ऽत्रपितातदा। पितैवसर्वधर्मेभ्यश्श्रेष्ठोमातातत:परम्। ज्ञात्वेत्थंचेतिकृष्णोवैधर्म्मशास्त्रमतन्त्विदम् ३ इतिभा० द० पू० शं० मं० पंचचत्वारिंशेऽध्यायेपंचचत्वारिंशवेणी ४५॥ श्लोक॥ ७॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णने कहे कि बूढ़ा पिताको सेवन करना चाहिये परन्तु शास्त्र में ऐसा नियम नहीं है कि वृद्ध पिताको सेवन करना और ज्वान पिताको सेवन नहीं करना १ कृष्णके वचन करिकै क्या मालूम परता है कि समर्थ भी होवै तोभी ज्वान पिताको सेवन नहीं करना समर्थ होवै तब वा असमर्थ होवै तब बूढ़ा पिताको सेवन करना ऐसा भगवान् के वचन से मालूम परता है यह शंका हमारे सबके मनको कंपायमान करती है २ वाचक बोले(मातरंपितरंवृद्धं)इसश्लोक में वृद्धको अर्थ बूढ़ापन को भगवान् नहीं किये कि वृद्ध बूढ़ाको नाम है वृद्धको अर्थ कृष्ण ऐसा कियेथे कि सर्व धर्म से पिता वृद्ध कहे श्रेष्ठहै तथा धर्म शास्त्रभी सब धर्म्मोंसे पिताको बड़ा कहते हैं पिता से माता बड़ी है ऐसा धर्मशास्त्र को मत जानिकै श्रीकृष्ण वृद्ध पिताको पूजन करने वास्ते कहेथे यह नहीं कहेथे कि बूढ़े पिताकी सेवन करना ज्वान पिताकी सेवन नहीं करना ३ इति भागवते द० पू० शं० मं० पंच चत्वारिंशेऽध्याये पंचचत्वारिंश वेणी॥४५॥ श्लोक॥ ७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ व्रजगोकुलयोर्भेदेयोजनेमथुरापुरी। नायाताश्चकथंगोप्योमथुरांभगवान्व्रजम् १ नजगामकथंक्रेतुंतक्रदीरदधीनिच। नवनीतान्यपिमथुरांनायातात्रजवल्लभाः २ परस्परंच मित्रार्थंगच्छंतिबहुयोजनम्। नराश्चैतत्कथंस्वामिन्नंतद्दोषोह्यभूत् ३ वाचक उवाच ॥ लोकापवादात्संभीतोमायाकृष्णोजगत्पतिः। मोहयामासतागोपीर्नायातांतास्समाकरोत्। मनः

श्रोता पूछते भये व्रज से गोकुलसे मथुरापुरी चारि कोश है तथा मथुरा से व्रज ४ कोश है परन्तु व्रज को कृष्ण कभी नहीं गये और गोपी भी मथुराको कभी नहीं गईं १ गोपियां दही छांछ माखन बेंचने को भी मथुरापुरी को नहीं आईं छाँछ बेंचने को आतीं तौभी कृष्णकी मुलाकाति होजाती २ हे स्वामिन् परस्पर मित्रकी मुलाकाति करने वास्ते स्त्री तथा पुरुष हजारों कोश चले जाते हैं और कृष्णकी तथा गोपियों की ऐसी मिताई रही फिरि चारि कोशपर मुलाकाति क्यों नहीं किये कृष्ण के मनमें मोहकी ज्वाला जलि रही है तथा गोपियों के भी हृदय में मोहकी ज्वाला जलिरही है यह बड़ी शंका होती है ३ वाचक बोले भगवान् लोककी निंदासे डरते भये कि बृजमें लीला किया तवहम बालकथे अबहमारी अवस्था ज्वानभई जो गोपी बृजसे हमारे पास मथुराको आवैंगी तथा बृजको हम जावैंगे तो पेश्तर सरीके चरित्र मथुरा में तथा बृज में करैंगे तो संसार में हमारी निंदा होवैगी ऐसा डरिके मायासे गोपियों को मोह कराते भये मोहको प्राप्त भईं जो गोपी लोननहीं मनमें कृष्णबिना परिताप तो करना परन्तु मथुरा आनेको विचार कभी नहीं करती भईं भूलिगईं मथुराजाने वास्ते तथा निंदा

कदापिमथुरामतोनैवव्रजंहरिः ४ इतिभागवते द० पू० शं० मं० षट्चत्वारिंशो ऽध्याये षट्चत्वारिंशवेणी ॥४६॥ श्लोक ॥-५ से ६ तक ॥

श्रोतारऊचुः ॥ गोपीभिः काकृताकृष्णेभक्तिरुद्धव भाषिता ।मुनीनामपियाब्रह्मन्दुर्लभागीयतेजनैः। कुटुंब वंचनाभक्तिर्नोदितामुनिभिर्मुने १ वाचकउवाच ॥ देहान्तर्वंचनाबाह्येभक्तिश्चनवलक्षणा । नसाभक्तिश्च विज्ञेयाकर्तरीसाविधीयते २ भक्तेश्चलक्षणंबाह्येकदाप्येकोनदृश्यते । सर्वमन्तर्विराजन्तेसाभक्तिर्मोक्षदा

मानिकै कृष्ण भी ब्रजको नहीं गये इसवास्ते हे श्रोता हो गोपी मथुराको नहीं गईं और भगवान् ब्रजको नहीं आये ४ इति० भा० दशम० पू०शं० नि०मंजर्यांषट्चत्वारिंशेऽध्याये षट्चत्वारिंशवेणी ॥ ४६ ॥श्लोक ॥ ५ से ६ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी गोपियां क्या बड़ीभक्ति कृष्ण में करती भई जिस भक्ति की तारीफ उद्धव किया।कि ऐसी भक्ति योगी लोगभी नहीं करसकेंगे जो कोई कहैकि पति आदिसब परिवारसे कपट करिके भगवान् की प्रीति गोपियोंने किया तौ कुटुंब से कपट करना यह कुछु उत्तम कर्म नहींहै इस कर्मको तो मुनिलोग बुराकर्म कहतेहैं१वाचक बोले मनमेंतौ कपटराखै ऊपरसे नवधा भक्तिकरैसोभक्तिनहीं है वहतो धर्म को काटने वास्ते कतरनी है२मानुष्यके ऊपरसे तौ भक्तिको लक्षण एकभी नदेख परै तथा मनमें सब भक्ति को लक्षण होवै ऐसी भक्ति मोक्षदेने वाली है ३ गोपियां ऊपरसे तौ निंदारूप कर्म करती भई तथा मनमें भक्ति को सब लक्षण करती भईं इसवास्ते उद्धवने कहे हैं कि गोपीने

यिनी ३ गोपीषुलक्षणंचैतदतोक्तामुनिदुर्लभा ४ इ० भा० द० पू० शं० मं० सप्तचत्वारिंशेऽध्याये सप्तचत्वारिंशवेणी ॥ ४७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सैरंध्रीकृष्णरमणं श्रुत्वानोभ्रमितं मनः। कथमेतत्कृतंतेन कृष्णेननरवत्त्विदम् १ वाचक उवाच ॥ वर्णाश्रमविहीनश्च क्लीवस्त्रीपुरुषादपि । भक्तानाम्प्रेमबद्धश्च नृत्यतेजगदीश्वरः २ काष्ठपुद्गलवद्विष्णोश्चरितन्नसिप्रोतवत् । वृषवच्चैवश्रोतारोऽतो

भक्ति भगवान् की किई है सो भक्ति मुनियन को दुर्लभ है ४ ॥ इति भा० द० पू० शं०मं० सप्तचत्वारिंशेऽध्यायेसप्तचत्वारिंशवेणी ॥ ४७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी कुबरी से श्रीकृष्णको रमण सुनिके हमारा सबको मन बहुत भ्रमित होगया है १ वाचक बोले संन्यासी नहोवैब्रह्मचारी नहोवै वानप्रस्थ नहोवै गृहस्थ नहोवै ब्राह्मण क्षत्री वैश्य होवेचाहे चाहेस्त्री पतित होवैचाहे नपुंसक होवै सब कर्मसे भ्रष्टहोवै चाहै पुरुष होवैपरन्तु भगवान् की सेवनकरै सोईभगवान्को प्यारा है सब कर्मसे नीच होवैतो कुछभगवान्बुरानहींमानैंगे और बड़ा उत्तम होवै और भगवान् की प्रीति नकरैतौ उस को भगवान् बैरी करिकै मानते हैं भक्त जनोंके प्रेमरूप रस्सी में बँधेहुये हैं जैसीनाच भक्तजन नचाते हैं तैसीनाच भगवान् नाचत हैं२ जैसी काष्ठ की पुतरी नचाने वाले आदमी की आज्ञा से काम करती है तैसाभक्तकी आज्ञा से भगवान् सब काम करतेहैं तथा जैसा बैलकी नाकमें रस्सी डालिकै आदमी जिधर को लेजाता है उधरको बैल जाता है तथा वेद रूप कृष्ण वेदकी ऋचा रूप

यथावद्विवांछना। तथाचक्रेजगन्नाथो वेदस्तादृक्चसा स्मृता ३ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टचत्वारिंशेऽध्याये अष्टचत्वारिंशवेणी ४८ श्लो० ५ से ६ तक॥

श्रोतार ऊचुः॥ महदाश्चर्यमेतद्धि यत्कुंतीमंगलेष्वपि। नानीतावसुदेवेन बन्दीमुक्तेनकापिच। स्वालयेचकथम्बिप्रदुःखितासापिवैमुहुः १ वाचक उवाच॥ सप्तद्वीपेशभार्य्यासा दुःखितापीशवर्ज्जिता। तथापि कुन्त्यानयने शक्तिश्शौरेर्नचाभवत् २ इति भा० द० पू० शं० मं० एकोनपंचाशत्तमेऽध्याये एकोनपंचाशद्वेणी॥ ४९॥ श्लो०॥ ७॥

कुबरी भगवान् की दासी इसवास्ते जैसी कुबरी बांछा किया तैसे भगवान् काम करते भये॥ ३॥ इति भा० द० पू० शं० मं० अष्टचत्वारिंशेऽध्यायेअष्टचत्वारिंशवेणी॥ ४८॥श्लोक॥ ५ से ६ तक॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बातमालूमपरती है कि वसुदेव बंदीखाना से छूटिगये तथा अनेक प्रकार को मंगल वसुदेवके घरमें होताभया तौभी कुंतीको अपने घरमें नहीं लेआये लोकशास्त्र की रीति है कि बहिनि तथा लड़िकी को बापमा भाई अपने घरले आते हैं सुखी होती है बहिनि बेटी तब तौ चाहै देरको लेआते हैं परन्तु दुःखी देखिकै तौ बड़ी जल्दी लेआते हैं सो वसुदेव कुंती को क्यों नहीं लेआये यह तो बड़ी शंका होतीहै १वाचक बोले कुंती सातद्वीप पृथ्वीको राजा जो पांडु तिसकी स्त्रीथी तथा बिधवा रही बहुत दुःखी थी तौभी कुंतीको अपनेघर ले आने को वसुदेव की सामर्थ्य नहींथी क्योंकि वसुदेव गरीब थे और वह कुंतीतो दुःखीभी

श्रोतार ऊचुः ॥ जरासन्धसमानीतास्त्रयोविंशति सम्मिताः। अक्षौहिण्योहतास्तेन कृष्णेनतस्यसंगरे १ हतास्सप्तदशावृत्त्या सेनाहश्यः पुनः पुनः। महदाश्चर्य्यमेतद्धि वीरमर्य्यादनाशनम्। मर्य्यादारक्षणार्थाय तस्याविर्भावउच्यते २ वाचक उवाच ॥ अक्षौहिणीनाम्निस्मर्णो जरादत्तवरोहिसः। यथेच्छारचितुंशक्तस्तास्समादायचागतः ३ ज्ञात्वातांभगवान्कृष्णश्शूरवीर

होगई तौभी सात द्वीप पृथ्वीकी रानीथी हेश्रोताहो इसवास्ते कुंतीको वसुदेव अपनेघर में नहीं लेआये २ इति भा० द०पू० शं०मं०एकोनपंचाशत्तमे०एकोनपंचाशद्वेणी॥४९॥श्लोक७॥

श्रोता पूछते भये तेईस अक्षौहिणी सेनाको जरासंध अपने संग लेके श्रीकृष्ण के संग युद्ध करनेको आता भया तब जरासंधकी तेईस अक्षौहिणी सेनाको कृष्ण युद्ध में मारिडालते भये १ बड़े आश्चर्य की बात मालूम परती है कि इतनी सेना जरासंध किधर से लेआया पृथ्वी में सेनातो बहुत थी परन्तु दुष्ट सेना इतनी किधरथीं जिस को जरासंध १७ दफे बटोरि २ लेआया तथा २३ तेईस अक्षौहिणी सेना १७ दफे कृष्ण ने मारिडाले एभी बड़े आश्चर्यकी बातहै इतनी फौज में कोई एक भी शूरबीर नहीं थे इस को मारने से तो क्या मालूम परा कि फौज में शूरबीर रहे होवेंगे परन्तु सर्व वीरों की मर्यादा कृष्णने नाश करिदिया और मर्यादा पालन करने वास्ते श्रीकृष्णको अवतारभी भयाथा फिरि वीरोंकी मर्यादा क्यों नाश करते भये गुरुजी बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले जरानाम राक्षसी जरासंधको बरदान दियाथा कि तू जितनी सेना बनाया चाहैगा तितनी सेना बनाय लेगा इस वास्ते

विवर्जिताः। चक्रेविनाशनंतासाम्मर्यादारक्षकोहरिः ४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचाशद्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथन्दृष्ट्वाप्रदुद्राव यवनंभगवान् हरिः। एषामहीयसीशंका तांछिन्धिभ्रमदांचनः १ वाचक उवाच ॥ यादवानाम्बिनाशाय यदुभिर्हसितेनच। गर्गेणोत्पाद्यतनयन्ददौतस्मैवरम्मुनिः २ स्थास्यन्तियादवायुद्धे यदातेपुरतस्सुतः। तदाभस्म

जरासन्ध तेईस तेईसअक्षौहिणी सेनाबनायके लेआया कृष्ण से युद्ध करने वास्ते ३ मर्यादाके पालन करनेवाले जो श्रीकृष्ण सो विचारिलिया कि इस सेना में वीर शूर नहीं हैं इसवास्ते जरासंध की सेनाको नाश करते भये मर्यादा को नाश नहीं किये ४ इति भा० द० पू० शं० मं० पंचाशत्तमेऽध्याये पंचाशत्वेणी ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछते भये यवन को देखिकै भगवान् क्यों भागते भये यह बड़ी शंका हमारे सबके मनको भ्रम दुःख देती है इस शंकाको आप काटो १ वाचक बोले यदुवंशी सब अपनी सभा में गर्ग मुनिको हसते भये आपने कुलकी लड़िकी के वचन सुनिकै कि गर्ग मुनि नपुंसक हैं यदुवंशीकी कन्या गर्ग की स्त्रीथी सोई स्त्री यदुवंशियों से कहती भई गर्ग भगवान् के पूजन में राति दिन रहेथे स्त्री से प्रीति कम करतेथे इसवास्ते गर्ग की स्त्री कहती भई तब यदुवंशियों करिकै हसे हुये जो गर्ग सो यादवों को नाश करने वास्ते एक पुत्र उत्पन्न करिकै उसी पुत्रको वरदान देते भये २ कि हे पुत्र युद्धमें यदुवंशी तेरे कुल के सामने तथा तेरे सामने जो खड़े होवैंगे तो उसी

अविषप्नुन्तिसत्यमेतन्मयोदितम्। एतद्ज्ञात्वासुदुद्राव तन्दृष्ट्वायदुनंदनः ३ इति भा० द० उ० शं०मं० एकपंचाशत्तमेऽध्याये एकपंचाशत्तमवेणी ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मर्त्यलोकेस्थितेकृष्णे कथंक्षुद्रादिलक्षणाः। पृथिव्यांसमवर्तन्तमहत्कौतूहलन्त्विदम् १ वाचक उवाच ॥ यत्प्रमाणाःप्रजास्तस्मिन्द्वापरेविधिनाकृताः। तत्तथावर्तितास्सर्वा न न्यूनानाधिकास्तथा २ कृष्णदर्शनप्रेम्णैव हर्षितोनृपसत्तमः। पर्वतानप्य

जखत भस्म होजावेंगे हे श्रोताहो इस बातको श्रीकृष्णजी जानिके भागते भये कुछ डरिके नहीं भागे ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एकपंचाशत्तमेऽध्याये एकपंचाशत्तम वेणी॥५१॥ श्लोक ॥ ६॥

श्रोता पूछतेभये श्रीकृष्ण जी मर्त्यलोकमें विराजेथे फिरि पृथ्वीमें मानुष्य पशु वृक्ष पर्वत आदिलेके जोसब वस्तु पेश्तर बड़ी बड़ी थीं सो वस्तु छोटी २ क्यों होगई यह बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि कृष्ण भगवान् मर्त्यलोक से वैकुंठ को गये होते तब पेश्तरकी बड़ी २ वस्तु छोटी २ होजाती तब शंका नहोजाती परन्तुकृष्णके साम्ने बिपरीत होनेलगा यहबड़ी शंका होती है १ वाचक बोले द्वापर युगमें जैसी प्रजा ब्रह्मा बनायेथे तैसी प्रजा मृत्युलोक में उस वखत थी नतौ तिलप्रमाण कम और न तिलप्रमाण ज्यादा२परन्तुराजा मुचकुंदने श्रीकृष्णके दर्शन के प्रेम करिके खुशीहोके पर्वतको भी छोटाजानि लेतेभये और चीज की तो क्याबात है इसका यह अर्थ है कि कृष्णके दर्शन से सब वस्तुको राजा थोरी

णान्ज्ञात्वा चान्येषांचैवकाकथा ३ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विपंचाशत्तमेऽध्याये द्विपंचाशत्तमवेणी ॥ ५२ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नापश्यद्रुक्मिणीब्रह्मन् नमस्कारा दृतेतदा । ब्राह्मणायचदातुंस्त्रीनमुनिश्चैवसोद्विजः १ धनादिवाञ्छासततं तस्यचेतसिवर्त्तते । साकथन्नददौ वित्तन्नमश्चक्रेचकेवलम् २ वाचक उवाच ॥ तत्पिता सागरःपीतस्तत्पतिःपदताडितः । तद्भ्रातरश्चानुजोविप्रै श्छेदितःपूजनायच ३ ब्राह्मणेनकृतानेतान् ज्ञात्वा जानता भया एक कृष्ण के प्रेमको बड़ा मानता भया ॥ ३॥ इति भा०द०उ०शं०मं० द्विपंचाशत्तमेऽध्याये द्विपंचाशत्तमवेणी ॥५२॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोता पूंछते भये हे गुरुजी ब्राह्मण को देनेयोग्य वस्तु तीनलोकमें रुक्मिणी नहीं देखीकि यह वस्तु ब्राह्मण को देना चाहिये इसवास्ते हरिमानिके कोरानमस्कार करतीभई बड़ी शंका इसमें होती है किवो ब्राह्मण मुनितो रहा नहीं उसको तो जोई वस्तुदेती सोईलेता फिर क्यों नहींदी १ उसब्राह्मण के तो धनआदिलेके जो वस्तु संसारमें है सब चीजको लेनेकी अनमें इच्छाथी फिरि रुक्मिणी धन आदि वस्तु क्यों नहींदिई कोरानमस्कार करिलिया है २ वाचक बोले लक्ष्मी को बाप जो समुद्र तिसको ब्राह्मण ने पीलिया तथा लक्ष्मीके पति जो भगवान् तिनको ब्राह्मण ने लात से मारा लक्ष्मी को छोटा भाई कमल तिसको ब्राह्मण देवतों के पूजन वास्ते तोड़ते भये ३ ब्राह्मणों को किया ऐसा कर्म को समुझिके लक्ष्मी ब्राह्मणोंसे रूठिगई ब्राह्मणोंको धन आदि पदार्थ नहीं देती

कृष्णाचसिंधुजा । नदत्वातिधनन्तेभ्यश्चातश्चक्रेनमस्तु
सा ४ इति भा० द० उ० शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽ
ध्याये त्रयःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५३ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंबभूवसाबाला रुक्मिणीदुःख
संयुता । प्रभावज्ञाभगवतः कृष्णस्यपरमात्मनः १
वाचक उवाच ॥ आत्मनःकारणंज्ञात्वा युद्धेवीरक्ष
त्रयम् । कलंकाज्जन्मतोभीता बभूवदुःखितासती २
इति भा० द० उ० शं० मं० चतुःपंचाशत्तमेऽध्याये चतुः
पंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ यदुप्रवीरेणसुपालितांपुरीन्दुर्गम्य

हे श्रोताहो इसवास्ते लक्ष्मीको रूप रुक्मिणी ब्राह्मणको धन
नहीं दिया नमस्कार करि लेती भई ४ इति भा० द० उ०
शं० मं० त्रयःपंचाशत्तमेऽध्याये त्रयः पंचाशत्तमवेणी॥ ५३ ॥
श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछतेभये कि श्रीकृष्णकीस्त्री तथा कृष्णके प्रभावको
जाननेवाली फिरि रुक्मिणी युद्ध देखिकै दुःखी क्यों होगई
यह बड़ीशंका होती है १ वाचक बोले युद्ध में बड़े बड़े शूरों
को तथा वीरोंको नाश हुआ रुक्मिणी के स्वयंवर मेंतौ रुक्मि
णी बिचार कियाकि यह कलंक मेरेको जन्म जन्म तक होग-
या कि रुक्मिणी के विवाह में बहुत से शूरवीरोंको नाशहुआ
हे श्रोता हो ऐसा कलंक अपने ऊपर बिचारिकै रुक्मिणी
बहुत दुःखी होगई ॥२॥ इतिभा० द० उ० शं० मं०चतुःपंचा
शत्तमेऽध्यायेचतुःपंचाशत्तमवेणी ॥ ५४ ॥श्लो० ॥४॥
श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण करिकै पालना हुई द्वारका

भावासिरिभिस्सवंचनैः । अहर्निशंचैवसुदर्शनेनवै वि
भ्रामितांचैवचतुर्दिशस्सदा । कथम्प्रविश्यासुचतांच
शम्बरो जहारशीघ्रंतनयंरमापतेः १ वाचक उवाच ॥
पणःकृतश्श्रीयदुनंदनेनवै द्विजस्समायातिसवंचनोय
दि । कुशस्थलीम्मेति प्रियाम्मनोहरान्नवारणीयश्च
त्वयासुदर्शन २ इतिज्ञात्वासुरश्शीघ्रन्धृत्वारूपंद्विज
स्यवै । प्रविश्यसंजहाराशु प्रद्युम्नंभयवर्जितः ३ इति
भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाशत्तमेऽध्याये पंचपंचाश
त्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लो० ॥ ३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथान्निवेशयामास सत्राजिद्देव

पुरी तथा कपट करिकै द्वारका के भीतर कोईभी जावै तौ भस्म होजावै तथा २ में द्वारका पुरीके चारों तरफ सुदर्शन-चक्र रक्षा करि रहाथा ऐसी कठिन द्वारका पुरीमें शंबरनाम दैत्य कैसा प्रवेश करिगया तथा भगवान् के पुत्र को कैसा हरिलेगया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले कृष्णने द्वारका को बसायेथे तब ऐसी प्रतिज्ञा लियेथे कि हे सुदर्शन-चक्र तुम राति दिन द्वारका पुरी के चारों तरफ रक्षा करने वास्ते भ्रमण करो परन्तु ब्राह्मण वंश चाहै तौ अखिल आवै द्वारकाको तौ उसको मनानहीं करना जो कभी कोई कपट करिकै द्वारकाको ब्राह्मण को रूप धरिकै आवै तौउसकोभी मति मनाकरना २ ऐसी कृष्णकी प्रतिज्ञा को शंबरासुर जानि कै ब्राह्मणको रूप धरिकै द्वारका में प्रवेश करिकै श्रीकृष्ण के पुत्र को हरिलेगया ३ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचपंचाश त्तमेऽध्यायेपंचपंचाशत्तमवेणी ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ ३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी सत्राजित यादव देवता के

मंदिरे। मणिंविप्रैस्स्वयंकस्मान्नचस्थापितवान्सुधीः १ वाचक उवाच ॥ सूर्योवाचमणिन्दत्त्वानायन्धार्य्यस्त्वया सदा । स्थाप्योयन्देवसदने पावकार्च्चासमन्विते २ इत्युक्तश्चमणिंगृह्य चाजगामनिजालयं। स्नानंकर्तुंसमुद्युक्तो यावत्तावद्द्विजैर्मणिम् ३ स्थापयित्वाजगामाशु कृतस्नानस्तदालयम्। एतदर्थंमणिंविप्रैः स्थापयामासतद्गृहे४ इति भा०द०उ० शं० मं०षट्पंचाशत्तमेऽध्याये षट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ महदाश्चर्य्यमेतद्धितत्रतत्रैववर्षति।

मंदिर में ब्राह्मणों करिकै मणिको क्यों स्थापना करते भये आपु क्यों नहीं राखिदिया देवमंदिर में मणिको यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले सूर्यसत्राजितको मणिदेकै पीछेसे सत्राजित से कहेकि, इस मणिको रातिदिन धारण मति करना जो तुमारी अग्निहोत्र की कोठरी है उसमें इस मणिको राखिदेना २ सत्राजित सूर्यके ऐसे वचन सुनिकै अपने घर को आया बिचार कियाकि बिनादूसरास्नान किये देवमंदिर में कैसा जावों ऐसा विचारि कै जब तक स्नान करने की तयारी किया तब ऋषिलोगोंसे मणिको रखायकै आपुस्नान करिकै तब अग्नि होत्रकी कोठरी में होम करने वास्ते गया है ३ हे श्रोता हो इसवास्ते ब्राह्मणों करिकै देवमंदिर में सत्राजित मणिको रखाता भया दोश्लोक को अर्थ एक में मिला है युग्म है ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्पंचाशत्तमेऽध्यायेषट्पंचाशत्तमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ १० ॥

श्रोता पूछते भये गुरुजी बड़ी बड़ी आश्चर्य की बात

यत्रयत्रैवसोक्रूरो नोपतापानमारिका १ सप्तद्वीपेनचाक्रूरो द्वारिकायांसदासते। कथम्वर्षतिदेवेशश्शंकेयम्बर्द्धतेयनः २ वाचक उवाच॥ तपःकृत्वावरंलब्ध्वा गान्दिनीवैपितामहात्। यत्रत्वन्तवभर्ता चत्वत्सुतोपिचवर्तते ३ मनसावेच्छतेयत्र तत्रवृष्टिर्महीयसी। अतोऽक्रूरोमहाबुद्धिः प्रजासौख्यप्रकारकः ४ इति भा० द० उत्तरार्द्धशं० मं० सप्तपंचाशत्तमेऽध्यायेसप्तपंचाशत्तमवेणी॥५७॥श्लो०॥३३॥

भागवतमें सुनि परतीहै कि जिस जिस गांवमें अक्रूर वास करतेहैं उसी उसी गांवमें इन्द्र जलकी बर्षा करताहै तथा उस गावोंमें कोई उत्पात तथा महामारी की बीमारी नहीं होती १ तब अक्रूर तो मथुरामें जन्मे मथुरा छोड़िके दूसरे गांवको नहीं गये मथुरा छोड़िके द्वारकामें वास करतभये दूसरे ग्राममें बास नहीं किये फिरि सातद्वीपमें तो अक्रूर नहींहै तब सातद्वीपमें इन्द्र जलकी बर्षा क्यों करताहै यह बड़ी शंकाहै २ वाचकबोले अक्रूर की माता गांदिनी ब्रह्माके तप करिकै ब्रह्मासे बरदान लेती भई ब्रह्मा कहे हे गांदिनी जिस स्थानपर तूतथा तेरापति तथा पुत्र टिकेरहैंगे ३ और मन करिकै बर्षा होनेकी इच्छा करैंगे उस स्थान पर बर्षा बहुत होगी और मनमें अभिमान करिकै प्रजाकी बुराई बिचारैंगे बर्षा होनेकी इच्छा नहीं करैंगे तब उसीवखत प्राणभी तुमारा छूटि जावैगा हे श्रोताहो इस वास्ते बड़े बुद्धिमान् अक्रूर रातिदिन प्रजाको सुख होने वास्ते अपने मनमें राति दिन बर्षा होनेकी इच्छा करतेहैं४ इति भा० द० उत्तरार्द्ध शंकानिवारण मंज० सप्तपंचा शत्तमेऽध्याये सप्त पंचाशत्तम वेणी॥५७॥ श्लोक॥३३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुतापितृस्वसुर्ब्रह्मन् भगिनीसानिगद्यते। धर्म्मशास्त्रेषुगदितातामुवाहकथंहरिः १ वाचक उवाच ॥ पूर्वेतपसिस्थतेशौरौ तस्ययापरिचारिकाः। विष्णुर्वरन्ददौतस्मै भविष्यहन्तवात्मजः २ श्रयापिवरो दत्तो दासीभ्योऽपिशुभस्तदा। युष्माकंतनुजाश्चाहं भविष्यामित्वनेकधा ३ शौरेस्सहोदरास्तास्तु बभूवुःपरिचारिकाः। तासुयह्रोतद्रालक्ष्मीः प्रमाणेनयथाक्रमम् ४ हरिंविनानचान्येन ताश्चोह्याह्याःकथंचन। कृष्णेनोद्वाहिताःसर्वाश्चात्तोज्ञात्वापिपालकम् ५ इति भा० द० शं० मं० अष्टपंचाशत्तमेऽध्यायेअष्टपंचाशत्तमवेणी ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी, धर्मशास्त्रमें लिखाहैकि, बुवाकी लड़की बहिनिहै फिरि कृष्णने बुवाकी लड़िकीको क्यों विवाहि लेतेभये १ वाचक बोले पहिले जन्ममें वसुदेव तप करतेथे तब बसुदेवकी जो दासीथी सो सब बसुदेवकी सेवनमें लगीरही जब भगवान् बसुदेवको बरदान दियेकि हम तुमारे लड़िका होवैंगे २ तबलक्ष्मीजी भी बसुदेवकी दासियोंको वरदान देती भई हेदासियो तुमारी सबकी हम बहुतसी कन्या होवैंगी ३ हे श्रोताहो ऐसे भगवान्के तथा लक्ष्मीके बाक्यसे पेश्तरकी जो दासी बसुदेवकी थीं सो सब इस जन्ममें बसुदेवकी बहिनि होती भई उन्ह बसुदेवकी बहिनीकी पुत्री लक्ष्मी भई अपनेवचनके प्रमाण करिके ४ हे श्रोताहो लक्ष्मी रूपजो बसुदेवके बहिनिकी लड़िकी उनका भगवान् बिना दूसरा मानुष्य कैसा विवाह करैगा इस वास्ते भगवान् जानेकि ये हमारी बहिनिहैं इनको हम

श्रोतार ऊचुः ॥ किमर्थं हरणं चक्रे तासाम्भौमोति बुद्धिमान्। कुमारिकानामुद्वाहवर्जितानाम्महामतिः १ वाचक उवाच ॥ नृपाणाम्मानना शाय स्वोद्वाहायजह्वा रताः। भविष्यज्ञेनमुनिनावारितोनारदेनवै २ मयाज्ञप्तो यदाभौम त्वमुद्वाहंकरिष्यसि। तासांतदानचाज्ञप्तस्ते नैवचकारसः ३ स्वोद्वाहंराजकन्याभिस्तमिच्छन्कृष्ण घातितः ४ इति भा० द०उ० शं० मं० एकोनषष्टितमेऽध्यायेएकोनषष्टितमवेणी ॥ ५९ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

ब्याह लेवैंगे तौ बड़ा पाप होवैगा ऐसा जानिकै तौ भी विवाह करते भये ५ इ० भा० द० उ० शं० मं० अष्टपंचाशत्तमेऽध्यायेअष्टपंचाशत्तमवेणी ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भये भौमासुर तौ बड़ाबुद्धिमान् था फिरि कुमारी कन्योंकोक्यों हरिलाता भया वोतो बिलकुल लड़िकी थीं उनको तो विवाह नहीं हुवाथा कि राक्षस कर्म करने वास्ते हरि लैआया यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले राजों को अभिमान नाश करनेवास्ते सब राजों की लड़िकियों को हरिलै आया तथा अपना बिवाह करने वास्ते राजे लोग कुछुभी नहीं करिसके तब नारदमुनि बिचारेकि येसब कन्यातौ भगवान्की स्त्रीहोवैंगी ऐसा बिचारि कै भौमासुरको मनाकरि दिये २ नारदकहे हे भौमासुरबिना हमारी आज्ञा लिये इन्ह लड़िकियों के संग अपना बिवाह करना नहीं है श्रोताहो ऐसा कहिकै भौमासुर को बिवाह करनेकी आज्ञा नारद नहीं दिये न भौमासुर बिवाह किया ब्याह करने की इच्छा करते करते श्रीकृष्ण भौम को मारि डाले कन्यों को अपनीस्त्री करिलिया इसवास्ते राजकन्यों

श्रोतार ऊचुः ॥ उवाचरुक्मिणींकृष्णो भजस्वान्यं पतिंशुभे । कदापीत्थंवचोलक्ष्मींनोवाचकमलापतिः १ चेत्तन्मानविनाशाय तथापिनकृतस्तया । मानोभगवत आग्रे कदापीत्थंभ्रमश्वनः २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वा कलियुगंप्राप्तं कृष्णोलोकहितायच । योषितांमानना शाय कलिजानामिदंवचः ३ उवाचरुक्मिणींकृष्णो ज्ञात्वाश्रुत्वाचमानवाः । सेवचोयोषितश्चापि द्वयोर्ज्ञा को हरण भौमनाम राक्षस किया ॥ ३ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० एकोनषष्टितमेऽध्यायेएकोनषष्टितमवेणी ॥ ५६ ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण रुक्मिणी को कहेकि तुमहम को छोड़िकै दूसरापति करिलेवो हे गुरु जी ऐसी महागँवार सरीके वचनतो भगवान् लक्ष्मी को कभीभी नहीं कहेथे इस अवतार में क्यों कहे १ जो कोई कहै कि रुक्मिणी को मान नाश करने वास्ते ऐसे वचन कृष्ण कहेहैं तौभी गुरुजी कृष्ण के साम्ने तो रुक्मिणी कभी मानभी नहीं किही ऐसा खोटा वाक्य भगवान् क्यों कहे बड़ीशंका हमारे सबके मनमें है २ वाचक बोले श्रीकृष्णने कलियुगको राज थोरेही दिनमें होवे गा ऐसा जानिकै संसार को कल्याण होनेवास्ते तथा कलि-युगकी स्त्रियों को माननाश करने वास्ते रुक्मिणी से ऐसा वाक्य कहेथे ३ कृष्ण विचार किहेकि स्त्रीको अभिमान नाश करनेवाले इस हमारे वाक्य को कलियुग में जो कोई स्त्री पुरुष सुनैंगे स्त्रीभी डरैगी तथा पुरुषभी डरैगा कि भाई स्त्री पुरुषको प्रेमसब से बड़ा है देखो जरासे रुक्मिणीको भगवान् त्यागदेनेवास्ते हसी किये हैं तौभी रुक्मिणी प्राणत्यागने लगी हैं भाइयो ऐसा विचारिकै स्त्रीतो अपनेपतिसे प्रेमकरै और

संपरस्परम्। करिष्यंतीत्यतोवाक्यमुवाचजगदीश्वरः४ इति भा० द० उ० शं० मं० षष्ठितमेऽध्यायेषष्ठितम वेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञात्वाप्यधर्म्मंकुर्वीतद्विगुणस्पाप भाग्भवेत्।तद्ज्ञात्वाचकथंरुक्मीददौपौत्रींमहामतिः१ अनिरुद्धायमुनयो नप्रशंसन्तिरौरवे। तंस्नेहंयेनजीव स्य पातोऽस्तिलोकनिन्दनम् २ वाचक उवाच ॥ कृष्ण स्नेहबलंस्वस्य ज्ञात्वादृष्ट्वाचतत्कृतम् । द्वयोर्भीति पुरुष अपनी स्त्रीसे प्रेमकरै इसधर्म से दूसरा कोईभी बड़ाधर्म नहीं है कलियुग के जीव ऐसा मानिलवैंगे इसवास्ते कृष्णा वतार में लक्ष्मी को खोटावाक्य भगवान् कहे हैं कुछ छल से नहीं कहे ॥ ४ ॥ इति भा० द० उ०शं०मं० षष्टितमेऽध्याये षष्टितमवेणी ॥ ६० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये भागवत में लिखा है कि रुक्मी राजा जानता थाकि बुआकी लड़िकी बिआहने वालेको तथा मामा की लड़िकी बिआहने वालेको तथा इन्हदून्हों लड़िकी को ऐसी जगह बिवाह करिदेवैं तौ दोनोंको बड़ापाप होताहै तथा ऐसा धर्म बिनाजाने बिवाह करैगातौ पापहोगा और जानि कै करैगातौ दूनाहोगातौ जानिकै अधर्म फिरि अपने पुत्रकी लड़िकी को बिवाह अनिरुद्धके संग क्यों करिदिया क्योंकि वह लड़िकी अनिरुद्ध के मामाकी थी १ जो कोईऐसा कहैकि श्रीकृष्णजीकेस्नेह करिकै अधर्मरूप कन्या दान कियाहै रुक्मीने तो ठीकहै जिस स्नेह करिकै संसारमें निंदा होवै तथा मृत्यु भयेपर जीवको रौरव नरक में बास करना पड़ैगा ऐसे स्नेहकी मुनि लोग तारीफ नहीं करते २ वाचक बोले रुक्मी राजा विचार कियाकि मैंने

परित्यज्य दृढ़ीपौत्रींचभोजराट् ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कुशस्थलीकृष्णप्रतापपालिता सुदर्शनोभ्राम्यतितच्चतुर्दिशः। अहोनिशंवैविधिकल्प प्राणिनां शक्तिर्नकेषामपितत्प्रवेशने १ आज्ञाविना वंचनयाचरन्नितुः कथम्प्रविष्टाखलुचित्रिणीचतां।
आपने लड़िकेकीलड़िकी को श्रीकृष्णके पोतेको व्याहिदेऊंगा तब कृष्ण मेरे ऊपर बहुत प्रसन्न होवैंगे ऐसा विचारिकै अपने ऊपर कृष्णको स्नेह जानिकै अधर्म रूप व्याहसे भई जो लोकमें निंदाकी त्रास तथा रौरव नरकमें पड़नेका डर दोनों को त्यागिकै अपनी पोतीको व्याह कृष्णके पोताके संग करि देता भया रुक्मी विचार किया जो मेरे ऊपर कृष्ण प्रसन्न रहैंगे तब लोकमें मेरी निंदा कौन करैगा तथा नरकमें भी मेरेको न पटकैगा हे श्रोता हो ऐसा विचारिकै अधर्मरूप व्याह जानिकै रुक्मी करता भया ॥ ३॥ इति भा० द० उ०शं० मं० एकषष्टितमेऽध्याये एकषष्टितमवेणी ॥ ६१ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णके तेजकरिकै पालना हुई ऐसी द्वारका पुरी तथा द्वारका के चारों तरफ रातिदिन सुदर्शनचक्र भ्रमण करिरहा है ऐसी द्वारकापुरीमें कपट करि कै कोई जायाचाहै तौ ब्रह्मदेव के बनाये जो जीव तिनकी सामर्थ्य तौ नहींथी कि कपट करि कै द्वारका के दरवाजे भीतर जायसकै १ तब हे गुरुजी चित्रलेखा रक्षा करने वाले प्राणियोंकी आज्ञा नहीं लिई बिनापूछे कपट करिकै द्वारका में जायकै सोतेभये जो अनिरुद्ध तिनको पलँग सहित उठाय

सुप्तंसमादायसुखेनसाययौ पौत्रंसपर्य्यंकयुतंरमापतेः २
वाचक उवाच ॥ विचिन्त्यबाणस्यबधंरमापतिस्तदात्म
जोद्वाहस्वपौत्रकारणम् । आज्ञापयामाससुदर्शनंहरि
स्साचित्रलेखास्वपुरीम्प्रयास्यति ३ प्रवेशनेनिर्गमने
सकृत्त्वया नवारणीयाखलुचित्रकारिणी । पूर्येतिज्ञस्तः
परमेश्वरेणवै नवारयामाससुदर्शनश्चताम् ४ इति भा०
द० उ० शं० मं० द्विषष्टितमेऽध्यायेद्विषष्टितमवेणी
६२ ॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतारऊचुः ॥ पुत्रस्यप्राणरक्षार्थं बाणमातारमा
के बड़ेसुख से लेकैचली गई कोई दूसरा भी यादवको नहीं
श्रीकृष्णके खुद पोताको हरि लेगई दूसरा यादवको लेजाती
तौ थोरी शंका होती कि कोटके बाहर सोता रहा होगा
येतौ खुदको लेगई यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले
बाणासुरकी मृत्युको भगवान् विचारिकै तथा बाणासुरकी
कन्याके संग अपने पौत्रको विवाहभी विचारिकै सुदर्शन चक्र
को आज्ञादेते भये कि द्वारिकापुरीको चित्रलेखा राक्षसी आ-
वैगी उसको तुम द्वारिका के भीतर जाने देना एकदफे
तथा भीतरसे द्वारकाके बाहरको जाने लगे तब जाने देना
जो चाहेसो लेजावै एकदफे द्वारकाके भीतर जाने वास्ते
तथा भीतरसे कुछ चीज लेके बाहेर जाने वास्ते तुम मना
मत करना हे श्रोताहो कृष्णकी ऐसी आज्ञाको मानिकै सु-
दर्शन चक्र चित्रलेखाको मनानहीं किया इस वास्ते अनि
रुद्धको हरि लेगई ४ इति भा० द० उ० शं० मं० द्विषष्टित
मेऽध्याये द्विषष्टितम वर्णी ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी अपनेपुत्रकीरक्षा करने वास्ते

पतेः। नग्नाकथम्पुरस्तस्थौमोहितुंकामिनंयथा १ वाचक उवाच ॥ तपस्तप्त्वावरंलब्ध्वा कोटराविधिनासती। ऋतेतेचपतेश्चान्यो नग्नांचत्वांकोपिद्रक्ष्यति। पुरुषो भस्मसाच्छीघ्रं भविष्यतितदाऽशुभे २ एवन्नग्नापुरस्त स्थौ कृष्णनाशायतस्यसा ३ इतिश्रीभा० द० उ० शं० मं० त्रिषष्टितमेऽध्यायेत्रिषष्टितमवेणी ॥ ६३ ॥ श्लो ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृगवाक्यमयोग्यंच श्रुत्वानोकम्पितंमनः। उन्मत्तवत्कथम्प्रोक्तं नृगेनाचार्य्ययादवम् १ बाणासुरकी माता नग्न होके कृष्णके सामने क्यों खड़ी भई नग्नहोके खड़ी होनेसे क्या मालूम परताहै जैसा किसी कामी के सामने स्त्री नग्न होके खड़ी होवैतो वह कामी स्त्री कोदेखिकै मोहि जावै तौ स्त्री जो जो हुकुम करै सो सो हुकुम वह कामी प्राणी किया करै तैसा काम बाणासुरकी माता किया यह बड़ी शंका होतीहै १ वाचक बोले ब्रह्माने कोटरा को बरदान दियेथे कि हे कोटरे तीन लोकमें जोपुरुषहैं ब्रह्मा विष्णु शिवभी तथा चौरासी लाख योनि के पुरुषमात्र सब तेरेको नंगी देखैंगे तब उसी वखत भस्म होजावैंगे अकेले तेरेपतिको त्यागिकै तेरा पति नहीं भस्म होगा और सब जल्दी भस्म होवैंगे २ हे श्रोताहो कोटरा ऐसा जानिकै श्री कृष्णको भस्म करने वास्ते श्री कृष्णके सामने खड़ी भई है ३ इतिभा० द० उ० शं० मं० त्रिषष्टितमेऽध्यायेत्रिषष्टितम वेणी ॥ ६३ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जो वचन कृष्णसे राजा नृग ने कहेथे गौदान देने वासते उस वचनको सुनिकै हमारा सबको मनकांपने लगा कि पागल सरीके वचन नृग क्योंकहे

वाचक उवाच ॥ सिकताभूमिमर्य्यादा द्वीपसंख्यानि गद्यते । प्रोक्ताःकमंडलौकोशेतारकास्सरितास्स्मृताः२ अदिवम्मर्त्यलोकंच तत्रापिभारतन्तदा। वर्षधाराश्चागिरयो नृगवासेचभारते ३ एकोनविंशऽध्यायस्यपंचम स्कंधमानतः । गिरयस्सप्तविंशाश्च नद्यःपंचचतुस्तथा॥ पंचमेप्रथमाऽध्यायेद्वीपास्सप्तप्रकीर्तिताः४सिकतास्सप्त द्वीपाश्चबाणाब्धि४५तारकास्तथा॥वर्षधारासप्तविंशा२७

क्योंकि गुरुजी रेतीकी कणको क्या प्रमाण एक मूठी भरि रेती हाथमें लेवै तौ दस बीस कोटिकण मूठीभरि रेतमेंहोवैंगे फिरि गंगा आदि नदियोंमें तथा रेती वाले देशोंमें रेतासिवाय दूसरी माटी नहीं तहां कणकी क्या गनतीहै फिरि ताराभी गनतीसे हीनहै बर्षाकी धारा पृथिवीमें पड़तीहै तिसकी गनती नहींहै ऐसा वचन बड़ा अयोग्यहै हर३ वाचक बोले कमंडलमें कोश हजार ३०००० श्लोकहै तिसमें ५७३ मेदिनीमें श्लोक १७ से ४२ तक भूमिकी द्वीप आदि पर्वतोंको नाम लिखाहै सिकता ७ द्वीपको नाम लिखाहै तथा तारका बड़ी २ नदियों को नामलिखाहै २ अदिव मर्त्य लोकको नाम लिखाहै मर्त्य लोक में भी भारतखंडको भी अदिव नाम है वर्षधार पर्वत को नाम लिखाहै तथा राजा नृग भारत खंडमें बसता था इसवास्ते भरतखंडकी नदियोंके पर्वतोंके तथा सात द्वीपोंके मिसकरिकै गोदान देनेकी गनती कृष्णसे गुप्त करिकै बताया हैकि सबको मालूम परनेसे पुण्यका नाश होजाताहै ३ पंचम स्कंधकी वोनइसअध्याय १६ में लिखाहै कि मर्त्यलोकमें भारत खंडमें पर्वतोंमें श्रेष्ठ पर्वत २७ हैं तथा नदियोंमें श्रेष्ठ नदी ४५ हैं तथा पंचम स्कंध के प्रथमऽध्यायमें लिखाहै कि पृथ्वी

श्चैषाप्रोक्तान्नृगेनैवै ५ दत्ताश्चधेनवस्तेनब्राह्मणेभ्योनृपे नवै ६ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुष्षष्ठितमेऽध्याये चतुष्षष्ठितमवेणी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंचकर्षयमुनाम्बलश्शेषश्चकथ्य ते। मर्यादानाशनंतस्याश्चक्रेकामातुरोयथा १ वाचक उवाच ॥ यदाकालियनिर्म्मुक्ता तदाभून्मानगर्विता। जलेनापिविनापूर्णा मुनीनामवरोधिनी २ एतद्ज्ञात्वा में ७ सात द्वीप हैं ४ हे श्रोताहो इस प्रकार गुप्त करिकै राजा नृग कृष्णसे कहेथेकि महाराजजितनीभूमिकी सिकता कहे द्वीपहैं तितनी गाय मैं दियाहूँ तथा भारत खंडमें जितनी तारका कहे गंगा आदि लेके बड़ी बड़ी नदीहैं तितनी गाय मैं दियाहूं तथा जितना बर्षधार कहे पर्वत मर्त्यलोकके भारत खंडमें हैं तितनी गायमैं दियाहूं सब गौकी संख्या यह भई विद्वान् लोग विचारि लेना अंककी उलटी रीतिसे प्रथम ७ दूसरो४५तीसरा२७जोड़सबका२७४५७सत्ताईसहजार२७००० चारिसौ ४०० सत्तावन ५७ गायदेनेको नृग कृष्ण से कहेथे रेतीकी कण आकाशको तारा जल वृष्टि वास्ते नहीं कहेथे ६ इतिभा०द० उ० शं० मं० चतुष्षष्टितमेध्याये चतुष्षष्टितमे वेणी ॥ ६४ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोता पूछते भये शेषको अवतार बलदेव को मुनियों ने वर्णन किया है सोई बलदेव बड़ा कामी सरीके यमुना को क्यों खैंचते भये यमुना की मर्यादा भी नाशकरते भये बड़ी शंकाहोती है १ वाचक बोले कृष्ण जी जब यमुनासे कालिय को निकासि दिया तब यमुना बहुत अभिमान करने लगी बर्षाबिना पूरआने लगी मुनिजन मथुरा को तथा वृंदावनको आनेलगैं तौ रातिदिन जल से भरी रहै नांवचलने न देवैं

निमित्तेन बलस्तान्दंडमादधे ३ इति भा०द० उ० शं० मं० पंचषष्टितमेऽध्यायेपंचषष्टितम वेणी ॥ ६५ ॥ श्लो० ॥ २३॥ से २४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः॥पौंड्रकेनकथंप्राप्तंस्वरूपम्परमेशितुः। महदाश्चर्यमेतद्धियोगज्ञैरपिदुर्लभम्१वाचकउवाच॥ तपस्सुदुष्करंकृत्वापूर्वजन्मनिपौंड्रकः।रमेशस्यवरंलब्धं तेनतद्रूपकल्पने। स्ववधंचापियाचित्वा प्राप्तोभूमिंच दैत्यराट् २ इतिश्रीभा० द०उ० शं० मं० षट्षष्टितमेऽध्यायेषट्षष्टितमवेणी ६६ श्लोक १३ से १४ तक॥

मुनियों की रस्ता रोकिदेती भई ऐसी यमुना को उन्मत्त जानिकै जल क्रीड़ाके मिस करिकै यमुना को दंडबलदेव करते भये ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं० मं० पंचषष्टितमेऽध्यायेपंचषष्टितमवेणी ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ २३ ॥ से २४ तक ॥

श्रोता पूछते भये योगियों करिकै बड़े दुःख सो प्राप्तहोने लायक जो भगवान् को रूप तिस रूपको पौंड्रक नाम राजा क्यों करिकै प्राप्त भया गुरुजी बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले पूर्व जन्म में पौंड्रक राजा भगवान् का बड़ा कठिन तप करता भया जब भगवान् प्रसन्न होकै बरदान देनेको आये तब यह बरदान मांगा कि आपुको स्वरूप बनाने की बुद्धि मेरे को दीजिये तथा पृथ्वीमें जन्म धारण करिकै आपु के हाथ से मेरी मृत्यु होवैगी तब भगवान् ऐसा बरदान देते भये हे श्रोताहो इस वास्ते पौंड्रक भगवान् को रूप बनाया था ॥ २ ॥ इति भा० द० उ० शं०मं० षट्षष्टितमे०षट्षष्टितम वेणी ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ १३ से १४ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्राणप्रियोरघुपतेर्द्विविदो वानरो त्तमः। कथन्विशोषितस्स्वर्गं सर्वेप्राप्ताःकपीश्वराः १ वाचक उवाच॥ रामरावणयोर्युद्धे चाप्टष्ट्वारघुनन्दनम्। निशीथेसैनिकैस्स्वीयैः प्रविश्यरावणालयं २ अनेकशा नालीर्गृह्य वस्त्रहीनास्स्वकारयत्। पश्चाद्ज्ञातंचरामेन कर्मतस्यविनिंदितम् ३ निःकासितश्चसेनायाः प्रार्थितस्तेनराघवः। स्वतारणायतेनोक्तोद्वापरेमुक्तिमाप्स्यसि ४ नाहंतवाननन्दुष्ट द्रक्ष्याम्यद्यकदापिच। हतःशेषेन

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी द्विविद नाम वानर श्रीरघुनंदन को बड़ा प्यारा था तब सब वानर तौ त्रेता में स्वर्ग को जाते भये द्विविद को श्रीराघवजी क्यों स्वर्ग को नहीं लेगये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले रामचन्द्र का तथा रावण का युद्ध होताथा उस वखत अर्धरात्रि के समय में द्विविदनाम वानर रामचन्द्र से पूंछाभी नहीं आपनी फौज लेके रावण के महलमें प्रवेश करिकै २ बहुतसी रावण की रानियों को पकड़ि कै नग्नकरि देता भया तथा मारता भी भया कुछ देर पीछे श्रीमर्यादा पुरुषोत्तम जो रघुनाथ जी तिनको यह खोटाकर्म द्विविदने किया ऐसा मालूम पड़ा ३ तब उसी वखत श्रीरघुनंदनजी ने अपनी फौजसे से निकालि दिया द्विविदको पीछेसे द्विविदने अपनी मुक्ति होने वास्ते राघवजी की बिनती किया तब रामचन्द्र जी कहे कि द्वापर में तेरी मुक्ति होगी रामचन्द्र कहे हे दुष्ट आज से तेरामुख हमतो देखेंगे नहीं परन्तु शेषजी तेरेको द्वापर में मारेंगे तब तेरी मुक्ति होगी हे श्रोता हो इसवास्ते द्विविद को बलदेव मारते

भविता चालःसंकर्षणाहृतः ५ इतिभा० द०उ०शं० मं० सप्तषष्टितमेऽध्यायेसप्तषष्टितमवेणी॥ ६७ ॥श्लो० २॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नानाजन्तुसमाकीर्णं चतुर्वर्णैरधिष्ठितम्। साधुभिर्यतिभिश्चैव गवादिपशुपक्षिभिः१युतं गजाह्वयन्तोये सम्मज्जयितुमुद्यतः। जीवनाशकृतात्पापाद् भयंचक्रेकथंनसः। केवलंकौरवान्हंतुं कथंनैच्छद्य दूद्वहः२वाचक उवाच ॥ महापापंचज्ञात्वापि गुरुनिंदा नक्रोधतः। बभूवव्याकुलोवीरो नास्मरत्तच्चपातकम्३ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टषष्टितमेऽध्याये अष्टषष्टितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

भये तथा त्रेतामें स्वर्ग को नहीं गयाथा ॥ ५ ॥ इति भा०द० उ० शं० मं० सप्तषष्टितमेऽध्यायेसप्तषष्टितमवेणी ॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हस्तिनापुर में अनेक प्रकार के जीव तथा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र साधु सन्यासी गाय और बहुत जातिके पशु पक्षी बसते थे ऐसे हस्तिना पुरको जल में डुबानेवास्ते बलदेव तैयार भये १ ऐसे पाप को नहीं डरते भयेकि हस्तिना पुरको जल में डुबावैंगे तो असंख्यजीव की हत्या हमको लगेगी ऐसीभय नहीं मानते भये तथा अकेले कौरवों को नाश करने वास्ते क्यों नहीं इच्छा किये तमाम पुरतो कुछ अपराध किया नहीं रहा अपराधतो कौरव लोग कियेथे यह बड़ीभ्रम है दोश्लोक को अर्थ मिला है युग्म है २ वाचक बोले कौरवों ने उग्रसेन की तथा यदुवंशकी निंदा किये तब बलदेव को आपने बड़ोंकी तथा सब कुलकी निंदा सुनिकेबड़ाक्रोध भया उसी क्रोधसे व्याकुल होके जीवोंकी

श्रोतार ऊचुः ॥ दुष्टाबुद्धिःकथंजाता नारदस्यमुनीश्वर। षोडशस्त्रीसहस्रैश्च रमणंवैरमापतेः १ शंकितो भूद्विनाकार्य्यं साधूनांनोचितन्त्विदं। अतकृत्स्नमहात्मा नस्मायाग्रसतिकालतः २ वाचकउवाच ॥ प्राणिभि दैवयोगाच्च कृतेन्यूनेपिपातके। शापन्ददौबहुभ्यश्च प्राणिभ्योनारदोमुनिः ३ भूरिशस्तापिताजीवास्तेन पापेनमाधवे। दुष्टबुद्धिर्म्मुनिश्चक्रे श्रीकृष्णे भक्तवत्सले ४ इति भा० द० उ० शं० मं० एकोनसप्ततमेऽध्याये एकोनसप्ततमवेणी ॥ ६९ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

हत्याको भूलिगये ॥ ३ ॥इ० भा०द० उ०शं०मं०अष्टषष्टितमेऽध्यायेअष्टषष्टितमवेणी ॥ ६८ ॥ श्लो० ॥ ४१ ॥

श्रोता पूछते भये हे मुनीश्वर नारद की बुद्धि क्यों भ्रष्ट होगई कि त्रिलोक नाथकी षोड़श १६००० सहस्र स्त्रियोंके संगक्रीड़ा सुनिके बड़ा आश्चर्य मानते भये बिनाकाज प्रयोजन दुःखी होना यह कामसाधू जनोंका नहीं है यह कामतो मूर्खों का है जो कोई कहैकि नारद को माया ग्रसित करिलिई रही है तौ यहबात खिलाफ है माया तौ बारंबार नहीं ग्रसित करती है एकदफे समय पायके ग्रसित करती है २ वाचकबोले जो कोई जीवभूलिके थोराभी पाप करिलेता था दैवयोग से अपनी इच्छा पाप करने की नहीं रही तब ऐसे ३ बहुत जीवों को विना बिचार किहे नारद शापदेते भये इसी प्रकार से बहुतसे जीवोंको नारद शापदेके दुःखदेते भये उन्हपापोंकरिकै भक्तवत्सल जो कृष्ण तिन्ह भगवान् में दुष्टबुद्धि नारद करते भये पाप करिकै बिलकुल पागल होगये॥ ४ ॥ इतिभा०द०उ० शं०मं० एकोनसप्तति०एकोनसप्ततितमवेणी॥६९ ॥श्लो०॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रविष्टस्य सभाम्ब्रह्मन्सुधर्मां न कदापि हि। हृदयेशत्रवस्सन्ति कामाद्याष्षण्महाबलाः १ तत्कथं वासुदेवस्य चोत्पन्नास्तेऽरयस्तदा। यान्गृहीत्वा दुराचारान् जघान परमेश्वरः २ वाचक उवाच ॥ ऐहिकम्पारिकं कार्यं विना कामादिसेवनात्। नसिद्ध्यंति कदापीत्थं तस्मात्सेव्याश्च ते सदा ३ सदसत्सु प्रवर्तंते कामाद्यास्ते विचार्य च। सत्सु गाह्याः परित्यज्ज्याश्चासत्सु कुशलैर्नरैः ४ नासज्जाश्च सुधर्मायां सज्जास्तिष्ठंति सर्वदा। सज्जा गृहीताः कृष्णेन चासज्जा दूरतः

श्रोता पूछते भये सुधर्मा सभा में बैठने वाले जीवों के हृदयमें काम क्रोध लोभ मद मोह मत्सर ये छ बैरी उत्पन्न नहीं होतेथे १ फिरि श्रीकृष्णके हृदयमें कोई छवो बैरी क्यों उत्पन्न होतेभये जिन छ बैरियोंको गृहण करिकै कृष्णजी बड़े बड़े दुष्टोंको मारते भये यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले तीन लोक में यह लोकको काम तथा परलोकको काम बिना काम आदि छवों बैरियोंको सेवन किये कभी भी नहीं सिद्ध होवैंगे इस वास्ते कामआदि छःबैरीको सेवन करना चाहिये३परन्तु विचारिकै सेवन करना क्योंकि ये छवों बैरी सुंदर काममें भीहैं तथा बुरे काममें भी हैं सुंदर काममें छवोंको गृहण करना जैसा सुंदर कामकी इच्छा में लोभ इसी प्रकारसे जान लेना चाहिये तथा बुरे काम में त्यागना चाहिये ४ सुधर्मा सभामें बुरेकाम वाले छबैरी नहींथे सुंदरकाम वाले काम आदि छबैरी रहेथे इसवास्ते सुंदर कामोंके छवों बैरियों को कृष्ण गृहण करते भये बुरेकामवालों को त्यागि दिये क्योंकि ये कामआदिछबैरी सुंदर कर्ममें सुंदरफल देतेहैं बुरे कर्ममें बुराफलदेतेहैं

भ्किताः ५ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ततितमेऽध्याये सप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णपांडवसंयोगे नगरेगजसाह्वये। शूद्राश्चान्त्यजकर्म्माणो म्लेच्छाश्चसर्वयोनयः१ सर्वेषांशृण्वताम्ब्रह्मन् ब्रह्मघोषस्तदाकथम् । बभूव महदाश्चर्य्यं शंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥ वेदपाठोनश्रोतव्यस्त्रिवर्णरहितैर्नरैः । एषोदोषोनचान्यश्च तत्रकेनापिनोश्रुतम् ३ शब्दश्चापिशतघ्नीनान्नकैश्चापितदाश्रुतम्। ब्रह्मघोषस्यकावार्ता कृष्णपाण्डव

हे श्रोताहो इस वास्ते कृष्ण सुधर्मा सभा में बैठिकै सवों बैरियोंको गृहण करिकैदुष्टोंको मारतेभये ५ इति भा०द०उ० शं० मं० सप्ततितमे०सप्ततितमवेणी ॥ ७० ॥ श्लो० ॥ १७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी हस्तिनापुरमें श्रीकृष्णको तथा पांडवों को मिलाप हुआ तब उस वखत शूद्र तथा अंत्यज चर्मकार आदि और सब नीच जाति तथा म्लेच्छ तमाशा देखने वास्ते तथा अनेक प्रकार को काम संसार को करने वास्ते उस सेना में रहेथे १ इन सबको सुनायकै ब्राह्मणों ने ब्रह्म घोष कहे वेद पाठ क्यों करते भये यह हमारे मनमें बड़ी शंका होतीहै क्योंकि वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय दूसरी जाति को वेदका श्रवण करना नहीं चाहिये २ वाचक बोले वेदको श्रवण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सिवाय दूसरेको नहीं करना चाहिये यह दोषहै दूसरा कोई भी दोष नहीं सो वेद को पाठ कोई भी नहीं उस वखत सुनते भये क्योंकि ३ हे श्रोता हो जब श्रीकृष्ण की तथा पांडवोंकी मुलाकाति भई तब ऐसा आदमी को शब्द आपस में होने लगा कि आद-

संगमे ४ इति भा० द० उ० शं० मं० एकसप्ततितमे ऽध्याये एकसप्ततितमवेणी ॥ ७१ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णेनोक्तोजरासन्धस्तेभद्रंराज सत्तम । तत्क्षणे सः कथम्मृत्युम्प्रापामंगलकारणम् १ वाचक उवाच॥कदापिनैवजानन्ति वीरामृत्युममंगलम्। संगरेमरणंस्तेषां तैर्ज्ञातोमंगलंमहत् २ तत्प्राप्तंमागधे नैव भद्रंश्रीकृष्णवाक्यतः ३ इति० भा० द० उ० शं० मं०द्विसप्ततितमेऽध्यायेद्विसप्ततितमवेणी ॥ ७२ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

सियों के शब्द करि कै तोपकी अवाज सौ किसी को सुनी नहीं परी ऐसा शोर हुआ तब वेद पाठ क्यों करिके लोगों को सुनि परै किसीको कुछ नहीं सुनिपरा इस वास्ते ब्राह्मण वेद पाठ करते भये ॥ ४ ॥ इति भा० द०उ०शं०मं०एकसप्तति तमेऽध्यायेएकसप्ततितमवेणीश्लोक ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जरासंधको कहे थे हे राजन् तुमारा कल्याण होवैगा फिरि उसी समयमें युद्ध करिकै कुछ दिन पीछे अमंगल रूप मरण को क्यों प्राप्तहुआ यह बड़ी शंका है कि भगवान् आपने मुख से मंगल होना कहे फिरि वह जल्दी मरि क्यों गया १ वाचक बोले शूरवीर जोहैं सो युद्धमें मरण होने को अशुभ कभी भीनहींमानते युद्ध में अपना मरण होने को बड़ा कल्याण मानते हैं इस वास्ते कृष्णकी वाक्य के प्रमाणसे युद्धमें मरण रूप कल्याण जरा सन्ध को प्राप्त होगया २ इ० भा० द० उ० शं० मं० द्विसप्ततितमेऽध्यायेद्विसप्ततितम वेणी ७२ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ एवंविमुक्तास्तेभूपाः कथंकृष्णेति भाषणम् । चक्रुश्चरस्मात्मवत्तुल्यंमह्यायोग्यमितीरितम् १ वाचक उवाच ॥ सत्संगवर्जिताःपूर्वंमूर्खाग्राम्याश्चमानिनः । इदानीं दुःखिताश्चासन् वाक्यकौशलता कुतः । अतोविनिर्गतन्तेषा माननाद्यत्तथैवतत् २ इ० भा० द०उ० शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्याये त्रिसप्ततितम वेणी ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नकेवलमभूद्यज्ञन्धर्म्मस्यपृथिवी

श्रोता पूछते भये जरासन्ध को बधन करिकै कृष्ण ने बीस हजार राजों को बंदीघर से छुड़ाये तब वो सब राजा भगवान् को हे कृष्ण कहिकै क्यों बुलाते भये जैसा कोई आदमी अपनी बरोबरि वाले को बुलावै तैसा क्यों बुलाते भये बड़ी अयोग्य बात राजोंने कहेहैं राजोंको करुणा चाहता था हे महराज हे त्रिलोकनाथ हे दीन पालक हे दया सागर इन्ह आदि और अनेक प्रकारको दुलार करिकै श्रीकृष्णको बुलाना चाहता था १ वाचक बोले वेराजालोग पेश्तरजो अपनी २ राजगद्दी पर बैठे थे तबतो अभिमान से सत्संग किहे नहीं इसी वास्ते गंवार तथा मूर्ख होगए पीछे से जरासंध पकरिकै बेरी भरिकै जेहल खाने में करिदिया तब दुःखी होगये ऐसे दूनो तरहसे भ्रष्ट जो राजा उनको वचन बोलने की चतुराई क्यों होवै वोतो पशु हैं विना सींग पूछको इसी वास्ते उनराजों के मुख से जो वचन निकलै सोई अच्छा है इसवास्ते भगवानको अपने बरोबरी सरीके बोलेहैं २ इतिभा०द०उ०शं० मं० त्रिसप्ततितमेऽध्यायेत्रिसप्ततितमवेणी ॥ ७३ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी पृथवीमें कुछ पहिले युधिष्ठिर यज्ञ

तले । नापितेनूतनाविप्रास्तेपियज्ञार्हकोविदाः १ कथं विचारयांचक्रुर्यज्ञेधर्मस्यतेतदा । प्रथमार्हचैसुरंचैतन्म हत्कौतूहलन्तदा२वाचक उवाच । नविस्मृतोजगन्नाथ स्सर्वैर्ज्ञातस्सएवच । सर्वत्रापिचयज्ञेचपूजनीयोरमाप तिः ३ एवंसर्वेपिजानन्तस्तथापिदैवयोगतः । प्रमोह यत्सभास्थान्तान् चैद्यकालोमुनीनपि । बालवच्चरितं चक्रुस्तेसर्वेमोहितास्तदा ४ इति भा० द० उ० शं० मं० चतुस्सप्ततितमेऽध्याये चतुस्सप्ततितमवेणी ॥ ७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

नहीं करते भये यज्ञ तौ सतयुग से अनेक राजा किहे हैं तथा युधिष्ठिर के यज्ञ कराने वाले ब्राह्मण भी प्रथमहीं यज्ञ कराने के वास्ते नहीं आये थे ब्राह्मणभी सतयुग से यज्ञ गनती से हीन कराये रहे हैं १ फिर धर्म राजकी यज्ञ में पहिले पूजन करने वास्ते देवता को विचार क्यों करते भये कि पहिले पूजन किसका करना जो बात प्रथम होती है उस बात को विचार करना चाहिये जो हजारों वर्ष से बात होती आती है उसको क्या विचार करना यह बड़ी शंका होतीहै २ वाचक बोले सब ब्राह्मण भगवान् को भूलि नहीं गयेथे सब जानते थे कि सब कामोंमें तथा यज्ञमें भी भगवान्को पूजन करना चाहिये ३ ऐसा जानते थे परन्तु दैवयोग से शिशुपालको काल सब मुनियोंको तथा यज्ञ की सभा में बैठने वाले प्राणियों को मोहिलेता भया काल करिकै मोहित मुनि जन सब भये और सब मानुष्य बालक सरीके कर्म करते भये क्योंकि जोयज्ञमें पहिले पूजनकरने लायककौनहै ऐसा बिवाद नहोता तौ शिशुपाल कृष्णकी निन्दा क्यों करता विना निन्दा किये

श्रोतार ऊचुः ॥ एकपत्नीव्रतोस्माभिश्श्रुतोराजा युधिष्ठिरः । स्वपत्नीभिःकथंयज्ञे शुशोभधर्मनंदनः १ वाचक उवाच ॥ दृष्ट्वापतिव्रतन्तस्या द्रौपद्याधर्म्मनंदनः । आत्मानंसततंमेने गनदानेकसंयुतम् २ ज्ञात्वा तन्मानसम्भावं मुनिनोक्तस्तथापिच। इति० भा० द० उ० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्यायेपंचसप्ततितमवेणी ७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

क्यों मारिजाता हे श्रोताहो इस वास्ते शिशुपाल के काल करिकै मोहित जो मुनि तथा और सब सभा में बैठनेवाले प्रथम पूजन करने लायक को विचार करते भए ४ इ० भा० द० उ०शं० मं० चतुस्सप्ततित० चतुस्सप्ततितमवेणी॥ ७४ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भए शास्त्र में तथा लोक में भी ऐसा सुना है हम सब कि युधिष्ठिर राजा एक स्त्री सिवाय दूसरी स्त्री के संग अपना विवाह नहीं किए कारण युधिष्ठिर के एक स्त्री थी फिरि यज्ञ में बहुत स्त्रियों करिकै शोभायमान युधिष्ठिर क्यों होते भए यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले द्रौपदी ने युधिष्ठिर की सेवा ऐसी किया कि जो सेवा कोटियों स्त्री के किये से कभी नहीं बनैगी ऐसे द्रौपदी के पतिव्रतको युधिष्ठिर देखिकै मनमें जानते भए कि हमारे कोटियों स्त्री हैं तथा व्यासजी भी युधिष्ठिर के मनकी बात जानिकै कहते भए युधिष्ठिर अपनी बहुत सी स्त्रियों करिकै सहित अपनी यज्ञ में शोभित होते भए इतिभा० द० उ० शं० मं० पंचसप्ततितमेऽध्याये पंचसप्ततितम वेणी ॥ ७५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः॥ प्रद्युम्नश्चशरैर्जघ्ने शाल्वन्तत्सैनिकानपि। मेनिरेपरमाश्चर्यन्तन्दृष्ट्वाचकथम्मुने। सैनिकास्स्वस्यतस्यापि किमिदंकर्म्मनूतनम् १ वाचक उवाच॥ कृष्णाद्दतेनकस्यापि ब्रह्मणोवरदानतः। शाल्वंससैन्यकंयुद्धे शक्तिरस्तिविमर्दितुम् २ प्रद्युम्नेनार्दितश्शाल्वो युद्धेसैन्यसमन्वितः। ब्रह्माद्यामेनिरेश्चर्य्य मन्येषांचैवकाकथा ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्ततितमेऽध्यायेषट्सप्ततितमवेणी॥ ७६ ॥ श्लो० ॥ २० ॥

श्रोतार ऊचुः॥ माययाकल्पयच्छाल्वो वसुदेवंकथन्तदा। एषामहीयसीशंका बुद्धिन्नोभ्रामयेत्सदा १

श्रोता पूछते भए कि प्रद्युम्नने बाण करिकै शाल्व को तथा शाल्व की फौजको मूर्छित करि दिए तब प्रद्युम्न के ऐसे पराक्रमको देखिकै शाल्वकी फौज तथा प्रद्युम्न को आश्चर्य क्यों मानती भई प्रद्युम्न को क्या यह नवा कर्म है ऐसा कर्म तो अनेक दफे प्रद्युम्न किए थे गुरुजी यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले शाल्व को ब्रह्माने वर दिए थे कि तेरे को तथा तेरी सेना को युद्ध में श्री कृष्णजी मूर्छित करैंगे और तीन लोकमें कोई प्राणी तेरेको तथा तेरी सेना को दुःखित नहीं करि सकैगा २ जब प्रद्युम्न शाल्व को सेना सहित मूर्छित किया तब ब्रह्मा आदि सब देवता आश्चर्य मानतेभये तथा दूसरा प्राणी आश्चर्य मानि लिये तब क्या बड़ी बात हुई ३ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्सप्ततितमेऽध्याये षट्सप्ततितमवेणी ७६ ॥ श्लोक ॥ २० ॥

श्रोता पूछते भये शाल्व माया करि कै बसुदेव की मूर्ति बनाय लिया गुरुजी यह शंका तौराति दिन हम सबकी बुद्धि

वाचक उवाच ॥ शाल्वायब्रह्मणादत्तो वरोमायाचशि
क्षिता । कृतेत्रिदेवास्सर्वेषाम्प्राणिनांकल्पनाबलिः २
विधिनोक्तस्तथाशाल्वो यदात्वंकल्पयिष्यसि । वसुदेव
न्तदामृत्युं ध्रुवम्प्राप्स्यसिदानव ३ एवमुक्तोपिविधिना
विस्मृत्यकालयोगतः । कल्पयामासवैशौरिं कृष्णेन
तत्तोहतः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्तित
मेऽध्यायेसप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लो० ॥ २५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ संकर्षणस्स्वयंशेषस्तस्यभाव्यंकुतः
प्रभो । बलाद्यस्यतदाजघ्ने सूतंसंकर्षणोविभुः १

असाती है क्योंकि राक्षस माया करिकै अनेक प्रकारकी वस्तु
बनाय लेते हैं शास्त्रों में लिखाहै परन्तु वसुदेव सरीके तपस्वी
कि जिन के वैकुंठनाथ पुत्र होते भये तिनकी मूर्ति को माया
करिकै राक्षस बनाय लिया यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले
ब्रह्मा ने शाल्व को वरदान दिये थे कि ब्रह्मा विष्णु शिव इन
की मूर्ति तेरी बनाई नहीं बनैगी और तीन लोक में जिसकी
मूर्ति बनाया चाहैगा तिसकी मूर्ति बनाय लेवैगा २ तथा ब्रह्मा
शाल्व को ऐसा भी कहे थे जब तू वसुदेव की मूर्ति बनावैगा
तब तेरी मृत्यु होवैगी ऐसे ब्रह्मा के वचनको कालकी वशि
होकै भूलि गया वसुदेव की मूर्ति बनाया तब श्रीकृष्ण शाल्व
को मारिडाले हे श्रोताहो इस वास्ते शाल्व वसुदेवकी मूर्ति
बनाता भया ॥४॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० सप्तसप्ततितमेऽ
ध्याये सप्तसप्ततितमवेणी ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भावी प्राकृति जीवों के वास्ते
है उन से भला बुरा कर्म कराय सकती है कुछ भगवान् के
ऊपर भावी को जोर नहीं चलता तौ फिरि बलदेवजी शेष

वाचकउवाच॥किंचित्कर्तुंनवैशक्ताश्चेश्वराणांचसज्जनाः। भाव्यन्तथापिमर्यादा पालितुंतस्यतेत्रयः। तद्वशाःकर्म्म कुर्वंतिलोकेभाव्याहिकारणात् २॥इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टसप्ततितमेऽध्याये अष्टसप्ततितमवेणी ॥७८॥ श्लोक ॥ २८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगामसर्वतीर्थानि प्राधान्यानि बलस्तदा । वाराणसीमवन्तीचनेयायकारणंकिमु । सेवितास्चद्वयोःपार्श्वे येतीर्थास्तेनसर्वशः १ वाचक उवाच ॥ काश्यवन्त्योःफलंचार्द्धं पत्नीहीनेनप्राप्यते । एकाकिनाकृतास्सर्वे तीर्थास्तेनतेतदा २ आयास्या

भगवान् थे सो भावी की वशि होके सूत जी को क्यों मारते भये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले हे सज्जनों ब्रह्मा विष्णु महेश्वर के ऊपर कुछभी भावी नहीं करसकती तथापि भावी की मर्यादा पालना करने वास्ते तीनों देव संसार में भावी की वशि होके अनेक प्रकार को काम करते हैं इस वास्ते शेष रूप जो बलदेव सोभावी की बशि होके सूतको मारते भये २ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टसप्ततितमेऽध्यायेअष्टसप्तति तमवेणी ॥ ७८ ॥ श्लो० ॥ २८ ॥

श्रोता पूछते भये बलदेव जी सब तीर्थ को जाते भये काशी को तथा उज्जैन को क्यों नहीं गये और काशी के तथा उज्जैन के आसपास जो तीर्थ थे उनकोतो गये परन्तु एदोनों बड़ेतीर्थ तिनको क्यों छोड़िदिये यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले शास्त्र में ऐसालिखा है कि स्त्रीबिना अकेला मानुष्य काशी तथा उज्जैन इन दूनों तीर्थों को दर्शन करता है तब उस को आधा फलप्राप्त होता है और बलदेव

मिपुनस्तौद्वे काश्यवन्त्यौसुपुण्यदे।सपत्नीकश्चैतदर्थं न पुर्योद्वौजगामसः ३ इति भा०द० उ० शं० मं०एकोन अशीतितमेऽध्यायेएकोनअशीतितमवेणी ॥ ७९ ॥ श्लोकनियमोनास्तिसमस्ताऽध्यायेशंका ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णस्यांतःपुरेब्रह्मन् किमज्ञाश्चापिसंस्थिताः। येपूजितंचतन्दृष्ट्वा कृष्णेनचकिताभवन् १ वाचक उवाच ॥ कृष्णस्यान्तःपुरेनाज्ञा किंतुगोलोकवासिनः। कृष्णादन्न्यन्नजानन्ति श्रेष्ठकमपिसर्वदा २ अकेले तीर्थों को गये स्त्रीसंग नहीं रही इसवास्ते आधाफल होना बिचारिके काशी तथा उज्जैन को नहींगये बलदेव जी ऐसा बिचारकिये कि स्त्रीको संगलेके फिरि काशी को तथा उज्जैन को आवेंगे हे श्रोताहो इसवास्ते काशी तथा उज्जैन को नहीं गये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं०एकोनअशीतमेऽध्यायेएकोनअशीतमवेणी ॥ ७९ ॥ श्लोक को नेम नहीं ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी कृष्ण भगवान् के महलों के दरवाजेपर मूर्ख लोगवसे थे क्योंकि जो मूर्ख लोग नहीं पहरा देतेहोतेतौ भगवान् सुदामाको पूजन कियातौ वोलोग आश्चर्य क्यों मानते क्योंकि सज्जन लोगतो जानतेहैं कि भगवान्तौ ब्राह्मणको पूजन सदा करतेथे वोआश्चर्य क्यों मानते यहबड़ी शंका होती है १ वाचक बोले कृष्णके हवेलीमें मूर्ख नहीं रहे थे गोलोक बासीथे उनलोगोंकी यह प्रतिज्ञाथी कि श्रीकृष्णसे बड़ा तीनलोकमें किसी को नहीं जानतेथे२ब्रह्मा आदि देवतों को तथा योगियोंकोब्राह्मणोंको भी कृष्णसे बड़ानहीं जानतेथे

टीप॥इसअध्याय में श्लोक को नियम नहीं सब अध्यायमें शंका है॥

ब्रह्मादिसुरवर्गांश्चाद्विजान्योगकरानपि।एतदर्थंचचक्रि
तास्तंदृष्ट्वाकृष्णपूजितं ३ इति भा० द० उ० शं० मं०
अशीतितमेऽध्यायेअशीतितमवेणी ८० ॥श्लो०॥२४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंश्रीर्जगृहेहस्तं जग्धुकामस्य
तंडुलम् । द्वितीयमुष्टिमाचार्य वदेदंभ्रमवारिधिं १
वाचक उवाच ॥ निरीक्ष्यब्राह्मणेप्रीतिं कृष्णस्यदुर्बले
ऽचलाम्। विचार्यरुक्मिणीभीता कुरुतेमत्पतिंद्विजम्२
स्वयंचब्राह्मणीभर्ता भविष्यन्त्यद्यवैहरिः।पतिव्रतश्चमे
शीघ्रं नाशमेष्यतिनिश्चितम् । अतोजग्राहहस्तं सात

इसवास्तेसुदामाके पूजनको कृष्णकिये तौसब आश्चर्यमानते
भये कि इन्हसे बड़ा यह कौन आया जिसका पूजन भगवान
करतेभये ॥ ३ ॥ इति भा०द०उ०शं० मं० अशीतितमेऽध्याये
अशीतितम वेणी ॥ ८० ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोता पूछते भये हे वाचक जी महाराज सुदामा के हाथ
से छीनिकै एकमूठी चावल कृष्ण चाबिलेते भये दूसरी मूठी
फिरि चाबने लगे तबरुक्मिणीजी कृष्णकोहाथपकड़िलिया
यह बड़ीशंका को समुद्र है तिसको आपुहम सब को पारकरो
१ वाचक बोले रुक्मिणीने श्रीकृष्णकी प्रीति सुदामामें बहुत
देखिकै डरिगई कि लक्ष्मी जोमैंहूंसो मेरेको ब्राह्मणको देवैंगे
चावल के बदले में २ तब मेराब्राह्मण पति होवैगा तथा आपु
भगवान ब्राह्मण की स्त्री जोअलक्ष्मी तिसकेपति होवैंगे तब
मेरापातिव्रत धर्मभीनाश होजावैगा ऐसा बिचारिकै रुक्मिणी
ने भगवानको हाथ पकड़ि लिया है चावल नहीं चाबने दिया
इन सबको अर्थ यहहै कि प्रेमसे चावल चाबिकै भगवान
ब्राह्मण कोतौ लक्ष्मीपति करते आपु दरिद्र पति होते ऐसा

त्पशाकमलापतेः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० एका
शीतितमेध्यायेएकाशीतितमवेणी ८१॥श्लो०॥ १० ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ धर्मराजाश्रयाभूपा बभूवुर्विस्मिताः
कथम्। श्रीकृष्णंचसमालोक्य सभार्य्यंमुनिसत्तम १
वाचक उवाच ॥ सर्वत्रकृष्णवाक्यंच श्रुतम्भूपैस्तुस
र्वदा। वर्णितम्मुनिभिश्शास्त्रे स्त्रियश्चनरकार्तिदाः २
निरीक्ष्यातोयुतंताभिस्संस्मृत्यमुनिभाषितम्। सशं
काश्चाभवन्भूपास्ताशामपिचशानुगम्३ इतिभा० द०
उत्तरार्द्ध शं० मं० द्वैशीतितमेऽध्यायेद्वैशीतितमवेणी॥
८२॥ श्लो०॥ २६॥

सुदामासे कृष्ण को प्रेमथा॥ ३॥ इति भा० द० उ० शं०मं०
एकाशीतितमेऽध्यायेएकाशीतितमवेणी॥ ८१॥ श्लो०॥ १०॥

श्रोता पूछते भये हे मुनि सत्तम युधिष्ठिर की आज्ञा करने
वाले राजों ने श्रीकृष्ण को स्त्री सहित देखिके विस्मयको क्यों
प्राप्त भये यह बड़ी शंका होती है १ वाचक बोले सब शास्त्रों
में कृष्ण के वचन को राजा लोग मुनियों के मुख से सुने थे
कि भगवान् कहे थे सब शास्त्रों में कि स्त्री लोग नरक की देने
वालीहैं जो कोई जीव मोक्ष चाहैसो जीव स्त्री लोगोंकीसंगति
नकरै २ फिरि स्त्रियों करिकै सहित कृष्णको राजों ने देखिकै
तथा जो जो काम करने को स्त्री लोग कहती हैं उस काम को
जल्दी कृष्ण करते हैं ऐसा स्त्रियों की वशि भये कृष्णको
देखिकै राजा लोगविस्मयकोप्राप्तभये कि और जीवों को स्त्रीकी
बशि होनामना करतेहैं और आपु स्त्रियोंकी बशि होगये हैं हे
श्रोताहो इस वास्तेराजालोग विस्मयको प्राप्तभये३इति०भा०
द०उ०शं०मं०द्वैशीतितमेऽध्याये द्वैशीतितमवेणी८२श्लोक॥२६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदशास्त्रप्रमाणोयं सर्वेषांभगवान् गुरुः। चराचराणांलोकानां जीवानांगतिरच्युतः १ तान्सर्वान्वैपरित्यज्य कथंगोपीगतिर्गुरुःव्यासेनोक्तश्च श्रीकृष्णः शंकाब्धिगुरोचनः २ वाचक उवाच ॥ अत्रगोप्योनताःप्रोक्ता व्यासेनकृष्णवल्लभाः। गोपश्च भगवान्प्रोक्तो गोपीमायाथसिंधुजा ३ तयोःपतौरमा नाथे सम्भूतेजगताम्पतौ। गतिर्गुरुश्चविज्ञेयो यतःशक्तिमयंजगत्। अतोगोपीपतिःप्रोक्तोगुरुश्चापियदूत्तमः ४ इतिभा० द० उ० शं० मं० त्र्यशीतितमे ऽध्याये त्र्यशीतितमवेणी ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये वेदको शास्त्रको ऐसा प्रमाण है कि तीन लोक में जो चर अचर जीव हैं तिन सब जीवों के भगवान् गुरु है तथा गतिभी है १ फिरि व्यासजी सब जीवोंको त्यागि कै भगवान् के गोपियों को गुरु तथा गति क्यों कहेथे यह बड़ी शंका होती है २ वाचक बोले गोपीनां सगुरुर्गतिः इस श्लोकको अर्थ व्यास जी व्रजकी गोपी जो श्रीकृष्णकी प्यारी थीं उन गोपियों को गोपी न कहेथे उस श्लोकको अर्थ व्यास जी ऐसा किये हैं कि गो शब्दको संसारभी कहते हैं शास्त्रों में ऐसा गो कहे चर अचर संसार उस को जो रक्षा करै तिसको नाम गोप है गोप भगवान् हैं तथा गोपी भगवान्की माया है सोई मायारूप लक्ष्मीहै ऐसाअर्थ गोपी को व्यासमुनि कियेहैं ३मायाके तथा लक्ष्मीके तथा जगत्के पतिजो भगवान् सो कृष्ण होकै पृथ्वी में विराजमान रहेथे इसवास्ते माया के पति तथा गुरुभी भगवान् हैं क्योंकि माया रूप संसारहै इसवास्ते कृष्णको गोपीपति तथा गुरु व्यास जी

श्रोतार ऊचुः ॥ कथम्प्रोक्तोभगवता भौमेपूजकधीः पुमान् । गोखरस्सस्तुविख्यातो तोयेतीर्थमतिस्तथा १ वाचक उवाच ॥ वेदशास्त्रेषद्वौमार्गौ प्रोक्तौविधिविधानतः । कर्म्ममार्गोमोक्षमार्गौ द्वाविमौजीवसेवितौ २ कर्म्ममार्गाश्रयोजीवो भवेत्पूजकधीर्यदा । भौमेजलेऽतुलंसौख्यम्प्राप्नुयादितिनिश्चितम् ३ मोक्षमार्गरतोजीवो भौमेपूजकबुद्धिमान् । जलेतीर्थमतिश्चापि गो खर

कहेथे वृजवाली गोपियों को पति गुरु अकेला नहीं कहेथे॥४॥ इति भा० द० उ०शं० मं०त्र्यशीतितमेऽध्यायेत्र्यशीतितमवेणी ८३ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्णजी ब्राह्मणसे कुरुक्षेत्र में कहेकि भौम जो प्रतिमा देवतों की होती है उस प्रतिमा में जोप्राणी देवता मानते हैं कि यह प्रतिमामें भगवान् बसे हैं सो प्राणी मानुष्य नहीं है ऐसा मानने वाले प्राणी बैल तथा गदहाहो हैं तथा जल में तीर्थ मानते हैं कि इस तीर्थ में स्नानकिये से मोक्ष होवैगा वोभी बैलगदहा हैं हेगुरुजी ऐसा वचन क्यों कहे प्रतिमाकी तथा गंगा आदि तीर्थों की निंदा भगवान् करते भये हैंयह वड़ी शंका होती है १ वाचक बोले वेद में तथा शास्त्र में दो मार्ग लिखेहैं एक कर्म मार्ग दूसरी मोक्षमार्ग संसारी जीव दोनों रस्ताको सेवन करताहै २ जो जीव कर्म मार्ग को सेवन करताहै जैसा गृहस्थ आदि कामना जीव प्रतिमा में देवता मानैगा तथा जल में स्नान किये से मोक्ष होना मानैगा तब निश्चय से कर्म करने वाले जीव को गनती से हीन सुख प्राप्त होवैगा ३ औरजो जीव मोक्ष मार्ग को सेवन करते हैं वो जीव प्रतिमा में देवता जानैंगे तथा

स्सस्तुकथ्यते४भगवद्वचनन्त्वेतज्जीवस्यकर्मिणोनहि। सन्न्यस्तस्यविजानीयान्नान्यथाभ्रममावहेत्५इतिभा० द० उ० शं० मं० चतुरशीतितमेऽध्यायेचतुरशीतितमवेणी॥ ८४॥ श्लो०॥ १३॥

श्रोतार ऊचुः॥ नपीतम्वासुदेवेन देवकीस्तनजम्पयः। पीतशेषंकथम्प्रोक्तं तत्पयोयत्पपुश्चते१वाचक उवाच॥ त्रिविधंकर्म्मसंप्रोक्तं वेदेशास्त्रेचलौकिके। प्रतिमा को पूजन करैंगे तथा जल में स्नान कियेसे मोक्ष होना मानैंगे तब वे प्राणी बैल तथा गदहा हैं ४ कृष्णऐसा कहे हैं कि कर्म मार्ग सेवन करने वाले जीवके वास्ते यह वचन नहीं कहे जो जीव संसार को कर्म त्यागिकै ईश्वर को भजन करता है उसजीव के वास्ते यह वचन कहे हैं हे श्रोता हो इसवास्ते ऐसा कृष्ण के वचन में भ्रम नहीं है॥ ५॥ इति भा० द०उ० शं० मं० चतुरशीतितमेऽध्यायेचतुरशीतितमवेणी॥ ८४॥ श्लोक॥ १३॥

श्रोता पूछते भये देवकी के बालकों का श्रीकृष्ण लैआय दिहे तब वेसब बालक देवकी के स्तन को दूधपीते भये तो भागवत में लिखा है कि कैसा देवकी के स्तनको दूधथा जिसको बालक पीते भये पेश्तर भगवान् देवकी के स्तन को दूध पियेथे जोबाकी रहाथा दुग्ध उसको पीछेसे देवकी के पुत्रोंने पियाथा हे गुरु जी बड़ी शंका हाती है कि भगवान् तो जन्मधरि कै तुरत ब्रजको गये देवकी को दूधनहींपिये फिरि यह क्यों व्यासजी कहते भये १ वाचक बोले वेदों में शास्त्रों में लोक में तीन प्रकार को कर्म वर्णन होता है एक बचन से कर्म होता है दूसरा मनसे कर्म होता है तीसरा शरीर से कर्म्म होता है इनतीनों कर्मों में कोईकर्म छोटा नहींहै तथा

वाङ्मनःकायजंकर्म न्यूनाधिकविवर्जितम् २ प्रपीतन्ते नमनसा देवकीस्तनजम्पयः । कृष्णेनसर्वदातश्च पीतशेषन्प्रभाषितम् ३ इति० भा० द० उ० शं० मं० पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितमवेणी८५श्लो० ५५

श्रोतार ऊचुः॥विदेहनगरेब्रह्मन् गमनंमुनयस्तदा। कुर्वन्तश्चानिशन्तस्मान्निर्यातास्स्वस्वमाश्रमम् १ आलोकिताःपुरजनैस्सुज्ञैरपिमुनीश्वराः। श्रुतपूर्वाबभूवुस्ते कथन्तैश्चमुनीश्वराः २॥वाचक उवाच॥ नसर्वकालिकः पूर्वोग्राह्योत्रातिसुकोशलैः। यदापश्यन्पुरजनाःप्राप्तान्

कोई कर्म बड़ाभी नहीं है येतीनों कर्म बरोवरि हैं २ देवकीके स्तनके दूधको भगवान्सबदिन मनकरिकै पीतेभये जोमनसे दूधपियेतो वचन तथा शरीर से दूधको पीनासत्य होगया इस वास्ते व्यास जीने कहे हैं कि कृष्णजी के पीनेसे जो दूध बाकी देवकीके स्तनमें था उस को वो सब बालक पीतेभये ॥ ३ ॥ इ०भा०द०उ०शं०मं० पंचाशीतितमेऽध्यायेपंचाशीतितम वेणी ८५ ॥ श्लोक ॥ ५५ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी मुनिलोग विदेह राजाके नगर को सदा आतेथे तथा नगरमें कुछदिन बासकरिकै अपने अपने आश्रमको जातेथे १ तब जनकपुरीमें बड़े बड़े महात्मा तथा और प्रजा बसेथे तब वह पुरवासी प्रजा तथामहात्मा जन मुनियोंको देखतेथे पहिंचानतेथे फिरि क्यों व्यास जी कहेकि पेश्तर जिन मुनियोंको ब्राह्मण मुनि रक्खाथा उन मुनियोंको पूजनकरता भया गुरुजी इस वाक्यसे मालूम परताहैकि नारदादि मुनिजनक पुरीको कभीभी नहीं नये नये २ कृष्णकेसाथ गये हैं इसवास्ते व्यासजी कहेहैंकि जनक

मुनिवरांश्चते ३ तत्पूर्वग्रहणंचात्र ज्ञातव्योतिविच क्षणैः। आयातिमुनिभिस्सार्द्धं मेतैःकृष्णश्चतैश्श्रुता। श्रुतपूर्वास्ततःख्याता मुनयःपुरवासिभिः ४ इति भा० द० उ० शं० मं० षट्अशीतितमेऽध्यायेषट्अशीतितम वेणी॥ ८६ ॥श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नृणांक्षेमायचाकल्पान्मुनिर्नारायणोहरिः। तपस्यतिष्ठादित्युक्तं तत्किंस्वस्तिनृणामिह १

पुरवासी प्रजा देखेनहींथे परंतु सुने तोथे कि अमुक २ मुनि पृथ्वीमेंहैं यह शंका हम सबके मनमेंहै २ वाचक बोले (श्रुत पूर्वान्मुनीश्वरान्) इस श्लोकमें विद्वान्जन सब दिन तथा बर्ष को तथा बहुतदिन को पहिले नहीं मानते बहुत दिन तथा बर्ष से तो पुरबासी प्रजा सब मुनियों को जानते थे परंतु जब श्रीकृष्णके साथ सब मुनि आये तब सब मुनियों को पुरवासी प्रजा देखते भये ३ उसवखतसे पहिले सुनि राखेथ मुनियोंको पुरबासी ऐसा अर्थहै क्यों जनकपुरमें बड़ा शोर मचिगयाथा कि श्रीकृष्ण जनकपुरीको आतेहैं तिनके साथ अमुक २ मुनिजनभी आतेहैं ऐसा पुरवासी सुनेथे तब जिनको २ आनेका सुनेथे सो सब आयगये तिन सबको पूजन करतेभये हेश्रोताहो (श्रुतपूर्वान्मुनीश्वरान्)को अर्थ व्यास मुनि ऐसा कियेहैं और ऐसा नहीं किये कि कभीदेखे नहींथे सुनेथे ४ इतिभा० द० उ० शं०मं०षडशीतितमेऽध्याये षडशीतितम वेणी ॥ ८६॥ श्लो० ॥ २३ ॥

श्रोता पूछते भये गुरुजी बद्रिकाश्रम में नारायणनाम मुनि मानुष्योंके कल्याण होनेवास्ते बहुत युग कल्प कल्पांतसे तप करतेहैं सो उस तपकरिकै मानुष्योंको कल्याण क्या होता

वाचक उवाच ॥ विषयेन्द्रियजाःसौख्यास्सर्वत्रसर्वयो निषु। ज्ञानमेवपरंसौख्यम्भारतेष्ववर्तते २ प्रभावात्त स्यतपसोज्ञानान्नान्यंन्रणामिह। सौख्यन्तस्मान्मुनिश्च क्रेन्रणांक्षेमायचैतपः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० सप्ता शीत्यऽध्यायेसप्ताशीतिवर्णी ॥ ८७ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वृकस्यवंचनेविष्णुर्ब्रह्मचारीबभू वह। कथन्नभगवान्दध्रे चान्यरूपंसुचंचलम्। बटोर्यो ग्यंसम्प्रोक्तम्बेदेचानृतभाषणम् १ वाचक उवाच ॥ नकेषामपिविश्वासस्त्रिलोकेष्वपिमन्यते। वृकोमहाबली

है यह शंकाहै१वाचकबोलेसब जीवोंको इन्द्रियोंको जुदा जुदा विषय सुखसबलोकमेंहैं परंतु नारायण नाम मुनि भारतखण्ड में तप करते हैं इसवास्ते मनुष्यों को ज्ञानको सुख तथा मोक्ष रूपकल्याण ज्ञान से होना भरतखंड सिवाय दूसराद्वीप तथा खंड तथा और लोकमें ज्ञाननहींहै हेश्रोता हो ज्ञानसे दूसरा कल्याण मनुष्यों को कोईभी नहीं है इसवास्ते मनुष्यों के कल्याण होनेवास्ते नारायण मुनि तपकरतेहैं ऐसा लिखाहै ३ इति भा० द० उ०शं०मं० सप्ताशीतितमेऽध्याये सप्ताशीतितम वर्णा ८७ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोता पूछते भये वृकासुरको छलने वास्ते परमेश्वर ब्रह्मचारीको रूप क्यों धारण करते भये क्योंकि वेदमें ब्रह्मचारी को झूठ बोलना खोटी बात लिखीहै इसवास्ते और अनेक रूप भगवान्के बनाये संसारमेंहैं दूसरा रूप धारण करिके छल करना योग्यथा यह बड़ी शंका हमारे सब के मनमें होती है सो आप कृपाकरि के उसका छेदनकरो १ वाचक बोले वृकनाम दैत्य तीन लोक में किसी को विश्वास

धर्तौद्वयोश्चमन्यतेसदा २ नारदस्यचभेषस्य ब्रह्मचारिणएवच । नारदेनोपदिष्टंतं ज्ञात्वातोभगवांस्तदा। ब्रह्मचारिवपुर्धृत्वा कार्य्यंचक्रेजगत्पतिः ३ इति भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्यायेअष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ त्रिषुदेवेषुकःश्रेष्ठो विचारोयमनर्थकः । अज्ञानांचैवबालानां मूर्खेशानाम्पुनःपुनः १ महदद्भुतमेतद्धिऋषयश्चक्रिरेकथम् । वाचक उवाच॥

नहीं मानता था क्योंकि वह बड़ाधूर्तथा सबदिन बड़ामानी था२परन्तु तीनलोक में दोजने को बिश्वास मानताथा एक तौ नारद को दूसरा ब्रह्मचारी के भेषको भगवान् विचार कियेकि यह दैत्य नारद की आज्ञा मानिकै यह कर्म किया है इसवास्ते ब्रह्मचारी को रूप धरिकै सब काम भगवान् करते भये ॥ ३ ॥ इ० भा० द० उ० शं० मं० अष्टाशीतितमेऽध्याये अष्टाशीतितमवेणी ॥ ८८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी तीनदेवतोंमें बड़ादेवताकौनहै ब्रह्माबड़ा है कि बिष्णु बड़ाहै किशिवबड़ाहै ऐसा विचार मुनिजन क्यों करते भये क्योंकि ऐसा विचारतौ बड़े बड़े अज्ञानी तथा बालक तथा बड़े बड़े मूर्ख करतेहैं मुनिलोग ऐसा विचार कभी नहीं करते यह बड़ीशंकाहै१ वाचक बोले किसारस्वत मुनिके बंश में जन्मलिये जो ब्राह्मण सो सब ब्रह्मकर्म में बड़े निपुण होतेथे ऐसा ब्रह्मकर्म के अभिमान करि कै सब देवतों को तथा मुनिजन को अनादर करते भये बचन करिकै भी किसीका आदर नहीं करते थे २ ऐसा सारस्वत ब्राह्मणों का अभिमान भगवान् जानि कै बिचार कियेकि ऐसा अभिमान

सारस्वतकुलेजातास्तेविप्राःकर्म्मगर्विताः।मुनीन्सुरान्
तिरश्चक्रुर्नादुरंवचनैरपि २ ज्ञात्वैतान्ब्राह्मणान् विष्णु
र्नरकंगन्तुकामुकान् । कृपयाबुद्धिसम्मोहन्तेषांचक्रेमखे
हरिः ३ अतोविस्मृतज्ञानास्ते बभूवुर्भ्रमतापिताः।भृगु
प्रवर्णितंश्रुत्वा मानहीनाबभूविरे ४ इति भा० द० उ०
शं० मं० एकोननवतितमेऽध्यायेएकोननवतितमवर्णी
८९॥श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मानुष्यवत्कथंचक्रे महाक्रीडांजग
त्पतिः । कृष्णःस्त्रीभिश्च स्वीयाभिर्द्वारकायाम्मुनेवद १
वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वाकलियुगम्प्राप्तं भविष्यन्ति
करिकै येसब सारस्वत ब्राह्मणनरकमें पड़ैंगे क्योंकि हमै आदि
लेकै इयतने देवता तथा ब्राह्मणहैं तिन्ह सबको येब्राह्मण कुछ
भी नहीं जानते ऐसा भगवान् विचारि कै उन्हहीं ब्राह्मणों
की यज्ञमें कृपा करिकै उन्हहीं ब्राह्मणोंकी बुद्धिको भ्रष्टकरि
देतेभये तबतो सब ब्राह्मण ज्ञानको भूलिगये पागल बिल-
कुल होगये मूर्खता से भस्महोने लगे कुछदेरपीछे भगवान् को
चरित्र भृगुवर्णन किये तब सब सारस्वत ब्राह्मण अभिमान से
रहित होगये हे श्रोताहो इसवास्ते सारस्वत ब्राह्मण बुद्धि भ्रष्ट
होगये ॥३।४इति भा० द० उ०शं० मं०एकोननवतितमेऽध्याये
एकोननवतितमवर्णी ॥ ८९ ॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरु जी श्रीकृष्ण अपनी स्त्रियों के
संग मानुष्यके सरीके क्रीड़ा क्यों करते भये द्वारका पुरीमें हे
मुनिजी इसशंका को उत्तर आपु कहो १ वाचक बोले श्री
कृष्ण जी विचार कियेकि अब थोरेही दिनमें कलियुग आवै-
गा कलियुग में बड़े बड़े दुष्ट अधर्मी ऐसे मनुष्य जन्मैंगे अपनी

नराधमाः । परस्त्रीशक्तमनसस्स्वस्त्रीताडनकारकाः २ विनंक्ष्यतितदाधर्म्मः स्त्रीपुंसोर्वेदनिर्म्मितः। कलिजानांनराणाम्वै शिक्षणायरमापतिः३ चक्रेस्त्रीभिर्महाक्रीडां कलिस्त्रीरक्षणायच। ममेदंक्रीडनंश्रुत्वा जारंसंत्यज्य मानवाः। सर्वोपायैःस्वस्त्रियस्ते पूजयिष्यन्तिवैकलौ ४ इति भा० द० उ० शं० सं० नवतितमेऽध्यायेनवतितम वेणी ॥९०॥ श्लो० ॥ १ से २ तक ॥

स्त्रीको छोड़ि के दूसरेकी स्त्रीसे मन लगावैंगे अपनीस्त्री को अन्नवस्त्र नहीं देवैंगे जो स्त्री कुछ बोलैगी तौ मारैंगे २ तब वेदमें जो विवाह हुये स्त्रीपुरुषको धर्मलिखाहै सो नष्ट होवैगा तब सनातन धर्म नष्ट हुये पर वर्णसंकर प्रजा होवैगी तब पृथ्वी रसातलको जावैगी और जल्दी हमको अवतार लेना पड़ेगा ऐसा भगवान् विचारिकै कलियुगमें उत्पन्नजो मनुष्य होवैंगे उनमानुष्योंको सिखानेवास्ते ३ तथा कलियुग में स्त्रियोंकी रक्षाकरने वास्ते अपनी स्त्रियोंके साथ बड़ी क्रीड़ा कृष्ण करते भये कृष्ण विचारि कियेकि हमारी अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ाको कलियुगके मानुष्य सुनिकै जारकर्म छोड़ि कै अपनी अपनी स्त्रियोंको आदर पूजन करैंगे जानैंगे कि अपनी स्त्री गृहस्थी में बड़ी चीजहै जो उत्तम चीज न होती तौ भगवान् बड़ा बड़ा आदर पूजन अपनी स्त्रियोंको क्यों करते हेश्रोताहो इसवास्ते द्वारकापुरी में मानुष्य सरीकेअपनी स्त्रियोंके साथ श्रीकृष्ण क्रीड़ा करते भये कामकी बशिहोकै नहीं किये ४ इतिश्रीभागवत द० उ० शं० सं० नवतितमेऽध्याये नवतितमवेणी ॥ ९० श्लो० १ से २ तक ॥

इ०भा०द०शं०मं०सुधामयीटीकासहितासमाप्ता ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥

एकादशस्कंधे ॥

सुधामयीटीकासहिताविरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जगत्कर्ताजगत्स्वामी वेदमार्गप्रवर्त्तकः । स्वयमुत्पाद्यस्वकुलं कथंजहेरमापतिः १ परावरज्ञोभगवान् कथम्पूर्वमजीजनत् । हलाहलस्यचेद्वृक्षं स्वयमारोप्ययत्नतः । पश्चाच्छेत्तुमयोग्यं च स्वहस्तेनेतिनःश्रुतम् २ वाचक उवाच ॥ स्वांशभूतान्यदून्

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण तीनलोकों के मालिक होकैअपने शरीरसे अनेकप्रकारको पुत्रपौत्र प्रपौत्र उत्पन्न करिकै फिरि उनको नाश क्यों करते भये?जो कोई कहै कि कृष्णने विचार किये कि इन यदुवंशियोंको छोड़िकै हम बैकुंठको जावैंगे तौ ये सब पृथ्वीको दुःख देवैंगे तौ ऐसा कहनेवाला बिलकुल पागलहै क्योंकि श्रीकृष्ण महाराज घट २ की बात जानने वालेथे कुछ मानुष्य नहींथे ईश्वर थे जानतेथे किहम वैकुंठको जावैंगे तब हमारे अंशसे जन्म लिये जो यादवसो पृथ्वीको दुःख देवैंगे ऐसा जानतेथे फिर उनसबको उत्पन्नक्यों करते भये क्योंकि आपुउत्पन्न करिकै आपुई नाशकरनायहबड़ा अयोग्य है क्योंकि शास्त्रमें ऐसा लिखा हैकि जहर के खायेसे प्राणी मरिजाते हैं ऐसीबुरी चीज है परन्तु जो अपने हाथसे

ज्ञात्वा कलिंचागतमच्युतः । निमित्तंभूमिभारस्य कृत्वा जह्रेकुलम्बिभुः ३ युगश्चायम्महाघोरोनतिष्ठन्त्यत्रसाधवः । औषधाशब्रणच्छेद मिवसौख्यंभविष्यति । एवं ज्ञात्वाचश्रीकृष्णस्संजह्रेस्वकुलम्बिभुः ॥४॥ इति श्री भा० ए० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

जहरको वृक्षभी लगाना तो फिरि अपने हाथ से उस को काटना बड़ा अयोग्य है और चेतन शरीरको उत्पन्न करिके आपुसे फिरि आपुई उसको नाशकरना यह बड़ा खोटाकाम है गुरुजी कृष्णने अयोग्य कर्म क्यों किये यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले श्रीकृष्णने ऐसा बिचारकिहेकि जिसदिनहमइस लोकसे वैकुण्ठलोकको जावैंगेउसीदिन कलियुगबड़ाघोरमर्त्य लोककोराजाहोवैगा और एसब यादवहमारेअंशकारिके उत्पन्न होतेभयेहैं३कलियुग में येसबयादवरहैंगे तबदुःखपावैंगे क्योंकि कलियुग में भूमिमें साधु नहीं रहैंगे और जोकोई साध रहैंगे तो भ्रष्टहोके दुःख पावैंगे इसवास्ते इन सबयादवों को पेश्तर अपने लोक को भेजिके पीछेसे हम जावैंगे यादवों को नाश भयेपर दुखतो होवैगा लेकिन् पीछे सुख होवैगा कैसा कि जैसा दवाई खाते वखत कडूमालूम पड़ती है परन्तु पीछे से सुख होता है फोड़ाको चिरांत वखत जीव दुखपाता है परन्तु पीछेसे सुख होता है हेश्रोताहो ऐसा कृष्णने विचारिकै पृथ्वी के भार को कारण करिकै अपने अंशसे भये जो यादव तिन सब को नाश करिकै आपने अंश को संगलेकै चलेगये कछु निर्दयपनासे यादवों को नाश नहीं किये दो श्लोक को अर्थ मिलाहै युग्म है ॥४॥ इतिश्री भा० एका० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सस्सद्धर्मश्चकःप्रोक्तोयस्सद्यःप्र पुनातिहि । देवविश्वद्रुहश्चापि सहृदाश्चर्यमेवतत् १ एकस्यापिनरस्यैव कृतघ्नत्वंकरोतियः । तस्यापिदुर्लभापूतिर्देवविश्वद्रुहःकथम् २ दयायुक्तोहरेर्नामजप स्सद्धर्मइष्यते । दाहयेत्सर्वपापानितूलराशिमिवानलः ३ इति भा० एकादशस्कंध शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ १२ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ भक्त्योत्पन्नातुयाभक्तिस्तयोत्पुल

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी ऐसा बड़ा सुंदर धर्म क्या है कि जो धर्म जलदी ऐसे दुष्टों को पवित्र करता है कैसे दुष्टों को जो तनिलोककी तथा देवतों की बुराई करते हैं तिनको पवित्र करना बड़ा कठिन है क्योंकि १ शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि जो प्राणी किसी दूसरे प्राणी की एककी भी बुराई करैगा तो वह बुराई करनेवाला प्राणी कभी नहीं पवित्र होगा वोतो चांडाल सरीके बनारहैगा और जो तीन-लोक की तथा सब देवतों की बुराई करैगा सो क्यों करिकै प्रवित्र होगा यहबड़ी शंका है २ वाचक बोले हे श्रोता हो जो धर्म तीनलोक तथासबदेवतोंकी बुराईकरनेवाले प्राणी को पवित्र करता है सोधर्म यह है कि मनमें दया करिके भगवान् को नाम जपना यह ऐसा सुंदरधर्म है कि सब पाप को नाश करता है जैसा रुईके समूह को एक सरिसो प्रमाण अग्नि भस्मकरि देता है तैसा भगवान् के नामका जप थोराभी करैगातो अनेक जन्म के पाप को वह जप नाश करैगा ॥ ३ ॥ इतिभा०ए०शं०मं०द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी॥२॥श्लो०॥१२॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी भक्ति करिके उत्पन्न जो भक्ति

कितान्तनुं॥बिभ्रद्देवम्भजेद्भक्तस्साभक्तिःकोच्यतेगुरो १ वाचक उवाच ॥ भक्त्यासंजायतेप्रीतिस्सापिभक्ति र्निगद्यते । तयानिर्भरयाविष्णुं भजित्वामोक्षमाप्नुयात् २ इति श्रीमद्भागवतएकादशस्कंधशंकानिवारणमं जर्य्यां तृतीयेऽध्याये तृतीयवेणी ॥ ३ ॥ श्लोक॥३१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मज्ञोजनकोराजा ब्रह्मवार्तांवि हायच । कथम्पप्रच्छ योगेशमवतारकथाःशुभाः १ वाचक उवाच॥बीजंविनाजनिर्नास्ति केषामपिचराचरे। ब्रह्मज्ञानस्यबीजंच सगुणब्रह्मकीर्तनम् । अतःपप्रच्छ

तिस भक्ति करिकै भगवान् के भक्तों को रोम २ खड़ा होजा- ता है ऐसी रोमांच हुई देहको धारण करिकै भक्तजन भगवान् को भजन करते हैं ऐसी उत्तम भक्ति क्या कहाती है यह बड़ीशंका हमारे मनमें है १ वाचक बोले भगवान् में बड़ीभक्ति जैसी अंबरीष आदिभक्त भक्ति करतेथे ऐसी भक्ति करिकै प्रभु के चरणों में प्रीति उत्पत्ति होवे उसी प्रीतिकरने को नाम भक्तिसे उत्पत्ति भई भक्ति है ऐसी भक्ति करिकै भगवान् को भजन करैगा तब जीवमोक्ष को जावैगा ॥ २॥ इतिभा०ए०शं०मं०तृतीयेऽध्यायेतृतीयवेणी॥३॥श्लो०॥ ३१ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी राजा जनक बड़े ब्रह्म के जानने वाले थे ऐसे ब्रह्मज्ञानी होकै ब्रह्मकी कथाको त्यागिकै मुनिराज से सगुण अवतारकी कथा क्यों पूछते भए क्यों- कि ब्रह्मज्ञानी सज्जन सगुण में प्रीति नहीं करते यह शंका है १ वाचक बोले तीनलोक में जो चर अचर जीव हैं तिन सबको बीज बिना जन्म नहीं हो सक्ता किसी को भी जन्म बीज बिना नहीं होता तैसे ब्रह्मज्ञानको बीज सगुण

वैदेहो हरेराविर्भवंशुभम् २ इति भा० ए० शं० सं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सेवनंभजनंविष्णोःराज्ञापृष्टोयुगेयुगे । अयोग्यमिदमाख्यातं योगीशेनापितत्कथम् १ वाचक उवाच । भिन्नंभिन्नंनतस्यास्ति भगवान्दीनवत्सलः । भिन्नतासर्वजीवेषु भक्तिरेवसदान्तृणाम् २ असंख्यातंहरेर्नामयेभजन्तिथथायुगे । तथाजगत्पति

ब्रह्मको कीर्तनहै सगुण के कीर्तन से ब्रह्मज्ञान होता है हे श्रोता हो इसवास्ते राजाजनक ब्रह्मज्ञानी होके सगुण भगवान् के अवतारकी कथा पूछे हैं २ इतिभा० ए० शं० सं चतुर्थेऽध्याये चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी राजा जनक मुनिसे भगवान् को भजन तथा सेवन आदि सब कर्म युग २ को जुदा जुदा पूछे कि सतयुग में कैसा भजन सेवन होता है तथा त्रेतामें कैसे भजन सेवन होता है द्वापरमें कैसे कलियुगमें कैसे और मुनिभी चारोंयुगों को जुदा २ पूजन आदि सब भगवान् की सेवन वर्णन करते भये यह बड़ा अनुचित कर्म है जुदा जुदा क्यों वर्णन किये क्योंकि शास्त्र में भगवान् सर्वव्यापी निरंजन लिखे हैं जुदा जुदा कामतो जीव के होता है ईश्वर के नहीं होता यह बड़ीशंका है १ वाचक बोले हे श्रोताहो भगवान्तो दीनदयालु हैं तीनलोक में जो चर अचर प्राणी हैं तिन सब प्राणियों में भगवान् किसी युगमें भी भिन्नभाव नहीं राखते सबको एक समान जानते हैं ऐसे दयासागर हैं परन्तु मानुष्यों में अनेक प्रकार के जीव हैं ज्यतनी मानुष्य की देहहै त्यतने जीव हैं इसवास्ते सब जीवों में भगवान् की

विष्णुर्गौर्वत्समिवरक्षति ३ भक्तिलीलारसोन्मत्तो भक्ति प्रवर्द्धनायच । नामवर्णौपृथग्विष्णोः पप्रच्छमैथिलो नृपः ४ इति भा० एका० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ हरिंसर्वावतारेषुवैकुण्ठगमनम्प्रति। विरंचिःप्रार्थयामास कथंकृष्णंययाचवै १ वैकुण्ठगम नार्थायससुरेशद्विजैर्वृतः २ वाचक उवाच ॥ अवतारा

भक्ति जुदी २ होती है सब युगोंमें कोई कैसी भक्ति करता है २ तथा भगवान् के नाम तथा चरित्र कोभी पारनहीं जिस नामपर जिसजीवकी भक्तिभई उसीनामको जपनेलगा युग२ में भगवान् उस नाम जपने वाले जीवकी रक्षाकैसा करते हैं जैसी गाय अपने वत्सकी रक्षा करती है ३ तथा राजा जनक भी भगवान् के भक्तिकी लीला करिकै मस्त होरहे हैं भगवान् की भक्ति की वृद्धि होनेवास्ते युग २ में जुदा२ भगवान् को नाम तथा वर्ण तथा पूजन सेवन पूंछते भये भिन्नभाव मानिकै नहीं पूंछे॥ ४ ॥ इ० भा० ए० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ १८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भगवान् अनेक अवतार धरिकै पृथ्वी में अनेक प्रकारको चरित्र करते भये परंतु पृथ्वी से भगवान्को वैकुंठ जानेवास्ते किसी अवतारों में बृह्मा प्रार्थना नहीं किएकि महाराज अब आपु बैकुंठ को चलो तो फिरि इंद्रको तथा बृाह्मणों को बृह्मा अपने संग लेकै बैकुंठ चलने वास्ते श्रीकृष्णकी याचना क्योंकिएकि अब आप बैकुंठको चलो यह शंका है १ वाचक बोले भगवान् अनेक अवतार धारण करते भये संसारको सुख होने वास्ते

एयनेकानिहरिणासन्धृतानिवै । कार्यार्थभगवान्कृष्णो मानुषत्वमुपागतः ३ शून्यंवैकुंठमालोक्य तारकोभगव त्पुरीम् । यद्दिनेपीडितुंशक्तस्त्रासितश्चक्रतेजसा।।ज्ञावि तस्तद्दिनेब्रह्मा प्रार्थयामासयादवम् ४ इतिभा०ए० शं० मं० षष्ठाऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रोवाचाङ्गोद्धवम्प्रीत्या श्रीकृष्णो भक्तवल्लभः । नवस्तव्यन्त्वयातात मयात्यक्तेमहीतले १ सकथंकृतवान्वासं बद्रिकाश्रममंडले २ वाचक

तैसेई पृथ्वी को भार उतारने वास्ते श्रीकृष्ण मानुष्यहोकै मर्त्यलोक में आते भये २ जब श्रीकृष्ण मर्त्यलोक में आए तब तारक नाम राक्षस वैकुंठ पुरीको भगवान्से हीन देखि-कै भगवान् की पुरीको दुःख देने को विचार करता भया ३ आजु दुःख देवै कालि देवै ऐसा विचारकरते करते तारक को वर्ष १२४ महीना १०दशबीति गया परन्तु जिस दिन निश्चय करिकै दुख देने को चला कुछ थोरा२ उत्पात वैकुंठ में कि-या तब सुदर्शनचक्र भस्म करनेको तारक के वास्ते दौड़ते भये तब सुदर्शनके डरसे तारक भागिगया तब उसीदिन ब्रह्मा विचार कियेकि आज दुष्ट बैकुंठ में उपद्रव करने को प्रारंभ किया है आजुतौ भागिगया चक्रसे डरिकै परन्तु अब जो भगवान् बैकुंठ को नहीं आवैंगेतौ कभी तारकदैत्य बैकुंठ की नाश करिदेवैगा हे श्रोताहो ऐसा ब्रह्मा विचारिकै श्रीकृष्ण को बैकुंठ चलने वास्ते बिनती करते भये ॥४॥इति भा० ए० शं० मं० षष्ठऽध्यायेषष्ठवेणी ॥ ६ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण उद्धव को कहेथे कि हे उद्धव पृथ्वी को हम त्यागिकै बैकुंठ को जावैंगे तब तुम

उवाच ॥ वृन्दावनंहरिक्षेत्रं यत्रगंगायमानुजा । नैमिषं द्वारिकाकाशी बद्रिकाश्रमसेवच । नैतेमहीतलंशास्त्रेप्रोक्तैतेमोक्षमंडलाः ३ इति भा० ए० शं० मं० सप्तमेऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ ५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानाप्त्यैमुनयश्चक्रुर्जन्मभिर्बहुभिर्गुरो । यत्नान्नाप्तन्तुतैर्ज्ञानंक्षणेनापकथंचतत् १ पिंगलानकदाचक्रे सत्कर्म्महरितुष्टिदम् २ वाचक उवाच ॥ यदर्थेविधिनासृष्टा पिंगलातत्प्रकुर्वती २ विदेहनगरेसवैस्वधर्महरितत्पराः । नरानार्य्यश्चश्रोतारस्तथेयमपि

पृथ्वी में वास मति करना तो फिरि कृष्णको बैकुंठ गये पीछे बद्रिकाश्रम में उद्धवक्यों टिकते भये क्या बद्रिकाश्रम पृथ्वी में नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले वृंदावन अयोध्या प्रयाग नैमिषारण्य द्वारिका काशी बद्रिकाश्रम इन्ह सब क्षेत्रों को सात द्वीपपृथ्वीमें गिनतीनहीं है ऐसा शास्त्रों में लिखा है कि ये सब मोक्ष भूमि है सात द्वीप सरीके भूमि नहीं है हे श्रोता इसवास्ते बद्रिका श्रम में उद्धव टिके हैं २ इतिभा० ए० शं० मं० सप्तमे ऽध्याये सप्तमवेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ ५ ॥

श्रोता पूछते भए हे गुरुजी ज्ञान प्राप्ति होने वास्ते मुनियों ने अनेक जन्म तथा अनंत युग तप करते भये परंतु ज्ञानकी प्राप्ति मुनि लोगों को नहीं होती ऐसा कठिन ज्ञान है और पिंगला वेश्या कभी भी सुंदर कर्म्म नहीं किये कि जिस कर्म करिकै ईश्वर प्रसन्न होवै ऐसी पतित रंडी पिंगला एक क्षण में ज्ञान को क्यों प्राप्त हुई यह शंका है १ वाचक बोले जो काम करने वास्ते ब्रह्मा जिस योनि को बनाया है वह प्राणी

कामिनी ३ रत्यन्तेस्नानमाकृत्यह्यहरिञ्चिन्तयतीसदा ।
तद्दिनेग्लानिमार्गेण ज्ञानमाप्तंतयास्वतः ४ इति भा०
ए० शं०मं० अष्टमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥८॥श्लो०॥२७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीकृष्णोवाचबालश्च चिन्तामुक्तो
ह्यवंकथम् । यदिचिन्ताविमुक्तश्चजन्मतोरोदनंकथम् १
तदापतितमात्रोपिकोकरोतिससत्वरम् । चिंतयाचविमु
उसी काम को करेगा तोपाप नहीं लगेगा परन्तु अपने कुल
को कर्म करिके कुछ देर भगवान्की प्रीति करेगा तब जैसा
भारत में धर्म व्याध आदि जीव हैं इसी प्रकारसे ब्रह्मा जो
कर्म करने वास्ते पिंगलाको भी बनायेथे सोकर्म पिंगला भी
करती थी क्योंकि जनकपुरीमें सब जीव अपने २ कुलके धर्म
को करिके पीछेसे भगवान्में प्रीतिकरतेथे ईश्वरको भूलि नहीं
गये थे स्त्री पुरुष सब भगवान् को नाम जपतेथे हेश्रोताहो तैसे
पिंगला ३ पुरुषोंके संगराति करिके पीछेसे स्नान करिके दूसरा
वस्त्रपहिरिके भगवान्को नामजपती थीतथा ईश्वरकीप्रार्थना
करिके अपनी देहसे किया जो पाप तिसकी क्षमा करातीथी
नित्य उसदिन भगवान्की कृपाहोगई तब बुरेकर्म में ग्लानि
उत्पत्ति भई पिंगलाके उसी ग्लानि करिके ज्ञान प्राप्त होगया
हे श्रोताहो इस प्रकार से एक क्षण में ज्ञानप्राप्त पिंगलाको
भया कुछ बिलकुल भ्रष्ट नहीं थी कि ईश्वर को नहीं जानना
वोतो जानतीथी ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० अष्टमेऽध्याये
अष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ २७ ॥

श्रोता पूछते भये उद्धव से श्रीकृष्ण कहेथे कि बालकों
के मनमें चिंतानहीं रहती है हे गुरुजी इसमें यह शंका होती
है कि जो बालक चिंतासे छूटेहोवें तोफिरि जन्महीसे रोतेहैं
क्यों माता के उदर से भूमिमें पड़े तब भूमिमें पड़े२ जलदी

कस्यरोदनन्नैवश्रूयते २ बाल्यावस्थाशिशोर्यावत्ता वत्तद्रुदनंसदा । वाचक उवाच ॥ ज्ञानेषुगृह्यतेनैव शिशुर्बालश्चसज्जनैः । लज्जाश्रमविहीनश्चसबालः प्रोच्यतेबुधैः ३ इति भा० ए० शं० मं० नवमेऽध्याये नवम वेणी ॥ ९ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्पर्द्धासूयादिभिर्नष्टंश्रुतमुद्धवानिश्चितम् । इतिप्रोक्तंभगवताकिन्त्वेतेऽपियुगत्रये १ वाचक उवाच ॥ विष्णुदेहेषुवर्त्तते धर्म्माऽधर्मादिसंचयाः ।

रोते हैं जो प्राणी चिंतासेती छूटिगया है वो प्राणीको रोना कभी नहीं सुनि परैगा और बालकी कीतौ जबतक बालपन रहता है तबतक रोते हैं यह बड़ी शंका है २ वाचक बोले ज्ञानकी बार्ता में सज्जनलोग बालक को बालक नहीं कहते पण्डित लोग बालक उसको कहते हैं कि जोप्राणी संसारकी तथा अपने कुलकी लाजको तथा डरको त्यागिदेवै हे श्रोता हो ऐसे पंडितों के बचन के प्रमाण से कृष्णभी उसी बालक को चिंतासे दूरिभया कहे हैं जन्मलिये हुये बालक को नहीं कहेथे ॥ ३ ॥ इति भा० ए० शं० मं० नवमेऽध्यायेनवमवेणी ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण भगवान् उद्धव से कहेथेकि ईर्षा निंदा आदि लेकै और जो खराब कर्म हैं तिन्ह खराब कर्मों करिकै वेदोंके वचन नष्ट होगये इसमें यहशंका होती है कि ईर्षा आदि जो बुरेकर्म सो सतयुग त्रेता द्वापरमें भीथे १ वाचक बोले शास्त्रों में लिखा हैकि भगवान् की देह में धर्म तथा अधर्मदूनों रहते हैं सबयुग में किसी युगमें थोरा खराब कर्म भगवान् की देहमें रहता है किसी युगमें बहुत

युगत्रयेकिमाश्चर्यंक्वचित्कल्पंक्वचिद्बहुरहति भा० ए० शं० सं० दशमे ऽध्याये दशम वेणी ॥१०॥श्लो०॥२१॥

श्रोतार ऊचुः॥ पोषणीयास्सदागावस्तृणतोयान्नमोदकैः। दंशादिसर्वोत्पातैश्चसप्रसूर्विप्रसूरपि १ सदुग्धावाविदुग्धावाकृष्णोवाचोद्धवंकथम्। दुग्धदोह्यांच गांरक्षन्नरोवैदुःखदुःखभाक् २ वाचक उवाच ॥ गांदुग्धदोह्यांयेज्ञात्वातामरक्षांति कुर्वति। सनरोदुःखदुःखं

रहता है क्योंकि युगोंकी मर्यादा पालन करने वास्ते दूसरी बात नहीं जानना चाहिये हे श्रोताहो इसवास्ते कृष्ण कहेथे कि कुरकर्म करिकै वेदोंकी मार्ग नष्ट होगई ॥ २ ॥ इति भा० ए० शं० सं० दशमेऽध्यायेदशमवेणी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पूछतेभये हेगुरुजी शास्त्रमें तथा वेदोंमे ऐसा लिखा है किगायचाहे तौ व्यातीहोवै चाहे न व्यातीहोवै चाहे व्याने पर भी दूध न देती होवै लातमारतीहोवै परन्तुगायको तोचारा मोदक जल अन्न और अनेक प्रकार की सुंदरचीज मिलाय के गायकी सेवन करना दंशमछर आदि अनेक दुःखसे गाय की सेवन करना १ दूधदेवै तौभी नदूध देवै तौभी गायकी सेवन तोकरना चाहिये तौफिरि उद्धव से श्रीकृष्ण क्यों कहेथे कि जोगाय दूधदेनाबंद करिदेवै अथवा बांझहोवै जनै ऐसी गायकी जोमानुष्य पालनाकरैगा सोमानुष्य दुःखसे दुःखबड़ा दुःखभोगैगा गुरुजी ऐसेकृष्णकेवाक्य सुनिकैहमसबको शंका खायलेतीहै २ वाचकबोले हेश्रोताहो (गांदुग्धदोह्यां) इसश्लोक में भगवान्नीति वर्णन किये हैं सो सुनो हम कहतेहैं श्रीकृष्ण भगवान्कहे थे कि जो प्राणी गाय को ऐसा जानिकै कि यह गाय अब दूध नहींदेती अथवाबांझहै व्यातीनहीं ऐसाजानिकै

वैभुनकीतिविनिश्चितम्।एवंपंचकलत्रादीनप्यरक्षनूस दुःखभाक् ३ इति भा०ए०शं० मं० एकादशाऽध्याये एकादश वेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

उस गाय की रक्षा करना छोड़ देवैगा मतलब खाने पीनेको नहीं देवैगा भूखी प्यासी गौ रहैगी तब यह लोकमें तौ गाय को दाम डूबिजायगा क्योंकि पालना करता तौफिरि ब्याती अथवा बांझ होती तौ भी गोबर होता और मरे पर रौरव नरक परैगा गायको भूखी प्यासी राखिबेकेपापसे इसी प्रकार से दुष्ट स्त्री होगई उसकीभी पालन करना प्राणीछोड़ि देवैगा तो वह स्त्री संसार में बुरा कर्म करैगी तो वह प्राणी को यह लोक में निंदा और परलोकमें नरक परैगा और जो पालन करैगा तौ धीरे धीरे सुंदरि रस्ता में आयजायगा ऐसे पराये आधीन देह जानिकै हानि मानिकै देहको पालन करना छोड़ि देवैगा तौदेहको नाश होजावैगा औरजोपालनाकरैगा तौकभी तौ कभी सुख होवैगा ऐसे धनको मानिलेवै कि इस धन से मैं पुण्य नहीं करताहूं किस काम आवैगा ऐसा जानिकै धन की रक्षा करना छोड़ि देवैगा तौ चोर लेजावैंगे और जो धन की रक्षा करता रहैगा तौ कभी पुण्य होवई करैगी ऐसे वचन से भगवानूको नाम नहीं लिया ऐसा खराब वचन को जानिकै सत्संग छोड़ि दिया तौ भ्रष्ट होजावैगा और जो वचन बिगड़ा है पण सत्संग से बन्दोबस्त करैगा तौ कभी भगवान् को नाम वचन से निकलैगा हे श्रोताहो ऐसा नीति युक्त अर्थ भगवान् उस श्लोकको अर्थ कियेहैं यह नहीं किये किगाय दूध देना बंद करिदेवै तौउसकी पालना नहीं करना (सयाऽरक्षति) श्लोकमें ऐसा अर्थ निकसैगा ३ इति भा० ए० शं० नि० मं० एकादशाऽध्यायेएकादशवेणी॥११॥श्लोक॥१६॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सत्संगेनपदम्प्राप्तामम्मोद्धवखगास्मृगाः। नगाश्चैतद्वचः प्रोक्तस्तैनेषामभवत्कथम् १ सत्संगोदुर्लभोब्रह्मन्मुनीशैरपिनोमतः। वाचक उवाच ॥ वासान्मुनीनांगिरयस्सत्संगफलमाप्नुयुः। मृगाःखगाश्चसान्निध्यात्तेषांनित्यंप्रदर्शनात् । श्रोत्राक्षिभिस्समापुस्तेसत्संगंयोगिदुर्लभम् २ इति भा० ए० शं० मं० द्वादशेऽध्याये द्वादशवेणी ॥ १२ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतारऊचुः॥नददावुत्तरम्ब्रह्मापृष्टोपिसनकादिभिः। कथमेतन्महाबाहोकारणंमौनताविधे १ वाचक उवाच॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण उद्धवसे कहे कि हेउद्धव पर्वत पक्षी मृग एसब सत्संग से हमारे लोक को प्राप्त भये हे गुरु जी सत्संग तो बड़े २ मुनिराजों करिकै बड़ा दुर्लभ है इन तुच्छ जीवोंको सत्संग क्यों करिकैभया यह शंकाहै १ वाचक बोले मुनिलोग पर्वतों पर वसते थे सो मुनियों के टिके के प्रभाव से तो पर्वतों को सत्संग प्राप्त हुआ तथा मुनियों के सामने रोज राति दिन पक्षी तथा मृग वसते थे मुनियों को रोज दर्शन करते थे कुछ सत्संग की वात कानों से सुनि लिये कुछ भगवान् के पूजन आदि सामग्री नेत्रों से देखि लिये इस प्रकार से योगियों से दुर्लभ जो सत्संग सो पर्वतों को पशुवों को मृगों को प्राप्त हुआ ऐसा कृष्ण कहेथे ॥ २ ॥ इतिभा०ए०शं०मं० द्वादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥१२॥श्लो० ॥८॥

श्रोता पूछते भये सनकादिकोंने ब्रह्मासे ज्ञानपूछे तो ब्रह्माने उत्तर क्योंनहींदिहे हेगुरुजी ब्रह्माको मौनहोनेको कारण क्या है यह शंका है १ वाचक बोले ब्रह्माने सनकादिकों के प्रश्न के पेश्तर अपनी कन्यासे रमण करनेकी इच्छा कियेरहे उसी

पर्वंस्वतनुजांरन्तुम्मनश्चक्रेपितामहः। तल्लज्जासंगृहीतांगोनोत्तरन्दत्तवांस्तदा २ इ० भा० ए० शं० मं० त्रयोदशो० त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुमुक्षूणाम्परन्ध्यानंकृष्णंपप्रच्छ तत्सखा। वर्णयामासतत्यक्त्वाकथंकृष्णोगुणात्मकम् १ वाचकउवाच ॥ शीघ्रन्नज्ञायतेध्यानंमुमुक्षूणांकदापि हि। श्रुतेनवर्णनेनापिविनासत्संगसेवनात् २ तमपक्व हृदंज्ञात्वास्वप्रयाणंचकेशवः। ध्यानम्प्रोवाचस्वस्यैव शनैराप्स्यत्ययंचतम् ३ इति० भा०ए० शं० मं० चतुर्दशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ श्लो० ॥ ३१ ॥

लज्जा करिके ब्रह्माकी देहको तेजनष्ट होगया हानिमानि कै नहीं बोले बृह्मा विचार कियेकि क्यामुख देखाय केबोलैं ॥२॥ इतिभा०ए०शं०मं०त्रयोदशेऽध्यायेत्रयोदशवेणी१३ श्लो०१८॥

श्रोता पूछते भये कृष्ण से उद्धव पूछे कि मुक्तिकी इच्छा करने वाले योगी भगवान्‌को ध्यानकैसा करतेहैं तब श्रीकृष्ण उद्धवके प्रश्नकी बातको त्यागिकै सगुणको ध्यान वर्णन किये यह शंका होती है १ वाचक बोले कृष्ण विचार किये किब्रह्म को ध्यान मुक्तिकी इच्छा करने वाले योगी करतेहैं सो ध्यान सुने से तथा कहे से नहीं प्राप्त होता वह ध्यान तौबहुत दिनों तक सत्संग करै तौ प्राप्त होता है २ और उद्धव का हृदय ज्ञान में कच्चा है और हमारी भी तयारी जाने की होरही है जो कुछु दिन हमको मृत्युलोक में रहना होता तौभी उद्धव बृह्मज्ञान में पक्का होजाता ऐसा विचारि कै सगुण को ध्यानकहे हैं कि धीरे२ सगुण को ध्यान करते २ बृह्म के ध्यान को उद्धवप्राप्त होवैंगे इसवास्ते बृह्मको ध्यान त्यागि

श्रोतार ऊचुः ॥ योगिनोयोगनिरतावासुदेवपराय णाः। अग्न्यर्कविषतोयानांस्तंभनेकिम्प्रयोजनम्। तेषां किमर्थंकृष्णेनसिद्धिरुक्ताचयोगिनाम् १ वाचक उवाच॥ योगिनोपिद्विधाप्रोक्तायोगशास्त्रविचक्षणैः २ विरक्ताश्च गृहस्थाश्चसिद्धिरेषापुरातनी। गृहस्थानांहितायोक्ताकृ-ष्णेनपरमात्मना ३ आतुरत्वान्ननियमं चकारयोगिनां हरिः ४ इति भा० ए० शं० मं० पंचदशे ऽध्याये पंच दशवेणी ॥ १५ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

के सगुणध्यान कृष्ण वर्णन किये हैं ॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं० मं० चतुर्दशेऽध्यायेचतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ ३१ ॥

श्रोतापूछतेभये आगिसूर्यजहर जलइन्ह आदिऔर बड़ी२ चीजों को तेजरोकने वास्ते कृष्ण सिद्धि वर्णनकिये कि ऐसी सिद्धियों करिके योगीलोग आगि सूर्य जहर जल इन्ह सबके सम्पूर्ण तेजको रोकिलेते हैं इसमें यह शंका है कि भगवान्में मनलगाये जो योगीजन तिन्हको इनसब चीजों के तेजरोक नेसे क्या प्रयोजनथा १ वाचकबोले योगशास्त्र के जानने वाले मुनिजन दोप्रकार को योगी कहेथे एकतो गृहस्थयोगी जो घर में बैठे २ योग करते हैं दूसरा विरक्त योगी जो घर त्यागिके योग करते हैं और आठ सिद्धिभी आदि से चली आतीहैं२तबगृहस्थ योगियोंकेवास्ते श्रीकृष्ण इनसिद्धियोंको कहे थे आगि सूर्य विष जल को तेज रोकने वास्ते जो कोई कहे कि ऐसा भेदतो नहीं किये कि गृहस्थ योगियों के वास्ते ये सिद्धि हैं तो ठीकहै भगवान्को बैकुण्ठको जानेकी तैयारी रही उसी आतुरता से योगियों को नेम नहीं किये ३ इति भा०ए०शं०मं० पंचदशेऽध्यायेपंचदशवेणी॥१५॥श्लोक ॥ ८॥

श्रोतार ऊचुः ॥ चतुर्वर्णैस्सदापूज्योभगवान्भक्तवत्सलः। नब्राह्मणानान्नियमः केवलंहरिपूजने १ उद्धवेनोक्तमाचार्यन्तत्कथंद्विजसत्तम। ब्राह्मणास्त्वामुपासन्तेयथावद्वलथाप्रभो २ वाचक उवाच ॥ यदुन्नशनन्दृष्ट्वाविप्रशापसमुद्भवम्। पश्यतश्चापिकृष्णस्यद्विजान्मेनेसईश्वरान् ३ अतः पप्रच्छविप्रास्त्वाम्पूजयन्तिकथम्बिभो ४ इति० भा० ए० शं० मं० षोडशेऽध्याये षोडशवेणी ॥ १६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योपिकोपिभजन्तम्मांविप्रमाप

श्रोता पूछते भये भक्तों के प्यारे जो भगवान् तिसका पूजन भजन ध्यान और जो भगवान्की सेवा सोब्राह्मणक्षत्री वैश्य शूद्र सबकोकरना लिखाहै ऐसा नहींलिखाहै कि ब्राह्मण अकेला भगवान्को पूजन करै और कोई वर्णन करै १ हे ब्राह्मणोंमें उत्तम बाचकतौ फिरि श्रीकृष्णसे उद्धव क्यों कहे कि हे भगवन् जिसबिधि से ब्राह्मण आपको पूजन करतेहैं सो विधि कहो यह शंकाहै क्योंकि वेदकी विधिके पूजने में तौ एकबिधि है शूद्र की जुदा है और भक्तिमार्गमें सबकी एक बिधिहै सोउद्धव भक्तथेभक्तिमार्गकी पूजनबात पूछते थे इसवास्ते भ्रमहै२वाचकबोले उद्धवने ब्राह्मणकी शाप करिकै यदुवंशियों की क्षय देखिकै ब्राह्मणोंको भगवान् मानते भये क्योंकि श्रीकृष्णके देखते देखते ब्राह्मणके शापसे यादवको नाश होगया श्रीकृष्ण कुछ भी सहाय नहीं किया इसवास्ते उद्धव जीने कि ब्राह्मणोंके ऊपर भगवान्को कुछभी अकतियार नहीं चलता ३ इतिभा० ए० शं० मं० षोड़शेऽध्यायेषोड़शवेणी १६ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

दुःख्यउद्धरेत्। तमुद्धरिष्येसद्योहमापद्भ्यश्चकथन्नतम् १ वैश्यवत्कथमित्थन्तुकृष्णेनोक्तमिदंवचः २ वाचक उवाच॥ ब्राह्मणानाम्महापापैरापदस्संभवन्तिच। इतरेषांतथान्यूनैरेतद्ज्ञात्वाप्युवाचसः ३ यावत्पापविनिर्मुक्तोनभवेद्ब्राह्मणोहरिः। तावदन्येनतद्दुःखशान्तिकार

श्रोता पूछते भए श्रीकृष्ण उद्धवसे कहे कि हमारे भजन करने वाले ब्राह्मण को दुःखदारिद्र आदि लेके अनेक संकट से जोकोई मनुष्य छुड़ाताहै तौ उस छुड़ाने वाले मनुष्य को हम बहुत जल्दी से दुःख दारिद्रसे कष्टसे छुड़ाय देतेहैं इस में यह शंका होतीहै कि अपने भजन करने वाले ब्राह्मण को आपु क्योंनहींजल्दी दुःख दारिद्रसे छुड़ाते दूसरेको लोभ क्यों दिखाते हैं १ जैसा बाणियां आढ़ते लोगोंसे काम करतेहैं ऐसा वचन कृष्ण क्यों कहे २ वाचक बोले बड़ा बड़ा पाप ब्राह्मण करते हैं तौ उन्ह बड़े २ पापों करिकै ब्राह्मणको दुःख दारिद्र संकष्ट होताहै और क्षत्री वैश्य शूद्र को थोरेही पापसे दुःख दारिद्र होताहै इस वास्ते भगवान् विचार किये कि हम जल्दी ब्राह्मणों को अपना भजन करनेवाला जानिके दुःख दारिद्रसे छुड़ाय देवैंगे तौ ब्राह्मण और मान करिकै पाप करैंगे जानि लेयँगे कि भजनके प्रतापसे दुःख नाश होजाता है जल्दी फिर सं[illegible]को सुख क्यों नहीं भोगना हमारा पाप क्या करैगा २ ऐसा विचारिकै ब्राह्मणों को मान नाश करने वास्ते कृपा करिकै जब तक ब्राह्मण पापसे छुटता नहीं तब तक उस ब्राह्मणके दुःख दारिद्रको दूसरे मनुष्यसे दूर कराते हैं कि ब्राह्मण को मालूम पर जावै कि हम भगवान्को ऐसा बड़ा भजन करतेहैं तौभी हमको बड़ा पापी जानिके हमा[illegible] दुःख दारिद्रको नाश नहीं किये जो हमारे पास पाप न

यतेऽनिशम् ३ इति० भा०ए०शं० मं० सप्तदशेऽध्याये सप्तदश वेणी ॥ १७ ॥ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ जिघृक्षोर्ब्राह्मणस्यैवसंन्यासंप्रमदाद्यः। विघ्नंकथम्प्रकुर्वन्तिवैराग्यमनसोद्विज १ वाचक उवाच॥ कलत्रादिमयःपाशोदुश्छेद्यःसर्वजन्तुभिः। नराश्चैवकाथातातेद्बद्धाः पशुपक्षिणः। अतश्चोक्तंप्रकुर्वन्तिविघ्नान्दारादिरूपिणः २ इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशेऽध्यायेअष्टादशवेणी १८ ॥ श्लो० ॥ १४ ॥

तो जल्दी भजन के प्रतापसे हमारे दुःख को नाश कर देते अब पाप कभी नहीं करेंगे ऐसा विचारिके ब्राह्मण पापबुद्धि त्याग देवेंगे हे श्रोताहो इस वास्ते दूसरेसे ब्राह्मणको दुःख नाश करने वास्ते कृष्ण कहेहैं ३ इतिभा० ए० शं० मं० सप्त दशे ऽध्याये सप्तदश वेणी ॥ १७ श्लो० ॥ ४३ ॥

श्रोता पूछतेभये हे गुरुजी जो ब्राह्मण बैरागमें मन लगाय के संन्यास लेनेकी इच्छा करतेहैं उनके विघ्नको स्त्री आदि परिवार कैसे करेंगे क्योंकि मन कच्चा होवै तबतो जो चाहै सो विघ्न करि देवै और जो मन पक्का होके बैराग में लागि गया तो किसीको किया विघ्न नहीं होसकैगा यह शंकाहै १ वाचक बोले भाई स्त्री पुत्र कुटुंब करिके उत्पत्ति भई जो फां-सी उसको सब चर अचर जीवकाटा चाहैं तो किसीकी काटी नहीं कटैगी जो कोई महात्मा काटने को श्रम करेंगे तब बडे कठिनसे काटि सकैंगे क्योंकि स्त्री पुत्रके मोह में पशु पक्षी बँधि गयेहैं तो मनुष्य बंधिगया तो क्या आश्चर्यकी बात हुई नहा॰ वास्ते भगवान् कहेहैं कि ब्राह्मण को मन बैरागमें लगा १६ ॥ श्लो॰ स्त्री पुत्र आदि परिवार संन्यासमें विघ्न करते हैं २

श्रोतार ऊचुः ॥ तपस्तीर्थजपोदानमन्याश्चापि सुसत्क्रियाः । विहाय भगवान्ज्ञानं कथं श्रेष्ठमुवाच ह १ वाचक उवाच॥फलदायिनि कालेन सर्वाश्चैश्वर्यक्रियादयः। सद्यःफलति संसारे ज्ञानमेकं सुखप्रदम् २ दृष्ट्वाचिरमुवाचेदमुद्धवस्य रमापतिः ३ इति भा० ए० शं० मं० एकोनविंशेऽध्याये एकोनविंशावेणी ॥ १९ ॥श्लो०॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ज्ञानवैराग्यकर्मादि तथातपजपौ

इति भा० ए० शं० मं० अष्टादशे ऽध्याये अष्टादशवेणी ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ १४ ॥

श्रोता पूछते भये तपस्या तीर्थ जप दान आदि और जो अनेक सुन्दर २ क्रिया हैं तिन सब को त्यागिकै अकेले ज्ञान को बड़ा श्रीकृष्ण क्यों कहे यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले जितनी संसार में सुंदरि २ क्रिया कर्म हैं जप तीर्थ आदि ए सब बहुत जन्म में फल देतेहैं क्योंकि तप जलदी फल नहीं देवैगा तीर्थमें स्नान करतमात्र स्वर्ग नहीं होवैगा और जिस वखत शरीरमें ज्ञान उत्पन्न होवैगा उसी वखत अनेक जन्म को दुःख नष्ट होकै जलदी सुख प्राप्त होवैगा २ लक्ष्मीके पति जो श्रीकृष्ण सो अपना सखा उद्धवको एकठा रहना बहुत दिन तक नहीं देखे घरी आधघरीको देखिकै जलदी उद्धवको सुख होने वास्ते ज्ञानकी उपासना उद्धव को बताये हैं क्यों कि श्रीकृष्ण के वियोग को दुःख जप तप तीर्थों करिकै दूर न हो सकता और ज्ञान उस दुःखको जलदी दूरि करि दिया है श्रोताहो इस वास्ते तप जप तीर्थको त्यागिकै श्रीकृष्ण ज्ञान को श्रेष्ठ कहेहैं ३ इति भा० ए० शं० मं० एकोनविंशतितमे० एकोनविंशतितमवेणी ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

गुरो । सर्वान्कृष्णःपरित्यज्य कथम्भक्तिंप्रशंसवै १ वाचक उवाच ॥ प्राप्तंकलियुगं घोरं दृष्ट्वासत्कर्म्मनाशनम् । भक्तिमेकांकलौशेषां ज्ञात्वाभक्तिंप्रशंसह २ इ० भा० ए० शं० मं० विंशोऽध्यायोविंशवेणी ॥ २० ॥ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ नास्तियस्मिन्कृष्णमृगस्सदेशःपतितस्स्मृतः । गंगादिसरितस्सर्वेस्तीर्थाःपुण्याश्रमास्तथा। एतेपितेनसंहीनाः पतिताःकृष्णभाषिताः १ वाचक उवाच ॥ कृष्णेनोक्तंहितत्सत्यमज्ञानंवाचकस्यच ।

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी पहिले तौ कृष्णजी ज्ञान की तारीफ किये कुछु देरमें दूसरी दफे ज्ञान बैराग तप जप तीर्थ आदि लेकै जो सुन्दर २ कर्म तिन सबको त्यागिके भक्तिकी तारीफ किये सबसे भक्ति बड़ी है २ यह शंका होती है कि किसको श्रेष्ठ मानैं भगवान् तो कभी कुछु कहे २ ऐसा वचन सुनिकै बड़ा भ्रम होताहै १ वाचक बोले श्रीकृष्ण विचार किये कि थोरेही दिनोंमें कलियुग आवैगा जप तप तीर्थ आदि सब सुन्दर कर्मोंको नाश करि देवैगा भक्तिको नाश नहीं होवैगा इस वास्ते भक्तिकी तारीफ भगवान् किये हैं कि कलियुगमें भक्ति सिवाय दूसरा काम किसी को किया होवैगा नहीं २ इति भा०ए०शं०मं०विंशोऽध्याये विंशवेणी॥२०॥श्लोक॥३३॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण कहे थे कि जिस देश में काला मृग नहीं होता सो देश भ्रष्ट है तौ हे गुरुजी बड़े आश्चर्यकी बात है कि जिस देश में श्री गंगा आदि नदी प्रयाग पुष्कर आदि तीर्थ बद्रीनारायण आदि आश्रमहैं सोभी देश काला मृग विना भ्रष्ट हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले श्रीकृष्ण

नास्त्यत्राकृष्णसारस्यह्यर्थोकृष्णस्तगोच्यते २ जगद्व्यर्थंचयोज्ञात्वा सारहीनंसनिश्चयः। कृष्णमेकंचसारंवै यत्रनास्त्यशुचिश्चसः ३ इतिभा०ए०शं०मं० एकविंशोऽध्यायेएकविंशवेणी॥ २१॥ श्लोक॥ ८॥

श्रोतार ऊचुः॥उद्धवोवचनंकृष्णमुवाचनैवभूतले। विद्वांसस्तेचकेब्रह्मन् नलोकेयेचसंतिवै १ वाचक उवाच॥वेत्तिविद्यांचयोधीरस्सवैविद्वांश्चकथ्यते। सुज्ञो

उद्धव से कहे थे सो सब सत्य है परन्तु विना व्याकरण पढे से कथा बांचते हैं सो प्राणी अर्थ को अनर्थ करि देतेहैं क्यों कि भागवत में अकृष्णसारका अर्थ ऐसा व्यास जी नहीं किये कि जिस देश में काला मृग नहीं होवैगा सोदेश भ्रष्ट है ऐसा अर्थ व्यास जी नहीं किये २ जोकोई ऐसा मानुष्यहै कि संसार को कुछभी नहीं मानते इस में कुछभी सार नहीं है ऐसा जानिकै वड़ी निश्चय करिकै श्रीकृष्णको सार जानते हैं कि सब झूठा है श्रीकृष्ण को चरण सत्यहै ऐसे जानने वाले मानुष्य जिस देश में नहींहैं सो देश भ्रष्टहै ऐसा कृष्ण कहे थे कुछ ऐसा नहीं कहेथे कि जिस देश में काला मृग नहीं है सो देश भ्रष्ट है ३ इति भा० ए० शं० मं० एकविंशोऽध्याये एकविंश वेणी॥२१॥ श्लो०॥ ८॥

श्रोता पूछते भये हेब्रह्मन् श्रीकृष्ण से उद्धव कहे कि पृथ्वी में विद्वान् नहीं हैं वो विद्वान् कौन हैं जो संसार में नहीं हैं एक विद्वान् तो कहाते हैं कि जो व्याकरण आदि शास्त्रों को पढ़ते हैं ऐसे विद्वान्तो पृथ्वीमें बहुत हैं परंतु उद्धव जिनको विद्वान्कहे वो विद्वान् कौनहैं यहशंकाहै १ वाचक बोले शास्त्र पढ़नेवाले को विद्वान् योगी लोग नहीं कहते विद्वान उसका

रपिसुदुर्लभ्या सातस्तेऽत्रनसंतिवै २ इतिभा०एका०शं०
मं० द्वाविंशेऽध्यायेद्वाविंशवेणी ॥ २२ ॥ श्लो० ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुनिभिश्चापिदुर्लभ्यं ज्ञानंलेभे
द्विजःकथम् । दुष्टःक्रूरमतिर्लुब्धो कृपणोविमुखोहरौ १
वाचक उवाच ॥ धनक्षीणोभ्रमन्विप्रः काननेस्तेदिवा
करे । पंकमग्नांचगान्दृष्ट्वा तस्मात्तामुद्धारह२ तत्प्री
त्यापद्भुतंज्ञानं ब्राह्मणःकर्म्मतापितः ३ इति भा० ए०

नाम है कि जो प्राणी मोक्ष विद्या को जानै मोक्ष विद्या कैसी
हैकि जिस मोक्षविद्या की प्राप्तिहोनेवास्ते बड़ेबड़े चतुर योगी
जन उपाय करि करि हारिगये परंतु मोक्ष विद्यानहीं प्राप्तभई
और जो किसी योगीको प्राप्त भई तो बड़े कठिन से ऐसी
विद्या जानने वाले विद्वान् पृथ्वी में नहींहैं इस वास्ते उद्धव
कहेहैं शास्त्र पढ़ने वाले विद्वानोंकेवास्तेनहींकहेथे २इतिभा०
ए० शं०मं० द्वाविंशेऽध्याये द्वाविंश वेणी ॥ २२ ॥श्लो०॥३५॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजीबड़ा दुष्ट खोटी बुद्धि कृपिण
भगवान् में प्रीति नहीं ऐसा दुष्ट ब्राह्मण मुनियों करिकै बड़े
दुःख से प्राप्त होने लायक जो ज्ञान तिस ज्ञानको क्यों प्राप्त
भया यह शंका है १ वाचक बोले धनको नाश होगया तो ब्रा-
ह्मण दुःखी होकै बनमें भ्रमता भ्रमता शाम होगई तो क्या
देखताहै कि एक गाय गारामें धसिगईहै गारासे निकसिनहीं
सक्ती बाहर आनेको उस गायको यह ब्राह्मण देखिकै बड़ी दया
से हाय हाय शब्द करिकै कीचड़से निकालिकै बाहर करि
दिया गाय खुशी होकै धीरे धीरे चली गई २ गाय की कृपा
से बहुत जल्दी ब्राह्मणको ज्ञान प्राप्त भया जो ज्ञान मुनिजन
को बड़े कठिनसे प्राप्त होताहै गृहस्थीमें जो खराब कर्म ब्राह्मण

शं० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥
श्लो० ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ममेतिकृष्णःप्रोवाच कथम्ब्रह्मन्‌ पुनःपुनः। ईश्वरस्यतदाश्चर्य्यं समिमानयुतंवचः १ वाचक उवाच ॥ प्रार्थितश्चोद्धवेनादौ श्रीकृष्णोममसन्निधौ। कदाप्यन्यचरित्रस्य मावदिष्यसित्वंकथाम्‌ २ त्वन्नामरसमग्नोहं मतोमाधवभाषितम्‌ ३ इतिभा० ए० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्यायेचतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६ से १० तक ॥

ने कियाथा उन्ह कर्मों करिके धनको नाश भये पर जलि रहा ज्ञानको पायके आनन्द होगया है श्रोता हो इस उपायसे दुष्ट ब्राह्मण को ज्ञान मिलताभया ३० इति भा ए० शं० मं० त्रयोविंशेऽध्याये त्रयोविंशवेणी ॥ २३ ॥ श्लो० ॥ १३॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण बारम्बार मम ऐसा वचन क्यों कहते भये क्योंकि ईश्वर होके अभिमान युक्त वचन बोलना यह बड़े आश्चर्य की बात है मूर्ख मानुष्य तो ऐसी बात बोलते हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले पहिले ही उद्धव श्रीकृष्णकी प्रार्थना किये थे हे कृष्ण महाराज मेरे सामने आपु किसी दूसरे देवताकी और अपने दूसरे अवतारों की कथा मतिकहना कभी भी आपनी एककथा तो कहना२ उद्धव कहे हे भगवन्‌ आपु के नाम के रस के सुख में मैं मस्त होगयाहों दूसरे को चरित्र मेरेको नहीं अच्छा लगता है श्रोताहो ऐसी उद्धवकी प्रार्थनाको मानिकै श्रीकृष्ण मम२ कहे थे कुछ अभिमान से नहीं कहेथे ३ इति भा० ए० शं० मं० चतुर्विंशेऽध्याये चतुर्विंशवेणी ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥ से १० ॥ तक ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कोजीवोयस्तुजीवेन मुक्तोभवति भोगुरो। एषानोमहतीशंका तांकृन्धिभ्रमदायिनीम् १ वाचक उवाच ॥ जीवोब्रह्मस्वरूपश्च अजीवोदेहमुच्यते। तन्मुक्त्वासुखमाप्नोति नान्यथादुःखभाग्भवेत् २ इति भा०ए०शं० मं० पंचविंशेऽध्यायेपंचविंशवेणी॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वेदादिसर्वशास्त्रेषु भगवान्जगदीश्वरः। कथितस्त्वहमार्त्तानामुवाचशरणन्त्वहम् १ वाचक उवाच ॥ भवतांवचनंसत्यं मुन्मत्ताःकामिनः

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी जीव क्या है जो जीवसे छूटि जाता है यह हमारे सब के मन में बड़ी शंका है इस शंका को आप काटो १ वाचक बोले जीव ब्रह्म को रूप है अजीव देह है जब तक देह के सुखकी इच्छा जीव करता है तब तक दुःख भोगता है और देह में बँधा भी रहता है और जब देह के सुखकी इच्छाको छोड़ देताहै तब देहकोभी त्यागिके ब्रह्म सुखको प्राप्त होता है यह अर्थ (जीवोऽजीवो विहायमां) इस श्लोक में है २ इति भा० ए० शं० मं० पंचविंशेऽध्याये पंचविंश वेणी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ ३५ ॥

श्रोता पूछते भए वेद शास्त्र सब में लिखा है कि भगवान् तीन लोक चौदह भुवन चर अचर प्राणी को मालिक है तो फिरि श्रीकृष्ण अपने मुख से क्यों कहाकि दुःखी प्राणी की शरण हम हैं यह बड़ी शंका है १ वाचक बोले तुमारे सबके वाक्य सत्य हैं परंतु अभिमानी कामी दुष्ट ये सब प्रभुको

शठाः। नैवजानन्तितेविष्णुन्दीनाश्चाहोऽनिशम्प्रभुं २ इतिभा० ए० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी २६ श्लो० ॥ ३३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ क्रियायोगं च सर्वेषामाश्रमाणां च सम्मतम्। आश्रमेष्वपिसंन्यासश्श्रेष्ठस्तस्यकथन्त्विदम् १ वाचक उवाच ॥ आदौकृत्वाक्रियायोगम्पश्चात्संन्यासमाश्रिताः। नतेषांसम्मतन्तद्वै परैःपृष्टावदन्ति

नहीं जानते और गरीब राति दिन प्रभुको जानता है इसवास्ते गरीब प्रभुको प्यारे हैं अभिमानी द्रोही हैं इसवास्ते कृष्ण कहेथे किमैं गरीबों को मालिक हौं ॥ २ ॥ इति भा० ए० शं० मं० षड्विंशेऽध्यायेषड्विंशवेणी ॥ २६ ॥ श्लोक ॥ ३३ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी छवोंशास्त्रों का चारों वर्णोंका चारिआश्रमों का मतयहहै स्नान चंदन पुष्प धूपदीप नीरांजन और अनेक सामग्री करिकै ईश्वरको पूजन करना योग्य है परन्तु तीन आश्रम जैसा ब्रह्मचारी गृहस्थ बानप्रस्थ एतो भगवान् को पूजन करना मानते हैं परन्तु इन्ह तीन्हों से बड़ाजो संन्यासी वोलोग पूजन करना क्यों मानैंगे वोतोसब कर्म्मत्यागि दिहेहैं तौफिरि उद्धव क्योंकहेथे कि भगवान् को पूजन करना चारों आश्रम को मतहै यह शंका है १ वाचक बोले मुनिजन पेश्तरतौ बड़ी बड़ी बिधि से वैकुंठनाथको पूजन करिकै पीछेसे संन्यास लेते हैं संन्यास लिहेपर फिरि उनको मत यह नहीं है कि अभीभी पेश्तर सरीके सामग्री करि कै भगवान् को पूजन करना परन्तु जो कोई सज्जन भगवान् को पूजन करनेकी बिधि पूछता है तौउसको बताते हैं इसवास्ते उद्धव कहे कि संन्यासी देहसे पूजन नहीं करते

हि २ एतस्माद्धवेनोक्त माश्रमाणां च सम्मतम् ३इ०
भा० ए० शं० मं० सप्तविंशेऽध्याये सप्तविंशवेणी २७॥
श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कृष्णवाक्यमिदंशुद्धन्न प्रशंसेन्नानिंद्येत् । परेषांकर्म्मणोभावं कस्यार्थमिदमीरितम् १ वाचक उवाच ॥ विरक्तानामिदंकर्म्म विरक्तेष्वपि न्यासिनाम् । न्यासिनामपिश्रोतारस्सर्पर्यहंसधियान्ध्रुवम् २ इति० भा० ए० शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंशवेणी २८ ॥
श्लो० ॥ १ ॥

लेकिन मनमें तौ जानते हैं कि पूजनको भूले नहीं जो भूलिग येहोतेतौ दूसरे को क्यों बताते २ इसवास्ते चारिआश्रम को मत पूजन करने में उद्धव कहे थे ॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं० मं० सप्तविंशेऽध्यायेसप्तविंशवेणी ॥ २७ ॥ श्लो० ॥ ४ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीकृष्ण जी कहेकि कोई सुन्दर कर्म करै तौ उसकी तारीफ़ नहीं करना और कोई बुरा कर्म करै तौ उसकी निन्दा भी नहीं करना क्योंकि जो स्वभाव जिस जीव को होता है सो तैसा कर्म करता है तौ हे गुरुजी ऐसा सुन्दर वचन श्री कृष्ण जी किसके वास्ते कहे थे गृहस्थ किसी की निंदा स्तुति न करै कि विरक्त न करै यह शंका है १ वाचक बोले हे श्रोता हो यह वचन भगवान् विरक्त को कहेहैं तथा विरक्तों में जो कोई संन्यासी होता है उसके वास्ते भी कहे हैं और संन्यासियों में जो कोई परम हंस होजाते हैं उन के वास्ते तो निश्चय से कहेहैं यह अर्थ है कि साधु भरे को किसी जीवकी निंदा स्तुति नहीं करना चाहिये ऐसे कृष्ण के वचन गृहस्थ के वास्ते नहीं कहे हैं ॥ २ ॥ इति भा० ए०

श्रोतार ऊचुः ॥ प्रोक्तवानुद्धवःकृष्णम्मोहोविद्याविलश्रमे । अभवन्मोहसंयुक्तः तत्राप्टष्टःपुनःकथम् १ वाचक उवाच ॥ नरस्वभावादभवद्गतमोहोऽपिचोद्धवः। मोहग्रस्तःक्षणंभूत्वा कृष्णंस्मृत्यजहौ पुनः २ ॥ इति० भा०ए० शं० मं० एकोनात्रिंशे०एकोनात्रिंशवेणी २६ ॥ श्लो० ॥ ३७ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ कथंभ्रांतिंसमापेदेव्याधः कृष्णपदे

शं० मं० अष्टविंशेऽध्याये अष्टविंश वेणी ॥ २८ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण से उद्धव कहे कि महाराज मेरामोह अब मेरी देहको त्यागिकै भागि गया मोह से अब मैं छूटि गया तौ फिर यमुना के तट पर विदुर उद्धव से कृष्ण का हाल पूछे तौ क्यों मोह ग्रसित होगये ईश्वर का हालभी नहीं कहि सके कुछ देर पीछे हाल कहे जो कोई कहे कि ज्ञान पाये पीछे फिरि मोह घेर लिया होगा तो सत्य है जो बहुत दिन होगया होगा तौ आश्चर्य नहीं था परन्तु ज्ञान पायकै कृष्णके पास से दिन तौ दो तथा तीन भया था विदुर की उद्धव की मुलाकाति भई तब यह शंका है १ वाचक बोले उद्धव का मोह नाश भया था तौ मनुष्य के स्वभाव करिकै क्षण१मोहके वश होकै श्रीकृष्णको स्मरणकरिकै फिरि मोहको त्यागिदेतेभये हेश्रोताहोइसवास्ते यमुनाकेतटपरउद्धव को मोह भया कुछ अज्ञानी सरीके मोह नहीं भया२इतिभा० ए० शं० मं० एकोनात्रिंशे ऽध्याये एकोनात्रिंश वेणी ॥ २६ ॥ श्लो० ॥ ३७ ॥

श्रोता पूछते भये व्याधा को मनुष्य को तथा मृगा के

तदा । मृगमानुष्ययोश्चिन्हेयोजघ्नेचरणोहरेः १ वाचक उवाच ॥ अंगदश्चगतःस्वर्गेरामपद्माब्जसेवया । रामदत्तवरश्चैवस्वपितुर्वैरमोचने २ निशम्यसमय स्वीरस्स्वर्गाद्धागत्यकानने । व्याधोभूत्वाजघानाशुचर णेकमलापतेः ३ इति भा० ए० शं० मं० त्रिंशेऽध्याये त्रिंशवेणी ३० ॥ श्लो० ३३ ॥

पहिंचानने भ्रम क्यों भया जिस भ्रम करिकै श्रीकृष्णके चरणा रविंद को मृग मानिकै महाराज के चरण में बाण मारता भया निशाना लगाने वाले मनुष्य कभी भी नहीं चकते छोटी भी चीज़ होती है तौभी दृष्टि से देखि लेतेहैं और त्रिलोकनाथकी देह तौ बड़ी रही होगी व्याधा कैसा पागल हो गया मृग और मानुष्य उसको नहीं मालूमपरा यह शंका है १ वाचक बोले अंगद रघुनन्दन के कमल चरणों की सेवा करिकै स्वर्ग को जाने लगा तौ रघुनाथ जी अंगद से कहेकि जो बरदान तेरेको चाहै सो मांगु तब अंगद बोला हे महाराज मेरे पिता को आपु मारि डाले हो सो दांव मैं लिया चाहता हूं आपुसे तब रघुनाथ जी कहेकि हम कुछ युग बीते द्वापर में कृष्ण अवतार धरैंगे तब तुमारे पिता के ऋणसे तुमको छुड़ा वैंगे तुमारे हाथ के बाणसे हम प्राण त्यागिकै बैकुंठ को जावैं गे २ श्रीरघुनन्दन जो समय कहि गयेथे उसी समय को देखि कै बीर अंगद स्वर्ग लोक से उसी बनमें आयकै व्याध होकै लक्ष्मी के पति जो भगवान् तिनके चरण में बाण मारता भया हे श्रोता हो इसवास्ते व्याध को मनुष्य को तथा मृग को पहिंचान भूलि गया क्योंकि बहुत दिनको व्याध नहींथा वो तो जल्दी आया पिताको दांव लेके चलागया ॥ ३ ॥ इति भा० ए०शं० मं०त्रिंशेऽध्यायेत्रिंशवेणी॥३०॥श्लो०३३॥

श्रोतार ऊचुः ॥ योगाग्निनाशरीरं च दग्ध्वादेहमगात्पदं। सदेहोनजगत्कर्ताशंकैषाभ्रान्तिलोचनः १ वाचक उवाच ॥ नशोभानरदेहेनवैकुंठगमनेमम । यद्येहामुम्परित्यज्यधृत्वापौर्वम्ब्रजाम्यहम् २ मृतावशेषायदवस्सस्त्रियः पितरौ च मे । आगत्यमेतनुन्दृष्ट्वाभविष्यन्त्यतिविह्वलाः । मरिष्यन्तेपितेषाम्वैदुःखंबहुतरंभवेत् ३ अतोयोगाग्निनादग्ध्वाशरीरंगतवान्पदम् ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० एकत्रिंशे० एकत्रिंशवेणी ३१ ॥ श्लो० ६ ॥

श्रोता पूछत भये हे गुरुजी श्रीकृष्ण योग अग्निसे अपनी देहको भस्म करिकै अपने स्थानको जाते भये परन्तु देहसहित क्यों नहींगये देह जलाना पामर जीवों के वास्ते है कुछ ईश्वरके वास्ते नहीं है यह शंका होती है १ वाचक बोले श्रीकृष्ण विचार किये कि मानुष्य की देह सहित बैकुंठ को जावैं तब तो शोभा नहींहोगी क्योंकि बैकुंठ लोकवाली देह तौ हमारी दूसरी है यह देहतौ मानुष्य लीला करने वास्ते धारण कियाथा और जो इसदेह को इसस्थानपर त्यागि कै अपना पेश्तरको स्वरूप धारण करिकै बैकुंठको चलेजावैं तौ भी अच्छा नहीं क्योंकि २ जोयदुबंशी मरिगये सोतो मरिगये परन्तु जोकोई थोरे २ स्त्री सहित नहीं मरेजीतेहैं जैसे हमारे माता पिता तथा रुक्मिणी आदि लेके स्त्रियाँसो सब इसस्थान पर आयके हमारी देहको जीवरहित देखिकै बहुत दुःखी होवैंगे मरैंगे तोसही परन्तु मरण समय में भी हमारी देहको देखि देखि बहुत दुःखसे प्राण छोड़ैंगे ३ हे श्रोताहो श्रीकृष्ण

ऐसा बिचारिकै योगअग्निसे अपने शरीरको भस्म करिकै गोलोक को पधारते भये ॥ ४ ॥ इति भा० ए० शं० मं० एकत्रिंशेऽध्यायेएकत्रिंशवर्णी ॥ ३१ ॥ श्लो० ॥ ६ ॥

इति श्रीमद्भागवतैकादशस्कंधशंकानिवारण मंजरी शिवसहायबुधविरचितासुधामयी टीकासमाप्ता ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी॥

द्वादशस्कंधे

सुधामयी टीका सहिता विरच्यते ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ स्वलोकंगमितेकृष्णेवंशंकौसूर्यसो मयोः। प्रवर्तितंस्वयंराजादृश्यापिपृष्टवान्कथम् १ वंशः कस्याभवद्भूमावाचार्य्यमिदमद्भुतम्।समीचीनमिद स्प्रश्नंनविनष्टेचद्वयोःकुले । कस्यवंशोभवेद्भूमौचिती शोमुनिसत्तम २ वाचक उवाच ॥ ज्ञात्वासन्निधिमाप न्नंमृत्युंसर्पोद्भवन्नृपः। प्रयाणंशुकदेवस्यशीघ्रवीच्छया

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी श्रीकृष्णको बैकुंठ गयेके पीछे पृथ्वी में सूर्य वंशके राजा तथा चंद्रवंश के राजा बहुतथे तिन राजों को परीक्षित् राजा देखताथा कि दोनोवंश के राजा भूमिमें राज करिरहे हैं परन्तु राजा देखि कै फिरि शुकदेव-जीसे क्यों पूछाकि महाराज कृष्णको गोलोकगये पीछे पृथ्वी में किसवंश के राजा होतेभये १ हे गुरुजी जब सूर्यवंश के तथा चंद्रवंश के राजोंको नाश होगया होता तब तौ परीक्षि त्को ऐसा पूछना योग्यथा हे शुकजी महाराज श्रीकृष्ण तौ अपने लोकको गये अब भूमि में किसके वंश के राजा होवैंगे यह शंका है २ वाचक बोले राजा परीक्षित् ज्ञानतौ पायगया बड़ाज्ञानी होगया तौभी मानुष्य देहके स्वभावसेती अपना मरण सर्प करिकै सामने जानिकै कि अब मेरा शरीर थोरेही

तुरोभवत् ३ द्वयोर्विरहसंतप्तःप्राप्तज्ञानोपिभूपतिः। पप्र च्छातुरभावेनकस्यवंशोऽभवत्क्षितौ ४ इति भा० द्वा० शं० मं० प्रथमेऽध्याये प्रथमवेणी ॥ १ ॥ श्लोक १ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ द्वितीयेद्वादशस्यैववसुश्लोकेमुनी श्वरः। क्षत्रशब्दमधश्चक्रेछन्दभंगोऽपिनोकथम् १ वाचक उवाच॥परावरज्ञस्समुनिर्वीक्ष्यक्षत्रंकुकर्म्मणा। विनष्टंतत्रधर्म्मस्थंविशमन्योन्यविग्रहम्। क्षत्रशब्द मधश्चक्रएतदर्थंकलौमुनिः २ इति भा० द्वा० शं० मं० द्वितीयेऽध्याये द्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लोक ॥८॥

देरमें छूटैगा तथा शुकदेव कोभी जानिलिया कि अब जलदी बिदा होजावैंगे दोनों बिरहसेती राजा भसम होरहा है ३ ऐसी आतुरसे पूछता भया महाराज कृष्ण के गयेपीछे भूमि में किस बंशके राजा होतेभये हेश्रोताहो चौरासी लाख यो-निमें ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिस को अपनी देहके बियोग को दुःख तथा गुरुकी देहके बियोग को दुःख नहोवै ॥ ४ ॥ इति भा० द्वा० शं० मं० प्रथमेऽध्यायेप्रथमवेणी॥१ ॥श्लो०१॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी द्वादश के दूसरे अध्याय के श्लोक ८ में व्यासजी ने क्षत्रीको नीचे पदमें लिखे हैं और वाणियां को ऊपर के पदमें लिखेहैं ब्राह्मण के नीचे क्षत्री लिखे जातेहैं क्षत्री के नीचे वैश्य वैश्यके नीचे शूद्र ऐसा शा-स्त्रमें प्रमाण लिखा है फिरि उलटा क्यों व्यास जी लिखे जो कोई विद्वान् कहै कि क्षत्री को पाहिले लिखेसे श्लोक को छंद भ्रष्ट होता रहा होगा इस वास्ते उलटा लिखे हैं सो श्लोक को छन्द भी नहीं नष्ट होता क्यों उलटा पद लिखे यह बड़ी शंका है १ वाचकबोले व्यास मुनि भूत भविष्य वर्तमान तीनों

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रुतभागवताऽर्थोपिशुकशिष्यो विशेषतः। प्राप्तसन्निधिकालश्चतथापिकलिजस्यवै। कथ ऽपप्रच्छदोषस्यशान्त्युपायन्नृपोत्तमः १ वाचक उवाच विचार्यमानसेस्वीयेकलौकौरवसत्तमः। समाजोदुर्लभ श्चेद्भविताभोक्षसूचकः २ पप्रच्छकलिदोषस्यकलि

कालके जानन वाले थे ऐसे व्यासजी देखिके कि कलियुग में कुकर्म करिके चत्रियों का बंश नष्ट होजावैगा छत्री आपुस में बिगाड़ करैंगे चोरी तथा अन्याय करैंगे जनेऊ पहिरना त्याग देवैंगे इन्हें आदि और अनेक बुराकर्म करैंगे नीचकी स्त्रीको दुग्धपान करैंगे और जो शास्त्रों में चत्रियोंको धर्म लिखता है धर्मकी रक्षा करना आदिलेके और अनेक प्रकारको सुंदर २ कर्म बैश्य करैंगे इसवास्ते बैश्य के नीचे छत्री को लिखे हैं बैश्य को छत्रीके ऊपर लिखे हैं ॥ ३ ॥ इति भा० द्वा० शं०मं० द्वितीयेऽध्यायेद्वितीयवेणी ॥ २ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये राजा परीक्षित् भागवत समस्त सुनि लिये तथा शुकदेव जीके शिष्यभी थे मरणभी जल्दी होना था उस समय ज्ञानमें चित्त देना था ऐसे ज्ञानी भी तथा दुःखी भी परीक्षित्राजा कलियुग के दोषकी शान्ति होने के उपाय क्यों पूछे जानते नहींथे मैं तो थोरेही देर में मरोंगा भगवान् में चित्त देवों कलियुग के दोषको मेरे को क्या डर है जीते तबतो डरथा अब शान्त होनेका उपाय क्यों पूछों ऐसा विचार त्यागि के क्यों पूछे यह शंका है १ वाचकबोले राजा परीक्षित् आप- ने मनमें विचार किये कि कलियुग में मोक्ष देने वाली ऐसी समाज कभी नहीं होवैगी पेट भरने वास्ते कथा वार्ता होवे गी २ इसवास्ते दूसरे जीवों को दुःख करिके दुःखी जो

जानांसुखायच । शान्त्युपायंनृपोधीमान्परतापेनतापितः ३ इति भा० द्वा० शं० मं० तृतीयेऽध्यायेतृतीये वेणी ३ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ शतवर्षाधिकोवायुर्वातिवर्षतिवारिदः । शतवर्षाणिमुनिनाप्रमाणंप्रलयेप्रभो १ किमभिप्रायमाश्रित्यनन्यूनंनाधिकंकृतम् २ वाचक उवाच ॥ क्षमाबलंसमाश्रित्यसंस्थितापृथिवीजले । क्षमाशत

परीक्षित् सो कलियुगमें जन्मैंगे जो प्राणी तिनको सुख होने वास्ते कलियुगके दोष की शान्ति होनेका उपाय राजा पूछते भये कि मुनि जो उपाय कहैंगे तो उसी उपाय करिकै कलियुगमें जीवोंका उद्धार होवैगा हे श्रोता हो ऐसा उपकार करने वास्ते राजा दुःखी भी था तौभी पूछाहै कुछ मूर्खता से नहीं पूछा ४ इति भा० द्वा० शं० मं० तृतीयेऽध्याये तृतीय वेणी ॥ ३ ॥ श्लो० ॥ १६ ॥

श्रोता पूछते भये प्रलय होनेवास्ते व्यासजीने शत १०० बर्ष को प्रमाण क्यों करिदिया सौ बर्ष से दोचारि एक बर्ष तथा मास ऊपर प्रमाण करते अथवा सौबर्षके नींचे दोतीन पांच छ वर्ष तथा महीना तथा दिनप्रमाण करतेपरन्तु ऐसा प्रमाण क्यों लिखेकि एक बर्ष से सौ १०० बर्ष को अधिक करिकै कि सौबर्ष अन्ततक वायु चलती है फिरि सौबर्ष मेघा जल बर्षते हैं ऐसा सौबर्ष को प्रमाण क्यों लिखे यहशंका है१ वाचक बोले पृथ्वी में क्षमा बहुत है उसी क्षमाके जोर करिकै जलके ऊपर टिकी पृथ्वी को जल डुबोय नहीं सकता क्षमा के प्रताप सेती क्षमा के सौ १०० गुण हैं भगवान् भी क्षमाको जीता चाहैं तौ भगवान् के जीते क्षमा नहीं जीती

गुणाप्रोक्तानजेयाहरिणापिसा। एकैकगुणनाशार्थंशत वर्षावधिःकृता ३ इति भा० द्वा० शं० मं० चतुर्थे० चतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वर्ण्यतेऽत्रमुहुर्शंविष्णुर्मुनिवाक्य मिदंगुरो । नत्वत्रदृश्यतेभीक्ष्णंहरिवर्णनमण्वपि १ वाचक उवाच ॥ पश्यन्तिब्रह्मवेत्तारोविश्वमेतच्चरा चरम्। ब्रह्मरूपंचश्रोतारश्चातोभीक्ष्णम्प्रकीर्तितम् २ इति भा० द्वा० शं० मं० पंचमेऽध्याये पंचमवेणी ॥५॥ श्लो० ॥ १ ॥

जावैगी ऐसी बलवान् क्षमा है २ इसीवास्ते क्षमाके सौ १०० गुणोंका एक २ वर्ष में नाश करने वास्ते सौ वर्ष १०० किये हैं एक एक वर्ष में एक २ गुणको नाश होवै सौबर्ष १०० में सौगुण को नाश भयेपर प्रलय होवैगा हे श्रोताहो इसवास्ते सौवर्ष प्रलय होने को प्रमाण किये हैं ॥३॥ इति भा० द्वा० शं० मं० चतुर्थेऽध्यायेचतुर्थवेणी ॥ ४ ॥ श्लो० ॥ ८ ॥

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी शुकदेव जी कहेकि हे राजन् इस भागवत में वारंवार भगवान्को नाम तथा चरित्र वर्णन भया है ऐसे भागवत में बारंवार भगवान् को नाम चरित्र थोराभी नहीं वर्णन भया समय पायके सब कथा वर्णन भई तथा भगवान् कोभी चरित्र वर्णन भयाहै तो फिरि वारंवार वर्णन होनेवास्ते मुनिजी क्यों कहे यह शंका है १ वाचक बोले ब्रह्मके जाननेवाले मुनिजो हैं सो चर अचर को ब्रह्मरूप देखते हैं शुकजी ब्रह्मके जानने वाले हैं चर अचर को ब्रह्म रूप जानिके चर अचर को वर्णन बारंबार भयातो भगवान्

श्रोतार ऊचुः ॥ पंचाऽध्यायेशुकप्रोक्तंनत्वांघत्त्यतितक्षकः। प्रेरितोद्विजवाक्येनसर्प्पोराजर्षिसत्तम १ त्वामित्युवाचकंदेहंसोचेज्जीवंसमुवाचसः। तथाप्ययोग्यंकेनापिनजीवोदह्यतेकदा २ लौकिकेदेहप्राधान्यंदेहंत्वामित्युवाचसः। दृष्ट्वालोकेनकैर्ज्ञातोजीवोविधिविनिर्म्मिते। बभूवतत्कथंभस्मसर्पदंष्ट्रान्नृपस्यसः ३

को वर्णन जानिलिये इसवास्ते भगवान् को चरित्र बारंबार वर्णन होनेको कहते भये ॥ २ ॥ इतिभा० द्वा०शं०मं०पंचमेऽध्यायेपंचमश्रेणी ॥ ५ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये द्वादशस्कंध के पांचवें अध्याय में शुकजी कहे हेराजन ब्राह्मण के शापकी आज्ञा को पाये जो सर्प सो तुमको भस्म नहीं करैगा१भागवत के श्लोक में (त्वां)लिखा है तब शुकदेव जीने त्वां किसको कहथे परीक्षित् की देहको कहेथे कि जीवको कहेथे जो जीवको(त्वां)कहेथे तौभी अयोग्य है क्यों जीव किसी के जलाने से जलि नहीं सकता २ जो कदापि ऐसा देखिकै कि संसार में देहईकी तारीफ़ है जीवको कोई नहीं जानता देहको(त्वां)कहे थे तब फिरि सर्प के काटेसे देह भस्म क्यों होगई मुनितो कहेथेकि भस्म नहीं होगी यहशंका होती है३वाचक बोले जो प्रश्न तुमसबजनोंने किया सो प्रश्न सत्य है संसार में देहकी तारीफ देखिकै कि देह सिवाय जीवको कोईभी नहीं जानता इसवास्ते मुनिजी देहको(त्वां)कहेथे अबदेह भस्म होनेको कारण सुनो शुकके वचन सत्यथे राजाकी देह सर्पकेकाटे से भस्म न होती परन्तु परीक्षित् के मरण के समय में भगवान् विचार किये शुकदेव जीसे राजा भागवत सुना ७ दिन सेसर्पके काटेसे मरते

वाचक उवाच ॥ भवद्भिश्चैवसत्योक्तन्देहन्त्वामिति सोऽब्रवीत् । श्रीभागवतमर्यादापालितुंतत्तकस्यच ४ ब्रह्मर्षेश्चापिसंचक्रेहरिर्निरयमोक्षणम् । वैकुंठंप्रेष्यराजानंतदेहंभस्मसात्कृतम् ५ इति भाग० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्यायेषष्ठवेणी ६ श्लोक ॥ १३ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सुरेशम्पातितुंशक्राद्विजायस्तुसुधाधिपः । यज्ञेसुरगुरुःप्रोचेनायम्बध्यस्त्वयानृप १ अने

हैं प्राणी तब उनको नरक होताहै भागवत के प्रताप से इसको अब नरक में नहीं जाना चाहिये जोऐसा करेंगे तौ सर्प की मर्यादा नाश होवैगी इसवास्ते भागवत की सर्पकी शुकजी की इन तीनोंकी मर्यादा राखनेवास्ते भगवान् परीक्षित् को तीन कर्म करिकै तीनों की मर्यादा राखते भये ४ सर्प काटे से मृत्यु होवै तौ उस प्राणी को नरक वास करना परता है सो भागवत के श्रवण के प्रताप से परीक्षित् को भगवान् ने नरकवास से छुड़ाय लिये तथा शुक जी को राजा शिष्य था इस वास्ते बैंकुठ को राजाको प्राप्त किये सर्पकी मर्यादा रक्षा वास्ते राजा की देहको भस्म करि दिये हे श्रोता हो इस कारण से राजा की देह भस्म हो गईहै कुछ शुक का वाक्य झूठा नहीं है जो सर्पकी मर्यादा भगवान् रक्षा न करते तौ कभी भी राजा की देह भस्मनहोती ५ इतिभा० द्वा० शं० मं० षष्ठेऽध्याये षष्ठवेणी ॥ ६ ॥ श्लो० ॥ १३ ॥

हे गुरुजी जनमेजयकी यज्ञमें बृहस्पति जनमे जय राजा से कहे कि हे राजन् तक्षक अमृतको पीलियाहै अब तुमारे मारेसे नहीं मरैगा क्योंकि अमृत को जो प्राणी पीलेते हैं सो किसी के मारेसे नहीं मरते इसमें यह शंका होतीहै कि

नापीतममृतामित्ययोग्यंकथंगुरो। वाचकउवाच ॥ आतुरेणहरेर्नामसकृदुच्चरितंयदि। तदासंख्यफलम्भाव्य मितिज्ञात्वातुतक्षकः २ कैर्नापिरक्षितोदीनस्सुरेशभवनेस्थितः ३ उच्चचारहरेर्नामआतुरोश्रुपरिप्लुतः। पीतन्तदमृतन्तेनगुप्तोगुरुरुवाचह ४ इतिश्री भा० द्वा० शं०नि०मंजर्यां षष्ठाऽध्यायेसप्तमवेणी ७॥ श्लोक२४

अमृत को मालिक इन्द्र जो राति दिन अमृत पीता था अमृत पीते २ अनेक युग बीति गये ऐसे इन्द्रको स्वर्ग से गिरायके राजाकी यज्ञके कुंडमें भस्म करने की ताकति तो ब्राह्मणों की थी और जो राई भरि अमृत पीलिया सर्प सो ब्राह्मण के मन्त्रसे भस्म न हो सकता १ वाचक बोले बहुत दुःखी होके भगवान् को नाम एको भी दफे जपैतो असंख्य नामके जपका फल होताहै ऐसा शास्त्रोंमें लिखाहै ऐसा तक्षक जानिकै २ विचार कियाकि मैंने बड़े बड़े देवतों के पास गया कोई भी मेरी रक्षा नहीं किये ऐसा विचारिकै इन्द्रके मकान में टिकिकै बहुत दुःखी होरहाहै आंखों से आंसु पड़रहाहै बहुत आतुर होकै हे भगवन् हे नारायण हे त्रिलोक नाथ इस प्रकारसे बड़े आदर प्रेम प्रीति से भगवान् को नाम जपता भया ३ भगवान् को नाम सोई अमृतभया उसी अमृतको जप करना सोई अमृत तक्षक पीता भया इस वास्ते गुप्तकरिकै वृहस्पति कहेथे कि तक्षकने अमृत पीलिया तुमारे बधन किये नहीं मरैगा कुछ इन्द्र वाले अमृत के वास्ते नहीं कहेथे ४ इति भा० द्वा० शं० मं० षष्ठे ऽध्याये सप्तम वेणी ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ २४ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ ब्रह्मर्षयःकथंचक्रुर्विद्याध्ययनमद्भुतम् । सूतात्तन्नाद्विजानाम्महाश्चर्यमिदंगुरो १ वाचक उवाच ॥ व्यासस्यसेवनंचक्रेसुतो विनयनम्रतः चिरकालमतस्तेनसंस्कृतः पुत्रवत्सुधीः २ तवाननाच्चयेविप्राःश्रृण्वन्ति भगवत्कथाम् । पठिष्यंतिचयेविद्यांते प्राप्स्यंतिसहस्रधाफलंचातोद्विजास्सर्वेसूताद्विद्याम्प्रपेठिरे ३ इ० भा० द्वा० शं० सं० सप्तमे० अष्टमवेणी ८ श्लो० ६

श्रोता पूछते भये हे गुरुजी भागवत द्वादश स्कंधके अष्टमाऽध्याय में लिखाहै कि सूतके मुख से ब्राह्मणलोग विद्या पढ़ते भये तो इसमें यह शंका होतीहै कि क्या उस वखत ब्राह्मणोंको विद्या पढ़ाने वास्ते ब्राह्मण वंश नहींथे सब ब्राह्मणों को नाश होगया था इस वास्ते सूतके मुखसे विद्या पढ़ते भये बड़ा आश्चर्य होताहै १ वाचक बोले सूत व्यास की सेवन बहुत वर्षों तक करता भया तब अपना पुत्र सरीके मानिकै व्यासजीशास्त्रके तथा तपके जोरसे और भगवान्को अवतार भी थे सूतको यज्ञोपवीत आदि जो कर्म सो सबकरते भये २ संस्कार करिकै सूतको वरदान दिहे हैं हेपुत्र सूततुमारे मुखसे भगवान्की कथाको जो कोई ब्राह्मणअभिमान त्यागिकै सुनैंगे तथा विद्या पढ़ैंगे तब उनसुननेवाले पढ़नेवाले ब्राह्मणोंको हजार गुण कथा को फल तथा हजार गुण विद्यापढ़े को फलप्राप्त होगा हे श्रोताहो इसवास्ते सब ब्राह्मण तथा सनकादिक अभिमान को छोड़ि २ सूतसे कथा सुनते भये तथा विद्याभी पढ़ते भये और ब्राह्मण को वंश नष्ट नहीं हुआ लोभ करिकै सब पढ़ेसुने हैं ॥ ३ ॥ इति भा० द्वा० शं० सं० सप्तमेऽध्यायेअष्टमवेणी ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ ६ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ मुनीनांतपसोभंगमप्सरशःप्रेष्यका रयेत् । सर्वशास्त्रेश्रुतश्चश्चशचीभर्ताऽतिवंचकः । दद्युर्न्न मुनयः कस्मात्तस्मैदंडंविकोपिताः १ वाचक उवाच ॥ शताश्वमेधजंपुण्यंयावत्तस्यप्रवर्तते । नतावन्मुनयश्शा पन्दातुमिच्छन्तिकर्हिचित् मुनीनामुपतापेनदुःखंप्राप्नो तिशत्तसात् २ इति भाग० द्वा० शं० मं० अष्टमेऽ ध्यायेनवमवेणी ९ ॥ श्लो० ॥ १५ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ दुर्जनानांस्मयंचिन्हंसंवदन्कुरुते स्मयम् । गच्छन्तिष्ठन्परस्थानात्स्वस्थानेप्यागतं

श्रोतापूछतेभयेहे गुरुजी इन्द्रबड़ाकपटीहै हमसबसर्वशास्त्रों में सुना है असुरों को भेजिकैमुनियोंको तप भ्रष्टकरि देता है तौ मुनिजनक्रोध करिकै इन्द्रको शाप क्यों नहीं देते युग२ में मुनि लोगोंके तपको भंग डारिकै न करै यह शंकाबड़ीभूरहै १ वाचकबोलेसौ अश्वमेधकी पुण्य जब तकइन्द्रके पास रहती है तबतक मुनिजन भी शाप देने की इच्छा नहीं करते क्योंकि जानतेहैं कि पुण्य के प्रभाव सेती भगवान्की कृपा इसके ऊपरहै हम शाप देवैंगे तौ ईश्वर भी हमारे ऊपर नाराज होवैंगे ऐसा विचारिकै क्षमा करिकै मुनि दुःख सहि लेतेहैं परन्तु मुनियों के दुःख से इन्द्रको तेज दिन दिन नष्ट होता है तब राक्षस लोग इन्द्रको ऐसा दुःख देतेहैं कि अनेक युगों तक इन्द्र दुःख भोगता हैहे श्रोताहो इस कारण से मुनिजन इन्द्र के अपराध को क्षमा करिकै शाप नहीं देते २ इतिभा० द्वा०शं०मं०अष्टमेऽध्याये नवम वेणी।।९॥श्लो०॥१५॥

श्रोता पूछते भये दुष्ट मानुष्यों का लक्षण यहहै कि बात करते करते मुसिकि आते हैं तथा कोई मानुष्य उन दुष्टोंके

नरम् १ मार्कंडेयाश्रमाद्गच्छन्नारायणमुनिर्मुनिः ।
कथंजगामसुनिराट्शंकेयंमहतीहिनः २ वाचक उवाच ॥
मार्कंडेयमुनिर्ज्ञात्वामायालोकनकामिनम् । मोहितुंतंस्म
यंचक्रेमुनिर्नारायणस्तदा ३ इति भाग० द्वा० शं०
नि० मंजर्य्यांनवमेऽध्यायेदशमवेणी १० ॥ श्लोक ७॥

श्रोतार ऊचुः ॥ अनापृष्टश्चमुनिनामार्कंडेयेनशं
करः । ब्रह्माविष्णुमहेशानामेकत्वंकथमुक्तवान् १वाचक

मकान पर आवतो उस को आता देखिकै मुसिकिआयँगे
तथा वो मानुष्य उनदुष्टों के मकान से चलने लगैंगे तौभी
मुसिकिआयँगे अथवा आपु किसी सज्जन के मकानपर
जावैंगे तो जातेवखत बैठैंगेतौ मुसिकिआयँगें चलनेलगैंगेतो
मुसिकिआयँगेएहुइ जीवोंकीपहिंचान करनेकोलच्छणहै१लवहे
गुरुजी मार्कंडेय मुनि के आश्रम से नारायण मुनि चलने लगे
अपने स्थान को तब मुसिकिआते २ क्योंगये बड़े मुनिहोके
ऐसा बुराकर्म करना यह बड़ी शंका होती है २ वाचकबोले
नारायण मुनि विचार कियेकि मार्कंडेयमुनि माया कोप्रभाव
देखा चाहते हैं इन के मनमें ऐसा अभिमान है कि मैंने माया
को तप करिकै जीतिलिया है ऐसा माया करिकै इन्हको मोह
करवावोंगा कि युग २ भूलैंगे नहीं हे श्रोताहोऐसाविचारिकै
अपने मनमें नारायण मुनि मुसिकिआते२चलेगये कुछुदुष्टकर्म
से नहीं मुसिकि आने३इतिभा०द्वा०शं०मं०नवमेऽध्यायेदशम
वेणी ॥ १० ॥ श्लोक ॥ ७॥

श्रोता पूछते भये मार्कण्डेय मुनि ब्रह्मा विष्णु महादेवसे
पूंछे नहीं कि तुमतीन्न देवतों में कौन बड़ा है कौन छोटा है
कि तीनोंजनों बरोबरिहो तो बिना पूंछेभी महादेव क्यों

उवाच ॥ मुनेर्हार्दं समाज्ञाय त्रिषु देवेषु कोवरः । भ्रम स्यास्याशु शान्त्यर्थं मनापृष्टोप्युवाचसः २ इति भा० द्वा० शं० मं० दशमेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोतार ऊचुः ॥ वन्द्येऽद्यस्स्वगुरुं नत्वा विभूतीर्वैष्णवीरपि । सूतोक्तिरद्भुतेयम्वै पूर्वोक्ताः कस्य भूतयः १ वाचक उवाच ॥ सर्वं विष्णुमयं विश्वमुक्ताः पूर्वं विभूतयः ।

कहथ मार्कंडेय से ब्रह्मामें विष्णु में और हमारेमें भेदनहीं है हमतीनोंदेव एकहीहैं यह हमको बड़ी शंकाहोती है १ वाचक बोले मार्कंडेय मुनि के मनमें ऐसा विचारथा कि तीनों देवों में कौनश्रेष्ठ है परन्तु लज्जा करिकै पूछिनहीं सकतेथे तब महादेव ऐसी मार्कंडेय के हृदयकी बातको जानिकै मार्कंडेय मुनि पूंछेभी नहीं तौभी मार्कंडेय मुनिके भ्रम की शान्ति होनेवास्ते बृह्मा विष्णु और शिवकी एक स्वरूप की कथा कहते भये ॥ २ ॥ इति भा० द्वा० शं० मंजर्य्यां दशमेऽध्याये एकादशवेणी ॥ ११ ॥ श्लो० ॥ २१ ॥

श्रोता पूछते भये बड़े आश्चर्यकी बातहै कि सूतकहे कि अब अपने गुरुको नमस्कार करिकै विष्णुकी विभूति ऐश्वर्यमैं वर्णन करताहों गुरुजी प्रथमस्कंधसे द्वादश स्कंधकी ११ अध्याय तक विष्णुकी बिभूति को वर्णन नहीं हुआ फिरि किस्की विभूति को वर्णन पेश्तर हुआथा यहशंका है १ वाचक बोले पेश्तर ऐसा वर्णन भया है कि तीनलोक चौदह भुवन चर अचर येसब ईश्वर को स्वरूप हैं इसवास्ते विष्णुरूपजो संपूर्ण संसार तिसकी बिभूति को वर्णन भया है और अब अकेले भगवान् की महिमा चरित्र को वर्णन होगा इसवास्ते

सर्वेषांचैवविश्वेषामिदानींकेवलंहरेः २ इति भा०द्वा० शं० सं० एकादशेऽध्याये द्वादशवेणी॥१२॥श्लो०॥४॥

श्रोतार ऊचुः ॥ सूतेनोक्तम्मुनिभ्यश्च धर्मान्वक्ष्ये सनातनान्। इतिनोमहतीशंका पूर्वोक्तानसनातनाः १ वाचक उवाच ॥ श्रीमद्भागवतेधर्म्मा येसर्वेमुनिवर्णिताः। सनातनाश्चतेसर्वे कारणैकन्निबोधत २ प्रथमम्मुनिभिःप्रोक्ताधर्म्मास्सूक्ष्मपथानिशम्। तेपश्चात्कविभिः प्रोक्ताविस्तृतंश्लोकसंचयैः ३ उपक्रमणिकेऽध्याये द्वादशस्कंधजाकथा। सर्वाःप्रोक्ताश्चव्यासेन सूतकहेथे कि अबहम भगवान् की विभूति को वर्णन करते हैं॥ २॥ इति भा० द्वा० शं० नि०मंजर्याएकादशेऽध्यायेद्वादशवेणी॥ १२॥ श्लो०॥ ४॥

श्रोता पूछते भये सूतने मुनियों से कहेकि हमअब सनातन धर्मको कहैंगे आपु मनलगाय के सुनो हे गुरुजी इस में यहशंका होती हौकि पेश्तर जो धर्म वर्णन भयेसो सनातन नहीं है जलदीकी बनाये हैं १ वाचक बोले श्रीमद्भागवत में जोजो धर्म वर्णन भये हैं सोसब सनातन धर्म हैं जल्दी बनाये एकभी नहीं हैं परन्तु एक कारण है तिसको श्रोताजनो श्रवणकरो २ मुनियोंने प्रथम इस धर्मको बहुत थोरे करिकै वर्णन किएरहें बारंबार कछु दिनपीछेउन्हींको थोरासा वर्णन हुआ धर्मों को विस्तार से बहुत श्लोक करिकै कवि वर्णन करते भये ३ इस अध्याय में बारहस्कंधोंकी कथा व्यास जी थोरीरस्ता से वर्णन किए हैं जैसापेश्तर मुनिजन थोरे थोरे श्लोक में संपूर्ण धर्म वर्णन कियेथे इसवास्ते सूतजी कहेथे अब मैं सनातन धर्म वर्णन करताहौं क्योंकि सनातन धर्मतो

न्थूनेनास्मिन्यथाशुभाः। अतस्सनातनाधर्माःसूतेनोक्त मिदंवचः ४ इति भा० द्वा० शं० मं० द्वादशाऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लोक ॥१॥

श्रोतार ऊचुः ॥ श्रीमद्भागवतशास्त्रस्यसमाप्तौसूतसत्तमः। स्वगुरुंसर्वदेवांश्चब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् १ सर्वावताराणिहरेर्विहायकथमद्भुतं। नेमेकूर्म्ममहावीरंशंकेयम्महतीचनः २ वाचक उवाच ॥ कूर्म्मंविष्णुं समाश्रित्यदेवास्सिन्धुममन्थिरे। प्रापासुधासुरैश्शुभ्राफलितंचमनोरथं ३ तथासूतेनसम्प्राप्ताश्श्रीमद्भागवतार्णवे। पारस्तंस्मृत्यकूर्म्मंवैप्रणनामाशुविप्लुतः।

कोई है जो मुनिलोग थोरे श्लोकों करिके वर्णन कियेथे बहुत विस्तार तो पीछेसे कवियोंने कियाहै सूत ऐसेनहीं विचारिके कहेथे कि अबतक सनातन धर्म नहीं बर्णन भया सनातन धर्म अब कहताहों ४ इति भा० द्वा० शं०मं० द्वादशाऽध्याये त्रयोदशवेणी ॥ १३ ॥ श्लो० ॥ १ ॥

श्रोता पूछते भये श्रीमद् भागवतकी समाप्ति में सूतजी अपने गुरुको तथा सब देवतोंको ब्रह्मा विष्णु शिवको १ भगवान् के सब औतारोंको इन सबको त्यागिके कच्छप भगवान् को नमस्कार क्यों किये यह शंका होतीहै २ वाचक बोले कच्छप भगवान्की कृपा करिके देवतोंने समुद्रको मथिके देवता लोग अमृत पाते भये अमृत पायके देवतोंका मनोरथ सिद्ध होगया ३ तैसे सूतभी समुद्ररूप भागवत के पार होगये कूर्मको स्मरण करिके इसवास्ते प्रेमसे सूतकी आंखों से अश्रु पड़रहीहै सबको त्यागिके कूर्मको नमस्कार करते

नभेदस्तेषुसर्वेषुहरेराविभवेषुच ४ इति भा० द्वा० शं० मं० त्रयोदशाऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ २ ॥
भये तथा भगवान्के अवतारों में भेद भी नहीं है४इतिभा० द्वा० शं० मं० त्रयोदशेऽध्याये चतुर्दशवेणी ॥ १४ ॥ श्लो० ॥ २ ॥

इति श्रीमद्भागवतद्वादशस्कंधशंकानिवारण मंजरी शिवसहायबुधविरचितासुधामयी टीकासमाप्ता ॥ श्रीरस्तुशुभम् ॥

समाप्तेयंश्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरी ॥ श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥

श्रीमद्भागवतशंकानिवारणमंजरीकल्पनेकारणमिदं विद्वाद्भिर्ज्ञातव्यम्मम ॥

श्रीमद्भागवत शंकानिवारण मंजरी बनानेका मेरा यह कारण है सो कारण विद्वान् जनोंको जानना चाहिये ॥

श्लोक ॥

विद्वांसस्सुधियोऽर्थबोधनपराजानंतिमंकारणंजैनेज्यैर्यवनेशपूजिततरैम्लैच्छैस्तथान्यैरपि ॥ श्रीमद्भागवतार्थवंचनपरैस्संक्लेशितोऽहंसदाचातस्तन्मुखत्रोटनायहिमयासंकल्पितेयम्प्रभा ॥ १ ॥

हेविद्वज्जनाहो आपुसबजनोंकी शास्त्रोंमें बुद्धिबड़ीनिपुणहै तथा व्याकरण पढ़ेहो इस वास्ते सब शास्त्रोंके अर्थोंको जानतेहो श्रीमद्भागवत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है तिसका कारण यहहै इस श्लोक से आप जन मालूम करना कि यती ढूंढ़ि आसमबेगी तथा मौलवी आदि लेके और जो म्लेच्छ हिन्दुस्तानमें वर्तमानहैं कैसेहैं भागवतकी निंदा रातिदिन करते हैं येसब लोग मेरेको जिसी देश में मैं गया उसी देशमें बड़ा दुःख देते भये कि तुमारे भागवत में ऐसा २ अनर्थ लिखाहै इस वास्ते वो जो निंदा करने वाले पीछे लिखेहुयेहैं उन लोगोंके मुख भंजन करने वास्ते यह भागवत शंका निवारण मंजरी मैंने बनाया है इसको पढ़ने वाले सुननेवाले विद्वान्के सामने निंदक लोग नहीं खड़ेरहैंगे॥१॥

इतिभागवतशंकानिवारणकल्पनेसूचना १ समाप्ता ॥

अथस्वापराधक्षान्त्यैविद्वान्सोमयाप्रार्थ्यन्ते ॥

ग्रन्थस्याऽस्यसकृद्बहुवरचनालेखावलिर्लेखकाद्य न्त्रांकांकितशोधनादिनिचयंरोगोऽपिमामग्रहीत्एतस्मा द्यद्शुद्धवर्णबहुलंतत्क्षम्यतास्भोबुधा दासोहंनितरांच शब्दविदुषांय्यूयंकृपासागराः ॥ १ ॥

इस ग्रन्थके बनानेमें जो मुझसे भूल चूक होवै सो अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते व्याकरण पढ़ने वाले विद्वानों की प्रार्थना मैं करताहूं प्रथम तो इस ग्रन्थको बनाने वास्ते भागवत में शंका को विचार मैंने किया फिरि उत्तर देनेको विचार किया फिरि श्लोक बनाना फिरि भाषा टीका बनाना फिरि लेखकसे लिखानाशोधना छपाना यह सब काम एकई साथ महीना ४ चार में भया इसी बीच में मैं बीमार भी होगया इस वास्ते जो कोई अक्षर अशुद्ध होवै उसको आपु सबमेरे ऊपर कृपा करिकै विचारिकै पठन करना मेरे अपराध को क्षमा करना क्योंकि व्याकरणपाठी विद्वानोंका मैं किंकर हौं आप सब कृपाके समुद्रहो ॥

बाण ५ ब्धि ४ रङ्क ६ पृथिवी १ युतवत्सरेवै शुक्ले रवौयमतिथौ १० शुभवैक्रमीये ॥ मासाश्विनस्य कृपया गिरिजापतेर्वैसम्यक् समाप्तिमगमच्छुभमंजरीयम् ॥१ ॥

इस ग्रंथके बनाने वाले पण्डित शिवसहायको देशांतर में पण्डित अयोध्या बासी जी कहतेहैं ॥

किताबों की फ़ेहरिस्त ॥

	क़ीमत	डा० म०
भागवत भाषाटीका	१२)	२)
पद्मपुराण	१८)	३)
वाल्मीकीय भाषाटीका	२१)	२॥)
वाल्मीकीय संस्कृत टी०	८)	१)
हरिवंश मय माहात्म्य	६)	॥।)
देवी भागवत	७)	॥।)
अध्यात्मरामायणभा० टी०	४)	॥=)
रामाश्वमेध भा० टी०	४)	॥)
भागवत शंका निवारण मञ्जरी	१॥)	।)
नन्दमहोत्सव	॥)	=)
दृष्टान्तप्रदीपिनी	॥)	=)
भागवत लीला कल्पद्रुम	१॥)	≡)
भागवत माहात्म्य भा० टी०	।=)	=)
सत्यनारायण भाषाटीका	।)	-)
वासिष्ठी	।)	-)
गरुड़पुराण भाषाटी०	१)	=)
कार्तिक माहात्म्य भा० टी०	१)	=)
एकादशी माहात्म्य भा० टी०	१)	=)
निर्णयसिन्धु भा० टी०	५)	१)
धर्मसिन्धु भा०टी०	६)	॥।)
भावप्रकाश भा० टी०	८)	१)
वाग्भट	१०)	१॥)

	कीमत	डा॰म॰
रत्नराज महोदधि	१)	=)
चिकित्साचक्रवर्ती भा॰	१)	=)
रामायण बड़ी	४)	।।।)
रामायण मध्य	१।।।)	।=)
रामायण गुटका	१)	।)
रामायण सटीक ज्वालाप्रसाद	७)	१।।)
रामायण रामश्यामकृत	८)	१।।)
रामायण रामबख़्श टी॰	४)	।।।)
रामायण रामचरण टी॰ सांची सफ़ेद	७)	१।।)
रघुवंश भाषाटी॰	३)	।।)
शिशुपालवध भा॰टी॰	३)	।।)
रघुवंश छोटा	१)	=)
रघुवंश बड़ा	१।।)	≡)
सुखसागर	७)	१।।)
सुखसागर छोटा	२)	।=)
निघंटरत्नाकर भा॰	६)	।।।=)

द॰ छोटेलाल, लक्ष्मीचन्द बुकसेलर.

बम्बई पुस्तकालय अयोध्याजी ॥

अयोध्याप्रसाद कम्पनी
जिला लखनऊ पो॰ काकोरी
मौंदा